**चिल्लड़ मारे, कुत्ता खाए**
जुएं को मार कर अलग करना और कुत्ता खा जाना। छोटी-सी चीज़ के विषय में अपने को पाक-साफ़ बताकर बड़ी चीज़ हड़प जाना।

**चिह निस्बत खाक़ रा ब आलमें पाक, (फ़ा०)**
पृथ्वी और आकाश में क्या सम्बन्ध?

**चींटी का बिल नहीं मिलता, कहां छिपूं**
कहीं गुजारा नहीं।

**चींटी की आवाज अर्श पर**
निर्बल की भगवान सुनता है।
अर्श = आसमान, स्वर्ग।

**चींटी की जो मौत आनी होती है, तो पर निकलते हैं**
जब कोई छोटा आदमी बहुत इतराकर चलने लगता है, तब क०।

**चींटी के घर नित मातम**
चीटियां नित्य मरती हैं। साधारण आदमी को कोई न कोई कष्ट लगा ही रहता है।

**चींटी के पर निकले और मौत आई**
दे०—**चींटी की जो मौत...**।

**चींटी को मौत ही की बला बस है**
गरीब के लिए थोड़ा-सा कष्ट भी बहुत होता है।

**चींटी दल**
बड़ी भीड़।

**चींटी चाहे सागर थाह**
सामर्थ्य से बाहर काम करने का धृष्ट प्रयास करना।

**चींटी ससरने को जगह नहीं**
बहुत संकीर्ण जगह।
ससरना = निकलना, रेंगना।

**चीज न राखे आपनी, चोरों गाली देय, (स्त्रि०)**
किसी विषय में स्वयं सावधान न रहकर दूसरों को दोष देना।

**चीड़फाड़ के अंग्रेज डाक्टर उस्ताद हैं**
स्पष्ट।

**चीरा है जिसने वही नीरेगा, (हिं०)**
जिसने मुंह दिया है, वही भोजन भी देगा।
नीरेगा = नीर यानी पानी देगा।

**चीरे चार, बघारे पांच**
किसी सास का अपनी बहू के सम्बन्ध में कहना कि यह तरकारी के चार टुकड़े काटकर पांच बघारती है। (व्यंग्य में ऐसे आदमी के लिए कहते हैं, जो बात अधिक करे, पर काम करे थोड़ा।)

**चील का मूत**
ऐसी वस्तु जो मिल न सके।

**चील के घर में पारस होता है**
चील के घर में सोना मिलता है।
(चील अक्सर सोने के गहने उठा ले जाती है। लोगों का विश्वास है कि वह ऐसा इसलिए करती है कि जब तक सोना नज़दीक न हो, तब तक उसके बच्चे आंखें नही खोलते।)

**चील के घर मांस कहां?**
चील के घोंसले में मांस नही होता, क्योंकि वह जो कुछ लाती है, सब खा लेती है।
जब कोई किसी के पास से ऐसी वस्तु पाने की आशा करे, जो उसके पास कभी रहती ही न हो; तब क०।

**चील के घर में मांस की धरोहर**
एक मूर्खतापूर्ण कार्य। चील के घर मे मांस होने से वह तुरंत खा जाएगी।

**चील बैठे तो एक खड़ ले ही उड़े**
चील जहां बैठती है वहां से एक तिनका ले ही कर उड़ती है। कार्यशीलता का उदाहरण।

**चील-सा मंडराया और कबूतर-सा बींदता फिरता है**
हमेशा इस ताक में रहता है कि जो मिले, वही उठा ले।
बींदना फुदकना।

**चुंगल भर आटा साईं का, बेटा जीवे माई का**
भीख मांगनेवाले फकीरों की टेर।

**चुगलखोर खुदा का चोर, (मु०)**
चुगलखोर ईश्वर का शत्रु होता है। मतलब—बुरा आदमी होता है।

**चुगला बैठा नीम पै, दे साले के तीन सै**
स्पष्ट।
बच्चों की तुकबंदी।

**चुटके का खैये, उकटे का न खैये**
ग़रीब आदमी के यहां भले ही खा ले, पर ऐसे के यहां न खाए, जो खिला कर एहसान जताए।
चुटका=चुटकी मांग कर पेट भरनेवाला, ग़रीब।
उकटा=एहसान जतानेवाला।

**चुटिया को तेल नहीं, पकौड़ों को जी चाहे, (स्त्रि०)**
साधारण चीज़ के लिए पैसा नहीं, मंहगी के लिए मचलना।

**चुड़ैल पर दिल आ गया तो फिर परी क्या चीज़ है**
प्रेमी रूप-कुरूप नहीं देखता। प्रेम अन्धा है।

**चुड़ैल पर दिल आ जाए, तो वह भी परी है**
कुरूप से कुरूप स्त्री से भी अगर प्रेम हो जाए, तो वह भी फिर सुंदर लगती है।

**चुनिए, खुनिए, पोसलों धिया।**
**आइल दमदा, ले गैल धिया।**
मां का बेटी के सम्बन्ध में कहना कि मैंने उसे खिला-पिलाकर बड़ा किया, और दामाद आकर ले गया।

**चुप आधी मर्ज़ी**
दे०—अल ख़ामोशी नीम रज़ा।
(सं०—मौनं सम्मति लक्षणम्।)

**चुप की दाद खुदा देगा**
चुपचाप कष्ट सहन कर लेनेवाले की सहायता ईश्वर करता है।

**चुपड़ी और दो-दो**
बढ़िया माल और बहुत-सा।
प्रायः ऐसे मनुष्य के संबंध में कहते हैं, जिसे अच्छे अधिकार प्राप्त हों और वेतन भी ऊंचा मिलता है।

**चुरावे मखवाली, नाम लगे चिरकुटवाली का, (स्त्रि०)**
बड़े के अपराध के लिए छोटा पकड़ा जाए।
चिरकुट=चीथड़ा।

**चुल्लू-चुल्लू साधेगा तो दुआरे हाथी बांधेगा**
जो थोड़ा-थोड़ा संचय करेगा, वह दरवाज़े पर हाथी बांध सकता है।
(भंगेड़ी भी इसे कहा करते हैं।)

**चुल्लू पानी, तंग ज़िंदगानी**
आर्थिक कष्ट में रहनेवाले का कहना।

**चुल्लू-उल्लू, लोटे में गड़गप्प**
भंगेड़ियों का कहना।

**चूका और गया**
जो चूकता है, वह हानि उठाता है।

**चूका और मरा**
दे० ऊ०।
(बंदर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर छलांग मारते समय यदि चूक जाए, तो वह नीचे गिर कर मर जाता है। उसी से आशय है।)

**चूचियों में हाड़ टटोलना**
जो वस्तु जहां है ही नहीं, वहां उसे तलाश करना।

**चूतड़ से कान गांठते हैं**
(१) जो आदमी दरवाज़े से कान लगाकर दूसरे की बात सुने, उसके लिए क०।
(२) किसी बात के सिर-पैर कोएक करने को भी क०।

**चूतड़ों से सुपारी फोड़ना**
सुख-चैन में दिन काटना।

**चूतिया मर गए, औलाद छोड़ गए**
यानी आप जैसा मूर्ख हमने नहीं देखा।
जब कोई किसी को मूर्ख बनाना चाहे, तब उसकी ओर से भी क०।

**चूतियों ने गांव मारा है?**
मूर्खों ने भी कभी कोई काम किया है?

**चून खाए मुसंड होवे, तला खाए रोगी**
रोटी खाने से आदमी तगड़ा होता है और तली हुई चीज़ें खाने से रोगी।

**चूना और चमार, कूटे पर ठीक रहता है**
स्पष्ट।
(चूने को पानी मिलाकर जितना कूटा जाता है, उतना ही उसमें लस आता और वह मज़बूत बनता है।)

**चूना, चूची, दही, ये बंगाला नहीं**
बंगाल का चूना और दही अच्छा नहीं होता। वहां की स्त्रियों के स्तन भी छोटे होते हैं।

**चूनी कहे 'मुझे घी से खा'**
(१) चूनी कहती है कि घी के साथ खाने से ही मैं

स्वादिष्ट बन सकती हूं।
साधारण अन्न को भी अच्छा बनाकर खाने में पैसा खर्च होता है।
(२) चूनी जैसे साधारण अन्न का यह दंभ कि वह चाहता है कि उसे घी के साथ खाया जाए। यह अर्थ भी होता है।
चूनी=मटर का आटा।

**चूमचाट के खा लिया**
(१) चटोरपन में पैसा साफ कर देना।
(२) किसी को बिल्कुल बर्बाद कर देना।

**चूमा झाड़ खाओ, लड्डू न तोड़ो**
ब्याज या मुनाफा खा लो, पूजी बर्बाद न करो।

**चूल्हा छोड़ भंसार में जाओ**
हमे कोई मतलब नही; तुम चाहे जो करो।
भंसार मनसार, भाड़।

**चूल्हा झोंके चांवर हाथ**
चूल्हा झोंक रहे है और पंखा हाथ मे लिय हुए है, गर्मी से बचने के लिए। काम में नजाकत दिखाना।

**चूल्हे आग न घड़े पानी, ऊपर ही ऊपर जा गंवानी, (स्त्रि०)**
एक स्त्री का दूसरी को कोसना कि तेरे चूल्हे मे न तो आग रहे, न घडे मे पानी, और तू ऊपर ही ऊपर जहन्नुम में जा।

**चूल्हे का राव लाव ही लाव पुकारे, (स्त्रि०)**
चूल्हे का देवता हमेशा लाओ, लाओ, और लकडी लाओ ही पुकारता रहता है।
पेट अथवा पेटू के लिए क०।

**चूल्हे की न चक्की की, (स्त्रि०)**
ऐसी औरत जो गृहस्थी का कोई काम न जानती हो।

**चूल्हे चक्की, सब ही काम पक्की, (स्त्रि०)**
चतुर गृहिणी के लिए क०।

**चूल्हे पीछे सोवें और टेहरी को टोपवें, (स्त्रि०)**
चूल्हे के पीछे सोते है और मटकी टटोलते रहते है।
आर्थिक कष्ट भोगनेवाले के लिए क०।

**चूहा बजावे चपनी और जात बतावे अपनी**
काम से आदमी की जात परख ली जाती है।

**चूहा बिल में समाता न था, कानों बांधा छाज, (स्त्रि०)**
जब कोई स्वयं अपनी देख-भाल न कर पाए, ऊपर से कोई झंझट मोल ले ले, तब उसके लिए क०।

**चूहा बिल्ली का शिकार है**
स्पष्ट।

**चूहे का बच्चा बिल ही खोदेगा**
सहजात स्वभाव नही छूटता।

**चूहे का बिल ढूंढ़ना**
शर्म से कहीं छिपने की कोशिश करना।

**चूहे हाथ लगी हल्दी की गिरह, पंसारी ही बन बैठा (स्त्रि०)**
चूहे को एक हल्दी की गांठ मिल गई, उसे लेकर वह अपने को पंसारी समझ बैठा।
जब कोई थोडे-से पैसे से अपने को धनी अथवा थोड़ी-सी विद्या से अपने को विद्वान समझ ले, तब क०।

**चेना जी का लेना, चौदह पानी देना, ब्यार चले तो लेना न देना, (कृ०)**
चेना की खेती के संबंध में कहा गया है कि वह एक मुसीबत की चीज है। बहुत पानी देना पड़ता है और अगर गरम हवा चल जाए तो मामला साफ है।
(चेना एक हलकी किस्म का अनाज है। वनस्पतिशास्त्र मे उसे Panicum miliaceum कहते है।)

**चेने के बंस में सपूत भये माड़हा, (पू०)**
जब किसी निकम्मे घर मे थोड़ा-बहुत होशियार लड़का पैदा हो जाता है, तब व्यंग्य में क०।
(माड़हा या माढ़ा चेने की तरह ही एक हल्की किस्म का अन्न होता है।)

**चेरी सबके पांव धोवे, अपने धोती लजावे**
अपने हाथ से अपना काम करने में लोगो को शर्म आती है, फिर वे उसी प्रकार का दूसरों का काम भले ही करें।

**चेले चीनी हो गए, गुरु गुड़ ही रहे**
दे०—गुरु गुड़ ही रहे . . .।

**चेले लावें मांगकर, बैठा खाए महंत।**
**राम भजन का नाम है, पेट भरन का पंथ।**
महंतों और साधुओं के सम्बन्ध में लोकज्ञान का निचोड़।

**चोट लगी पहाड़ की, और तोड़ें घर की सिल, (स्त्रि०)**
जब कोई बाहर का गुस्सा घर में उतारता है।

**चोट्टी कुतिया, जलेबियों की रखवाली**
भक्षक का ही रक्षक होना।

**चोर और मोट, कसके बांधे के चाहे, (पू०)**
चोर और गठरी को मज़बूती से बांधना चाहिए।

**चोर और सांप की बड़ी धाक होती है**
उनसे सब डरते है।

**चोर और सांप दबे पं चोट करता है**
चोर और सांप को जब निकलने का रास्ता नही मिलता, तो वे चोट करते है।

**चोर का कोई हिमायती नहीं**
चोर का कोई साथ नही देता।

**चोर का जी कितना?**
चोर डरपोक होता है।

**चोर का भाई गठकटा**
जो जैसा होता है, उसके यार-दोस्त भी वैसे ही होते हैं।

**चोर का भाई गट्ठीचोर**
दे० ऊ०।
गठ्ठीचोर=अमानत मे खयानत करनेवाला, विश्वासघाती।

**चोर का मन बकचे में**
चोर की नज़र गठरी पर ही रहती है।

**चोर का माल सब कोई खाए।**
**चोर की जान अकारथ जाए।**
चोर का माल दूसरे उड़ाते हैं, और चोर बेचारा मुफ्त में फंसता है।

**चोर का मुंह चांद-सा**
क्योंकि (१) चेहरे से वह अपने को निर्दोष साबित करता है।
(२) उसके चेहरे पर चांद की तरह स्याही पुती रहती है, जिससे उसका चोर होना साबित हो जाता है।

**चोर का शाहिद चिराग़**
चोर की गवाही चिराग ही दे सकता है, और चोर रोशनी मे चोरी नही करता।

**चोर का सिर नीचा**
चोर किसी के सामने आंख उठाकर नहीं देख सकता।

**चोर का हाल, सो मेरा हाल**
अपनी सफाई में कहते है कि यदि मैने कोई ग़लती की हो तो मुझे वही दंड दिया जाए, जो चोर को दिया जाता है।

**चोर की और सांप की धाक बड़ी होती है**
दे०—चोर और साप की...।

**चोर की ज़मानत नहीं होती**
चोर की कोई ज़मानत नही करता। कोई उसका हिमायती नही होता।

**चोर की जोरू कोने में सिर देकर रोती है**
चुपचाप रोती है। खुलकर कैसे रो सकती है? लोग यदि रोने का कारण पूछें, तो क्या बताएगी?

**चोर की दाढ़ी में तिनका**
किसी भी तरह के इशारे को अपने ऊपर समझकर जब कोई व्यक्ति तिनक उठता है।
(इसकी कथा है कि एक काज़ी किसी चोरी के मामले पर विचार कर रहा था। जिन मनुष्यों पर भी संदेह था वे सब उसके सामने खड़े थे। जब असली अपराधी के संबध मे वह कुछ निर्णय नही कर सका, तो उसने कहा—'चोर वह है जिसकी दाढ़ी मे तिनका लगा है।' उसके ऐसा कहने पर सब ज्यों के त्यों खड़े रहे, पर जो चोर था वह अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरकर देखने लगा कि कही मेरी ही दाढ़ी में तो तिनका नही है। यह देख काज़ी ने उसे ही चोर ठहराया और उसके पास से चोरी का माल भी बरामद हुआ।)

**चोर की नज़र गठरी पर**
चोर हमेशा चोरी की ताक में रहता है।

**चोर की मां कोठी में सिर देकर रोती है**
दे०—चोर की जोरू . .।

**चोर के ख्वाब में बकचे**
चोर सपने मे भी चुराने के लिए गठरिया देखता है।

**चोर के घर में छिछोर**
चोर के घर से भी कोई चोरी कर ले, तब क०।

**चोर के घर मोर**
जब चालाक के साथ भी कोई चालाकी करे, तब क०। (कथा है कि एक चोर कही से सोने का हार चुराकर लाया, जिसे एक मोर ने निगल लिया। चोर बेचारा पछताता रह गया।)

**चोर के पेट में गाय आप ही आप रंभाय**
आदमी का अपराध उसकी बातो से ही प्रकट हो जाता है।

**चोर के पैर नहीं होते**
चोर कभी खडा नही रहता, तुरत भाग जाता है। 'चोर के पैर कितने' भी क०।

**चोर के मन में चोरी बसे**
जिसकी जो आदत होती है, वह छूटती नही।

**चोर के हाथ में दीया**
उसके लिए सहायक भी हो सकता है और उसे पकडवा भी सकता है।
दिया = दीपक।

**चोर को अंगारी मीठ, (भो०)**
अपनी निर्दोषिता सिद्ध करने के लिए चोर जलता अगारा भी जीभ पर रख लेता है।
(अपने बुरे काम को भी वह भला समझता है। प्राचीन काल मे यह निर्णय करने के लिए कि किसी व्यक्ति ने कोई अपराध किया है या नही, उसकी जीभ या हाथ पर जलता अगारा रखने की प्रथा प्रचलित थी। इसे दिव्य परीक्षा कहते थे। कहावत उसी पर आधारित है।)

**चोर को चोर ही पहचाने**
जैसे को तैसा ही पहचान सकता है।

**चोर को चोर ही सूझे**
जो जैसा होता है, वह दूसरे को भी वैसा ही समझता है।

**चोर को चोरी ही सूझे**
बुरे को बुरा काम ही सूझता है।

**चोर को चौकीदार करना**
निरी मूर्खता है। वह तो सब चुरा ले जाएगा।

**चोर को पकड़िए गांठ से, छिनाल को पकड़िए खाट से**
नही तो अपराध प्रमाणित करना मुश्किल होता है।
गाठ से = मालसहित।
खाट से = पलग पर।

**चोर को पनहई दूर ही से सूझे है, (पू०)**
चोर को जूता दूर से नजर आ जाता है। (हमेशा उसे मार खाने का भय बना रहता है।)

**चोर गठरी ले गया, बेगारियों को छुट्टी हुई**
जब बेमन से कोई काम किया जा रहा हो, और कारण-वश उससे छुटकारा मिल जाय, तब क०।

**चोर चकार चूके, लेकिन चुगल न चूके**
चोर या उठाईगीरा भले ही चूक जाए, लेकिन चुगल नही चूकता। वह चुगली करके ही रहता है।

**चोर चुरावे गर्दन हिलावे**
चोर चोरी करके इन्कार करता हे।

**चोर-चोर मौसेरे भाई**
समान व्यवसाय या स्वभाववाले व्यक्ति आपस मे शीघ्र मिल जाते है। जब एक के बुरे काम का दूसरा समर्थन करे।

**चोर चोरी कर गया, मूसलों ढोल बजा**
चोर खुले आम चोरी कर ले गया। कुप्रबध की हद।

**चोर चोरी से गया तो क्या हेराफेरी से भी गया, (स्त्रि०)**
बुरी आदतो को कितना ही दबाया जाए, पर वे रह-रह कर प्रकट हो उठती है।
हेराफेरी = चीजो को इधर से उधर करना।
(कथा है कि एक चोर अपने पापो का प्रायश्चित्त करने के लिए साधु हो गया। पर उसकी पुरानी आदत ने उसका पीछा नही छोडा। रात मे अपने सब साथियो के सो जाने पर चोरी करने की प्रबल इच्छा उसके मन मे जाग्रत हो उठती। तब वह अपने एक साथी के सिर के नीचे की गठरी निकाल कर दूसरे

के सिर के नीचे और दूसरे की पहले के नीचे रख देता। इस प्रकार चोरी करने की अपनी हवस को मिटा लेता, साथ ही चोरी के दुष्कर्म से भी बचा रहता।

**चोर आते रहे कि अंधियारी**

दे०—अंधियारी गई कि चोर...।

**चोर न जाने चोर की सार**

चोर ही चोर के तौर-तरीके जानता है।

**चोर न जाने मंगनी के बासन ?**

चोर को तो चुराने से काम, उसे इससे क्या मतलब कि वे तुम्हारे अपने हैं या दूसरे के।

**चोर, जुआरी, गठकटा, जार और नार छिनार।**
**सौ सौगंधें खाएं जो, भूल न कर इतबार।**

स्पष्ट।

जार=पराई स्त्री से प्रेम करनेवाला पुरुष।

इतबार=विश्वास।

**चोर, ढोर, दोनों हाज़िर हैं**

माल समेत चोर पकड़ा गया।

**चोर लाठी दो जने, हम बाप-पूत अकेले**

चोर ने लाठी लेकर बाप-बेटे पर हमला कर दिया और जो कुछ उनके पास था छीन लिया। तब लड़के ने बात बनाई कि हम करते क्या, चोर और लाठी दो जने थे और हम बाप-बेटे अकेले थे ! जब कोई अपनी कमज़ोरी छिपाने के लिए अनर्गल बात कहे, तब क०।

**चोर ले न साधु पूछे**

चोर को चोरी से काम। फिर चाहे चीज़ किसी साधु की हो अथवा किसी और की।

**चोर ले न साह छुए**

अचल सम्पत्ति के लिए क०, जिसे न चोर चुरा सकता है और न साहूकार ही ले सकता है। सुरक्षित चीज़।

**चोरवा के मन बसे ककड़ी का खेत**

चोर हमेशा चोरी की ताक में रहता है।

**चोर सब घर ले भरे**

पकड़े जाने पर वह अपने सब साथियों के नाम बता देता है, यहां तक कि निरपराधियों को भी फंसा देता है।

**चोर से कहे 'तू चोरी कर' और साह से कहे 'तू जागता रहियो'**

ऐसे व्यक्ति के लिए क०, जो लड़ाई में स्वयं अलग रहकर दोनों पक्षों को उकसाता रहता है।

**चोर हथेली पै जान लिये फिरता है**

मरने से नहीं डरता।

**चोर और चोरी कभी बंद नहीं होगी**

दुनिया बनी तब से चली आई है।

**चोरी और मुंहज़ोरी**

क़सूर भी करे और जवाब दे।

**चोरी और सरहंगी**

तुम चोर हो या सिपाही, जो उल्टा हमें डाटते हो ?

**चोरी और सिरज़ोरी**

एक तो क़सूर करे और ऊपर से रोब दिखाए।

**चोरी और सीनाज़ोरी**

दे० ऊ०।

**चोरी करके साहू बनते हो**

स्पष्ट।

**चोरी का गुड़ मीठा**

मनुष्य-प्रकृति है कि उसे बाहर की अथवा मुफ़्त की चीज़ अच्छी लगती है। प्राय: पराई स्त्री से सम्बन्ध रखनेवाले से क०।

**चोरी बे-थांग नहीं होती**

भेद बिना चोरी नहीं होती।

**चोरी बेसुराग नहीं निकलती**

बिना सुराग के चोरी का पता नहीं चलता।

**चोली-दामन का साथ है**

घनिष्ठ संबंध के लिए क०।

**चौकी गांववालों को लूट खाती है**

पुलिस के कर्मचारियों पर व्यंग्य। (चौकी से मतलब पुलिस की चौकी या थाने से है।)

**चौदह विद्यानिधान**

सब विद्याओं में निपुण। प्राय: व्यंग्य में कहते हैं।

**चौदहवीं रात के चांद को गहन लगा**

पूर्ण चंद्र को ग्रहण लगा। जब किसी का ऐसा अनिष्ट हो जाए, जो होना नहीं चाहिए था; तब क०।

**चौबे गए छब्बे होने, दुबे ही रह गए**
लाभ की आशा से कोई काम किया जाए और उसमें उल्टी हानि हो जाए, तब क०।

**चौबे मरें तो बंदर हों, बंदर मरें तो चौबे हों**
मथुरा के चौबों पर व्यंग्य में क०। वहां चौबे और बंदर दोनों ही बहुत है।

## छ

**छः चावल और नौ पखाल पानी**
साधारण काम के लिए बहुत आडंबर।
पखाल = मशक।

**छः महीने मिमयानी, तो एक बच्चा बियानी (ग्रा०)**
शोरगुल बहुत, पर काम थोड़ा।

**छछूंदर के सिर में चमेली का तेल!**
जब कोई बहुत क्षुद्र व्यक्ति बढ़-चढ़ कर बातें करे। (अजब तेरी कुदरत, अजब तेरा खेल। छछूंदर के सिर में चमेली का तेल।)

**छछूंदर छोड़ना**
ऐसा काम करना, जिससे दो आदमियों मे झगड़ा हो।

**छज्जू गेले छः जना, छज्जू एले नौ जना, (भो०)**
छज्जू छः आदमियों के साथ गए और नौ के साथ लौटे।
(१) व्यर्थ अपने मित्रो की सख्या बढाने पर क०।
(२) किसी काम मे मुनाफे के साथ लौटने के लिए भी कह सकते है।

**छज्जे की बैठक बुरी, परछावन की छांह।**
**दोरे का रसिया बुरा, नित उठ पकरे बांह।**
छज्जे का बैठना, पराए घर की छांह, और पड़ौस का रसिया बुरा होता है; वह हमेशा तंग करता है।

**छटी का खाया-पिया सब निकल गया**
बुरी तरह असफल हुए। अक्ल ठिकाने आ गई।
छटी (छठी) जन्म के छठे दिन का संस्कार।

**छटी का दूध याद आ गया**
बहुत परेशान हुए। अक्ल ठिकाने आ गई।

**छटी के पोतड़े अब तक नहीं धुले**
अभी तक बच्चे ही हैं।
पोतड़े = मल-मूत्र के कपड़े।

**छटी के रज्जा**
छठी के दिन ही राजा बन गए। व्यंग्य में क०। (राजतिलक तो बड़े होने पर ही होता है।)

**छट्ठी न चिल्ला, हराम का पिल्ला**
तेरी न छठी हुई है और न चालीसा, तू हराम का बच्चा है। गाली।
चालीसा = मुसलमानों में जन्म के चालीसवें दिन का संस्कार।

**छतरपती, घटे पाप बढ़े रती, (हिं०)**
बच्चों के छींकने पर क०।
रती शोभा, यश।

**छत्तीस प्रकार के भोजन में सत्तर-दो बहत्तर रोग भरे हैं, (हिं०)**
भोजन से नाना प्रकार के रोग भी होते हैं।

**छत्री का भगत, न मूसल का धनुक, (हिं०)**
मूसल का धनुष नहीं बन सकता, उसी प्रकार क्षत्रिय कभी भक्त नही बन सकता। जाति-विद्वेषमूलक न कि सत्य, पर उस समय की धारणा।

**छत्री का शोहदा, कायथ का बोदा, बामन का बैल, बनिया का ऊत,**
क्षत्रिय शोहदा, कायस्थ बोदा, ब्राह्मण मूर्ख और बनिया ऊत होता है। (कहावत का यह अर्थ भी हो सकता है कि क्षत्री अगर शोहदा, कायस्थ बोदा, ब्राह्मण मूर्ख और बनिया ऊत हो, तो ये किसी काम के नहीं।)

**छदाम में लड़ाई, पैसे में सुघड़ भलाई, (स्त्रि०)**
छदाम के झगड़े को पैसा देकर निपटाना चाहिए।
मतलब—व्यर्थ का झगड़ा ठीक नहीं।
छदाम = पैसे का चौथाई भाग।

**छप्पर पर फूंस नहीं रहा**
बिल्कुल दिवाला निकल गया।

**छब गठरी में, जोबन रकाबी में, (स्त्रि०)**
खूबसूरती अच्छे वस्त्रों से होती है और यौवन अच्छे भोजन से।

(गठरी से अभिप्राय पहिनने के कपड़ों से है, जो गठरी में बंधे रहते हैं और रकाबी से अभिप्राय उसमें रखे जानेवाले भोजन से है।)

**छब्बे होने गये थे, दुबे भी न रहे, (हिं०)**

जब लाभ के स्थान पर उल्टी हानि हो, तब क०।

**छल का फल बुरा होता है**

स्पष्ट।

**छल्लो, छल आई**

जो स्त्री दूसरो को बहुत छला करती थी, वह स्वय ही छलकर आ गई!

छल्लो = छलनेवाली स्त्री, एक तिरस्कार-सूचक संबोधन।

**छहत्तर बोर का तवा बांध कर आना**

अच्छी तरह तैयार होकर आना। एक तरह की चुनौती।

(छहत्तर बोर की बदूक होती है। मतलब यह है कि तुम इतना मोटा तवा बाध कर आना, जो हमारी छहत्तर बोर की बदूक की गोली को सह सके।)

**छाज बोले सो बोले, चलनी भी बोले, जिसमें बहत्तर सौ छेद, (स्त्रि०)**

जब कोई स्वयं अपनी त्रुटिया न देख कर दूसरे की आलोचना करे, तब क०।

चलनी – आटा छानने की चलनी '

छाज सूप।

**छाजा, बाजा, केश, तीन बंगाले वेश।**
**चूना, चूकी, दही, तीन बंगाले नहीं।**

स्पष्ट।

छाजा - छज्जा, छत।

**छाती का जमा**

कष्टदायक आदमी।

**छाती का सौदा है**

हिम्मत का काम है।

**छाती छलनी होना**

बहुत दुख पाना।

**छाती पर मूंग दलते हैं**

निकट रह कर परेशान करते हैं।

**छाती पै कोई नहीं धर देगा**

मरने पर सब यही पड़ा रहेगा।

**छाती पै धर के कोई नहीं ले जाता**

दे० ऊ०।

**छाती पै बाल नहीं, भाल से लड़ाई**

सामर्थ्य न होते हुए भी बडे काम का बीडा उठाना। छाती पर बाल होना बहादुरी का चिह्न माना जाता है।

भाल भालू, रीछ।

**छान का क्या घर? और मेंढक का क्या डर?**

स्पष्ट।

छान - छप्पर।

**छानी पर फूस नहीं, ड्योढ़ी पर नाच, (पू०)**

झूठी शान।

**छाया हुवा घर पाया, और बांधी पाई टट्टी।**
**दूसरे का जनमा लड़का पाया, चुम्मा लें के चट्टी।**

किसी ने ऐसी विधवा से ब्याह कर लिया, जिसके पास खूब पैसा था और एक पुत्र भी था। उसी को लक्ष्य कर के कहावत कही गई है। जब किसी को मुफ्त का माल मिल जाए, तब प्रयोग।

**छाया बड़ी माया है, (हिं०)**

आश्रय बड़ी चीज है।

**छावत मंड़वा, गावत गीत; पिया बिन लागत सब अनरीत, (स्त्रि०)**

प्रियतम के बिना घर बनाना या गीत गाना नही सुहाता।

**छिटांक चून, चौबारे रसोई, (स्त्रि०)**

झूठा आडंबर।

चौबारा = चौपाल।

**छिटांक सतुवा, मथुरा में भंडार**

गाठ मे केवल एक छटाक सतुआ, और मथुरा मे जाकर साधुओ को भोज देंगे। वही झूठा आडबर।

**छिनाल का बेटा 'बबुआ रे, बबुआ!,' (स्त्रि०)**

(१) छिनाल के लड़के को सब दुलराते हैं, इसलिए कि उसकी मां से बात करने का मौका मिलेगा।

(२) कहावत का यह अर्थ भी हो सकता है कि

छिनाल अपने लड़के को दुलराती है 'बबुआ' कह कर। देखो इसके ढंग।

**छिनाल लुगाई, चातुर सिपाही**

ये छिपते नहीं।

**छींकत नहाइए, छींकत खाइए, छींकत रहिए सोय।**
**छींकत पर घर न जाइए, चाहे सर्व सुवर्ण का होय। (हिं०)**

छीक के संबंध में अन्ध-विश्वास कि छीकते नहाना, भोजन करना और सोना अच्छा होता है। पर छीक आने पर दूसरे के घर नहीं जाना चाहिए, चाहे वह सोने का ही क्यों न हो।

**छींकते गए, झींकते आए**

छीकते गए और रोते आए। फलित ज्योतिष के अनुसार छीक आने पर चलना अशुभ माना जाता है। उसी से मतलब है। पर अर्थ यह भी हो सकता कि खाली हाथ आए।

**छींकते ही नाक कटी**

छीकते ही काम बिगड़ा।
(यह कहावत इस प्रकार भी प्रचलित है कि 'छीकते की नाक नही काटी जाती', जिसका अर्थ है कि छीकने से यद्यपि अशकुन होता है, किन्तु उसके लिए किसी की नाक नही अलग की जाती।)

**छींके ही पै रक्खी मिलेगी**

यथास्थान रक्खी मिलेगी।
छीका—रस्सियो का जाल, जो खाने-पीने की चीजे रखने के लिए छत से लटकाया जाता है।

**छीली छाली टैंया-सी**

साफ-सुथरी, सुडौल।
(टैंया बड़ी कौड़ी को कहते है।)

**छोले चार, बघारे पांच (स्त्रि०)**

दे०—चीरे चार...।

**छुआ और मुआ**

दुष्ट के लिए क० कि जिसे वह छू देता है, वह फिर बचता नहीं।

**छुओं न छांव, अलगहे नांव**

आज तक मैंने कभी किसी को छुआ भी नहीं, फिर भी मेरा नाम 'अलगहा' रख दिया गया है। अर्थात मुझे व्यर्थ बदनाम कर रक्खा है।
(अलगहा झाड़-फूक करनेवाले को कहते हैं।)

**छुपे रुस्तम**

व्यंग्य में चालाक आदमी के लिए क०।
(यो रुस्तम फारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन पहलवान हो गया है।)

**छुरी खरबूजे पर गिरी तो खरबूजे का जरर, खरबूजा छुरी पर गिरा तो खरबूजे का जरर**

हर हालत में जब एक की हानि हो रही हो, तब क०।
(दो आदमियो के झगड़े मे निर्बल ही पिसता है, कहावत का यह भाव भी है।)

**छुरी तले दम लो**

अन्त तक धैर्य्य से काम लो।

**छुरी पर कद्दू, कद्दू पर छुरी**

हर हालत में बात वही है। कद्दू ही कटेगा।

**छुरी पाता हूं, तो आपको नहीं पाता।**
**आपको पाता हूं, तो छुरी नहीं पाता।**

किसी के प्रति अपना तीव्र रोष और विद्वेष प्रकट करना।

**छुरी भली न कटारी, (स्त्रि०)**

दोनों ही प्राण-लेवा है।

**छूंछा का संग न साथी, महल्ला दुआरे झूमले हाथी (भो०)**

गरीब का कोई साथ नही देता, पर भले आदमी के दरवाजे हाथी झूमता है।

**छूछी कढ़ाई, मजीर का फोरन**

खाली कढ़ाही को मोरचा ही खा लेता है।
बेकार पड़े रहने से चीज खराब हो जाती है।

**छूंछी हांड़ी बाजे टन-टन**

खाली बर्तन अधिक आवाज करता है।
बुद्धिहीन बहुत बोलता है। अथवा कम पैसेवाला अधिक दिखावा करता है।

**छूछे फटके उड़-उड़ जाए**

खाली या घुने हुए अनाज में कोई वजन नहीं होता। फटकने पर वह उड़ जाता है।

(१) मूर्ख साधनहीन से किसी प्रकार की सहायता की आशा नही करनी चाहिए।

(२) कम बुद्धिवाला मनुष्य परीक्षा में बहुत कम खरा उतरता है।

(३) जो जितना कम जानता है, वह उतना ही दंभ भी करता है।

**छूट भलाई, सारे गुन** (स्त्रि०)

भलाई छोड कर और सब गुण है।

बुरे मनुष्य के लिए क०।

**छूटल घोड़ा भुसौले ठाढ़,** (पू०)

(१) किसी चीज़ को पाने की लालसा, जब आदमी घूम फिर कर फिर उसी जगह पहुंच जाए, जहा वह चीज मिल रही है, तब क०। बच्चे प्राय: खाने-पीने की वस्तु के लोभ से बार-बार रसोईघर का चक्कर लगाते है, तब मा कहा करती है।

(२) जब किसी मनुष्य का कही ठिकाना न हो और वह घूम फिर कर उसी जगह आ जाए, तब भी क०।

भुसौला—भुस रखने की जगह।

(प्र० पा०—छूटी घोड़ी भुसैले खडी।)

**छूटो बैल भुसौरी में**

दे० ऊ०।

**छेरी जी से गई, खानेवालों को सुवाद न आया** (स्त्रि०)

किसी के आत्म-त्याग या परिश्रम की जब प्रशंसा न की जाए, तो क०।

**छैल छींट, बगल में ईंट**

(१) ऐसा व्यक्ति जो बहुत शौकीनी से रहता हो, पर जिसके पल्ले कुछ न हो।

(२) बेतुके शौक के लिए भी कह सकते हैं।

**छोटा घर, बड़ा समधियाना,** (स्त्रि०)

जहां स्थान की संकीर्णता की वजह से कोई काम अच्छी तरह न किया जा सके, अथवा लोग बैठ न सकें, वहां क०।

(समधियाना लड़की या लड़के के ससुर के घर को कहते है। पर समधियाना वह दस्तूर भी कहलाता है जो समधियों या समधिनो के पहली बार मिलने पर होता है। यह बड़े गाजे-बाजे के साथ किया जाता है और इस अवसर पर सभी सगे-सबंधी और सजातीय स्त्रियां बुलाई जाती हैं। उसी से कहावत बनी। यह बुदेलखड मे 'सकरे मे समधियाना' इस रूप में प्रचलित है।)

**छोटा मुंह बड़ा निवाला**

(१) सामर्थ्य से बाहर काम करने की चेष्टा करना।

(२) किसी की ऐसी चीज़ को हथियाना, जो हजम न हो सके।

(३) बेजोड संबध के लिए भी कह सकते है।

निवाला=कौर।

**छोटा मुंह बड़ी बात**

बडो के सामने धृष्टता दिखाना।

**छोटा सब से खोटा**

छोटा सब से खराब।

(प्राय. हँसी मे ही कहते है।)

**छोटा सो मोटा**

ठिगना आदमी तगडा होता है।

**छोटी ननद अंगिया का बंद, बड़ी ननद बिजली बसंत,** (स्त्रि०)

किसी ऐसी स्त्री का कथन, जो अपनी छोटी ननद को प्यार करती है, पर बड़ी से घबराती है।

**छोटी बूंद बरसे चौंकाए, आलस सभी** मिट ए

किसी चिताग्रस्त या उद्विग्न मनुष्य के लिए कहा गया है कि छोटी बूद बरसने से ही वह चौक उठता है और सतर्क हो जाता है। पति के आने की प्रतीक्षा में बैठी विरहिणी के लिए कह सकते हैं।

**छोटी-मोटी कामनी, सब हो विष की बेल।**
**बैरी मारे दांव से, यह मारे हँस खेल।**

स्पष्ट।

कामनी -कामिनी, स्त्री।

दाव से=मौक़ा पाकर।

**छोटी-सी गौरय्या, बाघों से नज्जारा,** (पू०)

जब कोई सामान्य मनुष्य बड़ों का मुकाबला करे, तब क०।

गौरैय्या = चिड़िया विशेष जो घरों में रहती है।

**छोटी-सी बछिया, बड़ी-सी हत्या, (हिं०)**

जो पाप बड़ी गाय के मारने से लगता है, वही छोटी बछिया के मारने से भी। बुरा कर्म तो हर हालत में बुरा ही रहेगा।

**छोटे मियां तो छोटे मियां, बड़े मियां सुभान अल्लाह**

प्राय: हँसी मे ही कहते है कि छोटे मियां जो है, सो तो हैं ही, पर बड़े मियां उनसे भी बढ़-चढ़ कर है।

**छोटे-से गाजी मियां, बड़ी-सी दुम**

यह एक तुकबंदी का अश है। प्राय: लड़को से हँसी में उस समय कहते है, जब वे कोई बहुत ढीला-ढाला वस्त्र पहिन लेते है।

**छोड़ चले बंजारे की सी आग**

किसी ऐसी स्त्री का कथन, जिसका प्रेमी उसे छोड़ कर चला गया है।

बंजारे घुमक्कड़ जाति के लोग है। वे जहा ठहरते है, वहां भोजन बना कर और खा पीकर फिर आगे बढ़ जाते है। भोजन के लिए वे जो आग सुलगाते है, वह वही पड़ी रहती है। उसी से कहावत में अभिप्राय है। पर आग से मतलब यहा 'प्रेम की आग' से भी है।)

**छोड़ जाट, पराई खाट**

जब कोई मनुष्य किसी के साथ बहुत अत्याचार कर रहा हो। उदाहरण के लिए जबर्दस्ती किसी की चीज पर कब्जा कर लिया हो।

**छोड़ झाड़ मुझे डूबन दे, (स्त्रि०)**

ऐ झाड़। मुझे मत पकड़। मै तो डूब कर ही रहूंगी। जब कोई आदमी ग़लत काम करने का इरादा करके उसे न करना चाहे और उसके लिए कोई बहाना बनाए कि अब मैं अमुक कारण से ऐसा नही कर रहा हूं। (कथा है कि एक स्त्री आत्महत्या करने के इरादे से तालाब में कूद पड़ी। पर बाद मे घबराई और प्राणरक्षा के लिए उसने झाड़ी पकड़ ली। लोग जब उसे बचाने दौड़े तो वह चिल्लाई—'नही नही, मैं तो डूबकर ही रहूंगी। छोड़ झाड़, मुझे डूबने दे।')

**छोड़े गांव का नाम क्या?**

जिससे अब कुछ प्रयोजन ही नहीं, उसकी चर्चा से क्या लाभ?

**छोड़े गांव से नाता क्या?**

छोड़े हुए स्थान से अब हमें मतलब क्या?

**छोड़ो, बी बिल्ली, चूहा लंडूरा ही जाएगा, (स्त्रि०)**

किसी बिल्ली ने चूहा पकड़ लिया। उसकी दुम कट गई। तब कहा जा रहा है कि 'बिल्ली रानी, चूहे को छोड़ो। उसकी दुम कट गई, कोई बात नही। वह बिना दुम के ही जिएगा।' अभिप्राय यह कि—'बस बहुत हो गया, अधिक ज्यादती न करो।'

## ज

**जंगल जाट न छेड़िए, हट्टी बीच किराड़।**
**भूखा तुर्क न छेड़िए, हो जाए जी का झाड़।**

जंगल मे जाट को, दूकान में दूकानदार को और भूखे तुर्क को नही छेड़ना चाहिए, नहीं तो ये जान की आफत कर देते है।

**जंगल में खेती नहीं, बस्ती में नहीं घर**

कही कुछ न होना।

**जंगल में मंगल, बस्ती में कड़ाका**

जंगल में भोज, नगर मे उपवास। उल्टा काम।

**जगल में मंगल, बस्ती में बीरान।**

**जा घर भांग न संचरे, वह घर भून समान।**

भंगेड़ियों का भंग छानने की प्रशंसा में कहना।

**जंगल में मोती की क़द्र नहीं**

वहां कौन मोती की परख करे?

**जंगल में मोर नाचा, किसने जाना?**

अपनी योग्यता, धन-संपत्ति या वैभव को ऐसे स्थान पर दिखाने से क्या लाभ, जहां अपना कोई परिचित मौजूद न हो अथवा जहां उसकी कोई कद्र न कर सके।

**जख्मी दुश्मनों में दम ले तो मरे, न दम ले तो मरे**

दोनों तरह से संकट। शत्रुओं को अगर मालूम

हो जाए कि अभी यह जिंदा है, तो वे मार डालेंगे। और सास लेना बद कर देने से तो मर ही जाएगा।

**जग जला तो जलने दे, मैं आप ही जलती हूं, (स्त्रि०)**

स्वयं मुसीबत मे हू, दूसरे की मुसीबत क्या देखू।

**जग जानी वेस बखानी**

ऐसी बात, जिसे सब जानते हों।

**जग जीता मोरी कानी, वर ठाढ़ होय तब जानी**

जब एक आदमी दूसरे को धोखा दे, लेकिन दूसरे ने भी उसे धोखा दे रखा हो, तब क०।

(कथा है कि कुछ लोगो ने धोखा देकर एक कानी लडकी का ब्याह एक लडके के साथ ठीक किया। वर पक्ष के लोगो को जब इसका पता चला, तो वे एक लगडे को दूल्हा बनाकर ले गए। ब्याह हो जाने पर कन्यापक्ष के लोगा ने कहा—'जग जीता मोरी कानी', तब वरपक्ष की ओर से जवाब मिला 'वर ठाढ होय तब जानी।' अर्थात दूल्हा जब खडा हो, तब तुम्हे पता चलेगा कि जीत किसकी रही, तुम्हारी कानी लडकी की या हमारे लगडे वर की।)

**जग दर्शन का मेला है**

यह संसार मिलजुल कर ही रहने की जगह है।

**जगन्नाथ का भाता, जिसमे झगड़ा न झांसा**

ऐसा काम, जिसमें शंका की गुजाइश न हो।

(जगन्नाथपुरी के मदिर मे भात का प्रसाद बटता है। उसे जात-पात का विचार किए बिना सब लोग सहर्ष स्वीकार करते है। कहा० उसी पर आधारित है।)

**जगन्नाथ के भात को किनने न पसारो हाथ?**

ऊ० दे०।

जगन्नाथ जी के प्रसाद की महिमा मे कहा गया है।

(प्र० प्रा०—जगन्नाथ के भात को जगत पसारे हाथ।)

**जग में देखत ही का नाता**

(१) संसार के सब नाते झूठे हैं।

(२) जब तक मनुष्य जीता है, तभी तक सब नाते है।

**जच्चा और बच्चा दोनों जियें, (स्त्रि०)**

आशीर्वाद।

**जड़ काटते जायं, पानी देते जायं**

(१) जब कोई आदमी किसी चीज को बनाने जाकर अपनी मूर्खता से उसे बिगाड रहा हो।

(२) धोखेबाज मित्र के लिए भी कह सकते हैं

**जड़ को पकड़ो, शाखाओ को क्या पकड़ते हो?**

मूल चीज की ओर ही ध्यान देना चाहिए।

**जतने के तीन रोटी, ततने की टिकड़ी।**

**अलग करो तीन रोटी, एने लावा टिकड़ी (पू०, स्त्रि०)**

जितने (आटे) की तीन रोटिया बनी है, उतने की एक टिकडी बनी है। तीन रोटिया अलग करो, टिकडी ही लाओ। इसलिए कि एक मोटी रोटी खाने से तो एक ही रोटी मानी जाएगी और तीन खाने से तीन रोटियो की गिनती की जाएगी।

**जनती न ढोल बजता, (स्त्रि०)**

किसी स्त्री का अपने मूर्ख पुत्र के सबध मे कहना, जिसके कारण घर की बदनामी हो रही है।

(लडका पैदा होने पर ढोल बजता है। साथ ही ढोल बजने का अर्थ ढिंढोरा पिटना या बदनामी होना भी है।)

**जनना और मरना बराबर है, (स्त्रि०)**

प्रसव में स्त्री को बडा कष्ट होता है।

**जनम के कमबख्त, नाम बख्तावरसिंह**

गुण के विरुद्ध नाम।

**जनम के दुखिया, नाम सदासुख**

दे० ऊ०।

**जनम के दुखिया, करम के हीन, तिनका देव सिलंगवा कीन**

स्पष्ट।

(फौज का सिपाही कभी घर पर नही रह पाता, इसलिए ऐसा कहा गया है।)

**जनम के मगता, नाम दाताराम**

दे० ऊ०।

(इस तरह की सब कहावतो का यह अर्थ नही है कि वे गुण के विरुद्ध नाम होने पर ही प्रयुक्त की जाती हो। वास्तव मे वे व्यग्य मे किसी को नीचा बताने के लिए ही कही गई हैं।)

**जनम के साथी हैं, करम के साथी नहीं**
(१) बुरे कामों का कोई साथी नहीं होता।
(२) भाग्य में कोई हिस्सा नहीं बंटा सकता। सब अपना-अपना भोगते हैं।

**जनम-जनम की छूट गई**
(१) जन्म-जन्मान्तर के लिए छुटकारा पाया।
(२) जन्म-जन्मान्तर के लिए कलंक धुल गया।

**जनम न देखा बोरिया, सपने आई खाट**
(१) झूठी शान दिखानेवाले के लिए क०।
(२) साधारण स्थिति में रहकर बड़ी-बड़ी चीज़ों का स्वप्न देखनेवाले के लिए भी क०।
बोरिया = टाट का बोरा।

**जनम पत्र सब देखते हैं, करमपत्र कोई नहीं देखता**
भाग्य-लिखा कोई नहीं जान सकता।

**जनम पत्र की विध तो मिला लो**
जल्दी न करो, पहले देख तो लो कि यह काम होगा कैसे?
(हिन्दुओं के यहा विवाह मे वर और कन्या की जन्मपत्री देखी जाती है। जब उनके गुण ज्योतिष के अनुसार परस्पर मिल जाते है, तभी विवाह पक्का होता है।)

**जने-जने का मन रखते, वेश्या हो गई बांझ**
सबको प्रसन्न रखना बड़ा कठिन है। इस तरह के प्रयास में वेश्या का जीवन ही अकारथ जाता है।

**जफ़ा झफ़ा राजाओं पर पड़ती आई है**
विपत्ति सब पर पड़ती है।

**जब अपना उतार लाता दूसरे की उतारते क्या लगता है?**
जिस आदमी ने अपनी इज्जत की परवाह नहीं की, वह दूसरे की इज्जत की परवाह क्यो करने चला?
(उतारने का मतलब इज्जत उतार लेने से है।)

**जब आंखें चार होती हैं, मुहब्बत आ ही जाती है**
(१) आपस में मिलने पर प्रेम उत्पन्न हो ही जाता है। अथवा
(२) मिलने पर लिहाज़ करना ही पड़ता है।

**जब आया देही का अंत, जैसा गदहा वैसा संत**
मृत्यु के लिए सब बराबर हैं।

**जब आवे बरसन का चाव, पछवा गिने न पुरवा बाव, (कृ०)**
बरसनेवाले बादल बरसकर ही रहते हैं, फिर चाहे पश्चिम की हवा चले या पूरब की।
(वैसे पश्चिम की हवा चलने पर ही वर्षा होती है।)

**जब ऐसे हों, तब ऐसे हों**
जब तुम्हारे ऐसे (बुरे) कर्म हैं, तभी तुम्हारी ऐसी (बुरी) दशा है।

**जब करी आस, तब आए तेरे पास**
तुमसे आशा करके ही हम आए हैं।
('जब करें आस, तब आये तेरे पास' इस प्रकार भी यह कहावत सुनी जाती है।)

**जब चने थे तब दांत न थे, जब दांत हुए तब चने नहीं**
साधनो के रहते उनका उपयोग नहीं किया जा सका और जब उनका उपयोग करने के योग्य हुए, तब साधन नही।

**जब जैसा, तब तैसा**
जब जैसा समय हो, तब तैसा ही काम करना चाहिए।

**जब तक ऊंट पहाड़ के नीचे नहीं आता, तब तक वह जानता है 'मुझसे ऊंचा कोई नहीं'**
जब तक किसी मनुष्य का अपने से अधिक योग्य व्यक्ति से मुकाबला नही पड़ता, तब तक वह अपने को ही सबसे बड़ा समझता है। अंधेरे में रहना।

**जब तक करूं 'बाबू, बाबू', तब तक करूं अपने काबू, (स्त्रि०)**
जब तक 'बाबू, बाबू' अर्थात खुशामद करती रहती हूं, तब तक वह मेरे काबू में रहता है।

**जब तक गंगा जमुना बहे**
जब तक पृथ्वी रहे।

**जब तक चांद सूरज हैं**
जब तक यह सृष्टि है।
(ऊपर के दोनों वाक्य आशीर्वाद देने के लिए प्रयुक्त होते हैं।)

**जब तक जीना, तब तक सीना, (स्त्रि०)**
जब तक आदमी ज़िंदा रहता है, तब तक उसे संसार के कामों में लगा ही रहना पड़ता है।

**जब तक तंगदस्ती है, परहेज़गारी है**
आर्थिक कठिनाई जब तक रहती है, तब तक आदमी संयम से काम लेता है।

**जब तक दम है, तब तक ग़म है**
जीवन में एक न एक दुख लगा ही रहता है।

**जब तक पहिया लुढ़कता है, तभी तक गाड़ी है**
(१) जब तक कोई वस्तु काम में आती रहे, तभी तक उसके नाम की सार्थकता है। अथवा (२) अवसर का उपयोग कर लेना चाहिए। (पहिए का लुढ़कना बंद होने पर गाड़ी, फिर निकम्मी हो जाएगी, उससे काम नहीं लिया जा सकेगा।)

**जब तक पहिया लुढ़के, लुढ़काए जाओ**
जब तक भी काम चलता रहे, चलाते रहना चाहिए। बीच में थककर मत बैठो।

**जब तक बहू कुंआरी, तब तक सास बारी।**
**बहू आई गौद में, लाड़ गया हौद में। (स्त्रि०)**
जब तक बहू पुत्रवती नहीं होती, तभी तक सास का उस पर लाड़-प्यार रहता है। पुत्रवती होने पर वह प्यार लड़के पर केंद्रित हो जाता है।

**जब तक रकाबी में भात, तब तक मेरा तेरा साथ**
स्वार्थमय प्रेम।

**जब तक सांस, तब तक आस**
(१) सांस जब तक रहती है, तब तक (मरणासन्न आदमी के) जीवित रहने की आशा भी रहती है। (२) आशा अन्त तक मनुष्य का साथ नहीं छोड़ती या अन्त तक आशा रखो।

**जब तीर छट गया, तो फिर कमान में नहीं आ सकता**
(१) मुंह से निकली बात फिर लौट नहीं सकती। इसलिए सोच-विचार कर बात करे।
(२) एक बार जो काम हो जाता है, वह फिर व्यर्थ नहीं जा सकता।

**जब तू न्याय की गद्दी पर बैठे तो अपने मन से तरफ़दारी, लालच और क्रोध को दूर कर**
स्पष्ट। नीति वाक्य।

**जब तेरे पेट में खुड़िया लगे, तब मीठा और सलोना क्या रे?**
भूख में मीठा और नमकीन सब बराबर।
खुड़िया=क्षुधा।

**जब दांत न थे, तब दूध दियो, जब दांत भये का अन्न न देयगो**
ग़रीबी में ईश्वर पर भरोसा रखने के लिए कहा गया है।

**जब दिन आए भले, तब लड्डू मारे, चले, (पू०)**
अच्छे दिन आने पर लड्डू अपने-आप खाने को मिलने लगते हैं। किसी भाग्यवादी का कथन। ('मारना' एक मुहा० है, जिसका अर्थ बिना परिश्रम के बहुत-सी चीज़ प्राप्त करना होता है।)

**जब दिया दिल तो फिर अन्देशा-ए रुसवाई क्या?**
जब प्रेम ही किया, तो फिर बदनामी का क्या डर?

**जब देखो तब नाज़िर मियां नत्थू का टाला**
जब देखो तब मियाँ नत्थू मौजूद।
(ऐसे मुफ़्तख़ोरे के लिए क०, जो हमेशा दरवाज़े पर आ जाया करता हो।)
टाला=आना-जाना, घूमना।

**जब देना होता है, तो छप्पर फाड़कर देता है**
ईश्वर को जब देना होता है, तब वह देने का रास्ता निकाल ही लेता है। भाग्यवादी की उक्ति।

**जब नटनी बांस पर चढ़ी, तो घूंघट क्या?**
जब किसी काम को करने पर उतारू ही हो गए, तो फिर उसमें संकोच से क्या लाभ?
(नटनी यानी नट की स्त्री बांस पर चढ़कर तरह-तरह की कलाबाज़ियां दिखाती है। अब यदि वह घूंघट से अपना मुंह छिपा ले, तो फिर खेल कैसे दिखाएगी?)

**जब नाचने निकली, तो घूंघट क्या?**
दे० ऊ०।
(इस कहावत का भाव भी लगभग ऊपर की कहावत जैसा ही है। पर मुहावरे में नाचने का अर्थ निर्लज्ज

बनकर काम करना भी होता है। इसलिए यहां उसका यह अभिप्राय लगाना अधिक ठीक होगा कि किसी बुरे काम को भी करने का इरादा यदि किया, तो उसे अच्छी तरह ही करना चाहिए।)

**जब प्रजा नहो, तो राजा कहां ?**

प्रजा से ही राजा होता है।

**जब फेंका तब पांच तीन**

जब पांसा फेंकते हैं, तब पांच और तीन ही पड़ते है। किसी काम मे हमेशा सफल होना।

(चौसर के खेल मे पांच और तीन के पांसे अच्छे माने जाते है। उनसे गोटों के चलने मे सुभीता होना है।)

**जब बिगड़े जब सुघड़ नर, क्या बिगड़ेगा कूढ़।**
**मट्ठे का क्या बिगड़ना, जब बिगड़े जब दूध।**

जब बिगडता है, तब चतुर आदमी ही बिगड़ता है। मूर्ख क्या बिगडेगा। मट्ठा नही बिगड़ता, जब बिगड़ता है, तब दूध ही बिगड़ता है।

**जब भये सौ, तब भाग गया भय, (व्य०)**

कर्ज की रकम सौ पर पहुंच जाने पर अधिक चिन्ता नही रहती। (तब फिर साहूकार को ही फिक्र रहती है कि वह किसी तरह वसूल हो जाए।)

**जब भाजन का होय लुगाई,**
**तोरे कोट और फांदे खाई।**

दुराचारिणी को बुरे मार्ग पर जाने से कोई रोक नहीं सकता।

**जब भी तीन और अब भी तीन, जब पाए तब तीन ही तीन**

स्थिति में कोई परिवर्तन न होना।

**जब भूख लगी भड़ुवे को, तंदूर की सूझी,**
**और पेट भरा उसका तो फिर दूर की सूझी, (स्त्रि०)**

(१) स्त्री का अपने निकम्मे पति के संबंध में कहना।

(२) दिखावटी प्रेम करना।

**जबर की जोय महतारी होय, निबल की जोय मेरी साली, (पू०)**

जबर्दस्त की स्त्री को मां समझते हैं, और कमज़ोर की स्त्री को साली बनाते है। निबल को सब सताते हैं।

**जबर्दस्त का ठेंगा सिर पर**

ज़बर्दस्त के आगे सबको दबना पड़ता है।

**जबर्दस्त की बीसों बिस्वा**

ज़बर्दस्त की सब बात ठीक।

बिस्वा = बीघे का बीसवां भाग।

'बीसों बिस्वा' एक मुहावरा भी है, जिसका अर्थ है निश्चित, निस्सन्देह, सही।

**जबर्दस्त की लाठी सिर पर**

दे०—ज़बर्दस्त का ठेंगा...।

**जबर्दस्त मारे और रोने न दे**

जबर्दस्त कमजोर को हर तरह से दबाता है।

**जबर्दस्त सबका जंवाई**

सब उससे दबते हैं।

**जब लग पैसा गांठ में, तब लग उसका भार।**
**साईं इस संसार में, स्वारथ का व्यौहार।**

स्पष्ट।

**जब लग साक़ी, तब लग आस**

स्पष्ट।

साक़ी = (१) वह जो दूसरों को शराब पिलाता है।

(२) प्रेमिका या प्रिय के लिए प्रयुक्त होनेवाला एक शब्द।

**जब लागी चाट, तब सूझा हलवाई का हाट**

चटोरे के लिए क०।

**जब ले सखा के भाव आई, तब ले पूत के आंखी जाई, (पू०)**

जब तक ओझा के सिर देवता आएंगी, हैं, तब तक लड़के की आंखे ही चली जाएंगी। मतलब—जब तक सहायतार्थ प्रतीक्षा करेंगे, तब तक काम ही बिगड़ जाएगा।

(कुछ समय पहले तक ग्रामीण जनता अज्ञान के कारण साधारण रोगों को चिकित्सा के लिए भी झाड़-फूंक और टोना-टोटका की शरण लिया करती थी। ओझा या गुनिया के सिर देवता आते थे, और वह जैसा कहता था, वही किया जाता

था। कहावत उसी प्रथा पर आधारित है। किसी के लड़के की आंखों में दर्द है। पर ओझा के सिर देवता आने में देर हो रही है। तब उपर्युक्त बात उसने कही।)

**जब लौ कुठला में नाज, तब लौ जलहट्ट को राज, (पू०)**

साधारण आदमी के पास जब तक खाने को रहता है, तब तक वह किसी की परवाह नहीं करता।

**जब सती सत पर चढ़े, तो पान खाना रस्म है। आबरू जग में रहे, तो जान जाना पश्म है।**

सती जब अपने पति के साथ चिता मे जलने लगती है, तो उसे पान खाने को मिलता है। संसार में प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए प्राण भी देना पडे, तो कोई बात नही।

**जब सब पनहारी तो पनहारी कहाई**

जब और सब काम करके हार गई, तब पनहारी बनी। पनहारिन की निंदा।

**जब से उगे बाल, तब से यही हवाल, (स्त्रि०)**

जब से बड़े हुए, तब से यही हाल है। प्रायः बुरे लड़के के लिए क०।

**जबान के आगे लगाम जरूर चाहिए**

मुंह से वात संभालकर निकालनी चाहिए।

**जबान के आगे लगाम नहीं**

जब कोई न कहने योग्य बात कहे, तब क०।

**जबान के नीचे जबान है**

दो भिन्न प्रकार की बात करना।

**जबान क्या चली, दो हल चल गये**

जो मन में आए सो कह दे, उसके लिए क०।

**जबान जने एक बार, मां जने बार-बार**

जबान से जो बात निकली सो निकली, उसे पलटना नहीं चाहिए।

**जबान मत फेरो**

कही हुई बात की रक्षा करो।

**जबान शीरीं, मुल्कगीरी, जबान टेढ़ी, मुल्क बांका**

मीठी बोली से आदमी सबको वश में कर लेता है। कड़वे वचन बोलने वाले के सब शत्रु बन जाते हैं।

**जबान से खंदक पार**

डींग हांकनेवाले के लिए क०। केवल बातों से ही खंदक पार।

**जबान से बेटा-बेटी पराये होते है**

जबान देकर बदलना नही चाहिए। जिसे जबान दे देते है, उसी के यहां लड़के-लड़की का सम्बन्ध करते है।

**जबान ही हलाल है, जबान ही मुरदार है**

जीभ ही न्याय करती है और जीभ ही अन्याय।

**जबान ही हाथी चढ़ावे, जबान ही सिर कटवावे**

बातो से ही हाथी चढ़ने को मिलता है, और बातो से ही आदमी मारा भी जाता है। इसलिए बात सोच समझकर करना चाहिए।

(बातो हाथी पाइये, बातो हाथी पांव।)

**जबानी जमा खर्च बताना**

कोरी बात करना।

**जमना किनारे घर किया, कर्ज काढ़ के खायं। जब आवे कोई मांगने, गड़प जमुना में जायं।**

जो उधार लेकर खाए और न दे, उसके लिए क०।

**जम से बुरी जनेत, (हिं०)**

बराती यम से भी बुरे होते है, क्योकि लड़कीवाले को उनपर खर्च करना पड़ता है।

**जमात करामात**

संगठन मे ही बल है।

**जमा लगे सरकार की और मिरजा खेले फाग**

दूसरे के पैसे पर मौज करना।

**जमींदार की जड़ हरी**

जमीदार हमेशा मौज करता है।

**जमींदार को किसान, बच्चे को मसान**

जमीदार के लिए किसान वैसा ही है, जैसा बच्चों के लिए प्रेत।

(मसान एक प्रेत होता है।)

**जमींदारी दूब की जड़**

हमेशा फलती-फूलती रहती है।

दूब एक घास, जो बहुत फैलती है।

**जमीन-आसमान के कुलाबे मिलाते हैं**

बहुत बातूनी या झूठे के लिए क०।

**ज़मीन सख़्त और आसमान दूर है**

कहां जाकर शरण लूं? किसी विपदग्रस्त का कथन।

**ज़र का ज़ायल करना जी से जी मरना है**

धन को बर्बाद करना जीते-जी मरना है।

**ज़र का ज़ोर पूरा है और सब अधूरा है**

पैसे का बल ही बड़ा बल है।

**ज़र का तो ज़र्रा भी आफ़ताब है, बेज़र की मट्टी ख़राब है**

धन का तो एक कण भी सूर्य के समान है, धनहीन की बर्बादी होती है।

**ज़र को ज़र ही खेंचता है**

धन से धन पैदा होता है।

**ज़र गया ज़र्दी छाई, ज़र आया सुर्खी आई**

बिना पैसे के आदमी उदास नजर आता है, पैसे से खुश दिखाई देता है।

**ज़र, ज़मीन, ज़न, झगड़े की जड़**

जब झगड़ा होता है, तब संपत्ति, जमीन और स्त्री को लेकर।

**ज़र, ज़ोर खुदादाद है**

धन और बल ईश्वर की देन है। भाग्यवादी का कथन।

**ज़रदार का सौदा है, बेज़र का ख़ुदा हाफ़िज़**

धनी ही हर चीज़ खरीद सकता है, धनहीन का तो ईश्वर मालिक है।

**ज़र दीजे हज़ार मगर दिल न दीजे, उलफ़त बुरी बला है, किसी से न कीजे**

रुपया दे दे, पर दिल न दे। प्रेम बुरी चीज़ है, किसी से न करे।

**ज़र नेस्त इश्क टें-टें**

बिना पैसे के इश्क नहीं होता।

**ज़र फैलाया और कार बराया**

पैसा खर्चा और काम बना।

**ज़र बल न ज़ोर बल**

(१) न धन-बल, न शरीर-बल।

(२) धन-बल ही सच्चा बल है, शरीर का बल उसके सामने कुछ नहीं।

**ज़र हज़ार ऐब लगाता है, बेज़र बिगड़ा नज़र आता है**

धन से हज़ार काम संभलते हैं, धनहीन बिगड़ा नज़र आता है।

**ज़र है तो नर है, नहीं तो खंडहर है**

पैसे के बिना कोई नही पूछता।

**ज़र है तो नर है, नहीं तो पंछी बेपर है**

पैसे से ही आदमी का महत्व बढ़ता है।

**ज़रा ज़रा-सा कर लिया, और अपना पल्ला भर लिया**

थोड़ा-थोड़ा संचय करने से बहुत हो जाता है।

**ज़रा न ज़द्दूर, गांठ मेरी भरपूर**

पास मे कुछ नही? और कहते है मै मालदार हूं।

ज़द्दूर=संपत्ति।

**ज़रा-सा खावे बहुत बतावे, वह है बहू सुघड़ैली।**
**बहुत खावे कम बतलावे, वह बहू अड़ बिगड़ैली।**

जो बहू थोड़ा खाए और बहुत बताए, वही सुघड़ है, जो बहुत खाए और थोड़ा बताए, वह बिगड़ैल है।

**ज़रा-सा मुंह बड़ा-सा पेट**

बहुत खाऊ या द्वेष रखनेवाले लड़के के लिए क०।

**ज़रा-सा मुंह बड़ी बातें**

लड़के के लिए क०।

जरे जाये, सूझे सुक्कर, (पू०)

मरने जा रही है, फिर भी शुक्र देख रही है। (शुक्र एक अशुभ ग्रह माना जाता है। कहावत का अभिप्राय यह है कि पति के साथ चिता में जलने जा रही है, किन्तु शुभ-अशुभ नक्षत्र की चिन्ता कर रही है।)

**जलते की जाई, ग़रीब के गले लगाई**

अभागे की लड़की ग़रीब को ब्याही।

जैसे को तैसा मिलना।

**जलमय भगवान है**

स्पष्ट।

**जल में खड़ी प्यासों मरे, (स्त्रि०)**

अभाव न होते हुए भी कष्ट भोगना।

**जल में बसे कमोदनी, और चंदा बसे अकास।**
**जो जन जाके मन बसे, सो जन ताके पास।**
स्पष्ट।

**जल में मछली, नौ-नौ कुटिया बखरा**
मछली अभी पानी में है फिर भी लोग उसे नौ नौ टुकड़े करके आपस में बांट रहे हैं।
काम पूरा हुआ नहीं, फिर भी हिस्सेदार अपना हिस्सा लगा रहे है।

**जल सूर बामन, रनसूर छत्री, कलम सूर कायथ, गंड सूर खत्री**
ब्राह्मण नहाने में, क्षत्रिय लड़ाई में, कायस्थ कलम चलाने में बहादुर होता है। खत्री कायर होता है। यह सब धारणाएं है, जिनका आधार तो होगा ही, पर चिर-सत्य नही।

**जलाने को फूस नहीं, तापने को कोयला**
ऊंचा दिमाग रखनेवाले को क०।

**जले को जलाना, नमक-मिर्च लगाना**
पीड़ित को और कष्ट देना।

**जले घर की बलेंडी**
ऐसा व्यक्ति जो परिवार मे अकेला बचा हो।
बलेंडी=वह लंबी लकड़ी, जिसके सहारे छप्पर रखा जाता है।

**जले पराई धी और हंसे बटाऊ लोग**
दूसरे की हानि होते देख प्रसन्न होना।
धी=लड़की। बटाऊ=राहगीर।

**जले पांव की बिल्ली, (स्त्रि०)**
ऐसी स्त्री जो लड़ाई-झगड़ा करती फिरे।

**जले फफोले फोड़ते हैं**
किसी पर अपना गुस्सा उतारना, कोसना, गाली देना।

**जलेबियों की रखवाली और चोट्टी कुतिया**
अविश्वसनीय आदमी को किसी चीज़ की रखवाली का काम सौंप देना।

**जले हुए तो पत्थर मारा करते हैं**
ईर्ष्या-द्वेष से कुढ़ा बैठा आदमी पत्थर तो फेंकेगा ही। मतलब किसी न किसी तरह अपना गुस्सा उतारेगा ही।

**जले हुए यों ही कहा करते हैं**
स्पष्ट। दे० ऊ०।

**जवान जाय पताल, बुढ़िया मांगे भतार, (पू०)**
जवान तो मरी जा रही है और बुढ़िया ब्याह किया चाहती है। असगत बात पर क०।

**जवान डरावे भागने से, बूढ़ा डरावे मरने से**
स्पष्ट।

**जवान रांड, बूढ़े सांड़**
दे०—जवान जाय पताल...।

**जवानी और उस पर शराब, दूनी आग लगती है**
स्पष्ट।

**जवानी दीवानी**
जवानी मे आदमी पागल हो जाता है। उसे अच्छा-बुरा नही सूझता।

**जवानी में गधे पर भी जोबन होता है**
युवावस्था मे कुरूप मनुष्य भी सुन्दर लगता है।

**जवानों को चला-चली, बुढ़िया को ब्याह की पड़ी**
उल्टा काम।

**जवाब तुर्की-बतुर्की**
जैसे को तैसा जवाब।

**जवाबे जाहिलां बाशद खामोशी (फा०)**
मूर्ख की बात का जवाब मौन है।

**जस किया तस पाया**
जैसा किया, वैसा फल मिला।

**जस केले के पात में, पात पात में पात।**
**तस ज्ञानी की बात में, बात बात में बात।**
केले के पौधे मे पत्ते ही पत्ते होते है, उसी प्रकार बना हुआ ज्ञानी कोरी बातें करता है।

**जस दूलह तस बनी बराता**
जैसा आदमी वैसे ही उसके साथी भी।

**जस मुकुंद तस पावल घोड़ी, बिधना आन मिलावल जोड़ी**
जैसे मुकुंद हैं, वैसी ही उन्हें घोड़ी भी मिल गई। ईश्वर ने स्वयं आकर जोड़ी मिलाई। जैसा आदमी

वैसा ही उसका साज-सरंजाम या साथी भी हो, तब क०। दे०---जस दूल्ह...।

**जहां का मुरदा तहां ही गोर**

जहां का मुरदा होता है वही गड़ता है। जहां की चीज़ वहीं ठिकाने लगती है।

**जहां कुत्ता होता है, वहां नेकी का फ़रिश्ता नहीं आता**

स्पष्ट।

मुसलमानों का एक विश्वास।

**जहां के मरदे तहां ही गड़ते हैं**

स्पष्ट।

दे०---जहां का मुरदा...।

**जहां खर्च नहीं, वहां हर एक गांठ का पूरा**

जहां पैसे की ज़रूरत नहीं, वहां हरेक की जेब भरी रहती है---जहां ज़रूरत होती है, वहां जेब खाली हो जाती है।

**जहां खाना, वहां सबका ठिकाना**

जहां आदमी की गुज़र-बसर हो, वही उसका ठिकाना भी समझना चाहिए।

**जहां गंग, वहां रंग**

गंगा-स्नान करनेवाले का कहना कि गंगा के साथ रंग भी है।

**जहां गंज वहां रंज**

जहां पैसा होता है, वहां परेशानियां भी बहुत होती हैं।

गंज=ढेर, धनराशि।

**जहां गढ़ा होगा, वहां पानी भरेगा**

अर्थात कीचड़ होगा। गोसाईं तुलसीदास जी ने कहा है---

अतहु कीच तहां जहं पानी।

**जहां गुड़ होगा, वहां मक्खियां आयेंगी**

जहां पैसा होगा, वहां खाने-पीनेवाले भी पहुचेंगे।

**जहां जाय भूखा, वहां पड़े सूखा**

दुखिया को सब जगह दुख है।

**जहां जायें बाले मियां, तहां जाये पूंछ**

जब कोई हमेशा किसी के साथ लगा रहता है, तब क०।

**जहां जिसके सींग समायें, वहां निकल जायें**

जहां जिसकी गुज़र हो, वहां चला जाए, ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

**जहां डर, वहां हमारा घर**

निडर का कहना।

**जहां ढाक वहां डाकू**

ढाक के जंगल में डाकू ज़्यादा रहते हैं।

**जहां तुम्हारा पसीना गिरे, वहां हम खून गिरायें**

मतलब---तुम्हारा अच्छी तरह साथ देंगे।

**जहां दल, तहां बादल**

जहां लोगों की भीड़ होती है, वही धूल उड़ती है।

**जहां देखी रोटी, वहां मुंड़ाई चोटी, (स्त्रि०)**

जिससे कुछ मिलने की आशा हुई, उसी के चेला बन गए अथवा उसी की खुशामद करने लगे।

**जहां देखे गुना पुड़ी, तहां जायें लुरही लुरही, (स्त्रि०)**

जहां खाने-पीने का डौल देखा, वही पहुंच गये। गुना=एक तरह का पकवान, जो प्रायः ब्याह में बनता है।

**जहां देखे तवा-परात, वहां गावे सारी रात, (स्त्रि०)**

स्पष्ट।

दे० ऊ०।

**जहां न जाको गुन लहे, तहां न ताको ठांव।**
**धोबी बसकर क्या करे, दिगंबरन के गांव।**

जहां अपने गुण की कद्र करनेवाला कोई न हो, वहां नहीं रहना चाहिए।

**जहां न जाए सुई, वहां भाला घुसेड़ते है**

(१) गुंजाइश से अधिक की आशा करना।

(२) अतिशयोक्ति से काम लेने पर भी क०।

**जहां पड़े मूसल, वहां खेम कूसल**

जहां मूसल से अनाज कुटता रहे, वही समझो क्षेम-कुशल है।

**जहां बड़ी सेवा, तहां ओछे फल**

जहां बहुत खुशामद करनी पड़ती है, वहां नतीजा भी कुछ अधिक अच्छा नहीं निकलता।

**जहां बहू का पसीना, वहीं ससुर की लाट**

एक आपत्तिजनक बात।

(हिन्दू घरों में बहू ससुर से परदा करती है। तब जहां ससुर लेटा है, वहां बैठकर वह पीसेगी कैसे ?)

**जहां बालक तहां पेखना, जहां गोरस तहं घोर।**

**जहां राजा मिठ बोलना, बसें घनेरे लोग।**

जहां बालक होते हैं वही खिलौने भी होते है, जहां दही होता है, वही दही का शर्बत भी होता है, जहा राजा मिष्टभाषी होता है, वही अधिक लोग बसते है।

**जहां बालों का बैठना, वहां भूतों का बास**

दे०--जहा बहू का पीसना...।

(कहावत का यह अभिप्राय भी हो सकता है कि जहा बालक होते है, वही प्रेतबाधा भी अधिक होती है।)

**जहां मुरगा नहीं होता, वहां क्या सबेरा नहीं होता ?**

किसी के बिना कोई काम रुका नही रहता।

**जहां रुख नहा, तहा अ ंड रुख**

जहां कोई विद्वान, गुणवान या धनी व्यक्ति नही होता, वहा बहुत कम विद्या, गुण या धनवाला व्यक्ति ही बडा माना जाता है।

**जहां सेर, वहां सवैया**

थोड़े के लिए कोई काम क्यो बिगड़े, ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

**जहां सौ, वहां सवा सौ**

दे० ऊ०।

**जहाज का कौवा**

जिसका कही ठिकाना न हो, जो घूम-फिरकर अपनो ही जगह पर आए, उसके लिए क०।

**जाओ नेपाल, साथ आये कपाल, (पू०)**

(१) कहीं भी जाओ, भाग्य साथ नही छोड़ता।

(२) अकर्मण्य कहीं कुछ नही कर सकता।

**जाओ पून दक्खिन, वही करम के लच्छन, (स्त्रि०)**

**दे० ऊ०।**

मां का अपने निकम्मे लड़के से क०।

(गुजराती में भी कहते हैं--अखण गया दख्खण गया, पण लख्खन नहि गयां।

**जाको आछी सास, वाका हो घर बास।**

**जाकी सास नकारा, वाका नहीं गुजारा। (स्त्रि०)**

जिसकी सास अच्छी, वही सुखी रहती है; जिसकी सास बुरी, वह दुख भोगती है।

**जाके कारन पहरी सारी, वही टांग रही उघारी (स्त्रि०)**

जिस कष्ट से बचने (या लाज-शरम को ढकने) के लिए इतनी झंझट मोल ली, वह ज्यो का त्यो ही बना रहा।

(साड़ी पहिनने से मतलब ब्याह करने से है।)

**जाके पास रहिए, ताही की-सी कहिए**

जिसके पास रहे, उसी का पक्ष लेना चाहिए।

**जाको जा स्वारथ सधे, सोई ताहू सुहात।**

**चोर न प्यारी चांदनी, जैसे कारी रात।**

जिस चीज से जिसका काम बनता है, उसे वही अच्छी लगती हे फिर वह बुरी ही क्यो न हो।

**जाको जौन स्वभाव, जाय नहीं ज्यू से।**

**नीम न मीठा होय, सींच गुड़ घ्यु से।**

कितना ही उपाय क्यों न करो, किन्तु जिसका जो स्वभाव हे, वह नही मिटता।

**जाको बडा ताको गाय, मत करो कोई हाय-हाय**

जमाना ताकतवाले का है, इसके लिए हाय-हाय करना व्यर्थ है।

**जाको राखे साइयां, मार न सक्के काय**

ईश्वर जिसका रक्षक है, उसका कोई कुछ नही बिगाड़ सकता।

**जाका राम रच्छक, ताका कौन भच्छक, (हि०)**

स्पष्ट। दे० ऊ०।

भच्छक भक्षक। मारनेवाला।

**जाको लोह, ताको सोह**

(१) जिसका हथियार, उसी को शोभा देता है।

(२) जिसके हाथ मे हथियार है, उसी का सब कुछ है।

**जाग जगन्ते पहरुवा, लाग लगन्ते और**

पहरुए पहरा देते रहते हैं, पर काम करनेवाले तो दूसरे होते हैं, जो अपना मतलब गांठ ले जाते हैं।

**जागते की कटिया और सोते का कटड़ा**

जागनेवाले को भैंस और सोनेवाले को भैंसा मिलता है। अर्थात जागनेवाला हमेशा मुनाफे में रहता है। दे०—जो सोवे उसका पड़वा . .।

**जागियो! जागना भला हगा**

स्पष्ट। दे० नीचे।

**जागेगा सो पावेगा, सोवेगा सो खोवेगा**

सावधान रहने से लाभ होता है।

**जाट कहे सुन जाटनी, याही गाव मे रहना।**
**ऊंट बिलैया ले गई, तो हांजी हांजी कहना।**

जाट अपनी स्त्री को समझा रहा है कि 'देखो हमे इसी गाव मे रहना है। इसलिए अगर कोई कहे कि बिल्ली ऊट को उठाकर ले गई, तो कहना चाहिए—'हा, बिल्कुल ठीक है. बिल्कुल ठीक है।'

**'जाट रे जाट तेरे सिर पर खाट' 'तेली रे तेली तेरे सिर पर कोल्हू'—'तुक तो मिली ही नहीं?' 'बोझों तो मरेगा'**

किसी तेली ने जाट से कहा—'तेरे सिर पर खाट'। जाट ने जवाब दिया—'तेरे सिर पर कोल्हू।' तेली बोला—'तुक तो मिला ही नही।' तब जाट ने कहा—तुक नही मिले न सही, 'पर तू बोझ से तो मरेगा।' मूर्ख काव्य या भाषा की विशेषता तो क्या समझे? वह तो अपनी सीमित बुद्धि के अनुसार ही हर बात का अर्थ लगाता है।

**जाड़े में रुई या दुई**

जाडे में या तो रुई से या दो से सर्दी कटती है।

**जात का बैरी जात, काठ का बैरी काठ**

जातिवाले से ही जातिवाले का नुकसान होता है। यदि कुल्हाडी मे काठ की बेट न हो, तो केवल कुल्हाड़ी से काठ नही कट सकता।

**जात की बेटी जात ही के जाती है**

उच्च कुल की लड़की उच्च कुल में ही ब्याही जाती है।

**जात के बुलाइये बराबर बिठाइये, कम जात के बुलाइये नीचे बिठाइये**

स्पष्ट। यह सब जातपांतवालों की धारणा है, नही तो हर नागरिक बराबर है, कोई नीचे क्यों बैठे?

**जात खुदा की बे-ऐब है**

ईश्वर ही ऐसा है, जिसमें कोई दोष नहीं।

**जात गंवौलां, पेट न भरल**

किसी छोटी जातिवाले के यहां भोजन करके जाति खो दी या जाति भी गवाई और पेट भी न भरा। भोजन से जाति नही जाती, पर यह धारणा तब भी थी, जब छुआछूत को धर्म मानते थे। ईमान भी हाथ से खोया और कोई विशेष लाभ नही हुआ।

**जात-भांत पूछे नहिं कोई, कुर्ती पहिन तिलंगवा होई**

वर्दी पहिनने से ही सिपाही बन जाता है। फिर कोई नही पूछता कि तुम कौन जात हो।

**जात-भांत पूछे नहि कोई, जनऊ पहिन के बामन होई**

स्पष्ट।

**जात-भांत पूछे नहिं कोई, हरि का भजे सो हरि का होई**

स्पष्ट।

(ऊपर की तीनो कहावतो मे 'जात-भात' के स्थान पर प्र० पा०—जात-पात है।)

**जात मद पिये मालूम होय**

किसी ने शराब पी रखी हो, तो उससे उसकी जाति का पता लग जाता है।

**जात मे तुरक और बाज मे हुड़क**

ये दोनों बहुत शोर मचानेवाले होते हैं।

हुड़क =एक प्रकार का छोटा ढोल।

**जान का मुंह नही करते, रुपए का मुंह करते है**

जान का खयाल नहीं करते, रुपए का खयाल करते हैं।

जब कोई आदमी बीमार पड़ने पर अथवा किसी और मुसीबत मे पैसा खर्च न करे, तब क०।

**जान का सदका माल, इज्जत का सदका जान**

जरूरत पडे, तो जान बचाने के लिए माल और इज्जत बचाने के लिए जान—न्यौछावर कर देना चाहिए।

**जान की जान गई, ईमान का ईमान**
हर तरह से घाटे में रहना।
**जान के साथ जेवड़ा**
मरते दम तक गले का यह फंदा नहीं छूटेगा। जब कोई अपनी स्त्री या अपने पति से बहुत दुखी रहता हो, प्रायः तब क०।
**जान जाय, माल न जाय**
कंजूस के लिए क०।
**जानता चोर गांव उजाड़े**
भेद जाननेवाला चोर अधिक हानिकारक होता है।
**जानते का दिल, अनजानते का कलेजा, (स्त्रि०)**
समझदार आदमी दयावान होता है।
(यहां दिल से मतलब आत्मा से है।)
**जान न पहचान, खाला बड़ो सलाम, (स्त्रि०)**
बिना परिचय के ही रिश्ता जोड़ना।
**जानन वाले जानिये, मूरख मन पछताय।**
**करनी भूलो आपनी, ओरों दोष लगाय।**
मनुष्य अपने कर्मों का फल भोगता है। दूसरों को दोष लगाता है।
**जान बची, लाखों पाए**
किसी काम से छुटकारा मिला, तो मानो लाखों की संपत्ति मिल गई।
**जान मारे बनिया, पहचान मारे चोर**
दूकानदार जान-पहचानवालों को ही अधिक ठगता है, क्योंकि संकोचवश वे कुछ कह नहीं सकते और चोर भेद पाकर ही चोरी करता है।
**जान में जान आ गई**
झंझट से छुट्टी पाई। प्राण बचे।
**जान सबको प्यारी है**
किसी को सताना नहीं चाहिए।
**जान सब में बराबर है**
दे० ऊ०।
**जान से हाथ धो बैठे हैं**
जीने की उम्मेद नहीं।
**जान है तो जहान है**
दुनिया का सब हाल-चाल जान के साथ है। मरने पर फिर किसी से कोई सम्बन्ध नहीं रहता।
**जाना अपने बस, आना पराये बस**
जाना अपनी इच्छा पर निर्भर करता है, पर आना दूसरे की इच्छा पर।
**जाना है रहना नहीं, जाना बिस्वे बीस।**
**ऐसे सहज सुहाग पर, कौन गुधावे सीस।**
स्पष्ट। संसार की नश्वरता पर यह कहा गया है। (कहा जाता है, यह दोहा मरते समय अमीर खुसरो ने कहा था।)
**जाना है रहना नहीं, मोह अंदेसा और।**
**जगह बनाई है नहीं, बैठेगा किस ठौर।**
संसार में रहकर मनुष्य यदि अच्छे कर्म न करता रहे, तो परलोक में फिर उसका कहीं ठिकाना नहीं लगता।
**जानेला चिलम जिनका पर चढ़ेला अंगारी, (पू०)**
चिलम ही जानती है कि आग को सहन करना क्या चीज़ है।
जिसे कष्ट होता है, वही उसकी पीड़ा को जानता है।
**जानेवाले के हज़ार रास्ते है, ढूंढ़नेवाले का एक**
भागनेवाला न मालूम किस रास्ते से चला जाए, पर ढूंढ़नेवाला तो एक ही रास्ता देखता है।
(भागना आसान, ढूंढ़ना कठिन।)
**जानेवाले सिपाहिया के के रोकला? (पू०)**
जानेवाले आदमी को कौन रोक सकता है?
**जा बिध राखे राम, ताही बिध रहिए**
दुख में धैर्य और संतोष से काम लेना चाहिए।
**जामिन दुनिया पाप है, त्रिया है महापाप।**
**दोनों को तू फूंक दे, नाम निरंजन जाप।**
स्पष्ट। जामिन कवि ईश्वर-भजन का उपदेश देते हैं।
**ज़ामिन दे या दिलाए**
जो किसी की ज़मानत देता है, उसे या तो गांठ से रुपया देना पड़ता है या दिलाना पड़ता है।
**ज़ामिन न हूजिए, गिरह का दीजिए**
किसी का ज़मानतदार होना ठीक नहीं। गांठ से रुपया भरना पड़ता है।

**ज़ामिन मत हो चोर का और सींग पकड़ मत ोर का**
स्पष्ट।

**ज़ामिन होना, धन का खोना**
स्पष्ट।

**ज़ामिनी पोदनी की क्या**
किसी छोटे आदमी की ज़मानत देना ठीक नहीं। पोदनी एक छोटी चिड़िया।

**जाय ईमान, रहे सब कुछ**
(१) अगर और सब बचता है, तो ईमान जाने दो।
(२) ईमान ही साथ जाता है और सब यहीं छूट जाता है।
(३) स्वार्थी के लिए भी कह सकते है, जो ईमान की परवा नहीं करता।

**जाय उस्ताद खाली**
उस्ताद की नजर से कोई गलती चक जाए, यह कैसे हो सकता है? व्यग्य म क०।

**जायगा साहू का, रहेगा साहू का**
नफा, नुकसान मालिक का होगा, मै क्या करू?

**जाय जान, रहे ईमान**
स्पष्ट।

**जाय लाख, रहे साख, (व्य०)**
भले ही लाखों बर्बाद हो जाएं, पर अपनी साख बनाए रखना चाहिए।

**ज़ालिम का ज़ोर सिर पर**
अत्याचारी के आगे किसी की नही चलती।

**ज़ालिम का पेंड़ा ही निराला है**
अत्याचारी के काम समझ में नही आते।

**ज़ालिम की उम्र कोता**
अत्याचारी की उम्र कम होती है, क्योकि न मालूम लोग कब उसे मार डाले।
कोता=कोताह, छोटा।

**ज़ालिम की जड़ भी उखड़ जाती है**
अत्याचारी का भी अंत मे नाश हो जाता है।

**ज़ालिम की रस्सी दराज़ है**
अत्याचारी अधिक दिनों जीता है, क्योकि उसे मारना कठिन होता है।

**जासे जाको काम, सोई ताको राम**
जिसका-जिसका काम पड़ता रहता है, वही उसके लिए ईश्वर तुल्य है।

**ज़ाहिद का क्या खुदा है, हमारा खुदा नहीं?**
ईश्वर सबका है।
ज़ाहिद सत।

**ज़ाहिर आबाद, बातीन खराब**
देखने में भला, पर बातचीत मे बुरा।

**ज़ाहिर रहमान का, बातीन शैतान का**
देखने में ईश्वर का भक्त, पर बातो मे शैतान का चेला।

**ज़ाहिल फ़क़ीर शैतान का टट्टू**
मूर्ख साधु के सिर पर हमेशा शैतान सवार रहता है।

**जाही ते कुछ पाइये, करिये ताकी आस**
जिससे कुछ मिल सकता हो, उसी की आशा करनी चाहिए।

**जिगर-जिगर है, दिगर-दिगर है**
अपना-अपना है, और पराया-पराया।

**जिजमान चाहे स्वर्ग को जाय, चाहे नरक को; मुझे वही-पूड़ी से काम**
केवल अपना स्वार्थ देखना।
(हिन्दुओं मे मृतक के क्रिया-कर्म के लिए जो ब्राह्मण आता है, और जिसे विशेष रूप से दान-दक्षिणा तथा भोजन से तृप्त किया जाता है, उसका कहना कि हमे तो पकवान खाने से मतलब, मरनेवाला चाहे स्वर्ग जाए चाहे नरक। पुरोहित को पता है कि उसे क्या मिला, बाकी किसी को कुछ भी मिले।)

**जिठानी का भैंसा अगड़धोंधों**
जिठानी का भैंसा भी खूब तगड़ा रहता है।
(क्योकि घर मे उसी की चलती है।)

**जितना ऊपर, उतना नीचे**
सब तरह से चालाक, पूरा चालाक। जैसे आठों गाठ कुम्मेत।

**जितना करम में लिखा है, उतना मिलेगा**
स्पष्ट।

**जितना गरमायेगा, उतना ही बरसेगा (कृ०)**
बादल जितना गरमाता है, उतना ही बरसता है।

**जितना गुड़ डालेंगे, उतना ही मीठा होगा**
(१) जितना अधिक पैसा खर्च किया जाएगा, चीज उतनी ही अच्छी मिलेगी।
(२) जितनी ज्यादा मजदूरी दी जाएगी, काम उतना ही अच्छा होगा।

**जितना छानो, उतना ही किरकिरा**
जितनी जाच-पडताल करोगे, उतने ही अधिक दोष निकलते आएगे।

**जितना छोटा, उतना ही खोटा**
स्पष्ट।

**जितना तपेगा, उतना बरसेगा; (कृ०)**
दे०--जितना गरमायेगा ...।

**जितना देगा, उतना पाएगा**
दिया व्यर्थ नही जाता।

**जितना मडवे में आवेला, उतना कोहबर मे न आवे; (पू०)**
मडप के नीचे जितने लोग बैठने है, उतने कोहबर मे नही जाते।
(कोहबर—वह स्थान, जहा विवाह के समय कुल-देवता स्थापित किए जाते है। इस स्थान पर घर के खास-खास सगे सबधी ही बैठते है। कहावत मे केवल एक लोकप्रथा की ओर सकेत है। फिर भी उसका यह भाव भी हो सकता ह कि सब स्थान सब आदमियो के बैठने योग्य नही होते।)

**जितना रला है सो चुगलो, (प०)**
जो तुम्हारा है सो ले लो और उसी मे सतोष करो।

**जितना सयाना, उतना दीवाना**
जो जितना चतुर होता है, वह उतना ही परेशान भी होता है।

**जितना सस्ता, उतना खराब**
सस्ती चीज खराब होती है।

**जितना सांप लंबा, उतना ही गोह चौड़ी**
कोई किसी बात मे बढकर है, तो कोई किसी बात मे। दोनो एक से (धूर्त्त)।

**जितनी आमद, उतना लोभ**
आमदनी के हिसाब से लोभ भी बढता जाता है।

**जितनी आमदनी, उतना खर्च**
स्पष्ट।

**जितनी चादर देखो, उतने ही पैर पसारो**
सामर्थ्य के अनुसार ही खर्च करना चाहिए।

**जितनी दौलत उतनी ही मुसीबत**
स्पष्ट।

**जितनी मियां की लंबी दाढ़ी, उतना गांव गुलजार**
मिया की दाढी जितनी ही बढ़ती है, उतना ही गाव को गुलज़ार समझना चाहिए।
भाव यह कि मिया को गाव मे मुफ्त का खाने को मिल रहा है, जिससे उनकी दाढी अब चिकनी-चुपडी हो रही है, और उससे गाव की स्थिति का पता लगाया जा सकता है।)

**जितना लाभ, उतना लोभ**
स्पष्ट।

**जितने काले, उतने बाप के साले**
जितने शातिर या बदमाश है, वे सब मेरे बाप के साले है, यानी मेरी मुट्ठी म है।

**जितने घने, उतने भले**
(१) अक्षर जितने घने लिखे जाए, उतने ही अच्छे लगते है। कहते भी है– घने अक्षर वेगरी पात, सो जाने लिखने की भात।
(२) जितने लडके हो उतना ही अच्छा, यह भाव भी निकलता है।

**जितने मुंड, उतने पिंड; (हिं०)**
जितने लडके होगे, पितरो का उतना ही अच्छा श्राद्ध होगा।

**जितने मुंह, उतनी ही बातें**
(१) किसी एक बात का नाना प्रकार मे कहा जाना।
(२) अफवाह फैलाना।

**जिधर जलना देखें, तिधर तापें**
दूसरे की हानि से लाभ उठाना।

**जिधर मौला, उधर आसफ़उद्दौला**

ईश्वर की मर्ज़ी के खिलाफ़ तो आसफ़उद्दौला भी नहीं जा सकते।

(आसफ़उद्दौला लखनऊ के प्रसिद्ध नवाब हो गए हैं। वह बड़े दानी थे। कहते हैं, एक बार किसी फ़कीर ने उनके पास आकर एक हज़ार रुपए मांगे। इस पर नवाब ने उसे दस रुपए देकर कहा—'तुम्हारे भाग्य मे इतना ही बदा है।' फ़कीर ने जब रुपए लेने से इन्कार किया, तब नवाब ने कहा,—'कल आना।' दूसरे दिन फ़कीर के आने से पहले ही नवाब ने एक रुपयों की, और एक पैसो की थैली भरवाकर रख दी। फ़कीर आया और रुपए मांगने लगा। नवाब ने उन दो थैलियो में से एक उठा लेने को कहा। दुर्भाग्यवश फ़कीर ने पैसो ही की थैली उठा ली। नवाब ने तब कहा—'तुम्हारे भाग्य में था, सो मिल गया।' उक्त कहावत इसी घटना पर आधारित है।)

**जिधर रब, उधर सब**

ईश्वर जिसका साथी है, उसके सब साथी है।

**जिनका मुंह नहीं देखते, उनका पांव छूना पड़ता है**

गर्ज पड़ने पर छोटे आदमियों के भी हाथ-पैर जोड़ने पड़ते है।

**जिनकी बोली में दग़ा, उनके दिल में क्या दग़ा नहीं होगी?**

कुछ लोगों मे पठानों के लिए कहा जाता है; क्योंकि वे 'दग़ा दग़ा' बहुत कहा करते हैं, जिसका अर्थ उनकी भाषा में होता है 'इसको' 'इसको'। साथ ही दग़ा का एक अर्थ धोखा तो है ही।

**जिनकी यहां चाह, उनकी वहां भी चाह**

सज्जन पुरुषों की मृत्यु पर कहते हैं कि ईश्वर भी उन्हे चाहता है और अपने पास जल्दी बुला लेता है।

**जिनको चाव घनेरा, उनको दुख बहुतेरा**

जिनको जितनी अधिक आकाक्षाएं होती हैं, उनको उतना ही अधिक दुख भी होता है।

**जिन जाये, उन्हीं लजाये**

जिन्होंने पैदा किया, उन्हें ही शर्मिन्दा किया।

अयोग्य लड़के के लिए क०।

**जिन ढूंढ़ा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ।**
**बक बिचारा क्या करे, रहे किनारे बैठ।**

लाभ तभी होता है, जब कुछ परिश्रम किया जाए और जोखम भी उठाया जाए।

(कबीर का प्रचलित दोहा इस प्रकार है—
जिन ढूढ़ा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ।
हौं बौरी ढूढ़न गई, रही किनारे बैठ।)

**जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीत बहार।**
**अब अलि रही गुलाब में, अपत कटीली डार। (बिहारी)**

जिन दिनों (तूने) वे (सुन्दर तथा सुगंधित) फूल देखे थे, वह बहार (वसंत ऋतु) तो बीत गई। हे भ्रमर! अब तो गुलाब के वृक्ष में बिना पत्ते की कटीली डाल रह गई है।

इसलिए तू अपना दुख छोड़ दे और सुख की आशा मत कर।

(यह किसी ऐसी स्त्री पर, जो अपना यौवन खो चुकी है या किसी ऐसे मनुष्य पर जिसने अपना सर्वस्व खो दिया है, अन्योक्ति है।)

**जिन पांयन पनही नहीं, तिन्हे देत गजराज।**
**बिख देते बीखा मिले, साहब ग़रीबनेवाज।**

ईश्वर बड़े दयावान हैं। उनकी कृपा होने से ऐसे व्यक्ति को भी, जिसके पैरों में जूते नही, हाथी बैठने को मिलता है और विष खिलाये जाने की जगह लड़की से विवाह होता है।

(कथा है कि किसी धनाढ्य सेठ के पास एक भिखारी नित्य भीख मांगने आया करता था। उससे तंग आकर सेठ ने अपने आढ़तिये को चिट्ठी लिखी कि इसे बिख (यानी विष) दे दो। आढ़तिये की लड़की का नाम बीखा या विषया था। इसलिए यह समझकर कि सेठ जी ने उसे ही देने के लिए लिखा है, उसने भिखारी का बड़ा आदर-सत्कार किया और अपनी कन्या का उसके साथ ब्याह करके उसे हाथी पर चढ़ाकर विदा कर दिया।)

**जिन बरहा हार चरौ, सौ कैसे चरें प्वांर ? (कृ०)**
जिन जानवरों ने हरी-हरी घास चरी है, वे भला सूखा प्वांर कैसे चरेंगे।
(सुख भोग चुकने के बाद दुख मुश्किल से भोगा जाता है।)
प्वांर = धान का सूखा भुस।

**जियत पिता की पूछी न बात,**
**मरे पिता को दूध और भात।**
(१) कपूत के लिए क०।
(२) हिन्दुओ के श्राद्धकर्म पर भी व्यंग्य।

**जिये न मानें पितृ और मुए करें श्राद्ध**
दे० ऊ०।

**जिसका आंड़ बिके, वह बधिया क्यों करे ? (व्यं०)**
जो चीज जिस हालत मे है, उसी तरह बिक जाए, तो उसमे किसी तरह का परिवर्तन करके बेचने का कष्ट क्यो उठाया जाए ?
आड़ू - बिना बधिया किया गया बैल।

**जिसका काम उसी को छाजे।**
**और करे तो मूरख बाजे।**
जिसका जो काम है, वह उसी को शोभा देता है।

**जिसका खाइये अनपानी, उसकी कीजे अबादानी, (स्त्रि०)**
जिसका अन्न खाए, उसकी भलाई चाहनी चाहिए।

**जिसका खाइये, उसका गाइये**
जिसका अन्न खाए, उसका पक्ष ले।

**जिसका खून उसी की गर्दन पर**
हत्या करने का पाप हत्या करनेवाले को ही लगता है।

**जिसका गुइयां नहीं उसका कूकर गुइयां, (स्त्रि०)**
जिसका कोई मित्र नही, उसका कुत्ता ही मित्र। अर्थात कुत्ता मनुष्य का एक अच्छा मित्र है।

**जिसका चिकना देखा फिसल पड़े**
जहां कुछ मिलने का डौल देखा, वही खुशामद करने बैठ गए।
स्वार्थी और मुह देखी कहनेवालो के लिए क०।
जिसका चिकना देखा = जिसका चिकना मुह देखा, अर्थात जिसे मालदार देखा।

**जिसका चुन्न, उसका पुन्न**
दान में जो खर्च करता है, उसी को पुण्य मिलता है
चुन्न = आटा।

**जिसका चुयेगा, सौ छवा लेगा**
जिसका घर (बरसात मे) टपकेगा, सो आप छवाता फिरेगा।
(जिसे जो कष्ट होता है, वह आपही उसकी चिंता करता है।)

**जिसका जावे वही चोर कहाये**
पुलिसवाले जब चोर का पता नही लगा पाते, तब प्राय वे जिसका माल जाता है, उसी को चोर बनाते है। कहावत मे उनकी इस आदत को लेकर ही कटाक्ष किया गया है।

**जिसका डर, वही नही घर, (स्त्रि०)**
जब पति घर मे नही तो चाहे जो करे। परम स्वतन्त्र।

**जिसका तेज, उसका भेज, (कृ०)**
जबर्दस्त ही किराया या मालगुजारी (अथवा कर्ज) जल्दी वसूल कर पाता है।
भेज पावना।

**जिसका पल्ला भारी, वही झुके**
(१) जिसके पास पैसा है, वही दे सकता है।
(२) भले आदमी को ही दबना पडता है।
(तराजू मे भारी पलडा ही झुकता है। वही से रूपक लिया गया है।)

**जिसका पाप, उसका बाप**
पाप मनुष्य का बाप है, अर्थात वह उसके सिर पर सवार रहता है।

**जिसका फ़िक्र, उसका ज़िक्र**
जिस बात की चिन्ता रहती है, उसकी चर्चा भी की जाती है।

**जिसका बनिया यार, उसको दुश्मन की क्या दरकार**
बनियो पर ताना।

**जिसका मड़वा, उसका गीत; (स्त्रि०)**
परिस्थिति के अनुसार ही काम किया जाता है।
मड़वा = मंडप, विवाह।

**जिसका यार कोतवाल, उसे डर काहे का**
पुलिसवालों पर व्यंग्य। कोतवाल का, जो एक पुलिस अफसर होता है, सब जगह बड़ा रोब रहता है, इसीलिए ऐसा कहा गया है।

**जिस कारन पहनी सारी, वही टांग रही उघारी**
जिस उद्देश्य से किसी काम को करने का कष्ट उठाया, वही पूरा नही हुआ। सुख से जीवन बिताने के लिए विवाह किया, पर कपड़े भी पहिनने को नही मिले।

**जिस कारन मूंड़ मुड़ाया, सो दुख आगे आया**
जिस दुख से पीछा छुडाने के लिए हानि सहकर कोई काम किया, उस दुख से फिर भी पीछा नही छूटा। (कोई मनुष्य मजदूरी करके अपना पेट पालता था। पर नित्य प्रति कठिन परिश्रम करना उसे बहुत खलता था। इसलिए सिर मुड़ाकर साधु हो गया। उसका खयाल था कि साधु बन जाने पर कोई परिश्रम नही करना पड़ेगा। पर दरवाजे-दरवाजे जाकर भीख मागना उसे और भी कठिन जान पड़ा और तब उसने उक्त वाक्य कहा।)

**जिसकी आंख में तिल, वह बड़ा बेसिल**
जिसकी आख मे तिल होता है, वह बडा बेमुरौव्वत होता है।
(यह एक विश्वास है जिसका सच होना जरूरी नही।)
बेसिल = शीलहीन, हृदयहीन।

**जिसकी खइये चंदिया, उसकी हूजिये बंदिया, (स्त्रि०)**
जिसका खाए उसकी तावेदारी करे।
चदिया - रोटी।

**जिसकी गोद में बैठे, उसकी दाढ़ी नोचे**
कृतघ्न के लिए क०।

**जिसकी जीभ चलती है, उसके नौ हर चलते हैं**
लबी-चौड़ी हाकनेवाले की सब बात सच।

**जिसकी जूती, उसी का सिर**
किसी की खातिर उसी के पैसे से करना या किसी की कही बात से खुद उसी को परास्त कर देना।

**जिसकी जोरू अंदर, उसका नसीबा सिकंदर**
अंग्रेजों के जमाने मे मेहतर लोग आपस में कहा करते थे। तात्पर्य यह कि जिस मेहतर की औरत आया बनकर अंग्रेज के घर घुस गई, उसकी तकदीर खुल गई।

**जिसकी तेग, उसकी देग**
जिसके हाथ मे ताकत है, उसी की सब चीज।
तेग = तलवार।
देग = भोजन पकाने का बर्तन।

**जिसकी देग, उसकी तेग**
जिसके पास खाने को है, उसी की फतह होती है। (सिपाही उसी की मदद करते हैं।)

**जिसकी न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई ?**
वह दूसरे के उस कष्ट को नही समझ सकता, जिसे स्वयं वह कष्ट नही हुआ।
बिवाई -एक पीडा, जिसमे जाडे के दिनो में पैरो के तलुए का चमडा फट जाता है।
पाठा०—पाव जाके न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई।

**जिसकी बीबी से काम, उसकी लौंडी से क्या काम ?**
जब बडो तक पहुच है, तब छोटो की खुशामद करने की क्या जरूरत ?
(जड़ को ही पकड़े।)

**जिसकी महल में मैया, मांगे पैसा मिले रुपैया**
बड़े आदमी के बेटे को किस बात की कमी ?

**जिसकी लाठी, उसकी भैंस**
बलवान की जीत होती है।

**जिसकी सीरत अच्छी, उसकी सूरत भी अच्छी**
अच्छे स्वभाव का व्यक्ति देखने मे भी अच्छा लगता है।

**जिसकी सीरत अच्छी नही, उसकी सूरत को क्या देखना ?**
जिसका स्वभाव अच्छा नही, उससे बात क्या करनी; भले ही उसकी शक्ल अच्छी हो।

**जिसके कारन जोगिन भई, वह सइयां परदेस, (स्त्रि०)**
जिस के लिए सब छोड़ बैठे, वही उपलब्ध नही।

**जिसके घर भोज, उसको भात नहीं**
क्योंकि वह आदर-सत्कार मे लगा रहता है और भोजन करने का समय नही पाता।

**जिसके चार पैसे लो, उन्हें हलाल करके खाओ**
जिससे पैसे लो, उसका काम ईमानदारी से करो।

**जिसके चार भैय्या, मारें धौल छीन लें रुपैया**
जिसके चार आदमी सहायक होते हैं, वह सब-कुछ कर सकता है।

**जिसके दिल में रहम नहीं, वह कसाई है**
स्पष्ट।

**जिसके धी नहीं उसकी देहली धी, (हिं०)**
जिसके लड़की नहीं होती, वह देहली को ही लड़की समझता है, अर्थात उसे यदि कुछ देना होता है, तो दरवाज़े पर जो आता है, उसे ही देता है।
देहली = द्वार की चौखट दहलीज़।

**जिसके नहीं पूत, वह क्या जाने माया, (स्त्रि०)**
जिसके लड़का नहीं, वह माता की ममता क्या जाने?

**जिसके पास डिबुआ, वही हमारा बबुआ**
जो खाने को दे, वही हमारा मालिक। जिसके पास पैसा है, उसकी सब खुशामद करते हैं।
डिबुआ = (१) दाल-तरकारी परोसने का चम्मच। (२) रुपया।

**जिसके पास नहीं पैसा, वह भलामानस कैसा?**
पैसे से ही भलमनसाहत है। पैसा ही प्रधान है।

**जिसके पेशे में 'बान', उसका गुरु शैतान; 'हां, मेहरबान'।**
ऐसे कई पेशे हैं, जिनके अन्त में 'वान' आता है; जैसे फीलवान, कोचवान, शुतरवान वगैरह। किसी ने जब कहा कि जिनके पेशे में 'बान' आता वे सब बड़े शतान होते हैं तो दूसरे ने जवाब दिया 'जी हां, मेहरबान'

**जिसके पैसा नहीं हो पास, उसको मेला लगे उदास**
क्योंकि मेले में पैसों की जरूरत पड़ती है।

**जिसके बारह बीघा बांगा।**
**उसकी कमर में नहीं तागा।**
परिस्थिति की बात। अथवा कंजूस के लिए भी कह सकते हैं।
बांगा = कपास का खेत।

**जिसके मां बाप जीते हों, वह हराम का नहीं कहलाता**
जब किसी के निर्दोष होने का स्पष्ट प्रमाण मौजूद हो, तब उस पर झूठा दोष लगाना ठीक नहीं; क्योंकि वह दोष चलेगा नहीं।

**जिसके लिए चोरी की, वही कहे चोर**
जिसकी खातिर बदनामी मोल ली, वही बुराई करे।

**जिसके वास्ते रोये, उसकी आंखों में आंसू नहीं**
जिसके लिए कष्ट उठाया, उसने कोई सहानुभूति भी नहीं दिखाई। कृतघ्नता।

**जिसके सबब लड़ाई हो वह आदमी नहीं।**
**कांटा है घर में सेई का, या गुल कनेर का।**
जिसके कारण घर में लड़ाई हो, वह मनुष्य न होकर सेई का कांटा या कनेर का फूल है। (लोक-विश्वास है कि जिस घर में सेई का कांटा या कनेर का फूल होता है, वहां हमेशा लड़ाई-झगड़ा होता रहता है।)

**जिसके सिर पर जूता रख दिया, वही बादशाह हो गया**
किसी लफंगे फ़कीर का कहना।

**जिसके सिर पर पड़ती है, वही जानता है**
अपनी मुसीबत आदमी आप ही जानता है।

**जिसके हाथ में डोई, उसका सब कोई**
जिसके हाथ में सत्ता होती है, उसकी सब खुशामद करते हैं।
डोई = लकड़ी का बड़ा चमचा।

**जिसके होवें अस्सी, वह करे खस्सी**
रुपए से सब को वश में किया जा सकता है, अथवा सब काम किया जा सकता है।
खस्सी करना = बधिया करना। नपुंसक बनाना।

**जिसको खुदा बचाये, उस पर कभी न आफ़त आये**
ईश्वर जिसकी रक्षा करता है, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

**जिसको राखे साइयां, मार न सकके कोय।**
**बाल न बांका कर सके, जो जग बैरी होय।**
स्पष्ट। दे० ऊ०।

**जिस पर नाड़ी फूड़ी, वह घर जानो कूड़ी**
जिस घर मे फूहड़ औरत हो, वह कभी खुशहाल नही रह सकता।

**जिस घर बूढ़ा न बड़ा, वह घर डिग्गम डिग्गा**
बड़े-बूढ़े के बिना घर का प्रबध नही हो पाता।

**जिस घर में खायें, उसी में छेद करें**
कृतघ्नता।

**जिस घर में संपत नहीं, तासूं भला विदेस**
घर में गरीबी भोगने की अपेक्षा तो विदेश में रहना अच्छा।

**जिस घर होय कुचलिया नारी, सांझ, भोर हो उसकी ख्वारी।**
बदचलन औरत घर का नाश कर देती है।

**जिस घर होय पुरुष कुचलिया, उस घर होवे खीर का दलिया।**
बदचलन आदमी से भी घर का नाश होता है।

**जिस टहनी पर बैठे, उसको काटे**
जिसके आश्रित रहे, उसी का अनिष्ट करना। कृतघ्नता।

**जिस तन लागे, वही जाने**
जिस पर बीतती है, वही जान सकता है कि कैसी बीत रही है।

**जिस दरख्त के छाएं में बैठे, उसी की जड़ काटे**
दे० ऊ०।

**जिसने की बेहयाई, उसने खाई दूध मलाई**
बेशर्म सुख-चैन से रहता है।

**जिसने की शरम, उसके फूटे करम**
संकोच या लिहाज करनेवालो को नुकसान उठाना पडता है।

**जिसने कोड़ा दिया, वह घोड़ा भी देगा**
आलसियों या भाग्यवादियो की उक्ति।

**जिसने चीरा वही नीरेगा**
जिस (ईश्वर) ने मुह दिया वह नीर (अन्न-जल) भी देगा।
आलसियो का कहना। जब कोई कठिन अर्थ-संकट मे पड़ जाता है, तब उसे धीरज बंधाने के लिए भी क०।

**जिसने दिया उसने पाया**
जो दूसरो को देता है उसे मिलता भी है।

**जिसने न देखा हो बाघ, वह देखे बिलाई।**

**जिसने न देखा हो ठग, वह देखे कसाई।**
स्पष्ट। 'वह देखे नाई' भी पाठ है।

**जिसने न देखी हो कन्या, वह देख ले कन्या का भाई**
भाई-बहिन रूप-रंग मे अक्सर एक से होते हैं, इसलिए क०।

**जिसने बेटी दी, उसने क्या रखा?**
अर्थात उसने सब-कुछ दिया।
विवाह मे कन्यादान से मतलब है।

**जिसने बेटी दी, उसने सब कुछ दिया**
स्पष्ट। दे० ऊ०।

**जिसने रंडी को चाहा, उसे भी जवाल और जिसको रंडी ने चाहा, उसकी भी तबाही**
हर हालत में वेश्या का संग बुरा।

**जिसने लगाई, वही बुझावेगा**
(१) जिसने झगडा उठाया, वही उसे खत्म करेगा।
(२) दैवी विपत्ति को दैव ही दूर कर सकता है।
(३) प्राय भिक्षुक भीख मागते समय कहा करते हैं कि जिसने पेट मे भूख की ज्वाला पैदा की, वही (ईश्वर) उसे शान्त भी करेगा।

**जिस बन सुआ न सायरा, वहां कागा खायं कपूर**
जिस बन मे सुआ या कोयल नही होती, वहां कौए ही कपूर खाते है। जहां कोई योग्य पुरुष नही होता, वहा अयोग्यो की ही पूजा होती है।

**जिस बर्तन में खाना, उसी में छेद करना**
कृतघ्नता।

**जिस मुंह से पान खाइये, उस मुंह से कोयले न चबाइये**
(१) एक बार जिसकी प्रशंसा कर चुके, फिर उसकी बुराई नही करनी चाहिए।
(२) जहा सम्मानपूर्वक रह चुके हो, वहां अपमान सहकर नही रहना चाहिए।

**जिस राह ही नहीं चलना, उसके कोस गिनने से क्या काम**
जो काम करना ही नही, उसका ज़िक्र क्यो करना?

**जिस शहर में फूल बेचिये, वहां धूल न उड़ाइये**
जिस जगह इज्जत से रहे हों, वहां बेइज्जत होकर नहीं रहना चाहिए।

**जिस हांडी में खायें, उसी में छेद करे**
जिसके आश्रित रहे, उसी का बुरा तकना।

**जिसे खाने को मिले यों, वह कमाने जाय क्यों?**
अकर्मण्य के लिए क०।

**जिसे खुदा रक्खे, उसे कौन चक्खे**
जिसका ईश्वर रक्षक है, उसका कोई क्या बिगाड़ सकता है?

**जिसे पिया चाहे, वही सुहागन; क्या सांवरी क्या गोरी**
(१) विवाहित जीवन उसी स्त्री का सफल है, जिसे उसका पति चाहे।
(२) जिस पर मालिक की नज़र होती है, वही उच्च स्थान पर पहुंच जाता है, चाहे उसमें गुण न हो।

**जिसे हया नहीं, उसे ईमान नहीं**
बेशर्म बेईमान होता है।

**जी कहीं लगता नहीं, जब जी कहीं लग जाय है**
स्पष्ट।

**'जी' कहो, 'जी' कहलाओ**
दूसरों का सम्मान करो, तो दूसरे तुम्हारा सम्मान करेंगे।

**जी का बैरी जी**
(१) जीव जीव का भक्षक है।
(२) स्वयं मनुष्य अपना शत्रु है।

**जी के बदले जी**
(१) जान के बदले जान।
(२) प्रायः उस समय भी कहते हैं, जब कोई रुपया उधार लेकर माल गिरवी रख देता है।

**जी चाहे बैराग को और कुनबा फाड़ेगा**
जी तो वैराग्य लेने को चाहता है, पर गृहस्थी की झंझटों ने मुसीबत कर रक्खी है।

**जीजा के माल पर साली मतवाली, (स्त्रि०)**
एक मूर्खता की बात। जीजा के माल से साली को कोई मतलब नहीं।

**जी जाय, घी न जाय**
कंजूस के लिए क०।

**जीत की हवा भी अच्छी**
जीत का तो नाम भी अच्छा।

**जीता सो हारा और हारा सो मुआ**
अदालतों की मुकदमेबाजी के संबंध में क०। जो आदमी मुकदमा जीतता है, वह भी हारे के तुल्य हो जाता है, क्योंकि मुकदमों में बहुत पैसा और समय नष्ट होता है।

**जीती मक्खी नहीं निगली जाती**
(१) जानबूझकर कोई विष नहीं खाता, अथवा गलत काम नही करता।
(२) स्वेच्छा से कोई विपत्ति में नहीं पड़ता।
(३) स्पष्ट सत्य को झुठलाया नही जा सकता।

**जीते आसा, मुए निरासा**
जीवन के साथ आशा लगी है। मरने पर सब समाप्त हो जाता है।

**जीते का घर और मुए की गोर बता**
संसार में कहीं किसी का कुछ नहीं। जिनके घर थे, उनके घरों का पता नहीं, जिनकी कब्रें थीं, उनकी कब्रों का पता नहीं।

**जीते के खून में हीरा धुंधला होता है**
लोक-विश्वास है।
इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि ज़िंदा आदमी के खून की गर्मी के सामने हीरे की चमक कोई चीज़ नहीं।

**जीते चाव, चाव, मुए दाब-दाब**
जीते जी सब चाव (प्रेम) करते हैं, मरने पर गाड़ने की फ़िक्र पड़ती है।

**जीते-जी का नाता है**
अपने किसी आत्मीय के मरने पर जब कोई बहुत शोक करता है, तब उसे धैर्य बंधाने के लिए कहते हैं।

**जीते-जी का मेला है**
आदमी जब तक ज़िन्दा है, तभी तक मिलना-जुलना है, फिर तो अकेले जाना है।

**जीते तो हाथ काला, हारे तो मुंह काला**
जुआरियों के लिए क०।

**जीते न पूछे, मुए धड़धड़ पीटे**
जीते-जी बात नही पूछी, मरने पर छाती पीटकर रोते हैं।
(१) कृतघ्न संतान।
(२) आदमी की क़द्र मरने पर जानी जाती है।

**जीते रहे तो लानत कहना**
किसी को कोसना, शाप देना।

**जीते है न मरते हैं, सिसक-सिसक दम भरते हैं**
(१) बहुत कष्टमय जीवन बिता रहे है।
(२) मरणासन्न है।

**जीना थोड़ा, आसा बहुत**
छोटे से जीवन के साथ आशाए बहुत लगी रहती है।

**जीने से दूर, मरने के नज़दीक**
(१) जीवित रहते हुए भी मरे के समान है।
(२) एक पैर कब्र मे लटकाए है।

**जी बहुत चलता है, मगर टट्टू नहीं चलता**
बुढापे की अशक्त अवस्था के लिए क०।

**जीभ जने एक बार, मां जने बार-बार**
मुह से एक बार जो निकल गया, सो निकल गया, उसे फिर वापिस नही लिया जा सकता।

**जीभ जली, न स्वाद आया**
(१) कोई चीज़ बहुत थोडी खाने को मिले, तब क०।
(२) कष्ट उठाकर कोई काम किया जाए, पर उसका कोई अच्छा नतीजा न निकले, तब भी क०।

**जीवन मरन, बिधना के हाथ है**
जीना-मरना ईश्वर के हाथ है।

**जीवे मेरा भाई, गली-गली भौजाई, (स्त्रि०)**
ननद का अपनी भावज से ताना मार कर कहना कि तू घमड किस बात का करती है, मेरे भाई के रहते तेरी जैसी बहुत-सी भावजे मिल जाएगी।

**जी है तो जहान है**
जीवन से ही सारी चीजें लगी हैं।

**जुआ बड़ा ब्योहार, जो इसमें हार न होती**
जुआ बडी बढ़िया चीज़ थी, अगर इसमें हार न होती।

**जुआरी को अपना ही दाव सूझता है**
स्वार्थी के लिए क०।
(तु०—सूझ जुआरिह आपन दाऊ।)

**जुआरी हमेशा मुफ़लिस**
जुआरी हमेशा कंगाल रहता है।

**जुए में बैल भी हारे हैं**
स्पष्ट। जुए से बैल भी परेशान रहते हैं। यहां जुआ शब्द के दो अर्थ हैं (१) हल, बखर या गाडी के आगे की वह लकडी, जिसमे बैल जोते जाते है। (२) रुपए-पैसे की बाजी लगाकर खेला जानेवाला खेल।

**जुग टूटा, नर्द मरी**
एका ही मे बल है, अलग हुए और पिटे।
(वाक्य चौसर के खेल से लिया गया है। चौसर मे जब दो गोटिया एक घर मे इकट्ठी हो जाती है, तो विपक्ष का खिलाडी उन्हे मार नही सकता, किन्तु अलग होने से पिट जाती है।
फूटे ते नर्द उठ जात बाजी चौपड की।
आपस के फूटे कहो कौन को भलो भयो। गग)
नर्द चौसर की गोट।

**जुड़ती नहीं धुर की टूटी, धरी रहे सब दारू बूटी**
आयु के पूरे हो जाने पर कोई दवा काम नही करती।
धुर –शीर्ष स्थान।

**जुत-जुत मरें बैलवा, बैठे खायं तुरंग, (कृ०)**
(१) गरीबों के परिश्रम पर धनवान मौज करते है।
(२) कर्मचारी खटते है, अफ़सर बैठे खाते हैं।
(३) कुछ लोग खटते है, कुछ मौज करते हैं।

**जुमा छोड़ सनीचर नहायें, उसका सनीचर कभी न जाये**
जो शुक्रवार को न नहाकर शनिवार को नहाता है, उसकी विपत्तियां कभी दूर नही होती। मुसलमानो का लोक-विश्वास।

शुक्रवार नमाज का दिन होता है, और उस दिन नहाना आवश्यक माना जाता है।

**जुलाहा चुरावे नली नली, खुदा चुरावे एक्के बेरी, (पू०)**

जुलाहा थोड़ा-थोड़ा करके सूत चुराता है, पर ईश्वर एक बार मे सब चुरा लेता है, अर्थात जुलाहे का कभी इकट्ठा नुकसान हो जाता है और चोरी का सब नफा निकल जाता है।

ईश्वरीय न्याय।

**जुलाहा जाने जौ काटे ?**

जुलाहा जौ काटना क्या जाने ?

(कथा है कि किसी जुलाहे पर बहुत कर्ज हो गया था। तब महाजन ने उससे काम कराकर रुपए वसूल करने चाहे। जुलाहा राजी होकर खेत मे जौ काटने गया। पर जौ काटने के स्थान पर वह उसकी झुकी हुई बालो को इस प्रकार सुलझाने लगा जैसे महीन सूत को सुलझाते है। जुलाहे कहावतो मे अपने बुद्धूपन के लिए प्रसिद्ध माने गए है। यहा उसी पर कटाक्ष है।)

**जुलाहे का तीर न हो**

ऐसे अवसर पर कहावत का प्रयोग करते हैं, जब किसी विषय पर जानबूझकर उपेक्षा करने से उसका बुरा परिणाम निकल सकता हो।

(कथा है कि किसी जुलाहे की जाघ मे तीर लग गया। तब उसे निकाल फेकने का कोई उपाय न करके वह ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि हे भगवान, ऐसा कर कि इस तीर का लगना झूठ साबित हो। उसी से कहा० चली।)

पाठा०—जुलाहे को लगा था तीर खुदा भली (या झूठ) करे।

**जुलाहे का बेगारी पठान**

एक अनहोनी बात। पठान कभी जुलाहे जैसे साधारण या सीधे-सादे आदमी के यहा जाकर बेगार नही करेगा।

**जुलाहे की जूती, सिपाही की जोय, धरी-धरी पुरानी होय**

जुलाहे की जूती और सिपाही की स्त्री, दोनो काम मे न आने के कारण व्यर्थ ही जाती हैं।

(इसलिए कि जुलाहा करघे पर बैठे-बैठे ही काम करता है, जूते पहिनने की उसे कभी आवश्यकता ही नही पड़ती और सिपाही हमेशा फौज की नौकरी की वजह से बाहर रहता है, स्त्री के पास आ नही पाता।)

**जुलाहे की तरह ईद-बकरीद को पान खा लेते हैं, (मु०)**

(१) कभी-कभी शौक कर लेते है।

(२) कजूसी करते है।

**जुलाहे की मसखरी मां-बहिन से**

जुलाहे के बुद्धूपन पर क०।

**जूं के डर से गुदड़ी नहीं फेंकी जाती**

साधारण परेशानी के डर से कोई अच्छा लाभ का काम नही छोड़ दिया जाता।

**जूठा खैये मीठे के लालच**

ओछा काम भी अच्छे लाभ की आशा से करना पडता है।

(मराठी मे है—तुपाचे आशेने उष्टे खावे।)

**जूता पहने साई का, बड़ा भरोसा ब्याई का।**

**जूता पहने नरी का, क्या भरोसा करी का।**

जूता फरमायश देकर बनवाना चाहिए, अर्थात मजबूत जूता पहिनना चाहिए, और विवाहिता स्त्री पर ही निर्भर करना चाहिए, (क्योकि समय पर वही काम आती है।) घटिया दाम के जूते नही पहिनना चाहिए, और रखैल औरत का विश्वास नही करना चाहिए, (न जाने कब धोखा दे दे।)

नरी का बकरी के चमडे का।

करी का रखैल का।

**जेकर पुरखा न देखल पोई, तेका घर खुरबंदी होई**

जिसके पुरखो ने कभी पोई का साग नही देखा, उसके घर घोडो के नाल बध रहे हैं, अर्थात घोड़े बधे हुए हैं।

(जो अपने पुरुषार्थ से धन कमाकर बडा आदमी बन गया हो, अथवा जो साधारण हैसियत से ऊची जगह पर पहुच कर घमंड करने लगे, उसके लिए क०।)

**जेकर मैया पूआ पकावे, तेकर धिया लिलके, (भो०)**
किसी ग़रीब ब्राह्मणी के संबंध में कहा गया है, जो रसोई बनाने का काम करती है। मोची के लड़के को जिस प्रकार जूता और दर्जी के लड़के को अच्छे कपड़े पहिनने को नहीं मिल पाते, उसी प्रकार उसकी लड़की भी उन पूओं के लिए तरसती है, जिन्हें वह दूसरों के लिए बनाती है।

**जेकरा बीघा भर कपास, तेकरा डांड़े डरा मा, (भो०)**
जिसके पास बीघा भर कपास का खेत है, उस पर जुर्माना किया जा सकता है। (क्योंकि वह दे सकता है।)

**जेकरा होरी अइसन ठाकुर, तेकरा जम के डर? (पू०)**
जिसके ऐसे देवता, उसे यमदूत का क्या डर? व्यंग्य मे क० ।

**जेकरी जोय तेकरे पास, देखनहारा ताके आस, (भो०)**
जिसकी औरत है वह उसके पास है (अर्थात उसके कब्जे मे है), दूसरा केवल ताकता है ।

**जेकरे घुड़वा बैठिन, तेकरे आंड़ दागिन, (भो०)**
जिसके घोड़े पर बैठें, उसी के आंड़ दागें।
जिसका खाएं, उसी का नुकसान करें।

**जेठ के भ ोसे पेट**
दूसरों पर आश्रित रहना अथवा दूसरे के भरोसे कोई काम करना।
(कहावत किसी ऐसी गर्भवती स्त्री के संबंध में कही गई है, जिसका पति बिल्कुल अकर्मण्य है, और जो प्रसव आदि की व्यवस्था के लिए अब अपने जेठ पर निर्भर करती है।

**जेठ जेठे, असाढ़ हेटे**
जेठ में दिन बड़े होते है, आषाढ़ में छोटे होने लगते है।
अथवा जेठ में मौसम अच्छा रहता है, आषाढ़ में बुरा।

**जेठे लड़का-लड़की की शादी जेठ में नहीं करते**
लोकमान्यता, जिसका कोई युक्तिसंगत कारण नहीं।

**जे पांडे के पत्रा में, सो पंडयाइन के अंचरा में, (पू०)**
पांड़े की अपेक्षा पंडयाइन अधिक चतुर है।
पत्रा=पंचांग, तिथिपत्र।
अंचरा=अंचल।

. **जे पूत परदेसी भइले, देव पितर सबसे गइले, (पू०)**
जो घर से बाहर जाकर रहता है, उसका नियम-धर्म सब नष्ट हों जाता है।

**जेब में नहीं खीली की डली, छैला फिरें गली-गली**
कोरी शान बघारते फिरना।
खीली की डली सुपारी का टुकड़ा।

**जे बहुत धंधला सो आगे में पड़ेला, (भो०)**
जो बहुत अनाचार करता है, वह अन्त में हानि उठाता है।
धंधलाना = (१) धाधलेबाजी करना।
(२) धुंआ उगलना, जलना।

**जे मुंह चीरेला, से तो आहार देले चाहे, (भो०)**
जिस (ईश्वर) ने पैदा किया, वह खाने को तो देगा ही।
मुंह चीरेला = मुह चीरा है।

**जे मोरा लाल के न, से कौना काम के, (भो०)**
जो वस्तु मेरे लड़के के पास नही (वह अगर औरो के पास है) तो निकम्मी है।
अपना या अपने लड़के का बड़प्पन दिखाना।

**जेरों से शेर होते हैं**
छोटे कमज़ोर बच्चे से ही बड़ा ताकतवर आदमी बनता है।

**जेवड़े से नाड़ा घिसना है, (स्त्रि०)**
(१) जिसका कोई इलाज नहीं, वह तो सहन करना ही होगा। (२) व्यर्थ ही दुख भोगना है।
(गाय भैस आदि पालतू जानवर जिस जेवरी (रस्सी) से बंधे रहते हैं, उसी से अपनी गर्दन घिसते रहते है। बंधन से मुक्त होने में असमर्थ रहते हैं। उसी से रूपक लिया गया है। प्राय: स्त्रियों के लिए क०।)
नाड़ा - गर्दन।

**जैसन को तैसन, सुकटी को बैगन, (पू०)**
किसी दुबली-पतली लड़की का मोटे-ताजे लड़के

के साथ विवाह हुआ। उसी पर व्यंग्य में कहा गया है कि जोड़ खूब मिल गया जैसे, सूखी मछली के साथ बैंगन।
सुकटी=सूखी पतली लकड़ी को भी कहते हैं।

**जैसन देखे गांव की रीत, तैसन करे लोग से प्रीत, (पू०)**
जैसी गांव की चाल-ढाल देखे, वैसा ही लोगों से व्यवहार करे।

**जैसा ऊंट लंबा, वैसा गधा खवास**
एक-सी जोड़ी मिल जाना।
(लंबा आदमी मूर्ख समझा जाता है, उसी से कहावत में भाव यह है कि ऊंट जैसा अहमक है, वैसा ही खवास भी उसे गधा मिल गया।)
खवास=नाई, नौकर।

**जैसा कन भर, वैसा मन भर**
जैसा किसी चीज़ का एक टुकड़ा, वैसी ही पूरी चीज, कोई अंतर नहीं पड़ता।

**जैसा करोगे, वैसा पाओगे**
कर्म का यथोचित फल मिलता है।

**जैसा करोगे, वैसा भरोगे**
किए का दंड भुगतना पड़ता है।

**जैसा काछ काछे, तैसा नाच नाचे**
जैसा वेष हो, उसी के अनुसार काम करो।

**जैसा किया, वैसा पाया**
बुरे काम का बुरा फल मिलता है।

**जैसा तेरा खोट रुपैया, तैसा मेरा खोखर पैसा**
जैसा बर्ताव तुमने मेरे साथ किया, वैसा मैंने तुम्हारे साथ किया।

**जैसा तेरा घूंघर बिया, तैसी हींग हमारी**
जैसी (बुरी) चीज़ तुमने मुझे दी, वैसी ही मैंने तुम्हें भी दी।
(किसी ठग ने एक दूसरे ठग को ऐसी हींग दी, जिसमें मिट्टी ही मिट्टी थी। तब दूसरे ने भी उसके बदले में उसे मटर की ऐसी फलियां दीं, जिनके भीतर बिल्कुल घुने हुए दाने थे।)

**जैसा तेरा देना-लेना, वैसा मेरा गाना-बजाना**
जैसा तुमने दिया, वैसा मैंने काम कर दिखाया।

**जैसा तेरा नोन-पानी, वैसा मेरा काम जानी**
दे० ऊ०।

**जैसा दुद्ध, वैसा बुद्ध**
मां का दूध जैसा पीने को मिलता है, वैसी ही बुद्धि विकसित होती है।

**जैसा दूध धौला, वैसी छाछ धौली**
ऊपरी दिखावट से धोखे में पड़ना।
धौला=सफेद।

**जैसा देवता, वैसी पूजा, (हि०)**
जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाता है।

**जैसा देवे वैसा पावे; पूत भतार के आगे आवे, (पू०, स्त्रि०)**
जो जैसा करता है, वैसा पाता है।
(कथा है कि किसी स्त्री ने उक्त कहावत की सत्यता की परीक्षा के लिए दो रोटियों में विष मिलाकर किसी साधु को दे दी। उसने उन रोटियों को अपनी कुटी में ले जाकर रख छोड़ा। संयोग से उसी स्त्री का पति और लड़का कहीं से थके-हारे उस स्थान पर आ पहुंचे और साधु से पानी मांगा। साधु ने उन्हें भूखा जानकर वे दोनों रोटियां उन्हें खिला दीं, और पानी पिला दिया। वे दोनों रोटियां खाकर मर गए।)

**जैसा देस, वैसा भेस**
जिस देश में रहे, वहां जैसी रीति बरते।

**जैसा बो, वैसा काट, (कृ०)**
जैसा करोगे, वैसा पाओगे।

**जैसा मन हराम में, तैसा हरि में होय।**
**चला जाए बैकुंठ को, रोक सके ना कोय।**
स्पष्ट।

**जैसा भान, वैसा दान**
हैसियत के अनुसार दान किया जाता है।

**जैसा मुंह, वैसा थप्पड़**
(१) जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।
(२) उपयुक्त दंड या मुंहतोड़ जवाब।

**जैसा राजा, वैसी प्रजा**
राजा के अनुसार ही प्रजा होती है।

**जैसा सुई चोर, वैसा बज्जुर चोर**
चोरी-चोरी सब बराबर। जैसी छोटी चीज़ की वैसी ही बड़ी चीज़ की।
बज्जुर=वज्र फौलाद; यहा हथौड़े से अभिप्राय है।

**जैसा सूत, वैसी फेटी; जैसी मां, वैसी बेटी; (स्त्रि०)**
(१) लड़की मां जैसी ही होती है, अर्थात लड़की मे मां के गुण आते है।
(२) जैसो के तैंसे होते है।
फेटी=सूत या रेशम की लच्छी।

**जैसा सोता, वैसी धारा**
नदी का स्रोत जैसा होगा, वैसी ही नदी भी होगी। संतान अपने मां-बाप जैसी ही होती है।

**जैसी करनी, वैसी भरनी**
कर्मानुसार फल भोगना पड़ता है।

**जैसी करनी वैसी भरनी; होवे न होवे, करके देख**
दे० ऊ०।

**जैसी गई थीं वैसी आईं, हक्र महर का बोरिया लाईं**
किसी स्थान पर बहुत आशा से जाने पर कुछ न मिले, तब क०।
बदकिस्मती।
(कोई स्त्री ससुराल से मायके गई, और जब फिर ससुराल वापस आई, तो कुछ लेकर नही आई। उसी पर कहा गया है कि जैसी गई थी, वैसी ही आई, अपने साथ विवाह के हिस्से का बोरा लेकर आई, अर्थात खाली हाथ आई।)

**जैसी तेरी तानी बनिये, वैसा मेरा बुनना**
जैसे के बदले तैसा।

**जैसी तेरी तानी, वैसी मेरी भरनी**
तूने जैसी चीज़ दी, मैने वैसा ही काम कर दिया।
तानी=कपड़ा बुनने में ताने का सूत।
भरना=बाना।

**जैसी तेरी तिल चावली, वैसा मेरा गीत, (स्त्रि०)**
जैसी मजूरी (या भेंट) वैसा काम।
(विवाह या पुत्र-जन्म जैसे शुभ अवसरों पर गाने के लिए जो स्त्रियां आती हैं, उन्हें तिल-चावल दिए जाते हैं।)

**जैसी तेरी फाफड़ कोदों, वैसी मेरी हींग, (मु०)**
दे०—जैसी तेरी तानी...।
फाफड़=घुने हुए, छूछे।

**जैसी तेरी भगत, वैसा मेरा आशीर्वाद**
जैसा तूने मेरा सत्कार किया, वैसा मैंने आशीर्वाद भी दिया।

**जैसी दाई आप छिनार, वैसी जाने सब संसार, (स्त्री०)**
कोई स्त्री दूसरी को गाली देकर कह रही है। जो जैसा होता है, वह दूसरो को वैसा ही समझता है।

**जैसी नीयत, वैसी बरकत**
जैसी नीयत होती है, वैसा ही मिलता है।
नीयत -इच्छा, उद्देश्य, मंशा, सकल्प।

**जैसी फूहड़ आप छिनार; तैसी लगावै कुल व्यौहार**
दे०—जैसी दाई...।

**जैसी बंदगी, वैसा इनाम**
जैसी सेवा, वैसा फल।

**जैसी बहै बयार, पीठ तब तैसी दीजै, (गिरधर)**
अवसर या रुख देखकर काम करना चाहिए। मौका या अवसर से लाभ उठाना भी।

**जैसी माई, वैसी जाई; (स्त्रि०)**
जैसी मां, वैसी बेटी।

**जैसी रूह, वैसे फरिश्ते; (मु०)**
जैसी रूह होती है, वैसे ही फरिश्ते उसे लेने आते हैं। (भाव यह है कि हर मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार ही फल मिलता है। जब दो एक-सी वस्तुओ अथवा व्यक्तियो का जोड़ मिलता है, तब व्यंग्य में क०।)

**जैसी होत होतव्यता, वैसी उपजे बुद्ध।**
**होनहार हिरदे बसे, बिसर जात सब सुद्द।**
स्पष्ट।
होतव्यता=होनहार।
सुद्द=सुध, खबर।

**जैसे ऊधो वैसे भान; न उनके चोटी, न उनके कान**
दोनों एक से निकम्मे।

**जैसे एक बार, वैसे हजार बार**

जैसे कोई (बुरा) काम एक बार किया, वैसा हजार बार किया, कोई अन्तर नही आता।

**जैसे कंथा घर रहे वैसे रहे बिदेश।**

**जैसे ओढ़ी कामली, वैसा ओढ़ा खेस।** (स्त्रि०)

निकम्मे आदमी का घर और बाहर रहना एक-सा।

कंथा=कंत, पति।

कामली=कंबल।

खेस=गाढ़े की मोटी चादर।

**जैसे की सेवा करे, तैसी आसा पूर;** (पू०)

जैसे मनुष्य की सेवा करोगे, वैसी ही इच्छा पूर्ति होगी।

**जैसे को तैसा**

(१) जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।

(२) जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है।

(३) जो जैसा होता है, उसे दूसरे भी वैसे ही दिखाई देते है।

**जैसे को तैसा, परखने को पैसा**

जैसे के साथ तैसा व्यवहार करे, पैसा आखिर परखने के लिए ही है। दे० ऊपर भी।

**जैसे को तैसा, बाबू को भैसा**

जो जैसा हो, उसका वैसा ही सम्मान करना चाहिए।

(यहां बाबू से मतलब बड़े आदमी से है।)

**जैसे को तैसा मिले, ज्यूं बामन को नाई।**
**इसने कही आशीर्वाद, उन आरसी काढ़ दिखाई।**

जैसे को तैसा मिल जाता है, जैसे ब्राह्मण को नाई मिल गया। ब्राह्मण ने आशीर्वाद दिया—नाई ने भी उसके बदले में आरसी निकाल कर दिखला दी।

(ब्राह्मण जब किसी को आशीर्वाद देता है, तो दक्षिणा की आशा करता है, नाई भी जब विशेष अवसरों पर दर्पण दिखाता है, तो उसे इनाम दिया जाता है। कहावत में दोनो ने एक दूसरे को सूखा टरका दिया, यही उसमें मजा है।)

**जैसे को तैसा मिले, सुन रे राजा भील।**
**लोहे को चूहा खा गया, लड़का ले गई चील।**

(इसकी प्रसिद्ध प्राचीन कथा है जो बौद्ध जातक मे मिलती है। एक मनुष्य अपना लोहे का कुछ सामान अपने एक मित्र को सौपकर परदेश चला गया। कुछ वर्षों बाद आया, तो मित्र से अपनी धरोहर मागी। उसने जवाब दिया—तुम्हारा सब लोहा तो चूहे खा गए। यह सुनकर वह चुप रह गया, पर इसका बदला लेने का अवसर खोजने लगा। एक दिन जब उसके उसी मित्र का छोटा लड़का बाहर मैदान मे खेल रहा था, तो उसे उठाकर उसने घर मे छिपा लिया। जब उसका मित्र लडके को खोजता हुआ उसके पास आया और पूछने लगा कि तुमने मेरा लडका तो नही देखा ? तो उसने उत्तर दिया—हा, उसे तो चील ले गई। मित्र ने कहा—यह कैसे हो सकता है कि लड़के को चील उठा ले जाए। तब वह बोला कि यह उसी तरह समव है, जिस तरह चूहा लोहा खा गए। सुनकर वह सारी बात को ताड गया। उसने सब लोहा निकालकर दे दिया। उसे अपना लड़का भी वापिस मिल गया। यह 'कूट वणिक जातक' है।)

**जैसे गंगा नहाये, वैसा फल पाये**

श्रद्धा के अनुसार फल मिलता है।

**जैसे चिड़ियों में ढेल**

क्रूर व्यक्ति।

ढेल बाज़ पक्षी।

**जैसे दाम, वैसा काम**

जैसी मजदूरी दोगे, वैसा ही काम होगा।

**जैसे नागनाथ, वैसे सांपनाथ**

जैसे यह वैसे वह अर्थात दोनों एक से।

**जैसे नीमनाथ, तैसे बकायन नाथ**

दोनों में कोई अंतर नहीं। नीम भी कड़ुवा, बकायन भी कड़ुवा।

(नीम और बकायन एक ही समान हैं।)

**जैसे मियां काठ, वैसी सन की दाढ़ी**
किसी का मजाक उड़ाया गया है।

**जैसे मुर्दे पर सौ मन मट्टी, वैसी हजार मन, (मु०)**
क्योंकि मुर्दे पर उसका कोई असर नहीं पड़ता।

**जैसे साजन आये, तैसे बिछौना बिछाये**
साजन जैसे आए (अर्थात जिस तरह खाली हाथ आए) वैसा ही उनका सत्कार भी किया गया।

**जैसे हरगुन गाये, तैसे गाल बजाये**
सेवा में व्यर्थ समय नष्ट किया; कोई फल नहीं निकला। प्राय: उस समय कहते है जब कोई मनुष्य अपने किसी नौकर के काम की कद्र न करे। गाल बजाना सिर्फ शिव की पूजा में ही होता है। पर यहां इसका दूसरा अर्थ—व्यर्थ की बकवास भी है।

**जैसे हसन, वैसे हुसैन, (मु०)**
दोनों एक से।
(हसन और हुसैन एक ही पिता अली के पुत्र थे और समान मान से पूजे जाते है। पर यहां ये दोनों नाम सामान्य व्यक्तियो के नामों के रूप में ही प्रयुक्त हुए है।)

**जो अपने काम न आये, सो चूल्हे भाड़ में जाये**
स्वार्थी और झंझट से बचनेवाले लोगों का कहना।

**जो आंख से दूर, वह दिल से दूर**
आदमी जब तक सामने रहता है, तभी तक उससे प्रेम भी रहता है।

**जो कबीर काशी में मरिहें, रामहिं कौन निहोरा?**
हिन्दुओं का विश्वास है कि काशी में मरने से मुक्ति होती है। कबीर कहते है कि अगर किसी को काशी में मरने के कारण मुक्ति मिलती है, तो उसमे ईश्वर का क्या एहसान?
(जब कोई मनुष्य किसी के पास काम में कुछ सहायता मांगने जाए और वह यह कहकर टाल दे कि इसमें क्या है, इसे तो तुम्हीं कर सकते हो। तब इस अर्थ में कहावत का प्रयोग होता है कि हम तो कर ही लेगें, लेकिन उसमें फिर तुम्हारी क्या तारीफ?)

**जो कहते है वह, करते नहीं**
बकवास करनेवालों से काम नहीं होता।

**जो काम हिकमत से निकलता है, वह हुकूमत से नहीं निकलता**
बुद्धि से जो काम बनता है, वह बल से नहीं।
हिकमत = युक्ति; तदबीर; चतुराई का ढंग।

**जो किसी का बुरा चेतेगा, उसका पहले बुरा होगा**
स्पष्ट।

**जो कोई कलपाय है, सो कैसे कल पाय है?**
जो दूसरों को सताता है, उसे शान्ति नहीं मिलती।

**जो कोई खाय चने का ढूंक, पानी पीवै सौ-सौ घूंट**
चने रूखे होते हैं, और उनके खाने से प्यास लगती है।

**जो कोई खाय निबाह के ज्वार, मूल बने वह मूढ़ गंवार**
जो जन्म भर केवल ज्वार खाता है, वह सदा मूर्ख और गंवार बना रहता है।
(शायद इसलिए कि ज्वार बहुत पौष्टिक नहीं होती। घटिया अनाज खानेवालो के लिए धनियों की घृणा भी इससे व्यक्त होती है।)

**जो खुदा सिर पर सींग दे, तो वह भी सहने पड़ते हैं**
किसी धैर्य्यवान और संतोषी पुरुष का क०।

**जो गंवार पिंगल पढ़े, तीन बस्त से हीन।**
**बोली चाली बैठको, लीन विधाता छीन।**
गंवार चाहे जितना पढ-लिख जाए, फिर भी उठने-बैठने और बोलने का सलीका उसे नही आ पाता। यह भी एक दंभ है एक वर्ग का।

**जो गदहे जाते संग्राम, तो काहे को ताजी को खरचे दाम**
मूर्खों से यदि बड़े कार्य सिद्ध होने लगे, तो फिर पढे-लिखों की जरूरत ही क्या रहे?
ताजी = घोड़े की एक नस्ल; अरबी घोड़ा।

**जो गरजते हैं, वह बरसते नहीं**
डींग हांकनेवालों से काम नहीं होता।

**जो गिरा खाई के अंदर, सो पड़ा फेरी मे**
जो किसी बुरे काम में (या झंझट में) फंस जाता है, वह मुश्किल से उबरता है।

**जोगी का लड़का खेलेगा तो सांप से**

संपेरे का लड़का सांप से ही खेलता है। बाप के गुण (या दुर्गुण) लड़के में भी आते है।

**जोगी किसके मीत ?**

जोगी किसी के मित्र नही होते।

(उन्होंने तो दुनिया त्याग रक्खी है।)

**जोगी की पीत क्या ?**

किसी वीतराग से प्रेम करना व्यर्थ है।

**जोगी की-सी फेरी**

भूल से कभी-कभी आ जाना।

**जोगी केहके मीत, कलंदर केहके साथ ?**

हिन्दू साधु जोगी और मुसलमान फ़कीर कलंदर कहलाते हैं। ये किसी के मित्र नही होते, क्योकि वे तो हमेशा घूमते-फिरते रहते है।

**जोगी को बैल बला**

जोगी को बैल दिया जाए, तो वह तो उसके लिए एक विपत्ति ही सिद्ध होगा। वह उसे कहां रक्खेगा, कहां बांधेगा ?

**जोगी जुगत जानी नही, कपड़े रंगे तो क्या हुआ**

किसी काम को अच्छी तरह सीखे बिना केवल भेष बदलने से काम नही चलता।

जुगत=युक्ति, योग की क्रिया।

**जोगी जोगी लड़े, खप्परों का खौर**

क्योंकि उनके पास लड़ने के लिए और रक्खा ही क्या ?

(बडो की लड़ाई मे छोटे पिसते है।)

खप्पर=जोगियो का भिक्षापात्र।

खौर=हानि।

**जोगी था सो उठ गया, आसन रही भभूत**

आदमी के मरने पर केवल उसका नाम रह जाता है।

(जोगी शब्द आत्मा के लिए प्रयुक्त हुआ है।)

**जोगी मारे छार हाथ**

ग़रीब को मारने से कोई लाभ नही।

छार=(१) वह राख, जो जोगी अपने शरीर पर चढ़ाए रहते हैं। (२) धूल।

**जो गुड़ खाय, सो कान छिदाय**

जो मीठा खाना चाहे, वह कष्ट उठाए।

(उपर्युक्त वाक्य कान छेदते समय बच्चो से क०।)

**जो चढ़ेगा, सो गिरेगा**

(१) जो काम करता है, वह असफल भी होता है।

(२) महत्वाकाक्षी हानि उठाता है।

**जो चप-चप कर आंख झपावे, वह कै रन में सेल चलावे**

आलसी आदमी जो आख मिचमिचाता रहता हो, वह युद्ध मे बरछा क्या चलाएगा ?

**जो चोरी करता है, सो मोरी भी रखता है**

चोरी या बदमाशी करनेवाला अपने बचने का उपाय भी पहले से सोच रखता है।

मोरी मुहरा, निकलने का रास्ता।

**जो छावे, सो पावे**

जो प्रयत्न करता है उसे मिलता है।

छाना=घर पर छप्पर चढाना।

**जो जाए कलकत्ते, वह खे खाए अलबत्ते**

इसके दो अर्थ है—

(१) जो कलकत्ते जाता है, उसे खे यानी विष्ठा अवश्य खानी पडती है। यह इसलिए कहा गया है कि जब बहुत शुरू मे कलकत्ते मे पानी की कल नही थी, तब तमाम शहर का मैला गगा मे बहाया जाता था और वही पानी सबको पीना पड़ता था।

(२) जो कलकत्ते जाता है, वह खे खाता है। अर्थात कुछ और काम न मिले तो नाव खेकर ही अपना पेट भर सकता है, क्योकि कलकत्ता एक बड़ा बंदरगाह जो है।

**जो जीवे सो खेले फाग, मुआ सो लेखे लोग**

जो जीवित है, उसी के लिए जीवन का आनंद है; जो मर गया, उसका तो हिसाब-किताब ही पूरा हो चुका।

**जो टका देगा, उसका लड़का खेलेगा**

जो पैसा ख़र्च करता है, वही लाभ उठाता है।

(क़िस्सा है कि कोई मनुष्य परदेश जा रहा था। पड़ोसियों ने उससे तरह-तरह की चीजों की फ़र-

माइश की। पर एक आदमी ने दो पैसे (टका) देकर कहा कि इसका झुनझुना ले आना। उसने जवाब दिया—'बस तेरा ही लड़का खेलेगा'।)

**जोड़-जोड़ मर जायेंगे, माल जंवाई खायेंगे।**
**जंवाई भी न होगा, तो खालसे लग जायेंगे।**

कंजूस के लिए क०।
(महाराज रणजीतसिंह के शासनकाल में जब कोई लावारिस मरता था, तो उसकी सम्पत्ति खालसा-सरकार में ज़ब्त कर ली जाती थी। 'खालसे लग जायेंगे' का यही अभिप्राय है कि धन खालसा-सरकार में चला जाएगा।)

**जोड़ियां संयोग है**

विवाह के लिए क० कि लड़के-लड़की का सम्बन्ध तो भाग्य पर निर्भर है।

**जोड़ी बलवान है**

दे० ऊ०।

**जो तिल हद से ज़्यादा हुआ, सो मस्सा हुआ**

हद से बाहर कोई चीज़ अच्छी नही लगती।
(छोटा तिल चेहरे पर अच्छा मालूम देता, है पर वही जब बढ़कर मस्सा हो जाता है तो चेहरे की रौनक को बिगाड़ देता है।)

**जो तैरेगा, सो डूबेगा**

जो प्रयास करेगा, वह कभी-कभी असफल भी होगा। प्रयास न करनेवाले के लिए असफलता का प्रश्न ही नहीं।

**जो दम गुज़रे, सो ग़नीमत है**

आनंद से जितना समय बीत जाए, सो ही अच्छा।

**जो देखा, सो पेखा**

दोनों में कोई अंतर नही। 'देखा' का जो अर्थ है वही 'पेखा' का।

**जो धन जाता देखिये तो आधा दीजे बांट**

यदि पूरी संपत्ति नष्ट हो रही हो, तो आधी दूसरों को देकर यश लूट लेना चाहिए।

**जो धरती पै आया, उसे धरती ने खाया**

जो धरती पर जन्म लेता है, वह धरती में ही फिर मिल भी जाता है।

**जो धावे सो पावे, जो सोवे सो खोवे**

जो परिश्रम करेगा, वही (धन) पाएगा; जो आलस्य करेगा, वह गांठ का भी खो बैठेगा।

**जो निकले सो भाग धनी के**

जो कुछ भी मिलेगा, सो मालिक का भाग्य, अर्थात हमें क्या, हम कौन कही ले जाएंगे।
(प्रायः खेती के काम में सहायता करनेवाले चोट्टे और लापरवाह मज़दूर कहा करते हैं।)

**जो पहले मारे सो मीर**

जो पहले मारता है, सो जीतता है।
(शतरज के खेल में जो पहले मुहरा मारना शुरू कर देता है, वही फायदे में रहता है। उसी संदर्भ में वाक्य कहा गया है।)

**जो पारस से कंचन उपजे, सो पारस है कांच।**
**जो पारस से पारस उपजे, सो पारस है सांच।**

सच्चा महापुरुष वही है, जो दूसरों को भी अपने जैसा बना ले।
पारस—वह प्रसिद्ध कल्पित पत्थर जिसके संबंध में कहा जाता है कि यदि लोहा उससे छुवाया जाए, तो वह सोना हो जाता है। स्पर्शमणि।

**जो पूत दरबारी भये, देव पितर सबसे गये**

जो सरकारी नौकरी करते हैं, वे देव-पितरों के काम के नही रहते, अर्थात अंग्रेज़ी सभ्यता के प्रभाव से अपने धर्म मे निष्ठा खो बैठते है।
(पुरातन पंथी हिन्दुओं की धारणा।)

**जो प्याज काटेगा, सो आप रोयेगा**

जो उपद्रव करेगा, वह उसका दंड भी भोगेगा।
(प्याज काटने से उसका झाग आंखों में जाता है, और आंसू निकलने लगते हैं। उसी से मतलब है।)

**जो फल चक्खा नहीं, वही मीठा**

जो वस्तु कभी चक्खी नहीं होती, उसके लिए मन ललचाता है, फिर वह कैसी ही क्यो न हो?

**जो बंदा नवाज़ी करे, जान उस पर फ़िदा है।**
**बेफ़ैज़ अगर यूसफ़े सानी है, तो क्या है?**

जो मेरे साथ अच्छा बर्ताव करे, उस पर जान न्यौछावर कर सकता हूं, पर जिसके हृदय में मेरे लिए

आदर नहीं, ऐसा दूसरा यूसुफ़ भी अगर मिले, तो उससे मुझे कोई सरोकार नहीं।

(यूसुफ़ हज़रत याक़ूब के पुत्र थे, जिन पर मिस्र की जुलेखा आसक्त हो गई थी। वह बड़े रूपवान थे। उन्होंने मिस्र पर बहुत दिनों तक राज्य किया।)

**जोबन था तब रूप था, गाहक था सब कोय।**
**जोबन रतन गंवाय के, बात न पूछे कोय।**

जब मेरे पास यौवन और रूप था, तब सब मुझे चाहते थे। पर यौवन रूपी रत्न को (अब) जब मै खो बैठी हूं, तब कोई मुझसे बात नही करता।

**जो बर देख ताप मुझे आवे, सोई बर मुझे ब्याहन आवे, (पू०, स्त्रि०)**

(१) जिस वस्तु से अत्यधिक घृणा थी, वही पल्ले पड़ी,। अथवा (२) जो काम करना नही चाहते थे, वही विवश होकर करना पड़ रहा है।

बर=वर, दूल्हा।

**जो बहुत करीब, सो ज़्यादा रक़ीब**

नजदीक ही के लोग दुश्मन होते है।

रक़ीब=प्रेमिका का दूसरा प्रेमी।

**जो बहुत धधला, सो आगे में पड़ेला, (भो०)**

जो बहुत अनाचार करता है, वह हानि उठाता है।

धधलाना=(१) धांधली करना।

(२) धुधुआना, आग उगलना।

**जो बात है सो खूब है, क्या बात है आपकी ?**

व्यंग्य में क० कि आपकी क्या तारीफ की जाए? आपकी हर बात निराली है।

**जो बामन की जीभ पर, सो बामन की पोथी में**

ब्राह्मण अपने मतलब की व्यवस्था ही पत्रा देखकर देता है, अर्थात अपने यजमान को वह वैसी ही सलाह देता है, जिससे उसे दान-दक्षिणा मिल सके।

**जो बामन की पोथी में, सो यारों की ज़बान पर**

(१) ब्राह्मण पत्रा देखकर जो कुछ बताएगा, उसे हम पहले से जानते हैं। अथवा

(२) ब्राह्मण जो बताएगा, वही हमारे यार लोग भी बताएंगे।

(खाने-पीने की बात)।

**जो बिन सहारे खेले जुआ, आज न मुआ, कल मुआ**

जो बिना अनुभव के जुआ खेलता है, वह कभी न कभी दचका खाता है।

**जो बोवेगा, सो काटेगा**

(१) जैसा करेगा, वैसा पाएगा।

(२) जो उद्योग करेगा, वह उसका फल भी पाएगा।

**जो बोले सो कुंडा खोले**

पुकारने से जो बोले, वही कुंडा खोले।

(घर के दरवाज़े की कुंडी जब भीतर से बंद रहती है, तो पुकार कर खुलवाना पड़ती है। भीतर से जो जवाब देता है, उसी को प्रायः दरवाज़ा खोलने आना पड़ता है। भलमनसाहत का नतीजा।)

**जो बोले सो घी को जाय**

(इस कहावत की दो विभिन्न कथाएं प्रसिद्ध हैं, और उन दोनो के अलग-अलग दो अर्थ निकलते है। पहली कथा इस प्रकार है—

(१) एक बार चार मूर्खों ने मिलकर रसोई बनाने का इरादा किया। अब इस बात को लेकर उन चारों में झगड़ा होने लगा कि घी कौन लाए। अन्त में उन्होने तै किया कि जो पहले बोलेगा, उसी को घी लाने जाना पड़ेगा। जब वे चारों मौन साधे बैठे थे, तब एक पहरेदार वहां आ गया। उसने पूछा—तुम लोग कौन हो? यहां क्या कर रहे हो? कहां से आए हो? इत्यादि।

अपने प्रश्नों का कोई उत्तर न पाकर पहरेदार उन्हे पकड़कर कोतवाली ले गया। वहां कोतवाल के पूछने पर भी जब उन लोगों ने कोई जवाब नहीं दिया, तो उन्हें कोड़े लगाने का हुक्म मिला। उनमें से एक, जो कोड़ों की मार नही सह सका, जोर से रो उठा। तब वे तीनों बोल उठे—बस तुम्हीं घी लेने जाओ। इससे कहावत का अर्थ है किसी काम में मूर्खतापूर्ण हठ।

(२) एक दूसरी कथा है कि एक बार चार मनुष्यों ने मिलकर खिचड़ी पकाई। जब वे खाने बैठे तो एक ने कहा—तुम लोग खिचड़ी में घी डालना

भूल गए। इस पर तीनों बोल उठे--हां हां, तुम्हीं जाकर ले आओ। इससे कहावत का मतलब यह हुआ कि जो सलाह दे, वही उस काम को करे भी।

**जो भादों से बरखा होय, काल पछोकर जाकर रोय**

भादों में वर्षा होने से अकाल रोता है, अर्थात पैदावार अच्छी होती है।

**जो भूखे को देत है, जथा शक्ति जो होय।**
**ता ऊपर सीतल बचन, लखे आत्मा सोय।**

जो भूखे को भोजन देता है, वही सच्चा दयावान पुरुष है।

**जो मन में बसे सो सुपने दसे**

मन में जो इच्छा होती है, वह सपने में (पूरी हुई) दिखाई देती है।

**जो मां से सिवा चाहे सो डायन**

मां से अधिक प्रेम कोई कर नहीं सकता। उचित से अधिक स्नेह कोई दिखावे, तो समझना चाहिए कि वह बनावटी है।

**जो मेरे सो तेरे, काहे दांत निपोरे**

ईश्वर ने सबको एक-सा पैदा किया है। जैसे भीतर से हम नंगे हैं, वैसे ही तुम भी हो ; इसमें हँसने की कौन-सी बात ?

**जो मेरे है सो राजा के नहीं**

धन सम्पत्ति का अभिमान करनेवाला।

**ज़ोर की लाठी सिर पर**

ज़बर्दस्त की लाठी सिर ही पर पड़ती है।

**ज़ोर के आगे ज़र्ब नहीं चलती**

ज़बर्दस्त को चोट से कोई हानि नहीं पहुंचती।

**ज़ोर थोड़ा, गुस्सा बहुत**

कमज़ोर को बहुत गुस्सा आता है।

**ज़ोर न ज़ुल्म, अक्ल की कोताही**

ज़ोर या ज़ुल्म इतना कष्टदायक नहीं होता, जितना मूर्ख होता है।

**जोरू का घघला बेचकर तंबूरी रोटी खाई है, (मु०)**

स्वार्थीपन या पेटूपन की हद।

घघला =लहंगा।

**जोरू का मरना और जूती का टूटना बराबर है**

जूती पुरानी हो जाने पर नई खरीदी जा सकती है, उसी तरह औरत के मरने पर दूसरी शादी भी फ़ौरन की जा सकती है।

(पुरुष-प्रधान समाज की बौखलाहट भरी उक्ति।)

**जोरू का मरना, घर का खराबा**

स्त्री के मरने से घर बर्बाद हो जाता है।

**जोरू का मुरीद**

औरत का गुलाम।

**जोरू खसम की लड़ाई क्या**

होती ही रहती है।

**जोरू खसम की लड़ाई, दूध की मलाई**

पति-पत्नी का झगड़ा तो एक मज़े की चीज़ है, कोई विशेष बात नहीं।

**जोरू टटोले गठरी, और मां टटोले अंतड़ी**

जोरू को यही फ़िक्र रहती है कि मेरे पति के पास कितना धन है और मां यही देखती रहती है कि मेरे लड़के का पेट अच्छी तरह भरा है या नहीं। आशय यह कि स्त्री धन चाहती है और मां अपने पुत्र का स्वास्थ्य।

**जोरू न जांता, अल्लाह मियां से नाता**

अविवाहित या फक्कड़ के लिए क०।

**जो सादी चाल चलता है, वह हमेशा खुशहाल रहता है**

सादगी से रहनेवाला सदा सुखी रहता है।

**जो साधु की माने बात, रहे अनंद वह दिन रात**

सज्जन पुरुष की बात माननी चाहिए।

**जो सिर उठाकर चलेगा, सो ठोकर खायेगा**

अहंकारी को नीचा देखना पड़ता है।

**जो सेवा करे सो मेवा पावे**

सेवा का मीठा फल मिलता है।

**जो सोवे उसका पड़वा, जो जागे उसकी पड़िया**

सोनेवाले को पड़वा और जागनेवाले को पड़िया मिलती है, जो कीमती होती है।

सचेत रहनेवाला मुनाफ़े में रहता है।

दे०--जागते की कटिया...।

**जो हांड़ी में होगा सो रकाबी में आवेगा**
मन की बात प्रकट होकर रहेगी। अथवा जो बात सामने आने को है, वह तो आकर ही रहेगी, उसके लिए परेशान होने की ज़रूरत क्या ?

**ज़ौक में शौक, दस्तूरी में लड़का**
खुशी में शौक और मुफ्त मे लडका। जब केवल आनद के लिए कोई काम किया जाए और उसमे लाभ भी हो, तब क०।
ज़ौक=किसी वस्तु से प्राप्त होनेवाली प्रसन्नता।

**जौ के खेत कंडुआ उपजे**
जब किसी घर मे कोई लडका बहुत अयोग्य निकले, तब क०।
कंडुआ या कुडुआ=जौ, गेहू आदि की एक बीमारी, जिसमे दाना सडकर काला पड़ जाता है।

**जौ को गये, सतुआनी को आये, (पू०)**
कोई दूसरे के यहा से जौ माग कर लाया, तो वह उसके यहा सत्तू खाने आ गया।
(अपनी कोई थोडी चीज देकर बदले मे बहुत चाहना।)

**जौ फ़रोश, गंदुमनुमा, (फा०)**
बेचता जौ और दिखलाता गेहू है। धूर्त मनुष्य।

**जौ ले दलिद्दर दादा छीपा लावत, तब ले हमरा भुईं में दो**
जब तक दारिद्र्य देव छीपा लाते हैं, तब तक हमे ज़मीन मे ही (खाने को) दो।
बहुत ग़रीबी।
छीपा=बास का थालीनुमा बर्तन।

**जौहर को जौहरी पहचाने**
गुण की परख गुणी ही कर सकता है।

**ज्यादा जीकर क्या आक़बत के बोरिये समेटोगे ?**
ज्यादा जीकर क्या और भी पाप कमाओगे ?
(बूढ़े आदमी से, जिसे जीने की ज्यादा हविस हो, व्यंग्य में क०।)
आक़बत=मरने के बाद की स्थिति, परलोक।

**ज्यारते बुज़ुर्गां कफ़्फ़ारह्-ए-गुनाह**
बड़े-बूढ़ों का सम्मान करने से पापों का क्षय होता है।

**ज्यों-ज्यों बाव बहे पुरवाई, त्यों-त्यों घायल अति दुख पाई**
पुरवाई चलने पर घाव या चोट का दर्द बढ़ता है।

**ज्यों-ज्यों भीजे कामरी, त्यों-त्यों भारी होय**
(१) जब किसी आदमी पर कर्ज़ बहुत हो जाता है, और वह उसका ब्याज भी नही दे पाता, तथा कर्ज़ का बोझ बढता ही जाता है, तब क०।
(२) ज्यो-ज्यो उम्र बढती है, त्यो-त्यो पापो का बोझ भी बढ़ता जाता है, यह अर्थ भी होता है।

**ज्यों-ज्यों मुरगी मोटी हो, त्यों-त्यों दुम सुकड़े**
कजूस के पास जितना धन बढ़ता जाता है, उसकी कृपणता भी उतनी ही बढ़ती जाती है।

**ज्यों-ज्यों लिया तेरा नाम, त्यों-त्यों मारा सारा गांव**
ज्यो-ज्यो मैने आपका नाम लिया, त्यो त्यो गाव-वालो ने मुझे और भी मारा।
(किसी अत्याचारी अफसर के सबध मे कहा गया है।)

**ज्यों ही कहा, त्यों ही किया**
तुरंत आदेश मानना।

**ज्ञान बढ़े सोच से, रोग बढ़े भोग से**
चितन से ज्ञान बढता है, और आहार-विहार मे असयम से रोग।

**झगड़ा झूठा, कब्ज़ा सच्चा**
अधिकार ही सच्चा है। कानून की दृष्टि मे भी चीज जिसके अधिकार मे होती है, उसी की मानी जाती है।

**झगड़े की तीन जड़, ज़र ज़मीन और जोरू**
दुनिया के जितने भी झगड़े है, वे सब जमीन, जायदाद और स्त्री इन तीन चीज़ो को लेकर ही होते हैं।

**झटपट की घानी, आधा तेल आधा पानी**
जल्दी का काम अच्छा नही होता।

**झड़बेरी का कांटा**

जो ऐसा चिपटे कि उससे पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाए।

(झड़बेरी का कांटा बड़ा तेज और टेढ़ा होता है और चुभ जाने पर बहुत कष्ट देता है।)

**झड़बेरी के जंगल में बिल्ली शेर**

क्योंकि कांटों की वजह से उसे वहां कोई आसानी से पकड़ नहीं सकता।

**झांट उपाड़े से मुरदा हलका नहीं होता**

नाम मात्र के प्रयत्न से कोई बड़ी मुसीबत दूर नहीं होती।

**झाड़ बिछाई कामली और रहे निमाने सोय**

फकीरों की आवाज।

निमाने=नीचे।

**झाड़ भी बनिये का बैरी है**

क्योंकि वहां चोर छिपे रहते है। बनिये से सब नाराज रहते है।

**झींगुर बैठे बगुचा पर, कहस हम ही मालिक हैं, (पू०)**

झींगुर सूती कपड़ों को बड़ी हानि पहुंचाता है। अनधिकारी ढंग से कब्ज़ा।

बगुचा - कपड़े की गठरी।

**झुके जो कोई उससे झुक जाइये, रुके आपसे उससे रुक जाइये**

जो विनम्र बने, उसके साथ और विनम्र बन जाना चाहिए; जो झगड़ा करने से स्वयं ही हाथ खींच ले, उसके साथ फिर झगड़ना नही चाहिए।

**झूठ कहे सो लड्डू खाय, सांच कहे सो मारा जाय**

दुनिया में झूठों की ही क़द्र है।

**झूठ की नाव मझधार डूबती है**

झूठ का अन्त में भंडाफोड़ होता है।

**झूठ के पांव नहीं होते**

झूठ परीक्षा में ठहरता नहीं। कलई खुल जाती है।

**झूठ न बोले तो अफर जाय**

झूठे से क० कि क्या झूठ बोले बिना तुम्हारा काम नहीं चलता?

अफरना=भर जाना, फूल उठना।

**झूठ न बोले तो पेट फट जावे**

दे० ऊ०।

**झूठ बराबर पाप नहीं**

स्पष्ट।

**झूठ बोलना और गू खाना बराबर है**

झूठ बोलना एक बहुत घृणित कार्य है।

गू=विष्ठा, मल।

**झूठ बोलने में रक्खा क्या है?**

झूठ बोलना व्यर्थ है।

**झूठ बोलने में सर्फ़ा क्या**

(१) झूठ ही बोलना है, तो उसमें किफ़ायत क्या?

(२) झूठ बोलने में कुछ खर्चा नहीं होता, यह अर्थ भी होता है।

सर्फा कम-खर्ची।

**झूठ बोलनेवालों को पहले मौत आती थी, अब बुखार भी नहीं आता**

झूठ बोलनेवाले से मज़ाक में क०।

**झूठ बोलूं तेरे मुंह पर**

मेरी इतनी हिम्मत नहीं कि तुम्हारे सामने झूठ बोलूं।

**झूठ से काम नहीं चलता, (व्य०)**

झूठा सफल नहीं होता।

**झूठा जूठ से बुरा जो सोने का होय**

झूठ हर हालत में बुरा।

**झूठा मरे न शहर पाक होय**

झूठों से ही शहर गंदा रहता है।

**झूठी बात बना ले, पानी में आग लगा ले**

बहुत धूर्त्त आदमी।

**झूठ का मुंह काला, सच्चे का बोलबाला**

झूठे की हमेशा हार होती है, सच्चे की जीत।

**झूठे की कुछ पत नहीं, सज्जन कूड़ न बोल।**
**लखपती का झूठ से, दो कौड़ी हो मोल।**

झूठे का कोई विश्वास नहीं करता।

**झूठे की नहीं बढ़ बढ़ती**

झूठा कभी तरक्की नहीं करता।

**झूठे के आगे सच्चा रो मरे**

झूठे के आगे सच्चा हार मान लेता है।

**झूठे के मुंह में बू आती है**

झूठा घृणित जीव है।

**झूठे को घर तक पहुंचाना चाहिए**

(१) जिसमें उससे फिर पाला न पड़े। अथवा
(२) झूठे को तभी छोड़े, जब उसके मुह से सच निकलवा ले।

**झूठे घर को घर कहें, सच्चे घर को गोर।**
**हम चाले घर आपने (और) लोग मचावें शोर।**

स्पष्ट। वैराग्य की उक्ति।

**झूठे जग पतयाय**

(१) इस संसार मे झूठो का ही लोग विश्वास करते है। अथवा
(२) झूठे ससार को लोक पतयाते है, अर्थात सच्चा करके मानते है।
(वेदान्तियो का यह सिद्धान्त है कि ससार माया है।)

**झूठे हाथ से कुत्ता भी नहीं मारता**

कंजूस के लिए कहना।
(झूठे हाथ मे भोजन का कुछ-न-कुछ अंश लगा रहता है। इसलिए भाव यह है कि भोजन के बाद हाथ मे जो अन्न लगा है, कंजूस को उसके भी नष्ट होने का डर रहता है । कहावत का रूप यह भी हो सकता है कि झूठे हाथ से कुत्ता भी नही मारना चाहिए, जो ठीक जान पड़ता है।)

**झूठों का घर नहीं बसता**

झूठा कभी खुशहाल नही हो पाता।

**झूठों का बादशाह**

बहुत झूठा।

**झोंपड़ी में रहे, महलों का ख्वाब देखे**

अपने बूते के बाहर के ऊंचे ख्याल बांधना।

**झोटे-झोटे टक्करें लड़े, झुंडियों का नाश हो**

भैंसे तो लड़ें, पौधों का नाश हो।
बड़ों की लड़ाई में छोटे व्यर्थ मारे जाते हैं।

**टंटा मत कर जब तलक बिन टंटे हो काम।**
**टंटा बिस की बेल है, या का मत ले नाम।**

बिना झगड़े के काम बन जाए, तो झगड़ा नहीं करना चाहिए। झगड़ा बुरी चीज़ है।

**टका कराई, और गंडा दवाई**

दवा कराने के लिए तो (वैद्य को) एक टका दिया, पर दवा केवल पांच ही कौड़ी की मगाई।
(जहां करना चाहिए, वहा खर्च न करके दूसरी मद में अधिक खर्च करना।)

**टका रोटी अब ले, चाहे तब ले**

इतना कभी ले लो। इससे अधिक की आशा मत करो।

**टका-सा जवाब दे दिया**

साफ़ इन्कार कर दिया।

**टका हो जिसके हाथ में, वह बड़ा है जात में**

पैसेवाले का ही सम्मान सब जगह होता है।

**टका का सारा खेल है**

दुनिया के सब काम पैसे से ही होते हैं।

**टके की मुर्गी, छः टके महसूल**

जितने की चीज़ नहीं, उतने से अधिक उस पर खर्च हो जाना।

**टके की लौंग, बानती खाय, कहो घर रहे कि जाय?**

बनियों पर ताना है। वे प्रायः कंजूस होते हैं। उनकी स्त्री अगर दो पैसे रोज़ की लौंग खा जाए, तो काम कैसे चलेगा?

**टके तीतर गइला पर, पांच रुपैया भइला पर**

गरीब को कोई चीज़ दो पैसे में भी उतनी ही महगी जान पड़ती है, जितनी अमीर को पांच रुपए मे।
गइला पर न होने पर । भइला पर=होने पर।

**टट्टर खोल निखट्टू आया, (स्त्रि०)**

अकर्मण्य पति के लिए उसकी स्त्री का कहना।

**टट्टी की ओट शिकार खेलते हैं**

धोखा देते हैं। छिपकर बुरा काम करते हैं।

**टट्टू को कोड़ा और ताजी को इशारा**

मूर्ख मुश्किल से समझता है, समझदार इशारे से ही समझ जाता है।

ताजी = घोड़ों की एक किस्म; अरबी घोड़ा।

**टपके का डर है**

बारिश में घर के टपकने का डर है। जब किसी के मन में कोई ऐसा ख़ास डर समा जाए कि जिसकी वजह से वह कोई काम न कर सके, तब क०।

(इसकी कथा है कि एक बूढ़ा सिपाही, जिसने कभी भले दिन देखे थे, अपने सड़ियल टट्टू पर सवार हो कहीं जा रहा था। शाम को वह एक जंगल में जहां शेर, भालू आदि हिंसक जंतुओं का डर था, एक बुढ़िया की झोपड़ी में ठहर गया और पूछने लगा कि यहां किसी बात का डर तो नहीं है। बुढ़िया बोली—सरकार, डर तो किसी बात का नहीं है, अगर है तो टपके का है। झोंपड़ी के पीछे एक शेर खड़ा यह सब सुन रहा था। उसने समझा कि 'टपका' कोई मुझसे भी जबर्दस्त जानवर है, जिसके सामने मेरे डर की कोई परवाह ही नहीं की गई। संयोगवश आधी रात को पानी बरसा, जिससे सिपाही का घोड़ा खूटे से छूट गया। सिपाही अंधेरे में घोड़ा खोजने गया तो उसके हाथ शेर पड़ गया। वह उसे ही टट्टू समझ बांधकर झोंपड़ी ले आया और खूटे से बांध दिया। शेर भी 'टपका' समझ उससे कुछ न बोला। सुबह होते ही यह बात तमाम में फैल गई कि किसी ने एक शेर को रस्सी से बांध रखा है। राजा ने जब यह ख़बर सुनी तो वह स्वयं उस दृश्य को देखने आए और सिपाही पर इतने प्रसन्न हुए कि उसे बहुत-सा इनाम देकर फ़ौज का सरदार बना दिया।)

**टहल करो फ़क़ीर की, देवे तुम्हें असीस।**
**रैन दिना राजी रहो, जुग में बिस्वा बीस।**

स्पष्ट।

**टहल करो मां-बाप की, हो संपूरन आस।**
**या**
**टहल से जो फिर नरक उन्हीं का बास।**

स्पष्ट।

**टहल न टकोरी, लाओ मजूरी मोरी**

काम कुछ न करना, मुफ्त का मांगना।

**टहलिये को टहल सोहे, बहलिये को बहल सोहे**

जिसका काम उसी को शोभा देता है।

**टांका पाना मिल गया**

समझौता हो गया, दो आदमियों में आपस का झगड़ा ख़त्म हो गया और वे फिर मित्र बन गए।

टांका पाना = कपड़े का जोड़, सीवन।

**टांकी बज रही है**

मकान तैयार हो रहा है। किसी की उन्नति देखकर क०।

(टांकी से पत्थर काटते-छांटते हैं और उसकी आवाज़ होती है।)

**टांग उठे ना, चढ़ल चाहे हाथी**

शक्ति से बाहर काम करने का प्रयास करना।

**टांग के नीचे से निकाल दिया**

नीचा दिखा दिया; काबू में कर लिया।

**टांग पकड़ कर लाये और पूंछ पकड़ के बहा दिया**

किसी के साथ बहुत दुर्व्यवहार करना।

**टांटे से नाटा भला, जो देवे तुरत जवाब।**
**वह टांटा किस काम का, जो बरसों करे खराब।**

टंटा (झगड़ा) करनेवाले से तो नट जानेवाला अच्छा। वह झगड़ा किस काम का जिससे समय नष्ट हो।

नाटा = वादे से पलट जानेवाला।

**टाट, कामला, दोलड़ा, तीनों जात गुलाम,**
**जित चाहे तित बैठकर, तुरत करो बिसराम।** (ग्रा०)

टाट, कंबल और दोहर तीनों बड़े काम की चीज़ें हैं, जहां चाहे बिछा लो और आराम करो।

(इनके ख़राब होने का डर भी नहीं रहता।)

**टाट कामले घर मां घाले, बाहर बतावे शाले दुशाले,** (ग्रा०)

झूठी शेखी बघारनेवाले के लिए क०।

कामले = कंबल।

घर मां घाले = घर में खाने को नहीं।

**टाट के अंगिया, मूंज की तनी, देख मेरे देवरा मैं कैसी बनी ?** (स्त्रि०)

(१) जब कोई औरत अपनी भद्दी पोशाक सबको दिखाती फिरे, तो उसको ताने में...।

(२) भद्दे और बेतुके काम के लिए भी व्यंग्य में कहा जा सकता है।

**टायर, टट्टू, गज, गऊ, पूत, मीत, धन, माल।**
**कोऊ संग न जात है, जब लै जिऊ निकाल।**

मरने पर कुछ भी साथ नहीं जाता।
टायर=घोड़ा।

**टायर भला न लांगड़ा, रूख भला न झांगड़ा**

लंगड़ा घोड़ा अच्छा नहीं, और न कटीला पेड़ ही।

**टाल न भूखे को कभी, जो दे तुझे खुदा।**
**आधी में से पास जो, उसे बांट कर खा।**

स्पष्ट।

**टाल बजा के मांगे भीख; उसका जोग रहा क्या ठीक?**

जो घंटा बजाकर भीख मांगे उसकी साधना तो व्यर्थ है।
(घंटा बजाकर मांगनेवाले साधुओं पर 'व्यंग्य।)

**टाल बता उसको न तू, जिससे किया करार।**
**चाहे हो बैरी तेरा, चाहे होवे यार।**

किसी के साथ वायदा करके उसे फिर धोखा नही देना चाहिए, चाहे वह शत्रु हो या मित्र।

**टालमटोला मत करे, किये बचन भुगताय।**
**जो नर बचनों से फिरे, वह पत देत गंवाय।**

वचन देकर पूरा करना चाहिए, टालना ठीक नहीं। वादाखिलाफ़ी करनेवाले पर से लोगों का विश्वास उठ जाता है।

**'टिकटिक' समझे 'आआ' समझे; कहे सुने से रहे खड़ा।**
**कहें कबीर सुनो भाई साधो, अस मानुस के बैल भला।**

जड़ बुद्धि मनुष्य के लिए क०।

**टिकुला सघुर गैल तो खाने मे भी बज्जुर पड़ब (स्त्रि०)**

कोई और आराम न मिले तो क्या भरपेट अन्न भी न मिलेगा? स्त्री अपने अकर्मण्य पति से कह रही है; कोई नौकर भी मालिक से कह सकता है।

**टिड्डी का आना काल की निशानी, (कृ०)**

क्योंकि टिड्डी जहां जाती है, वहां फ़सल नष्ट कर देती है।

**टीमटाम की पगड़ी बांधी, वह भी सवका जोरू का।**
**नेक पाक का चौका दीना, गोबर गाय-गोरू का।**

जोरू के दहेज मे से कपड़ा लेकर बांकी पगड़ी बांध रखी है, और गाय के गोबर से लीपकर जगह को पवित्र करते हैं।
(अ-हिन्दुओं का हिन्दुओं पर कटाक्ष।)

**टुक जिया तो क्या जिया**

थोड़े दिनों का जीवित रहना किस काम का?

**टुक-टुक करके मन भर खावे, तनक बेगमा नाम बतावे, (स्त्रि०)**

नाम तो सुकुमार बेगम है, पर थोड़ा-थोड़ा करके मन भर खा जाती है।

**टुकड़ा तोड़ जवाब देना**

(१) संक्षेप में जवाब देना। (२) साफ़ इन्कार कर देना। (३) ऐसा जवाब देना कि फिर कुछ कहा ही न जा सके।

**टुकड़े खाए दिन बहलाए, कपड़े फाटे घर को आए, (स्त्रि०)**

ऐसा काम करना, जिसमे केवल खाने को मिलता रहे; और कुछ लाभ ही न हो।

**टुकड़े दे दे बछड़ा पाला, सींग लगे जब मारन आया**

कृतघ्न व्यक्ति।

**टुकड़ों का पाला है**

किसी के प्रति उपेक्षा और घृणा से क०।

**टूट न रख ले बालके, सबसे मिलकर चाल।**
**टूटा ढोबर देत हैं गांव गली में डाल।**

सबसे मिलकर चलना चाहिए, बिगाड़ करना ठीक नही।
जो टूट (बिगाड़) करता है, उसे लोग इस तरह त्याग देते है, जैसे टूटी हाडी गली में फेंक दी जाती है।

**टूटले तेली, तो कमर में अधेली**

बिगड़ी हालत में भी तेली की कमर में अधेली रहती है।
(तेली प्रायः संपन्न होते है।)

**टूटा मत रह टोल सूं, राह भीर के बीच।**
**एक अकेले मनुख को, सूझे ऊंच न नीच।**

यात्रा में या लड़ाई में अपने साथियों का संग नहीं

छोड़ना चाहिए। अकेला एक आदमी सब तरह के भले-बुरे की जांच नहीं कर सकता।

भीर=भीड़, विपत्ति, झगडा।

**टूटी कमान से डरें नौ जने**

टूटे हथियार से भी लोग डरते हैं।

**टूटी का क्या जोड़ना ? गांठ पड़े और न रहे**

टूटी वस्तु कभी जुडती नहीं। (जोडने से) गांठ पड जाती है और फिर जुड़ने के बाद भी उसकी मजबूती का क्या ठिकाना ? मित्रो मे झगडा हो जाने पर मेल फिर मुश्किल से होता है ।

**टूटी की क्या बूटी ?**

टूटी चीज़ जुडती नहीं। मौत की दवा नही।

**टूटी की बूटी बता दो, हकीम जी !**

दे० ऊ०।

**टूटी टांग, पांव न हाथ, कहे 'चलू घोड़ों के साथ'**

ऐसा काम करने की चेष्टा करना, जिसे अधिक समर्थ भी न कर सके।

**टूटी बांह गले पड़े**

बांह जब टूट जाती है, तो उसे डोरी व पट्टी के सहारे बाध कर गले मे लटका लेते है।

(जब कोई घर का आदमी अथवा सगा-सबधी बिल्कुल गिरी हालत मे हो जाता है, और उससे किसी तरह पिड भी नही छूटता।)

**टूटी है तो किसी से जुड़ती नही, और जुड़ी है तो कोई तोड़ सकता नहीं**

(१) मैत्री या पारस्परिक हित-सबध के लिए कहते है कि दो आदमियो के बीच अगर वह टूट गया है, तो फिर जुडता नही और नही टूटा तो उसे कोई तोड नही सकता ।

(२) असाध्य रोगी को धैर्य बधाने को भी कहते है कि यदि आयु शेष है, तो कोई कुछ बिगाड नही सकता।

**टूम कापड़े जिस घर पावें, एक छोड़ दस बइयर आवें**

जहा पहिनने-ओढ़ने को मिले, वहां एक क्या दस औरते आ जाती है।

टूम कापड़ा=गहना कपड़ा। बइयर=स्त्री।

**टूम बइयर की पत बंधावे, टूम तुझे धनवंत कहावे**

गहनों से ही स्त्री की शोभा होती है, गहनों से ही लोग धनवान कहलाते हैं।

**टूम बिना बइयर है ऐसी, बिन पानी के खेती जैसी**

गहनो के बिना स्त्री ऐसी ही है, जैसे बिना पानी के खेती।

**टेंट आंख में, मुंह खुरवीला, कहे 'पिया मोरा छैल छबीला'**

कोई एक स्त्री दूसरी स्त्री के पति को लेकर ताना मार रही है। अपनी चीज़ की बहुत डीग हांकना।

**टेंट, बेरवा काल के मीत, खायें किसान और गावें गीत, (कृ०)**

जगली फलो की प्रशसा मे, जिनसे दुर्भिक्ष मे गरीबो का काम चलता है।

टेट=करील नामक वृक्ष का फल, टेटी।

बेरवा=बेर।

**टेक उन्हीं की रक्खे साईं,**
**गरव, कपट नहिं जिनके माहीं।**

भगवान उन्ही की सहायता करता है, जिनमे अह-कार और कपट नही होता।

**टेर-टेर के रोवे, अपनी लाज खोवे**

अपने नुकसान की बात किसी से न कहे, उससे इज्ज़त घटती है।

**टोटा करदे मुंह नूं काला, टोटे बाल जगत दा साला, (पं०, व्य०)**

घाटा होने से मुह काला होता है, अर्थात बदनामी होती है। जिसका दिवाला निकल जाता है, उसे सभी लोग घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

**टोटा टाला ना टले, जब लग मिटे न लेख।**
**साध कहे रे बालके, लाख यतन कर देख।**

स्पष्ट।

**टोटे मारा बानिया, भर जोगी का भेस।**
**हांडे भिक्षा मांगता घर-घर देस-बिदेस।**

बनिए को जब व्यापार मे घाटा होता है, तो वह लोगो का रुपया देने के डर से साधु बन जाता है।

**टोटे से हो घर का टीबा, टोटा गया तो खुला नसीबा**
टोटे से घर बर्बाद हो जाता है, जब टोटा जाता रहता है, तो समझ लो; अब अच्छे दिन आ गए।

**टोना टामक, टोटक्, छाने रहैं न भूल।**
**यूं परगट हो जगत मां, ज्यूं लश्कर की धूल।**
टोना-टोटका या जादू-मंत्र छिपे नही रहते।

**टोलन मां घर टोल भला, सब बाजन मां ढोल भला**
सब मुहल्लों में घर का मुहल्ला ही अच्छा, अर्थात जहां अपना घर है वह मुहल्ला, और सब बाजों मे ढोल अच्छा।
गाव के उन आलसी व्यक्तियों का कहना, जो घर छोड़कर कही जाना पसद नहीं करते।

**ठंडा लोहा गरम लोहे को काटता है**
क्रोधी के सामने शान्त प्रकृतिवाले मनुष्य की हमेशा जीत होती है।

**ठंडा है बरफ से भी, मीठा है जैसे औला।**
**कुछ पास है तो दे जा, नहीं पी जा राहे मौला।**
पानी पिलानेवाले कहा करते है।

**ठंडी छांव जो बैठती, जल जाता वह रूख।**
**जलती बलती मै फिरूं, बन में देती कूक। (स्त्रि०)**
किसी वियोगिनी अथवा बहुत ही बदनसीब की उक्ति।

**ठग न देखे, देखे कलवार**
ठग देखना हो तो कलवार देख ले। अर्थात कलवार पक्का ठग होता है। वह शराब मे पानी मिलाता है।
कलवार = शराब बेचनेवाला।

**ठग न देखे, देखे कसाई, शेर न देखे, देखे बिलाई**
इनकी प्रकृति एक-सी होती है। जैसा ठग वैसा कसाई, जैसा शेर वैसी बिल्ली।

**ठठेरे ठठेरे बदलाई, (ग्रं०)**
लेन-देन के मामले में, अथवा साधारण तौर से भी जब कोई व्यक्ति दूसरे के साथ वैसा ही व्यवहार करता है, जैसा दूसरे ने उसके साथ किया; तब यह कहना कि भाई, यह तो ठठेरे-ठठेरे बदलाई की बात है।
(एक ठठेरा आवश्यकता पड़न पर दूसरे को बर्तन दे देता है और बदले में दूसरा बर्तन ले लेता है, मुनाफा नही लेता। उसी से कहा० बनी।)

**ठांव गुन काजल, ठांव गुन कालख**
एक ही वस्तु, किसी एक स्थान पर अच्छी और दूसरे स्थान पर बुरी जान पड़ती है। जो धुआं काजल बनकर नेत्रों की शोभा बढ़ाता है, वही घर मे जम जाने पर कालिख समझा जाता है और साफ कर दिया जाता है।
(प्रत्येक वस्तु अपने स्थान पर ही शोभा पाती है।)

**ठाकुर पत्थर, माला लक्कड़, गंगा जमुना पानी।**
**जब लग मन में सांच न उपजे, चारों बेद कहानी।**
अगर मन मे विश्वास न हो, तो देवता पत्थर हैं, माला लकडी है, और गंगा-जमुना का पानी साधारण पानी है। बिना श्रद्धा के धार्मिक आस्था काम नही देती। धर्म मे आस्था प्रधान है।

**ठालो बनिया क्या करे, इस कोठी के धान उस कोठी में धरे**
जब कोई केवल समय काटने के लिए व्यर्थ का काम करे, तब क०।

**ठीक नहीं ठेके का काम; ठेका दो मत खोवो दाम**
ठेके का काम अच्छा नही होता।

**ठीकरा हाथ में होगा और भीख मांगता फिरेगा**
एक प्रकार का शाप। किसी को कोसना।

**ठीकरा हाथ में और उसमें बहत्तर छेद**
कोसना। दे० ऊ०।
(उर्दू के मशहूर शायर मिर्जा गालिब ने ठीकरे के बारे मे एक रोचक घटना लिखी है। उन्होंने एक दिन अपने नौकर को ठीकरे में से अंगारे उठाकर चिलम में रखते देखा। वह अपने मालिक के लिए तमाखू भर रहा था और बड़बड़ाता जाता था। मिर्जा साहब ने उससे पूछा कि तू ठीकरे के सामने क्या कह रहा था? नौकर बोला—यही कह

रहा था कि आठ महीने से तनख्वाह नहीं मिली, मैं खाऊं क्या?

मिर्जा साहब ने फिर पूछा—ठीकरे ने तुझे क्या जवाब दिया? नौकर बोला—ठीकरे ने मुझसे कहा कि कोई फिक्र नही, मैं तुम्हारे साथ हूं। अर्थात मुझे हाथ में लेकर भीख मांगना।)

**ठीकरे का सुख, खरची का दुख**

रहने को जगह तो बहुत, पर पैसे की तंगी।

(प्राय: वेश्याएं कहा करती हैं, जब उन्हें पूरी उजरत नही मिलती।)

**ठेंगा थाम, लबेदे हजार, (पू०)**

मोटे डंडे को ही संभालना चाहिए, पतले बेंत तो हजारों मिल जाएंगे। मजबूत का सहारा लेना चाहिए।

**ठेका ले उस काम का, जो तुमसे हो ठीक**

जिस काम को ठीक तौर से किया जा सके, उसी की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

**ठेके का काम फीका**

स्पष्ट।

**ठेस लगे, बुद्ध बढ़े**

नुकसान होने पर ही अक्ल आती है।

**ठैर ठैर के चालिए, जब हो दूर पड़ाव।**
**डूब जात अधियाव में, दौड़ चलंती नाव।**

काम सावधानी से धीरे-धीरे करना चाहिए, जल्दबाजी से हानि होती है।

अधियाव में = आधे रास्ते में।

(इस संबंध में कछुआ और खरगोश की कहानी प्रसिद्ध है। कछुआ धीमी चाल से चलकर बाजी जीत गया और खरगोश, जो दौड़कर चला था; हार गया।)

**ठेंगे मार किया सिर गंजा, कहै 'मेरे हैं हाथ न पंजा'**

डंडे मारकर सिर गंजा कर दिया और कहता है—मेरे हाथ और पंजे ही नहीं हैं। जब कोई अपनी हरकत से किसी को नुकसान पहुंचाए और यह कहकर कि मैं यह काम कर ही नहीं सकता, अपने को निर्दोष भी साबित करे; तब क०।

**ठोंट चितेरा मन में झींके**

लूला चित्रकार मन में पछताता है कि मैं तस्वीर नहीं बना सकता। जब कोई आदमी कारणवश किसी ऐसे काम को करने से वंचित हो जाता है, जिसे वह बहुत अच्छी तरह कर सकता है, अथवा जो उसके मन के बहुत निकट है; तब क०।

**ठोक बजा ले वस्तु को, ठोक बजा दे दाम।**
**बिगड़त नाहीं बालके, देख भाल का काम।**

हर चीज देखभाल कर लेनी चाहिए, और देखभाल कर ही दाम देना चाहिए।

**ठोकर खावे, बुद्ध पावे**

दे०—ठेस लगे...।

**ठोकर लगी पहाड़ की, तोड़ें घर की सिल**

जब कोई मनुष्य बाहर से चोट खाकर आए और घर में अपनी स्त्री अथवा दूसरे लोगों पर उसका गुस्सा उतारे, तब क०।

**डढ़ियाला धन, (स्त्रि०)**

लंबी दाढ़ीवाले पर व्यंग्य। पुत्र के लिए भी कहा जाता है।

**डर न वहशत, उतार फिरी खिशतक, (स्त्रि०)**

निर्लज्ज औरत।

खिशतक—(फा० खिश्तक) पायजामा।

**डरा सो मरा**

अक्सर छूत की बीमारियां फैलने पर लोगों को साहस बंधाने के लिए क०।

**डरिए, रंडी, तेरे दीदे से।**

गाली।

दीदा = आंख।

**डरें लोमड़ी से, नाम दिलेर खां**

कायर आदमी।

**डरें लोमड़ी से, नाम शेर खां**

दे० ऊ०।

**डल्लू का दहसेरा**
सबसे निराली चाल।
(डल्लू नाम का कोई बनिया था, जो पसेरी की जगह दससेरा रक्खा करता था।)

**डांड़ा सी पूंछी, बुड़हाने का रास्ता**
(लोमड़ी की) बांस की तरह लम्बी पूछ है और बुडहाने का रास्ता बहुत खराब है, कैसे तै किया जा सकेगा? काम करने के अयोग्य।
(बुड़हाना किसी स्थान का नाम है।)

**दाढ़ी खुदा का नूर है, (मु०)**
मुसलमानों मे दाढ़ी पवित्र मानी जाती है; इसी से क०।

**डाबर डूबे जग तिरे, जग डूबे डाबर तिरे, (कृ०)**
जब डाबर बरसात के कारण पानी से भर जाते है, तो संसार तर जाता है, अर्थात फसल अच्छी होने से लोग सुखी होते है, और जब जग डूबता है, अर्थात अकाल पड़ता हे, तब डाबर तर जाते है; यानी उनमे फसल अच्छी होती है।
भाव यह है कि नीची ज़मीन के खेत ही हमेशा अच्छे होते है।

**डायन को बच्चा सौंपना**
महान मूर्खता है। वह तो उसका भेजा और कलेजा खा जाएगी।

**डायन को भी दामाद प्यारा**
अपनी लड़की के कारण। आशय यह कि मा को लड़की बहुत प्यारी होती है।

**डायन खाय तौ मुंह लाल, न खाय तौ मुंह लाल**
क्योकि उसके मुह से खून तो लगा ही रहता है, अथवा उसके चेहरे से भयानकता तो टपकती ही रहती है। बदनाम आदमी के लिए। चाहे बुरा काम करे या न करे, पर हर मौके पर बुराई उसे मिलती ही है।

**डायन भी दस घर छोड़कर खाती है, (स्त्रि०)**
दुष्ट से दुष्ट आदमी भी अपने पड़ोसियों का लिहाज़ करता है। जब कोई अपने ही लोगों को धोखा देता है।

**डाल का चूका बंदर और बात का चूका आदमी, ये फिर नहीं संभलते**
हानि उठाकर रहते है।
बात का चूका—जो वचन देकर पालन न करे।

**डाल का टूटा**
बिल्कुल ताज़ा (फल)।

**डालते देर नहीं, सिर पर कोतवाल**
ग़लत काम करते ही पकड़ा जाना।

**डील डौल गुम्बज, आवाज़ दर फिरस**
देखने में मोटे-ताज़े, पर आवाज़ बहुत धीमी।

**डग-डुग बाजे, बहुत नीकी लागे; नौआ नेग मांगे उठा बैठी लागे, (स्त्रि०)**
विवाह मे जब ढोल बजता है, तब तो बहुत अच्छा लगता है; पर नाई जब अपना हक मागता है, तो बगले झाकते है।

**डूबते को तिनके का सहारा**
डूबता आदमी तिनके को भी पकड लेता है। विपद्ग्रस्त को थोड़ा भी सहारा बहुत होता है।

**डूबा बंस कबीर का उपजा पूत कमाल**
ऐसी संतान का उत्पन्न होना, जो अपने पूर्वजो की चालढाल या धर्म को छोड दे।
(कहते है कबीर ने अपने पुत्र कमाल को बचपन मे यह उपदेश दिया था कि सब मनुष्यो को अपना भाई और सब स्त्रियो को मा, बहिन और लडकी के समान समझना चाहिए।
जब कमाल बड़े हुए, तो पिता ने उनसे विवाह करने के लिए कहा। कमाल ने उत्तर दिया—संसार मे मुझे मा, बहिन और बेटी छोड़कर और कोई स्त्री नही दीखती, जिसके साथ मैं विवाह करूं। उन्होने फिर विवाह नही किया और कबीर का वंश लोप हो गया। यह भी कथा है कि कमाल कबीर के वचनों का बहुत खंडन भी किया करते थे। उसी पर किसी ने उपर्युक्त बात कही है।)

**डूबी, कंथ, भरोसे तेरे, (स्त्रि०)**
जब किसी के भरोसे रहे, और उससे सहायता न मिलने के कारण हानि हो जाए; तब क०।

कंथ=कंत; नाथ ।

**डूबेगा भाड़ू का भाड़ू, रात समय ने देसं झाड़ू, (लो० वि०)**

रात में झाड़ू नही देनी चाहिए, हानि होती है।

**डेढ़ ईंट की मस्जिद जुदी ही बनाते हैं, (मु०)**

(१) अपने मन की करते है। अथवा

(२) निराली चाल चलते है।

**डेढ़ चावल अपने जुदे ही पकाते है**

दे० ऊ०।

**डेढ़ पाव आटा, पुल पर रसोई, (स्त्रि०)**

व्यर्थ का दिखावा।

**डोम और चना, मुंह लगा बुरा**

इसलिए कि डोम धृष्ट होता है और चना आदमी खाते-खाते बहुत खा जाता है, जिससे हानि होती है।

**डोम के घर ब्याह, मन आवे सो गा**

डोम एक गाने-बजानेवाली याचक जाति है। अकसर ये लोग बड़े अश्लील गीत गाते है। इसीलिए कहा गया है।

**डोम डोली, पाठक प्यादा**

डोम तो डोली मे और पुरोहित पैदल। एक अशोभन कार्य। उस समय भी कहा जाता है, जब किसी मूर्ख मालिक को समझदार नौकर मिल जाए।

**डोमनी का पूत चपनी बजाय,**
**अपनी जात आप ही जताय।**

किसी का जातिगत स्वभाव नही जाता। डोमनी के लड़के को ढोलकी बजाने को नही मिली, तो वह मिट्टी की चपनी ही बजाने लगा।

(जातपांत पर आधारित विश्वास।)

**डोमनी की लौंडी**

गाली।

**डोम, बनिया, पोस्ती, तीनों बेईमान**

स्पष्ट। जातिवाद का जहर भरा वचन।

पोस्ती=अफ़ीमची।

**डोली आई डोली आई, मेरे मन में चाव;**
**डोली में से निकल पड़ा, भोंकड़ा बिलाव।**

बच्चों की तुकबंदी।

बहू जब सयानी और कुरूप आती है, तब क०।

**डोली न कहार, बीबी भई हैं तैयार, (स्त्रि०)**

कोई सवारी नहीं आई, कोई बुलाने नहीं आया, फिर भी बीबी जाने को तैयार।

किसी के यहां बिना बुलाए जाना।

**ढड्ढो आई बाल धुतराए**

गंदी और बेढगी औरत।

**ढटींगर काहे मोटा, लाहा गने न टोटा**

बेफिक्र के लिए, क०।

ढटींगर=उद्धत, आवारा।

लाहा=लाभ।

**ढलती फिरती छांह है**

मनुष्य की परिवर्तनशील स्थिति के लिए क०।

**ढाक तले की फूहड़, महुवे तले की सुघड़, (स्त्रि०)**

जो ढाक तले जाए, वह तो फूहड है और जो महुआ तले जाए वह सुघड़; क्योंकि ढाक के नीचे न तो छाया मिलती है और न कोई खाने योग्य पदार्थ, जब कि महुआ तले ये दोनो प्राप्त होते है।

**ढाके के बंगाल, कूजे के कंगाल, (पू०)**

जहां जो चीज बहुतायत से होती हो, उसका अभाव होना।

एक अनहोनी बात।

(ढाका मिट्टी के बर्तनो के लिए प्रसिद्ध है।)

कूजा- झज्झर, सुराही।

**ढाल तलवार सिरहाने, और चूतड़ बंदीखाने, (पू०)**

कायर आदमी। हथियार तो पास मे, पर लड़ने की हिम्मत नही।

**ढाल बांधूं तलवार बांधूं, कसकै बांधूं फेटा।**
**बीच बजार में डाका मारूं तो बाप का बेटा।**

चंट आदमी।

**ढूंढ लाओ, बता देंगे**

बेवकूफ़ बनाना। टालमटोल करना।

**डेंइस औ कद्दू, लानत ब हर दू, (फा०)**
दोनों पर लानत।
जब दो आदमी आपस में लड़ रहे हों, और वे दोनों ही एक से बुरे हों, तब क०।

**ढोरे मरे, न कौवा खाय**
न तो ढोर ही मरे, और न कौवा उन्हें खा ही सके। व्यर्थ की आशा।

**ढोल के भीतर पोल**
(१) (किसी स्थान पर) ऊपरी ठाट-बाट तो अच्छा पर भीतर धांधलबाजी।
(२) ऊपरी शानशौकत बहुत, पर भीतर खोखलापन।

**ढाल न ड्फ, हर हर गीत**
बिना साज-सामान के काम।

**ढोलबाज दमामे बाजे, (स्त्रि०)**
किसी मनुष्य के बुरे चालचलन की पहले थोड़ी और बाद में बहुत बदनामी होना।

**ढोवे के टोकरी, गावे के गीत, (पू०)**
(१) हैसियत से बाहर काम करना।
(२) छोटे होकर बड़ की बराबरी करना।

**तंगी के साथ फराखी और फराखी के साथ तंगी लगी हुई है**
दुख के साथ सुख और सुख के साथ दुख लगा हुआ है।
तंगी=संकीर्णता। ग़रीबी।
फराखी=विस्तार। अमीरी।

**तंगी गई, फराखी आई**
ग़रीबी गई, अमीरी आई।

**तई की तेरी, खपड़ी की मेरी**
तवे की रोटी तेरी, बर्तन की मेरी।
अपना ही मतलब देखना।

**तक तिरिया को आपनी, पर तिरिया मत ताक।**
**पर नारी के ताकने, पड़े सीस पर खाक।**
पराई स्त्री को बुरी नज़र से मत देखो।

**तकदीर के आगे नहीं तदबीर की चलती**
भाग्य के आगे उद्योग काम नहीं करता।

**तकदीर के लिखे को तदबीर क्या करे।**
**गर हाकिम खफ़ा हो, वज़ीर क्या करे।**
स्पष्ट।

**तकदीर सीधी है तो सब कुछ है**
भाग्य अनुकूल होने से सब काम बनते हैं।

**तकदीरों बाज़ी है**
(१) जिसका भाग्य प्रबल होगा उसी की जीत होगी। अथवा (२) देखें जीत किसकी होती है।

**तकले का-सा बल निकल गया**
जब पिटने या सजा पाने पर किसी की अक्ल ठिकाने आ जाए, तब क०।
तकला=चरखे में लोहे की वह सलाई जिस पर सूत लिपटता है।
बल=ऐंठन।

**तकल्लुफ़ में रेल चल दी**
ज्यादा तकल्लुफ़ से नुकसान होता है।
(इस पर चुटकुला है कि दो शरीफ़ आदमी कहीं बाहर जाने के लिए स्टेशन पर पहुंचे और टिकट कटा लिये। रेल भी प्लेटफ़ार्म पर आ पहुंची। एक ने दूसरे के प्रति शिष्टाचार दिखाने के लिए कहा—हज़रत सवार हूजिए। दूसरे ने कहा—नहीं, क़िबला पहले आप। पहले ने कहा—नहीं, नहीं, पहले आप बैठिए, तब मैं बैठूंगा। आपस के इस शिष्टाचार में तब तक रेल छूट गई।)

**तकल्लुफ़ में है तकलीफ़ सरासर**
स्पष्ट। दे० ऊ०।

**तकाज़े का हुक्का भी नहीं पिया जाता**
हुक्का भी मांगकर नहीं पीना चाहिए। उधार की चीज़ बुरी होती है।

**तका पराया हाथ और गया नरक**
(१) दूसरे के पैसे पर नज़र डालना बुरा है। अथवा

(२) दूसरे का सहारा अच्छा नहीं।

**तख्ती पर तख्ती मियां जी की आई कमबख्ती, (लो० वि०)**

तुकबंदी। मक़तब में पढ़नेवाले लड़के कहा करते है। पट्टी पर पट्टी रखे जाने को लड़के मास्टर के लिए हानिकारक समझते हैं।

**तजल्ली को तक़रार नहीं**

प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की ज़रूरत नही।

**तड़के उठ कर खाट से, छोड़-छाड़ सब काम।**
**माला लेकर हाथ में, जप साईं का नाम।**

स्पष्ट।

**तड़के का भूला सांझ को आये, तो भूला नहीं कहलाता**

(१) सबेरे की भूली हुई बात अगर शाम तक याद आ जाए, तो वह भूली नहीं कहलाती। अथवा (२) सबेरे का खोया हुआ आदमी शाम तक घर लौट आए, तो वह खोया हुआ नही कहलाता। जब कोई मनुष्य बुरे रास्ते पर जाकर बाद में संभल जाए, तब क०।

**ततड़ी ने दिया, जनम जली ने खाया, जीभ जली न सवाद पाया, (स्त्रि०)**

जब दो एक से अभागे एक दूसरे की सहायता करने बैठें, तो उससे कोई लाभ नही होता।
(जब कोई बहुत कम चीज़ खाने को दे, तब भी क०।)
ततड़ी जली हुई; दुख से पीड़ित।

**तत्ता कौर निगलने का न उगलने का**

धर्म संकट में पड़ना।

**तत्ती खिचड़ी घी न पाया, अब का सियाला यूं ही गंवाया**

अब का जाड़ा यों ही बीत गया, गरम-गरम खिचड़ी के साथ घी खाने को नही मिला। किसी ऐसे मनुष्य का कथन जो खाने का शौकीन हो, पर पैसे से तग है।

**तन उजला, मन सांवला, बगुले का सा भेक।**
**तोसें तो कागा भला, बाहर भीतर एक।**

स्पष्ट। धूर्त्त या कपटी।

**तन कसरत में, मन औरत में**

दो परस्पर विपरीत काम एक साथ नहीं हो सकते। अथवा नहीं करना चाहिए।

**तन का बैरी ताप है, मन का बैरी नेह।**
**जिस तन में ये दो रमें, तो गये जीव अरु देह।**

स्पष्ट।
ताप=ज्वर।

**तन की कर ले तुनतुनी और मन के कर ले तार।**
**फिर जस गा हरिनाम के, जो तुरत मिले करतार।**

अपने शरीर रूपी इकतारे में मन रूपी तार लगाकर ईश्वर का गुणगान कर, तो भगवान तुझे शीघ्र मिलेंगे। भक्तों का कहना।

**तन की तनक सराय में, नेक न पावो चैन।**
**सांस नकारा कूंच का, बाजत है दिन रैन।**

मौत कब आ जाए, कुछ ठीक नहीं।
तनक=छोटी।
नकारा=नगाड़ा।

**तन को कपड़ा, न पेट को रोटी**

बहुत दयनीय हालत।

**तन गुदड़ी, मन धागा, कोई कुछ ही लखे, मन लागा**

फक्कड़ों का कहना।

**तन तकिया मन बिसराम, जहां पड़ रहे वहीं आराम**

शरीर तो तकिया है, और तन है सराय, बस जहां लेट रहे, वही आनंद है। फक्कड़ों का कहना।

**तन ताजा तो कलंदर राजा**

जब पेट भरा होता है, तो फ़कीर भी अपने को राजा समझता है। कलंदर एक प्रकार के मुसलमान फकीर होते है।

**तन दे, मन ले**

मेहनत से काम करो, तो दूसरा आदमी प्रसन्न होगा।

**तन्दुरुस्ती हज़ार न्यामत है**

सबसे अच्छी वस्तु है।

**तन पर चीर न घर मां नाज, दद-ससुरे का रोपा काज**

बदन पर कपड़ा नहीं और घर में अनाज नहीं, फिर भी ददिया ससुर का श्राद्ध करने की ठानी है। सामर्थ्य से बाहर काम करना।

**तन पर सोहे कापड़ा और रन सोहे रनजीत।**
**बीर पुरुष वो ही भला (जो) सबसे राखे प्रीत।**

कपड़ा शरीर पर शोभा देता है, और बहादुर लड़ाई के

मैदान में। सच्चा वीर वही है, जो सब से प्रेम रखे।

**तन पिंजरा, मन तीतरा; सांस जीव का मूल।**
**जब तीतर उड़ जात है, तो होजा पिंजर धूल।**
स्पष्ट।

**तन पुतला है खाक का, इसे देख मत भूल।**
**इक दिन ऐसा होयगा, मिले धूल में धूल।**
शरीर क्षणभंगुर है।

**तन फूहड़ का भैंस सूं भारी; कहे 'कहो मोहे नाजो प्यारी,' (ग्रा०)**
देखने में तो फूहड़ औरत भैंस जैसी है और कहती है कि मुझे 'नाजो प्यारी' कहकर बुलाओ। अपने रूप-सौन्दर्य का झूठा गर्व।
नाजो प्रायः दुबली-पतली और सुकुमार लड़की से ही कहते हैं।

**तन मिला तो क्या हुआ, मन की बुझी न प्यास।**
**जैसे सीप समुद्र में, करे त्रास त्रास।**
स्पष्ट।

**तन लगी घुपड़ी, तो बला छाये झुपड़ी**
जरूरत के वक्त ही किसी चीज की कमी महसूस होती है। (कथा है कि एक बुढ़िया रात में जाड़ा लगने पर रोज सोच लेती थी कि सुबह होते ही झोपड़ी छा लूंगी, पर सुबह होने पर जब धूप निकली तो वह अपना इरादा बदल देती।)

**तन सीतल हो सीत सूं, और मन सीतल हो मीत सूं**
स्पष्ट।
सीत = शीत; ठंडक।

**तन सुखाय पिंजर करें, धरें रैन दिन ध्यान।**
**तुलसी मिटे न बासना, बिना बिचारे ज्ञान।**
ज्ञान के बिना वासनाएं नहीं मिटतीं।

**तन सुखी तो चैन है, ना तो दुख दिन रैन है**
शरीर के स्वस्थ रहने से ही मन प्रसन्न रहता है।

**तन सुखी तो मन सुखी**
दे० ऊ०।

**तन सूखा, कुबड़ी पीठ हुई, घोड़े पर जीन धरो बाबा।**
**अब मौत नकारा बाज चुका, चलने की फ़िक्र करो बाबा।**
बुढ़ापे के लिए कहा गया है।

**तनूरवाली और अल्लाह राज़ी, (मु०)**
तंदूरवाले से रोटी मांगकर खाना और मौज करना। फ़कीरों का कहना।
(मुसलमान फकीर प्रायः नियम से तंदूरवाले के पास जाकर रोटी मांगते हैं। उसी से कहावत की सार्थकता।)
तनूर = तंदूर, रोटी सेंकने की एक प्रकार की भट्टी।

**तपे जेठ तो बरखा हो भरपेट, (कृ०)**
जेठ (जून) में खूब गर्मी पड़ने से वर्षा अच्छी होती है।

**तपे नखत मृगसिरा जोय, तब बरखा जग पूरन होय, (कृ०)**
मृगशिरा नक्षत्र में अगर खूब गर्मी पड़े, तो वर्षा ज्यादा होती है। (मृगशिरा एक चान्द्र नक्षत्र है, जो जुलाई अगस्त में लगता है।)

**तब लग झूठ न बोलिये, जब लग पार बसाय**
जब तक वश चले झूठ नहीं बोलना चाहिए। विवशता की बात दूसरी है।

**तमाचा मारे मुंह लाल रखते हैं**
ऊपरी हालत को ठीक रखकर अपनी हीन स्थिति को छिपाने की कोशिश करना।

**तमा रा सेह हरफ अस्त हर सेह तिही, (फ़ा०)**
तमा (ईर्ष्या) शब्द में तीन अक्षर हैं और तीनों ही नुक्तों से शून्य हैं।
फ़ारसी में 'तमा' शब्द के तोय, मीम, और ऐन इन तीनों अक्षरों में नुक्ता नहीं लगता। उससे कहावत का भाव यह हुआ कि लोभी या ईर्ष्यालु मनुष्य के पास कभी पैसा इकट्ठा नहीं होता।

**तरकश में तो तीर नहीं, पर शरमा-शरमी लड़ते हैं**
सफलता की आशा न होने पर भी अपनी शर्म रखने के लिए कोई काम करना। उर्दू के किसी शायर ने यह वास्तव में आंखों के संबंध में कहा है।

**तरवर आछा छांवला, और रूप सुहाना सांवला**
वृक्ष छायादार अच्छा, और रूप सांवला।
**सांवला = न बहुत गोरा न बहुत काला; गेहुंआं।**

**तराजू से खड़े होकर न तौलो, बरकत जाती है, (लो० वि०)**

तराजू से खड़े होकर नही तोलना चाहिए, हानि होती है।

**तल धार, ऊपर धार**

मूसलाधार पानी बरसना।

**तल मुंड़िया, पताल ढुंढ़िया**

नीचा सिर किए पाताल खोजता है।

बहुत बड़े धूर्त्त के लिए क०, जो हमेशा कुछ-न-कुछ शरारत सोचा करता है।

**तलवरिया वाको मत कहो, जो खांड़ा लेकर हाथ। रन से भागे एकला, छोड़ टोल का साथ।**

जो लड़ाई के मैदान से अपने साथियों को छोड़कर भागे, उसे सिपाही नही कहना चाहिए।

तलवरिया- तलवार पकड़नेवाला; योद्धा।

**तलवरिया वो ही भला, जो रन में हाथ दिखाय। बैरी के टुकड़े करे, और आप साफ़ बच जाय।**

स्पष्ट।

**तलवार का खेत हरा नहीं होता**

(१) लडाई से जो खेत नष्ट हो जाता है, वह फिर हरा नही होता।

(२) सिपाही की खेती कभी सफल नही होती। क्योकि उसे फ़ौज में रहना पड़ता है, खेत कौन देखे?

(३) पशुबल में बरकत नही।

**तलवार का घाव भरता है, बात का घाव नहीं भरता**

कोई ऐसी बात कह दे, जो मन पर असर कर जाए; तो वह कभी नही भूलती।

**तलवार की आंच के सामने कोई बिरला ही ठहरता है**

कठिन परीक्षा का मुकाबला थोड़े लोग ही कर पाते हैं।

**तलवार मारे एक बार, अहसान मारे बार-बार**

क्योकि जिसका भी अहसान लो, वह हर मौक़े पर अहसान जताकर दबाता है।

**तलवों की-सी कहूं या जीभ की-सी**

(किस्सा है कि किसी हाकिम ने एक मुकदमे में वादी और प्रतिवादी, दोनों ही से रिश्वत ले ली। एक ने उसे मिठाई और फल भेंट किए और दूसरे ने चुपके से उसके पैर तले एक अशर्फी खिसका दी। तब वह बड़ी चिंता में पड़ गया और ऊपर की बात सोचने लगा।)

रिश्वत या घूस खानेवाले अकसर इस तरह की कठिनाई में पड़ जाते हैं। कहा० उसी पर लागू होती है।

**तलवों से लगी, सिर में से निकल गई**

क्रोध से भड़क उठना।

**तलवों से लगी है**

(१) बहुत गुस्से में हैं, चैन नहीं पड़ रहा है, बात दिल पर असर कर गई है।

(२) वेश्या के लिए भी प्रयुक्त कि वह पीछा नही छोड़ती।

**तले का दम तले रह गया, ऊपर का ऊपर**

कोई बुरी खबर सुनकर स्तब्ध रह जाना।

**तले के दांत तले रह गये, ऊपर के ऊपर**

मुंह खुला ही रह गया, आश्चर्य-चकित हो गए।

**तले घेरा, ऊपर सेहरा**

कोरी शान।

(घेरा से यहा मतलब साफ मैदान से है।)

**तले टांग, ऊपर मांग**

बुरी हालत हो जाना।

मांग=सिर; स्त्री के सिर से मतलब है, जिसमें मांग कढ़ी होती है।

**तले धरती, ऊपर राम**

किसी असहाय का कहना।

**तले पड़ी का मोल क्या**

(१) सरल स्वभाव की स्त्री का कहना।

(२) जो वस्तु अपने अधिकार मे होती है, उसका कोई मूल्य नहीं होता।

(३) गई-गुजरी बात की चर्चा में समय नष्ट करना ठीक नही।

**तवा बड़ा और जीव बढ़ा**

भोजन मिलने की उम्मीद हुई, और चित्त प्रसन्न हुआ।

**तवा चढ़ा बैठी मिसरानी, घर में नाज, अगन ना पानी**
बिना साज-सरंजाम के ही काम की तैयारी।
मिसरानी = भोजन बनानेवाली ब्राह्मणी।

**तवा, तगारी, आग, जल, अन, ईंधन जित होय।**
**बारा सून उजाड़ में भूखे मनुख न रोय।**
घने जगल मे भी यदि ये सब चीजे मिल जाए, तो वहा भी मनुष्य भूखो नही मर सकता।
तगारी = चूल्हा।

**तवा न कुंडा न चुलहारी, कहै नार मैं हूं भटियारी, (स्त्रि०)**
न तो तवा है, न कुडा है, न चूल्हा ही है, फिर भी औरत अपने को भटियारिन बताती है।
(१) कोरी शेखी,
(२) अपने विषय मे झूठी बात।

**तवा न तगारी, काहे की भटियारी**
स्पष्ट। दे० ऊ०।

**तवायफ़ के बिछौने पर बना है काम सोने का।**
**न ठहरेगा, मुलम्मा है, अबस है जर के खाने का।**
वेश्या के सबध मे कहा गया है।
अबस = (अ०) व्यर्थ। जर सपत्ति; धन।

**तबे की तेरी, तगारी की मेरी**
अपना ही मतलब देखना।

**तवे की तेरी, हाथ की मेरी**
दे० ऊ०।

**तवे पर की बूंद**
क्षणस्थायी, अथवा ऐसी वस्तु जो किसी काम की न हो।
(भोजन बनाते समय स्त्रियां तवा गरम हुआ या नही, यह जानने के लिए उस पर पानी की बूद डालती हैं। यदि वह बूद छन्न होकर तुरत सूख जाए तो तवा गरम हुआ समझा जाता है। उसी से उक्त मुहावरा बना।)

**तबेले की बला बंदर के सिर**
सबकी मुसीबत किसी एक के सिर।
(लोगो का विश्वास है कि तबेले अर्थात अस्तबल में यदि बंदर बांध दिया जाए, तो घोडो के सब रोग बंदर को लग जाते हैं, और घोड़े तन्दुरुस्त रहते हैं। इस उद्देश्य से बडे अस्तबल मे प्राय: बंदर बाध देते हैं; उसी प्रथा पर कहा० आधारित है।)

**तसबीह फेरूं, किस को घेरूं, (मु०)**
माला फेर रहे हैं, और मन मे सोच रहे हैं, आज किसकी जेब तराशूं? बगला भगत की उक्ति या उस पर व्यग्य।

**तस मुकुंद तस पावन घोड़ी, बिध ने आन मिलाई जोड़ी, (पू०)**
दोनो एक से (ऐबवाले)।

**तसलवा तोर कि मोर,**
तसला तेरा है या मेरा? जबर्दस्ती किसी की चीज पर कब्जा जमाना।
(कहते है कि किसी समय मिथिला मे घोर अकाल पडा। लोग एक दूसरे का छीनकर खाने लगे। कोई अगर भात बनाता, तो दो-चार आदमी उसके पास जाकर कहते थे कि 'तसला तोर कि मोर।' यदि वह 'तोर' अर्थात 'तेरा' कहता था, तो उसे माफ कर देते, अन्यथा ('मोर' कहने से) छीन कर खा लेते थे।)

**तात बाजी, राग पाया**
तार बजा और राग समझ मे आ गया।
(आदमी के मुह से बात निकलते ही उसकी योग्यता या उसके मन की स्थिति का पता चल जाता है।)
तात सारगी का तार।

**तांत-सी देह, पांव न हाथ, लड़न चली सूरन के साथ**
शक्ति से बाहर काम करने का दुस्साहस।

**तांबा देखे चीतना, मन देखे ब्योपार, (व्य०)**
पैसा देखकर ही सौदा तै होता है, और आदमी देखकर ही व्यापार किया जाता है।

**ताक झांककर चाल मत, यह है बुरा सुभाव।**
**जार कहैं या चोरटा, या फिर ऊदबिलाव।**
स्पष्ट।
जार – परस्त्रीगामी।

**ताकत कमर में चाहिए औलाद के लिए।**
**रखते नहीं हैं सिर्फ़ भरोसा मदार का।**
अपने बूते मे ही सब काम करना चाहिए, किसी का भरोसा नही।

(मदार साहब मुसलमानों के एक पहुंचे हुए संत हो गए हैं। मकनपुर में उनकी समाधि है।)

**ताक पर बैठा उल्लू, मांगे भर-भर चुल्लू**

ऐसे नीच आदमी के लिए क०, जो किसी बड़े ओहदे पर पहुंचकर अपने से बड़ों पर हुक्म चलाए।

**ताज़ी को मारा और तुरकी कांपा**

एक पर रोब जमा लेने से दूसरे पर भी रोब जम जाता है।

(ताजी और तुरकी घोड़ों की जातियां हैं।)

**ताज़ी मार खाय तुरकी आश पाय**

योग्य पुरुष तो कष्ट उठाए और नालायक मौज करें।

आश = (फा०) भोजन।

**ताज़ी में कारीगरां मुआफ़, (फा०)**

कारीगर अगर किसी का अदब करना भूल जाए, तो उसका ख्याल नहीं करना चाहिए।

**ताता, तीता, आमला, तीनों धात बिनास**

गरम, चरपरी और खट्टी चीज़ें स्वास्थ्य को हानि पहुंचाती हैं।

धात धातु, शरीर को बनाए रखनेवाले पदार्थ।

**ताते दूध बिलार नाचे**

गरम दूध देखकर बिल्ली नाचती है। परेशान होती है, क्योंकि गरम दूध पी नहीं सकती।

**ताना बाना, सूत पुराना**

ताना और बाना दोनों ही पुराने सूत के है। व्यर्थ का परिश्रम।

**तानाशाह दीवाना, जिसके चिट्ठी न परवाना**

(१) तानाशाह मूर्ख है, जो अपना ठीक हिसाब नहीं रखते, बाद में फिर झंझट में फंसते है। अथवा (२) तानाशाह दीवान को चिट्ठी या परवाना लिखने की ज़रूरत नहीं पडती। उनका ज़बानी हुक्म ही परवाना है।

**तानी घाट कि बानी घाट?**

ताने (के सूत) में कमी हो गई या बाने में?

त्रुटि किस ओर है? दोनों ओर या एक ओर?

**तामझाम लगे**

लाओ तामझाम। झूठी या व्यर्थ की शान दिखाना।

(कथा है कि एक मूर्ख को कहीं से एक पालकी मिल गई। वह हर काम के लिए उसका उपयोग करता। यहां तक कि बाज़ार में सौदा लेने जाता, तो पालकी पर बैठकर। उसकी स्त्री जब कहती: 'मिर्च नहीं है' तो वह कहता—'तामझाम लगे।' वह जब फिर कहती—'नमक मंगाना तो भूल ही गई।' तो वह तुरंत कहता—'तामझाम लगे।' प्रायः मूर्खतापूर्ण दम के लिए कहावत का प्रयोग होता है।)

**ताल उझल कर उझले क्यार, जब बरसा हो पुरंधार, (कृ०)**

खूब जोर की वर्षा होने पर तालाबों और खेतों में पानी बह निकलता है।

अथवा तालाबों और खेतो में जब पानी उमड पड़े, तो समझो कि खूब ज़ोर की वर्षा हुई।

**ताल तो भोपाल ताल और सब तलैयां**

भोपाल के ताल की प्रशंसा में।

(भोपाल वर्तमान मध्यप्रदेश की राजधानी है। वहां का ताल प्रसिद्ध है। उक्त कहावत पूरी इस प्रकार है—ताल तो भोपाल ताल और सब तलैया। गढ तो चित्तौरगढ और सब गढैयां। राजा तो छत्रसाल और सब रजैयां। रानी तो कमलापत और सब रनैयां।

**ताल न तलैया, बोओ सिंघाड़े भैया, (कृ०)**

बिना साधन और सामान के काम।

**ताल मे चमके ताल मछरिया रन चमके तरवार।**
**तंबुआ चमके सैयां पगड़िया, सेज पै बिंदिया हमार।**

ताल में तो मछली चमकती है, और युद्धक्षेत्र में तलवार, (लड़ाई के) तंबू में तो स्वामी की पगड़ी चमकती है, और सेज पर मेरे माथे की बिन्दी। अपने-अपने स्थान पर सब वस्तुएं शोभा पाती है।

**ताल सूख पटपर भयो, हंसा कहीं न जाय।**
**मरे पुरानी पीत को, चुन-चुन कंकड़ खाय।**

स्पष्ट। सच्ची लगन का उदाहरण।

पटपर=समतल, चौरस।

**ताल से तलैया गहरी, सांप से संपोला बहरी**

कभी-कभी बेटा बाप से भी बढ़कर निकलता है।

**तालियां बजा ले बच्चो, ब्याह होगा**

किसी बात की खुशी मनाने के लिए हँसी में बच्चों से क०।

**ताली दोऊ कर बाजे**

दो के बिना लड़ाई नहीं होती।

दे०—एक हाथ...।

**ताली बिन कैसा ताला, जोरू बिन कैसा साला**

स्पष्ट।

**तावल मत कर कार मां धीरा धीर बना।**
**ताता भोजन बालके देवत जीभ जला।**

काम में उतावली नहीं करनी चाहिए।

**तावला सो बावला, धीरा सो गंभीरा**

उतावले को पागल समझना चाहिए। जो धैर्य्य से काम ले, वही गंभीर है।

**ताश पर मूंज का बखिया, (स्त्रि०)**

असंगत काम।

ताश—एक प्रकार का सलमे-सितारे का रेशमी कपड़ा।

**तित्तर बित्तर हो गये, सगर डोम के काम।**
**निमड़ गए जजमान, जब गांठ गिरह के दाम।**

पैसे के बिना सब काम गड़बड़ हो रहा है, किसी डोम याचक का अपने जजमान से क०।

**तिनका उतारे का अहसान होता है**

छोटे से छोटे काम का अहसान माना जाता है। सिर पर से कोई तिनका अलग कर दे, तो उसका भी अहसान है।

**तिनका गिरा गयंद मुख, नेक न घटो अहार।**
**सो ले चली पिपीलिका, पालन को परिवार।**

हाथी के मुंह से तिनका (भोजन का कण) नीचे गिरने पर उसके आहार में कोई कमी नहीं हो जाती। चींटी उसे उठाकर ले जाती है, जिससे उसके परिवार का पालन होता है।

बड़े आदमियों के लिए जो बेकार हो जाती है, छोटों का उसी चीज से काम चलता है।

गयंद=हाथी। पिपीलिका=चींटी।

**तिनका हो तो तोड़ लूं, पीत न तोड़ी जाय।**
**पीत लगत टूटत नहीं, जब लग मौत न आय।**

स्पष्ट।

**तिनके की ओट पहाड़**

आंख के सामने तिनका रखने से पहाड़ भी छिप जाता है।

(१) कभी-कभी बहुत छोटे कारण से ही बड़ी कठिनाई पैदा हो जाती है।

(२) छोटी चीज के पीछे कोई बड़ा रहस्य छिपा रहता है।

**तिनके की चटाई, नौ बीघा फैलाई**

जितना काम किया, उससे अधिक करने का दिखावा करना।

**तिरिया चरित्र और चोर की घात; पाई पड़े ना, कह गये नाथ**

स्पष्ट।

**तिरिया चरित्र जाने नहिं कोय, खसम मार के सत्ती होय**

स्त्री के चरित्र को समझना बड़ा कठिन है, वह अपने पति को मार कर फिर उसके साथ सती होती है, अपनी निर्दोषिता सिद्ध करने के लिए।

(यह पुरुष-प्रधान समाज की कहावत है। पुरुष भी ऐसे होते हैं।)

**तिरिया जात कमान है, जित चाहे तित तान**

स्त्रियां धनुष की तरह होती हैं, उन्हें जहां चाहो, वहां झुका लो या जितना चाहो उतना झुका लो। (यह पुरुषों का दंभ सूचक है।)

**तिरिया तुझ में तीन गुन, अवगुन हैं लख चार।**
**मंगल गावे, सत रचे, और कोखन उपजें लाल।**

स्त्री में तीन गुण और लाखों अवगुण भरे हैं। वह मंगलगीत गाती है, पति के साथ सती होती है और उसकी कोख से वीर पुत्र उत्पन्न होते हैं।

**तिरिया तुमसे जो कहे, भूल न तू वह मान।**
**तिरिया मत पर जो चले, वह नर है निरज्ञान।**

स्त्री जो कुछ कहे, उसे कभी नहीं मानना चाहिए।

जो स्त्री की सलाह पर चलता है, वह मूर्ख है। पुरुषप्रधान समाज की मूर्खतापूर्ण मान्यता।
मूल=बिल्कुल।

**तिरिया तेरह, मर्द अठारह**
लडकी की उम्र अगर तेरह हो, तो लडके की अठारह होनी चाहिए। विवाह के लिए यह जोड ठीक रहता है।

**तिरिया तो है शोभा घर की, जो हो लाज रखावा नर की**
स्पष्ट।

**तिरिया थिरकत जो चले, वाको भला न जान।**
**जैसे हाथ लिखेर का, कांपत हो नुक़सान।**
स्पष्ट।
लिखेर लिखनेवाला, चितेरा।

**तिरिया पुरख बिन है दुखी, जैसे अन बिन देह।**
**जले बले है जीवड़ा, ज्यों खेती बिन मेह।**
स्पष्ट।
पुरख पुरुष।
जीवड़ा जी, हृदय।

**तिरिया बिन तो नर है ऐसा, राहबटाऊ होवे जैसा**
स्त्री के बिना पुरुप वैसा ही है जैसा राह-चलता रास्ता-गीर। वह बेठिकाने का होता है।

**तिरिया बिस की बेल है, या सूं बचकर चाल।**
**याका नेहा खोउत है, दीन, धरम, धन माल।**
स्पष्ट। (पुरुषप्रधान समाज की दभोक्ति।)

**तिरिया भली वही है भाई, जो पुरुषा सग करे भलाई**
स्पष्ट।

**तिरिया भी नर बिन है ऐसी, बिना धनी के खेती जैसी**
पुरुष के बिना स्त्री वैसे ही है जैसे बिना मालिक के खेती नष्ट हो जाती है।

**तिरिया रोवे पुरुष बिना, खेती रोवे मेह बिना, (कृ०)**
स्पष्ट।

**तिल की ओझल पहाड़**
दे०—तिनके की...।

**तिल गुड़ भोजन, तुरक मिताई, आगे मीठ पाछे कड़ुवाई**
तिल और गुड़ के भोजन और मुसलमान की मित्रता ये पहले तो अच्छे लगते हैं, पर बाद मे कड़वाहट पैदा करते हैं। यह कहावत मुसलमान मित्र पर कोई चिरन्तन सत्य नही। हिन्दू मित्र भी धोखेबाज़ हो सकते हैं।

**तिलचोर सो बज्जुर चोर**
चोरी-चोरी सब बराबर। छोटी चीज़ चुरानेवाले को भी शातिर चोर समझना चाहिए।
बज्जुर -वज्र जैसा, अर्थात बहुत बडा।

**तिल, तीखुर, दाना, घी शक्कर में साना; खाय बूढ़ा हो जवाना**
तिल, तवाखीर और पोस्तादाना इन तीन को घी शक्कर के साथ खाने से बूढा भी जवान हो जाता है। (स्वास्थ्य का नुसखा।)

**तिल रहे तो तेल निकले**
तेल तो तिलो से ही निकलता है, अर्थात पूजी के सुरक्षित रहने से ही कोई व्यापार चल सकता है। (ग्राहक जब किसी चीज़ के दाम कम करना चाहता है और उसमे कमी की गुजाइश नही होती, तब प्राय दूकानदार कहा करते है।)

**तीज पड़े खेत में बीज, (कृ०)**
सावन की तीज को खेत मे बीज पडता है। (सावन अर्थात जुलाई के महीने मे खरीफ की बुवाई होती है।)

**तीतर के मुंह लच्छमी**
हाकिम की जबान मे सब कुछ है, वह जो कहेगा, वही होगा, ऐसा भाव प्रकट करने को क०। (तीतर की बोली से शकुन विचारते है। उसी से कहावत बनी।)

**तीतर बायें बोल जा तो सगर कार हो ठीक।**
**दाहने बोलत ना भला, सांच जान यह सीख।**
**(लो० वि०)**
पक्षी शकुन। तीतर का बाई ओर बोलना शुभ और दाहिनी ओर बोलना अशुभ होता है।

**'तीन कचौरी, नौ बराती, खाओ चूरमचूर।'**
**'अये, घरबसी, तेरे ब्याह है या लूटमलूट।'**
**'बंदो जब करती है जब ऐसा ही करते,**
किसी के यहा ब्याह है, मालकिन कहती है—'नौ

बराती, और तीन कचौड़ियां हैं, लो, खूब डटकर खाओ।' तब उसकी यह उदारता देखकर दूसरी औरत कहती है कि 'अए घरबसी ! तेरे यहां ब्याह है या लूट मची है यानी तू इतना अनापसनाप खर्च कर रही है।' तब वह जवाब देती है कि 'मैं तो जब करती हूं, तब ऐसा ही करती हूं।'

(इन पंक्तियों में किसी कंजूस के घर की दावत का मजाक उड़ाया गया है।)

**तीन का टट्टू तेरह का जीन**

जितने की कोई चीज नहीं, उसके लवाज़मे में उससे ज्यादा का खर्च।

**तीन गुनाह खुदा भी बख्शता है, (मु०)**

अपराध करके जब कोई माफी मांगे, तब प्रायः वह कहता है।

बख्शता है माफ करता है।

**तीन टांग की घोड़ी, नौ मन की लदनी**

किसी अयोग्य को कोई बड़ा काम सौंप देना।

**तीन तिकट महा बिकट, चार का मुंह काला, पांच हों तो भाला**

स्त्रियो का विश्वास। तीन और चार की संख्या बुरी होती है, पांच तो बहुत ही बुरी संख्या है।

**तीन तिरहुतिया मिले, पकना रह गया**

जहां तीन तिरहुतिये इकट्ठे हो जाएं, वहां भोजन नहीं बन पाता।

(मैथिल ब्राह्मणो में छुआछूत बहुत मानते हैं, उसी पर कटाक्ष है।)

**तीन तिताला, चौथे का मुंह काला**

बच्चों की तुकबंदी।

**तीन तेरह हो गये**

तितर-बितर हो गए। बर्बाद हो गए।

**तीन थान, चौथा मैदान**

स्थान की कमी होने पर क०।

थान—ढोरों के बंधने की जगह; स्थान।

**तीन थान, चौथी जान, उनका अल्लाह निगहबान**

तीन लड़के, चौथा मैं, उनकी ईश्वर रक्षा करे। अपनी असहाय अवस्था प्रकट करने को कह रहा है।

(थान का अर्थ अदद भी होता है, जैसे कपड़े के तीन थान। यहां लड़कों से अभिप्राय है।)

**तीन दिन क़ब्र में भी भारी होते हैं, (मु०)**

स्पष्ट।

(मुसलमानों का विश्वास है कि मरने के बाद तीन दिन तक मृतक को ईश्वर के सामने अपनी जिन्दगी का हिसाब देना पड़ता है। इसलिए कहा गया है कि कब्र में तीन दिन मुसीबत के होते है।)

**तीन दिन के छोकरा, हमें सिखावत बात।**
**जबले वह लिहें ठीकरा, तब ले मारब लात। (भो०)**

तीन दिन का छोकड़ा, मुझे सिखाने चला है। जब तक वह (मुझे मारने को) पत्थर उठाएगा, तब तक मैं खीचकर लात मारूंगा।

(धृष्ट लड़के के सबंध में बूढ़े की उक्ति।)

**तीन दिये और तेरह पाये, कैसे लोभ ब्याज का जाय**

सूदखोरों पर व्यंग्य।

**तीन नरी में तेरह गज**

तीन बकरियों का चमडा फैलाने से तेरह गज हुआ। एक अद्भुत बात।

**तीन पाव की तीन पकाई, सवा सेर की एक।**
**जेठ निपूता तीनों खा गया, मैं संतोखन एक।**

सबसे अधिक ले लेने पर भी यह कहना कि हमने तो बहुत ही कम लिया। तीन पाव की तीन रोटियों में से एक सवा सेर की ज्यादा भारी है ही।

**तीन पाव भीतर, तो देवता और पीतर, (हिं०)**

पेट भरा होने पर ही धर्म-कर्म सूझता है।

**तीन बुलाये तेरह आये, देखो यहां की रीत।**
**बाहरवाले खा गये (और) घर के गावें गीत।**

जब किसी जगह बिना बुलाए बहुत से फालतू आदमी पहुंच जाएं, तब क०।

**तीन बुलाये तेरह आये, दे दाल में पानी**

दे० ऊ०।

**तीन बुलाये तेरह आये, सुनो ज्ञान की बानी।**
**राघव चेतन यों कहें, तुम देव दाल में पानी।**

दे० ऊ०।

(यह ऊपर की कहावत का ही पूरा रूप है।)

**तीन में न तेरह में, न सेर भर सुतली में, न करवा भर राई में**

ऐसा व्यक्ति जो किसी गिनती में न हो।

(किस्सा है कि किसी वेश्या ने अपने प्रेमियों को अलग-अलग कई श्रेणियो में बांट रक्खा था। पहली श्रेणी में तीन व्यक्ति थे, जिन्हें वह सबसे अधिक चाहती थी; फिर तेरह थे; फिर वे थे, जिनकी गिनती उसने सुतली में गांठें लगाकर कर रक्खी थी; सबसे अंत में थे वे साधारण व्यक्ति, जिनके नाम का राई का एक दाना वह एक करवे मे डाल दिया करती थी। एक बार उसके यहां एक व्यक्ति आया और बोला कि मैं पहले भी आया करता था और तुम्हें बहुत द्रव्य मैने दिया है। पर वेश्या ने उसे नहीं पहचाना और अपने नौकर से कहा कि देखो यह किसमे है। तब उसने उक्त जवाब दिया।)

**तीन लोक से मथुरा न्यारी**

नियम या परंपरा के विरुद्ध काम करने पर क०।

**तीन हैं साह किसान के झांद, जाल और कैर, (कृ०)**

दुर्भिक्ष पड़ने पर झांद, जाल और कैर इन तीन से किसान अपना पेट पालते हैं।

झाद एक तरह की टोकनी, जिससे मछली पकड़ते हैं।

जाल चिड़ियां और जंगली जानवर फंसाने का जाल।

कैर खैर, जंगली लकड़ी, जो ईंधन के काम आती है और जिससे कत्था बनता है।

**तीनों त्रिलोक दिखाई दे गये**

बहुत आनंद आ गया। कष्ट के लिए भी कह सकते है।

**तीर, कव्वे, तीर**

धूर्त को सावधान करने के लिए क०।

**तीर जुवाई आ लगा, दिया कलेजा छेद।**
**पी अपना परदेश मां, किससे कहिये भेद।**

किसी विरहिणी की उक्ति। स्पष्ट।

**तीर, तुरमती, इसतिरी, छूटत बस ना आयं।**
**झूठ जो माने यह बचन, बे नर कूढ़ कहायं।**

तीर, बाज और स्त्री, ये हाथ से बाहर निकलने पर फिर काबू में नहीं आते।

**तीरथ गये मुड़ाये सिद्ध**

तीर्थ स्थान में जाने पर मुंडन करा ही लेना चाहिए।

(१) किसी एक काम से किसी जगह जाने पर यदि दूसरा काम भी बन रहा हो, तो उसे अवश्य कर लेना चाहिए।

(२) किसी काम को अगर हाथ में ले, तो उसे फिर अच्छी तरह पूरा करना चाहिए, खर्च का मुंह नहीं देखना चाहिए।

**तीरथ, मूरत पूजकर, मत ना उमर गंवाय।**
**पूजा कर करतार की, जो तुरत मुक्त हो जाय।**

स्पष्ट। कबीरपंथी साधुओं का कहना।

**तीर न कमान, काहे के पठान, (मु०)**

झूठी शेखी हांकने वाले से क०।

पठान से मतलब सिपाही से है।

**तीर न कमान, मियां का अल्लाह निगहबान**

दे० ऊ०।

**तीर न कमान, मेरे चाचा खूब लड़े।**

दे० ऊ०।

**तीवन बिन ना रोटी सोहे, गुंधे बिन ना चोटी सोहे**

बिना चटनी के रोटी अच्छी नहीं लगती, बिना गुधी चोटी भी अच्छी नही लगती।

**तीसमार खां बने फिरते है**

जो अपने को बहुत समझता और झूठी शेखी हांकता फिरता है, उससे क०।

(कथा है कि किसी स्त्री का पति बड़ा निकम्मा और आलसी था। वह उससे रोज कहा करती थी कि तुम घर बैठे रहते हो, कुछ काम-धंधा क्यों नही करते। स्त्री की बातों से तंग आकर उसने एक दिन नौकरी की तलाश में बाहर जाने का इरादा किया। उसकी स्त्री ने एक महीने के खाने लायक उसे लड्डू बना दिए। पर ग़लती से उनमें कोई जहरीला कीड़ा मिल गया, जिससे सब लड्डू जहरीले हो गए। घर से चलकर जब वह पहली ही मंज़िल में ठहरा, तो तीस चोरों ने उसे घेर लिया, पर उसके पास तीस लड्डुओं के सिवाय और कुछ नहीं निकला। चोरों ने तीसों लड्डू आपस में एक-एक बांट

खाया। उनको खाते ही वे सब के सब मर गए। जब सिपाही ने उनको मरा देखा, तो उन सबकी नाक काटकर अपने पास रख ली। सुबह होते ही यह बात चारों ओर फैल गई कि किसी आदमी ने तीस चोरों को मार डाला है। जब उस देश के राजा ने यह बात सुनी तो, पूरे किस्से की छानबीन की। पता चला कि वही तीस चोर थे, जिन्होने बहुत दिनों से राज्य मे उपद्रव मचा रक्खा था और जो पकड़ाई नही दे रहे थे। जब उस व्यक्ति ने राजा के पास जाकर कहा कि इन चोरो को मैने मारा है और ये उनकी नाके हैं, जो मैने काट ली थी, तो राजा उसकी बहादुरी से बड़ा खुश हुआ और उसे तीसमारखा की उपाधि देकर अपना वज़ीर बना लिया।)

**तीसरे दिन मुरदा भी हलाल है,** (मु०)

कहते हैं कि मुसलमानों के धार्मिक विचारो के अनुसार कोई आदमी अगर तीन दिन का भूखा हो अथवा भूख से मर रहा हो, तो वह फिर कोई भी चीज़ खाकर अपना पेट भर सकता है।

(स०—आपत्तिकाले धर्मोनास्ति।)

**तीसी के खेत में जुलाहा भुतलाने,** (पू०)

अलसी के खेत में जुलाहे रास्ता भूल गए। जुलाहे अपनी सिधाई के लिए प्रसिद्ध है।

(कथा है कि कुछ जुलाहे कही जा रहे थे। रास्ते में अलसी का खेत मिला। उसे नदी समझकर वे पार करने की तैयारी करने लगे। तब तक एक घुड़सवार वहां आ गया, जिसने उन्हे किसी तरह समझाया कि यह तो अलसी का खेत है, नदी नही। तब वे उस रास्ते से निकले।)

**तुई तो मुई, न तुई तो मुई**

(गाय का) गर्भपात हो गया तो भी मरेगी, न हुआ तो भी मरेगी। हरहालत में खराबी।

**तुख्म तासीर, सोहबत का असर**

बीज का गुण और सोहबत का असर नहीं जाता। खोटे की खोटी संतान होती है और भले की भली।

**तुम पर पड़े जो औखसा, दिल बिच मत घबराय।**
**जब साईं की हो दया, काम तुरत बन जाय।** (ग्रा०)

विपत्ति में हिम्मत नही हारनी चाहिए।

**तुमे पराई क्या पड़ी, अपनी निबेड़ तू**

अपना काम छोड़कर व्यर्थ दूसरे के झगडे में नही पड़ना चाहिए।

**तुनतुनी बजाते मियां खाते शक्कर घी, नौकरी की ऐसी तैसी, अब के बचे जी**

किसी फक्कड सिपाही का कहना, जो लड़ाई पर जा रहा है।

**तुम अंत गये, हम अंत कर आयो, मड़ो चून कुत्तन ने खाओ** (पू०)

तुम एक रास्ते से गए, हम दूसरे से गए, तब तक गुधा हुआ चून कुत्तो ने खा लिया। परिवार के लोगो मे झगडा होने पर दूसरे लाभ उठाते है।

अंत=दूसरी जगह।

**तुम काटो मेरी नाक और कान;**
**मै न छोड़ूं अपनी बान,** (स्त्रि०)

हठी आदमी या औरत।

**तुम किस खेत के बथुए हो?**

मैं तुम्हे कोई चीज़ नही समझता।

(बथुआ एक बहुत साधारण साग होता है।

**तुम किस खेत की मूली हो?**

दे० ऊ०।

**तुमको हमसी अनेक है, हमको तुम-सा एक।**
**रवि को कमल अनेक है, कमलन को रवि एक।** (स्त्रि०)

प्रेमिका का कहना अपने प्रेमी के प्रति।

**तुम क्यों फटे में पांव देते हो**

क्यो पराये झगड़े में पड़ते हो?

**तुम जानो तुम्हारा काम जाने**

हमारी बात नही मानते, तो चाहे जो करो।

**तुम डाल-डाल, हम पात-पात**

हमारे सामने तुम्हारी चालाकी नही चलने की। हम तुमसे ज्यादा होशियार हैं।

**तुम तो अकल के पीछे लट्ठ लिये फिरते हो**

उसे भगाने के लिए। जब कोई बिना सोचे

बिचारे मूर्खतापूर्ण ढंग से काम करता है, तब क०।

**तुम तो कुछ जानते ही नहीं, औंधे मुंह दूध पीते हो**

जब कोई भोला और अनजान बने, तब क०।

**तुम तो जब मां के पेट से भी नहीं निकले होगे**

तुम तो तब पैदा भी नहीं हुए होगे, फिर तुम्हें क्या खबर कि उस वक्त क्या हुआ?

**तुम तो मुझे छेड़ोगे**

झूठमूठ का नखरा करना। कोई व्यक्ति यदि किसी से बोलने (या किसी को छेडने) के लिए तैयार नही, तो भी प्रकारान्तर से उसके मन मे बोलने (या छेडने) की इच्छा जाग्रत करना। (कथा है कि किसी स्त्री की, जो अपने सिर पर एक खाली घडा रखे जा रही थी, एक पुरुष से भेंट हो गई, जो अपने दोनो हाथो मे दो कबूतर लिये आ रहा था। स्त्री ने उसे देखते की कहा—देखो जी, मुझे छेडना नही। पुरुष ने कहा—मै यह कैसे कर सकता हू। मेरे हाथो मे तो कबूतर है। स्त्री ने जवाब दिया—उन्हे तुम मेरे घडे मे रख दोगे। और फिर मुझे छेड़ोगे।)

**तुम थूकते हो, हम थूकते भी नहीं**

किसी ने कहा—हम ऐसे काम पर थूकते है, अर्थात बहुत घृणा करते है। दूसरे ने जवाब दिया—तुम थूकते हो, हम वह भी नही करते। अर्थात हम ऐसे काम मे तुमसे भी अधिक घृणा करते है।

**तुम दाता कुल भंज हो, सुनो नाथ मोर गुहार।**
**हौं अपराधी जनम को, नख सिख भरो विकार।**

स्पष्ट।

**तुमने उड़ाई, हमने भून-भून खाई**

तुमने (बातें) उडाईं, अर्थात मेरे बारे मे झूठी बातें कही, मैंने उन्हे भून-भून कर खाया, अर्थात उनको कतई परवाह नही की।

**तुम बड़ा नान्हा कातती हो, (स्त्रि०)**

बहुत बारीकी करती हो। जब कोई देने-लेने में बहुत कंजूसी करे, तब क०।

**तुम बिन ऐसी गत भई, सुन मेरी अब पीय।**
**जैसे खाल लुहार की, सांस लेत बिन जीय।**

स्पष्ट। कोई विरहिणी कहती है।

**तुम भी कहोगे 'कोई मुझे जोरू करे'**

जो अपने को बहुत होशियार समझे, उससे क०।

**तुम भी कहोगे 'मुझे चरखा ले दे'**

अर्थात तुम औरतों का ही काम कर सकते हो। मूर्ख से क०।

**तुम भी कोरे चालीस सेरे अत हो**

निरे मूर्ख हो। कोई कसर नहीं।

चालीस सेर पूरा एक मन।

**तुम रूठे, हम छूटे, (स्त्रि०)**

जब कोई बहुत नाराज हो जाए और मनाने से भी न माने, तब क०। चलो अच्छा है, तुम नही मानते, हमने भी छुट्टी पाई।

**तुम सरीखे सैकड़ों फिरते है**

अर्थात मैं तुम्हारी कोई परवाह नहीं करता।

**तुम्हारी जूती और तुम्हारा ही सिर**

तुम जो खर्च कर रहे हो, वह तुम्हारे माथे ही जाएगा।

**तुम्हारी बराबरी वह करे, जो टांग उठाकर मूते**

अर्थात तुम तो कुत्ते हो। तुम से कौन बात करे? डींग हाकनेवालो से व्यग मे क०।

**तुम्हारी बराबरी वह करे, जो दौड़ने हिरन को पकड़े**

दे० ऊ०।

**तुम्हारी बात उठाई जाय, न धरी जाय**

अर्थात तुम्हारी बात समझ में नहीं आती।

तुम किसी मशरफ (उपयोगी) की बात नही करते।

**तुम्हारी बात का एतबार क्या?**

बहुत झूठ बोलनेवाले से क०।

**तुम्हारी बात थल की न बेड़े की**

तुम्हारी बात न जमीन की, न पानी की, अर्थात बेहूदी।

**तुम्हारी बात में बंद क्या?**

तुम्हारी बात का भरोसा क्या?

बंद=बांधने की चीज, अर्थात दृढ़ता।

**तुम्हारे चाटे तो रूख भी नहीं रहे हैं**

धूर्त मनुष्य। जिसके पीछे पड़ गया, उसे बर्बाद करके छोड़ा।

(टिड्डियां जिस पेड़ पर बैठ जाती हैं, उसे चाटकर साफ कर देती हैं। उसी से मुहावरा लिया गया है।)

**तुम्हारे पान का उगाल, हमारे पेट का आधार**

गरीब का अमीर से कहना कि हम तो आपका जूठन खाकर ही रहते है। अत्यंत विनम्रता दिखाना।

**तुम्हारे पेट में बोटे की गांठ है**

तुम बहुत कम खाते हो।

**तुम्हारे फरिश्तो को भी खबर नहीं है, (मु०)**

फिर तुम कैसे जान सकते हो? अर्थात तुम्हें किसी बात का पता ही नही।

(मुसलमानो के अनुसार हर मनुष्य के साथ दो फरिश्ते रहते है, जो उसके प्रत्येक कार्य को देखते रहते है।)

**तुम्हारे बैल, हमारे भैंसा, तुम्हारा हमारा फिर साथ कैसा?**

बैल भैंस से जल्दी चलता है, इसलिए दोनो का साथ निभ नही सकता। दो भिन्न प्रकृति के मनुष्य एक साथ नही रह सकते।

**तुम्हारे भतार न हमारे जोय, अस कुछ करो कि बेटवा होय, (पू०)**

रडुए का खूबसूरती के साथ विधवा से कहना कि मै तुम्हारे साथ विवाह करना चाहता हू।

(दो निठल्ले आदमी एक दूसरे से कह सकते है कि भाई कुछ ऐसा किया जाए, जिससे पेट का धधा चले।)

**तुम्हारे मरे देस खाक, हमारे मरे देस पाक**

तुम्हारे मरने से देश बर्बाद हो जायगा, हमारे मरने से धरती का बोझ कम होगा।

बहुत अधिक विनम्रता दिखाना।

**तुम्हारे मरे देस पाक, हमारे मरे देस खाक**

मूर्खतापूर्ण दंभ।

**तुम्हारे मुंह का उगाल, हमारे पेट का आधार**

दे०—तुम्हारे पान का उगाल...।

**तुम्हारे मुंह में कै दांत हैं, यह तो कोई पूछता ही नहीं**

आप हैं कौन, कोई यह भी नहीं पूछता।

**तुम्हारे मुंह में घी शक्कर**

जब कोई अच्छी खबर सुनाए, तब क०।

**तुम्हारे लड़के भी घुटनियों चलेंगे? (स्त्रि०)**

तुम कभी अपना वादा भी पूरा करोगे? अथवा क्या तुम कभी सच भी बोलोगे?

**तुरई कद्दू, लानत हरदू**

दोनो पर लानत। दोनों ही निकम्मी।

**तुरक काके मीत, सरप से का प्रीत**

स्पष्ट। जातिविद्वेष भरी बात।

**तुरक, ततैया, तोतरा, ना यह किसी के मीत। भीड़ परत मुंह फेर लें, राखें ना परतीत। (ग्रा०)**

मुसलमान, बर्रे और तोता ये किसी की मुरव्वत नहीं करते। जातिविद्वेषमूलक।

**तुरक हू हुए तौ भी ना, (ए०)**

मुसलमान भी हुए, तो भी नाही करती है, अर्थात तो भी अभीष्ट सिद्ध नही हुआ।

**तुरकी तमाम हुई**

तुरकी छांटना बंद हो गया। घमड दूर हो गया।

**तुरकी पीटे ताजी कांपे**

एक को दंड देने से दूसरा भी सावधान हो जाता है।

**तुरकी पीटे, ताजी के कान हों**

दे० ऊ०।

**तुरक की पोई तुरक ही खाओ; बासी खा मत ओझ बढ़ाओ**

ताजी रोटी ही खानी चाहिए। बासी से तोंद बढ़ती है।

**तुरत दान महा कल्यान, (हि०)**

किसी को कुछ देना हो, तो तुरत देकर छुट्टी पानी चाहिए।

**तुरत दान महा पुन्न**

दे० ऊ०।

**तुरत फतेह हो उसके ताईं, जिसका हामी होवे साईं**

भगवान जिसके सहायक होते हैं, उसकी जीत होती है।

**तुरत फुरत हो वह भी कार, मदद करे जिसकी सरकार**
स्पष्ट।

**तुरत फुरत हों सगरे काम, जब होवें मुट्ठी में दाम**
गांठ में पैसा होने से सब काम जल्दी होते हैं।

**तुरत भलाई वह नर पावे, जो धन दाता नाम लुटावे**
जो ईश्वर के नाम पर खर्च करता है, उसे तुरंत यश मिलता।

**तुरत मजूरी जो परखावे, वाका कार तुरत हो जावे**
जो मजदूरी तुरंत चुकाता है, उसका काम जल्दी होता है।

**तुरता फुर्ती काम में, अच्छी नाहीं जान;**
**सांच कहा है साधने, जल्दी मां नुकसान।**
काम में जल्दबाजी ठीक नहीं। उससे नुकसान होता है।

**तुरफतुल-एन में**
पलक मारते, फौरन।

**तुलसी अच्छर करम के, मेट न सक्के कोय।**
**मेटे तो अचरज नहीं, पर समझ किया है जोय।**
भाग्य का लिखा नहीं मिटता, अगर मिट भी जाए तो समझो; भगवान ने वैसा सोच-विचार कर ही किया होगा।

**तुलसी अपने राम को, भजिये जैसे लूट।**
**यह तन घड़ा है कांच का, छिन में जैहे टूट।**
स्पष्ट।

**तुलसी अपने राम को, रीझ भजो के खीज।**
**खेत पड़ें सब ऊपजें, उल्टे सीधे बीज।**
स्पष्ट। ईश्वर का ध्यान किसी प्रकार भी करो, उस सब का फल मिलता है।

**तुलसी अपनो जान के, कीनी थी परतीत।**
**धोखो दे न्यारे भये, भली निवाही रीत।**
स्पष्ट।

**तुलसी आम कुलीन है, नवे बड़प्पन जान।**
**ओछा पेड़ अरंड का, रहे सीस धर तान।**
स्पष्ट।

**तुलसी आह ग़रीब की, हरि से सही न जाय।**
**मरी खाल की फूंक से, लोह भसम हो जाय।**
स्पष्ट।
(मरी खाल से अभिप्राय लुहार की धौंकनी से है।)

**तुलसी ऐसी पीत कर, जैसे भोर तला।**
**झोलझाल के पी लिया, फेर लगा गला।**
प्रेम तो ऐसा करना चाहिए, जैसे कि सबेरे के तालाब की काई। पानी पीने के लिए लोग उसे अलग करते हैं, लेकिन वह फिर जुड़ जाती है।

**तुलसी ऐसे जीव को, कहा करे कोई साख।**
**लेके दे चाहत नहीं, किरिया करत है लाख।**
स्पष्ट।
किरिया=सौगंध।

**तुलसी ऐसे जीव क्यों, नरक कुंड ना जायं।**
**मन के कपटी मित्र हैं, पाग उतारे चायं।**
स्पष्ट।
पाग उतारे चायं=पगड़ी उतारना चाहते है; इज्जत लेना चाहते हैं।

**तुलसी ऐसे नरन की, कैसे गत मत होय।**
**बाप ने राखी पातुरी, ताके ढिग रहं सोय।**
स्पष्ट।
कैसे गत मत होय=कैसे मुक्ति मिल सकती है।
पातुरी=वेश्या।

**तुलसी ऐसे नरन से, मन फाटे जस दूध।**
**नीके काम को ना चलें, बुरे को हरदम ऊध।**
स्पष्ट।
ऊध=ऊर्ध्व, ऊंचे, तैयार खड़े।

**तुलसी ऐसे पतित को, बारबार धिक्कार।**
**राम भजन को आलसी, खाने को तैयार।**
स्पष्ट।

**तुलसी ऐसे मित्र के, कोट फांद के जाय।**
**आवत ही तो हँस मिले और चलत रहे मुरझाय।**
ऐसे मित्र के यहां तो दीवार लांघकर, अर्थात सब तरह के कष्ट उठाकर जाना चाहिए; जो आते ही हँसकर मिले, और चलते समय दुख प्रकट करे।
कोट=ऊंची दीवार, परकोटा।

**तुलसी कभी न छांड़िये, छिमा, सील, संतोस।**
**ज्ञान, ग़रीबी, हरिभजन, कोमल बचन अदोस।**
स्पष्ट।

कधी=कमी।

(फैलन ने अधिकांश स्थलों पर कमी के स्थान पर कधी का प्रयोग किया है।)

**तुलसी कर से कर्म कर, मुख से भज ले राम।**
**ऐसो समय न पायगो, जो लाखो खरचो दाम।**

स्पष्ट।

**तुलसी कलयुग के समय, देखो यह करतूत।**
**रामनाम को छांड़ के, पूजत हैं अब भूत।**

स्पष्ट।

**तुलसी कहत पुकार के, सुनो सकल दे कान।**
**हेमदान, गजदान से, बड़ा दान सनमान।**

दूसरे का उचित सम्मान ही सबसे बड़ा दान है।

हेमदान=स्वर्ण का दान। गजदान=हाथी का दान।

**तुलसी का पत्ता कौन छोटा कौन बड़ा? (हिं०)**

सभी पत्ते समान रूप से पवित्र और पूजनीय होते है।

जहां कई पूज्यजन मौजूद हों, वहां क०।

**तुलसी कारी कामरी, चढ़े न दूजा रंग**

स्वाभाविक प्रवृत्ति नही बदलती।

**तुलसी काहू चोर ने, चोरी जाय करी।**
**मूसमास के धन लियो, पूरी नाह परी।**

चोरी के धन से कभी किसी का भला नहीं होता।

मूसमास के=चुराकर।

**तुलसी चंदन बिटप बस, बिन बिख भयो न भुजंग।**
**नीच निचाई ना तजे, जो पावे सतसंग।**

स्पष्ट।

बस=बसकर; रह कर।

बिख=विष; जहर।

**तुलसी छलबल छोड़के, कीजे राम सनेह।**
**अंतर पति से है कहा, जिन देखी सब देह।**

स्पष्ट।

अंतर=भेद, दुराव; छिपाव।

पति=स्वामी; परमात्मा।

**तुलसी जग में आय के, औगुन तज दे चार।**
**चोरी, जारी, जामिनी, और पराई नार।**

स्पष्ट।

जारी=जार कर्म; पर-स्त्रीगमन।

जामिनी=जमानत देना। यहां अभिप्राय झूठ की जमानत से है।

**तुलसी जग में आय के, निश्चय भजिये राम।**
**मनुख मजूरी देत हैं, क्यों राखें भगवान।**

स्पष्ट।

**तुलसी जग में आय के, सीख ऊ र से लेव।**
**जो तुझको अनरस करे, रस वाको तू देव।**

स्पष्ट।

अनरस=रस-रहित।

**तुलसी जग में जस रहे, या रहे राम का नाम।**

स्पष्ट।

**तुलसी जपे तो राम जप, और नाम मत लेय।**
**राम नाम शमशीर है, जम के सिर में देय।**

स्पष्ट।

शमशीर=तलवार।

**तुलसी तब ही जानिये, परमेश्वर सों प्रीत।**
**हरख उठे, आदर करे, आवत देख अतीत।**

स्पष्ट।

अतीत=अतिथि, साधु।

**तुलसी तहां न जाइये, जहां जनम का ठांव।**
**आवभगत जाने नहीं, धरें पाछिलो नांव।**

जन्मस्थान में नहीं जाना चाहिए। वहां आदर नहीं होता।

(तुम चाहे जितने योग्य बन जाओ, लोग वहां बचपन के नाम से ही पुकारते हैं।)

**तुलसी तहां न जाइये, जहां न वर्ण विवेक।**
**रांग, रूप, रूआ, भुआ, सेत सेत सब एक।**

जहां सफ़ेद रंग की सब चीज़ें लोगों के लिए एक हों; जहां गुण-अवगुण का कोई विचार न हो, वहां नहीं जाना चाहिए। रांगा, चांदी, रूई, सेमर (या आक) का भुआ, ये सब चीज़ें सफ़ेद होती हैं, यद्यपि इनके गुण-धर्म में बहुत अंतर है।

**तुलसी तुम तो कहत हो, संगत में सब होत।**
**बीच ऊख रामसर तेहि रस काहु न होत।**

सत्संग में बड़ा प्रभाव है, फिर भी मनुष्य के जन्मजात स्वभाव को नहीं बदला जा सकता; ऊख के खेत में

लगे सरकंडे में रस पैदा नहीं होता, वह रूखा का रूखा ही रहता है।

**तुलसी दया न छांड़िये, जब लग घट में प्रान।**
**कबहूं तो दीनदयाल के, भनक परेगी कान।**

दया के सम्बन्ध में कहा गया है।

**तुलसी धीरज के धरे, हाथी मन भर खाय।**
**टूक टूक के कारने, स्वान घरे घर जाय।**

स्पष्ट।

मन भर = एक मन। जी भरकर।

**तुलसी पर घर जायके, दुख न कहिये रोय।**
**भरम गंवावे आपनो, बांट न सक्के कोय।**

स्पष्ट।

भरम गंवावे भेद खुल जाता है, अपनी बात दूसरों को मालूम हो जाती है।

**तुलसी पिछले पाप से, हरि चर्चा न सुहाय।**
**जैसे जुर के अंत में, भूख विदा हो जाय।**

स्पष्ट।

जुर- ज्वर; बुखार।

**तुलसी पैसा पास का, सब से नीको होय।**
**होते के सब कोय हैं, अनहोते की जोय।**

गांठ का पैसा ही काम आता है। बहिन और बाप सब लोग धन के ही साथी होते हैं। केवल स्त्री ही निर्धनता में साथ देती है। (यह द्रष्टव्य है कि दूसरी कहावतों में स्त्री की निन्दा की गई है। सत्य निकल पड़ा है।)

**तुलसी प्रतिमा पूजिबो, ज्यों गुड़ियों का खेल।**
**भेंट भई जब पीव से, धरो पिटारी मेल।**

प्रतिमा का पूजन तो गुड़ियों के खेल की तरह है। जब स्वयं प्रियतम से ही भेंट हो गई, तो (गुड़ियों की) पिटारी को अलग रख देना चाहिए। (उपासना के सम्बन्ध में।)

**तुलसी बिदेस जु जात हैं, करें समान अनंत।**
**ना जानूं परलोक को, कैसे नर निश्चंत।**

स्पष्ट।

**तुलसी बिरवा बाग के, सींचतहू कुम्हलाय।**
**राम भरोसे जो रहें, पर्वत पर हरयाय।**

स्पष्ट।

बिरवा=वृक्ष।

सींचतहू=सींचने पर भी।

**तुलसी बुरो न मानिये, जो गंवार कह जाय।**
**सावन केसे नरदुआ, बुरो-भलो बह जाय।**

नासमझ के कहने का बुरा नहीं मानना चाहिए।

नरदुआ नाबदान।

**तुलसी भरोसे राम के, लिये पाप भर ओट।**
**ज्यों व्यभिचारी नारको, बड़ो खसम की ओट।**

स्पष्ट।

नार नारी; स्त्री।

ओट- आड़।

**तुलसी मीठा बोलिये, सबसे करके प्रीत।**
**करें प्रेम तासें सभी, लख कोकिल की रीत।**

स्पष्ट।

**तुलसी मीठे बचन से, सुख उपजे चहुं ओर।**
**बसीकरन यह मंत्र है, तज दे बचन कठोर।**

स्पष्ट।

**तुलसी मूढ़ न मानिहैं, जब लग खता न खाय।**
**जैसे बिधवा इसतिरी, गरभ रहे पछताय।**

स्पष्ट।

खता--धोखा; ठोकर।

इसतिरी स्त्री।

**तुलसी या संसार में, पांच रतन हैं सार।**
**साधु मिलन अरु हरिभजन, दया, धर्म, उपकार।**

स्पष्ट।

**तुलसी या संसार में, पाखंडी को मान।**
**सीधों को सीधा नहीं, झूठों को पकवान।**

स्पष्ट।

मान सम्मान।

सीधा अन्न; भोजन।

**तुलसी या संसार में, सबसे मिलिये धाय।**
**ना जाने किस भेष में, नारायन मिल जाय।**

स्पष्ट।

**तुलसी राम की भगति बिन, धिक दाढ़ी, धिक मूंछ।**
**पशू गढ़ंते नर भयो, भूल्यो सींग अरु पूंछ।**

स्पष्ट।

**तुलसी वह दोऊ गये, पंडित और गृहस्थ।**
**आते आदर ना कियो, जात दिया ना हस्त।**

स्पष्ट।

जात दिया ना हस्त -हाथ से कुछ दिया नही।

**तुलसी वेश्या देख के, करन लगे तकझांक।**
**आवत देखो संत को, मुंह लीन्हों झट ढांक।**

स्पष्ट।

**तुलसी सरन है राम की, सुन ले मेरी टेर।**
**गज को छुड़ायो ग्राह से, मेरी बार क्यों देर।**

स्पष्ट।

(पुराणों मे गज-ग्राह के युद्ध की कथा प्रसिद्ध है। दोहे मे उसी का उल्लेख है।)

**तुलसी हरि की भगति बिन, ये आवें किहि काज।**
**अरब खरब लौं लच्छमी, उदय अस्त लौं राज।**

स्पष्ट।

**तुलू और गुरूब के वक्त सिजदा मना है,** (मो० मि०)

ठीक सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सिजदा नही करना चाहिए। मुसलमानो की मान्यता।

सिजदा ईश्वर की प्रार्थना।

**तूं किथों दा खब्बा साब-एं?** (पं०)

तू कहां का खां साहब है? कहां का बड़ा आदमी है?

**तू कन के लानें फिरत क्यों मन में पछतायो।**
**जिसने जैसा दियो है, तिसने तैसो पायो।**

जो जैसा करता है, वैसा पाता है।

कन -अन्न। धन।

लानें =लिए।

**तू कर अपना काम, तबलया भूसन दे,** (पू०)

तू अपना काम देख, कुत्ते को भूकने दे।

तबलया तबेले में बैठा हुआ। कुत्ते से अभिप्राय है।

**तू कहे सो सच है बुड्ढी, तू कहे सो सच**

किसी की सच बात को भी अनसुनी करना।

(इसकी कथा है कि एक बार होली के अवसर पर कुछ चोरों ने एक बुढ़िया के घर का सब सामान लूट लिया और उसे एक चारपाई से बांधकर रास्ते-रास्ते घुमाते फिरे। बुढ़िया तो चिल्ला-चिल्ला कर कहती थी कि इन लोगो ने मुझे लूट लिया, पर चोर उसकी बात को अनसुनी करने के लिए ऊपर का वाक्य कहते जा रहे थे। होली का मौका होने की वजह से लोगो ने उसे एक स्वांग समझा और उस पर कुछ ध्यान नही दिया।)

**तू खोल मेरा मकना, मैं घर संभालूं अपना,** (स्त्रि०)

नवविवाहिता स्त्री पहली बार ससुराल आते ही कह रही है कि हटाओ मेरा यह घूघट, मैं अपना घर सभालूगी। तेज तर्रार औरत के लिए क०।

**तू गधी कुम्हार की तुझे राम से कौंच**

तू कुम्हार की गधी, तुझे राम से क्या मतलब? जब कोई फालतू आदमी किसी काम मे व्यर्थ हस्तक्षेप करे, तब क०।

**तुम गोर खोद मोकों, मैं गाड़ आऊं तोकों**

भरपूर बदला चुकाना।

ग़ोर --कब्र।

**तू चाह मेरी जाई को, मैं चाहूं तेरी खाट के पाए को,** (स्त्रि०)

सास का दामाद से कहना। यह भाव प्रकट करने के लिए कही जाती है कि तुम हमारे साथ अच्छा व्यवहार करोगे, तो हम भी तुम्हारे साथ उतना ही अच्छा व्यवहार करेंगे।

जाई = बेटी।

**तू छुए और मैं मुई,** (स्त्रि०)

बहुत सुकुमारता प्रकट करना।

(प्रसव वेदना से पीड़ित होकर कोई कह रही है।)

**तूती चुगे तो ऊंच चुग, नीची चुगन मत जाहु।**
**कुले लजावे आपने, कहें अकब्बर साहु।**

किसी का एहसान ही लेना हो तो बड़े आदमी का लेना चाहिए; ओछे का एहसान लेना ठीक नही।

**तूती पालें चूतिया, और आशक पालें लाल।**
**कबूतर पालें चोट्टा, जो तकें पराया माल।**

तूती बेवकूफ पालते हैं, आशक-मिजाज लाल पालते हैं और चोर कबूतर पालते हैं; जो दूसरों का माल उड़ाने की फ़िक्र में रहते हैं।

**तू तेली का बैल, तुझे क्या सैर, लगा रह घानी से**

तू तो तेली का बैल है, तुझे मौज-मजा से क्या मतलब। घानी पेरता रह।

(जो चौबीसों घंटे काम में जुटा रहे, उससे व्यंग्य में क०।)

**तूने की रामजनी, मैंने किया राम जना**

स्त्री का अपने पर-स्त्रीगामी पति से गुस्से में कहना कि तुमने अगर औरत रख ली, तो मैंने भी आदमी रख लिया है।

तूने जब ऐसा किया, तो मैंने भी ऐसा किया, यह भाव प्रकट करने को क०।

**तूफ़ान, शैतान, अल्लाह निगहबान**

तूफ़ान और शैतान इन दोनों से ईश्वर बचाए।

**तू भी रानी, मैं भी रानी; कौन भरे कुएं का पानी? (स्त्रि०)**

जहां सभी आदमी अपने को बड़ा समझ रहे हों, और किसी कार्य को अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझ कर उसे करने में हीला-हवाला करें, वहां क०।

**तू मुझको, तो मैं तुझको**

समान व्यवहार।

**तू मेरा लड़का खिला, मैं तेरी खिचड़ी पकाऊं, (स्त्रि०)**

दे०—ऊ०।

**तू मेरे बारे को चाहे, तो मैं तेरे बूढ़े को चाहूं**

दे० तू मुझको...।

**तू रह री हौं ही लखूं, चढ़ न अटा बज बाल।**
**बिना समय ससि के उदय, दइहैं अरघ अकाल।**

यह बिहारी का प्रसिद्ध दोहा है। नायिका ने गणेश चतुर्थी का व्रत किया है। चंद्रमा को देखने के लिए वह बार-बार अटारी पर जाती है। सखी उसका श्रम बचाने के निमित्त उसको फिर चढ़ने से रोकती है, पर यह कह कर नहीं कि निराहार रहने के कारण तुझे श्रम होगा, बल्कि उसके रूप की प्रशंसा करती हुई यह कहकर रोकती है कि तेरा मुख चंद्रमा के समान प्रकाशमान है, इसलिए उसे ही चन्द्रमा समझकर स्त्रियां चंद्रमा के उदय के बिना ही अकाल में अर्घ्य दे देंगी। (जो ठीक नहीं है।)

**तूल, तेल तापना, जाड़ मास हो आपना**

रूई के कपड़े, तेल और तापने को मिले तो फिर जाड़ा अपना ही है।

**तू सच्चा, तेरा गुरु सच्चा**

व्यंग्य में झूठे से क०।

**तेतरी बेटी राज रजावे, तेतरा बेटा भीख मगावे, (लो० वि०)**

दो लड़कों के बाद लड़की का होना अच्छा होता है, दो लड़कियों के बाद लड़का होना अच्छा नहीं।

**तेते पांव पसारिये, जेती लांबी सौर**

धन के अनुसार ही काम करना चाहिए।

**तेरहवीं सदी में शरह की बातें कोई नहीं मानता, (मु०)**

आजकल धार्मिक नियमों को कोई नहीं मानता। (तेरहवीं सदी से यहां मतलब हिजरी सन् की तेरहवीं सदी अर्थात वर्तमान समय से ही है। यह ईस्वी सन ६२२ में चालू हुआ। हिजरी सन की १४-वीं सदी चल रही है।)

**तेरा किया तेरे आगे आवे**

शाप देना।

**तेरा ढका रहे, मेरा बिक जाय, (व्यं०)**

तेरी चीज रक्खी रहे, मेरी बिक जाय।

अपना मतलब देखना।

**तेरा पानी मैं भरूं, मेरे भरे कहार, (स्त्रि०)**

झूठा बड़प्पन दिखाना।

**तेरा पी तोमें बसे, ज्यों पत्थर में आग।**
**देखा चहे दीदार को, चकमक होके लाग।**

स्पष्ट।

दीदार=आमने सामने। दर्शन।

चकमक=आग निकालने का चकमक पत्थर।

**तेरा माल सो मेरा माल, मेरा माल सो हैं हैं**

जो दूसरे की चीज तो हथिया ले, पर अपनी चीज न छूने दे।

**तेरा हाथ और मेरा मुंह, (स्त्रि०)**

कमाओ और मुझे खिलाओ।

स्वार्थी के लिए क०।

**तेरा है सो मेरा था, बराय खुदा टुक देखने दे, (स्त्रि०)**
सास का कहना बहू के प्रति, जिसने उसके लड़के को .(अपने स्वामी को) पूरी तरह काबू में कर रखा है।

**तेरी आन या तेरे गुसइयां की**
एक स्त्री का दूसरी से कहना कि मैं तेरी सौगंध खाऊं या तेरे स्वामी की।

**तेरी आवाज़ मक्के मदीने में, (स्त्रि०)**
शुभ समाचार सुनानेवाले को आशीर्वाद।
जब कोई बहुत या चिल्लाकर बात करे।

**तेरी करनी तेरे आगे, मेरी करनी मेरे आगे**
हममें से हरेक अपने कर्मों का फल भोगेगा।
मैने तुम्हारे साथ जो कुछ किया (अर्थात जो भलाई की) और उसके बदले मे तुमने जो कुछ किया (अर्थात मेरे साथ जो बदी की), उसे ईश्वर जानता है, ऐसा भाव प्रकट करने के लिए क०।.

**तेरी कुदरत के आगे कोई ज़ोर किसी का चले नहीं, चींटी पर हाथी चढ़ बैठे तब वह चींटी मरे नहीं।**
स्पष्ट। ईश्वर की लीला विचित्र है।

**तेरी कुदरत के कुरबान**
हे ईश्वर! तेरी अद्भुत लीला की बलिहारी।

**तेरी गोद मे बैठूं और तेरी ही दाढ़ी नोचूं**
धृष्ट और कृतघ्न आदमी के लिए क०।

**तेरे जौ, तेरी दरांती, चाहे जैसे काट'**
मुझे कुछ मतलब नहीं।
दराती=हँसिया।

**तेरे दया धरम नहिं मन मे, मुखड़ा क्या देखे दरपन मे**
पाखंडी। निर्दयी।

**तेरे बैंगन मेरी छाछ**
अपनी छोड़ी वस्तु के बदले में दूसरे की बहुत चाहना।
चतुराई से काम लेना।

**तेरे मुंह में घी शक्कर**
खुशखबरी सुनानेवाले से क०।
शुभकामना करनेवाले से भी।

**तेरे मेरे सबके में उसकी कोख पेट से**
किसी नपुंसक की स्त्री को गर्भ रह गया, तब मज़ाक में कहा जा रहा है।

२५

**तेल की जलेबी मुआ दूर से दिखाय, (स्त्रि०)**
आशा तो बहुत देना, पर करना कुछ नहीं।

**तेल जल चुका**
(१) जिंदगी खत्म हो चुकी।
(२) पैसा उड़ गया, खर्च के लिए अब कुछ नही।

**तेल जले घी, घी जले तेल**
तेल बहुत पकने से घी जैसा हो जाता है और घी तेल जैसा।
(स्त्रियों की ऐसी धारणा है।)

**तेल डाल कमली का साझा**
किसी के किसी काम में नाम मात्र की सहायता करके अपने को उसका साझीदार समझने लगना। (किसी गडरिये ने एक कंबल तैयार करके उसे चिकना करने के लिए एक दूसरे आदमी से उस पर तेल मलने को कहा। जब उसने तेल से कंबल को चिकना कर दिया, तो बोला कि इसमे मेरा भी साझा है और इसे बेचने से जो दाम आए, उसमें से आधा मुझे देना, क्योंकि इसे चिकना मैंने ही किया है।

**तेल तिलों ही में से निकलेगा, (व्य०)**
कोई अपनी गांठ से नुकसान नहीं देगा। मुनाफ़ा तो लागत में से ही निकलेगा। प्राय. दूकानदार ग्राहक से कहता है।

**तेल देखो, तेल की धार देखो**
प्रत्येक कार्य धीरज के साथ सोच समझकर करना चाहिए।
(कथा है कि किसी राजकुमार के चार मित्र थे—सिपाही, ब्राह्मण, उटेरा और तेली। जब वह पिता के मरने पर गद्दी पर बैठा, तो उन चारो को अपना मंत्री बनाया। पडोस के एक राजा ने जब उसे मूर्ख मंत्रियों से घिरा और भोग-विलास में डूबा पाया, तो उस पर चढ़ाई कर दी। राजकुमार ने तब अपने चारो मंत्रियो को बुलाया और उस बारे में उनकी राय मांगी। जो सिपाही था, उसने तुरंत लड़ने को कहा। ब्राह्मण ने कहा—जैसे भी हो सुलह कर लो। उटेरे ने कहा—जल्दी किस बात की है। देखिए,

ऊंट किस करवट बैठता है। तेली ने तब उसी का समर्थन करते हुए कहा—घबड़ाइए नहीं, अभी तेल देखिए, तेल की धार देखिए, अर्थात उतावली मत कीजिए।

**तेल न मिठाई, चूल्हे धरो कढ़ाई; (स्त्रि०)**
बिना साधन के काम की तैयारी।

**तेलन से क्या धोबन घाट, इसके मूसल उसके लाट (स्त्रि०)**
दोनो एक से विकट, कोई किसी से कम नही।
घाट घट, कम।
मूसल कपड़े कूटने की मोगरी।
लाट कोल्हू के बीच मे लगा मोटा लट्ठ, जिससे तेल पिरता है।

**तेली का काम तमोली करे, चूल्हे में आग उठे**
जिसका काम उसी को शोभा देता है। कोई दूसरा करे, तो उसे हानि उठानी पडती है।

**तेली का तेल गिरा हीना हुआ, बनिये का नोंन गिरा दूना हुआ**
तेल गिरा तो जमीन सोख गई, और नोन गिरा तो उसके साथ मिट्टी मिल गई, जिससे वजन बढ गया।
किसी को अपनी हानि से ही लाभ होता है।

**तेली का तेल जले, मसालची का दिल जले**
एक को खर्च करते देख दूसरा परेशान हो।
पाठा०—तेली का तेल जले, मसालची के पोद फटे।

**तेली का तेल, भगत भैय्या जी की**
खर्च कोई करे, नाम किसी का हो। तेली ने मंदिर में जलाने के लिए तेल दिया, पर नाम पुजारी का हुआ।

**तेली का बैल ले के कुम्हारिन सत्ती होय, (स्त्रि०)**
व्यर्थ की सहानुभूति।

**तेली का बैल हो गया**
रात-दिन काम में लगे रहनेवाले से क०।

**तेली के तीनों मरें और ऊपर से टूटे लाठ**
दोनों बैल और तीसरा हांकनेवाला, तेली के ये तीनों मरें, मुझसे क्या मतलब ?
(किसी से कोई प्रयोजन न होना।)

**तेली के बैल को घर ही कोस पचास**
जिसे घर में ही दिन-रात काम करना पड़े, उसके लिए क०।

**तेली क्या जाने मुश्क की सार**
जिसने जो चीज़ कभी देखी ही नहीं, वह उसकी क़द्र क्या जाने !

**तेली खसम किया और रूखा खाया, (स्त्रि०)**
समर्थ का आश्रय पाकर भी कष्ट में रहना। एक मूर्खता।

**तेली जोड़े पली-पली रहमान उड़ावे कुप्पे**
(१) घर में जब एक आदमी तो कमानेवाला हो, और दूसरा लुटाए, प्राय. तब क०।
(२) कहावत का यह भाव भी है कि मनुष्य यत्नपूर्वक जो काम करता है, ईश्वर उस पर एक बार मे ही पानी फेर देता है।

**तेली रोवे तेल को, मकसूदन रोवे खली को**
सबको अपने-अपने स्वार्थ की पड़ी रहती है।
मकसूदन नाम विशेष। यहा तेली के नौकर से मतलब है।

**तैराक ही डूबते हैं**
कर्मठ व्यक्ति ही असफल होते है। जो कुछ काम ही नही करता, उसके लिए सफलता-असफलता का प्रश्न क्या ?

**तैरेगा सो डूबेगा**
स्पष्ट। दे० ऊ०।

**तोको न भुनाऊं, तोरा भइया और बंधाऊं, (पू०)**
कंजूस के प्रति व्यंग्य में, जब वह किसी काम में खर्च नही करना चाहता।
(किस्सा है कि कोई पुरबिया रुपया भुनाने के लिए बाजार गया, पर उसे भुनाने में बड़ा कष्ट हो रहा था। वह कई दूकानों पर गया, पर रुपया उससे नही छोड़ा गया। मुट्ठी के बंद रहने के कारण उसके हाथ मे जब पसीना आने लगा, तो उसने समझा कि रुपया मुझसे जुदा होने की बात सोचकर रो रहा है। इसी पर उसने कहावत के उपर्युक्त शब्द कहे।)

**तोंको लेवन मैं चाली, तू मोहें घेर लिया।**
**अब तू मोको छोड़ दे, मैं तोहे छोड़ दिया। (स्त्रि०)**
मैं जब तुमसे कोई मतलब नहीं रखना चाहता, तो तुम भी मेरा पिंड छोड़ो।

**तोड़ डाल तागा, तू किस भड़ुवे के मुंह लागा, (स्त्रि०)**
ऐसी स्त्री के पति से कहा जा रहा है, जो विवाह होते ही कुपथगामिनी हो गई है। दुष्ट का साथ छोड़ने के लिए भी। तागा से मतलब विवाह-सूत्र से है।

**तोड़ने आये चारा और खेत पर इजारा**
घास काटने आए और खेत पर कब्ज़ा करने लगे। अनुचित दावा।

**तोते की-सी आंखें फेर लेता है**
बेमुरव्वत आदमी। तोते को चाहे जितनी अच्छी तरह से रक्खो, पर ज्यों ही मौका पाता है; उड़ जाता है।

**तोतेचश्म आदमी है**
दे० ऊ०।

**तोरी बनत-बनत बन जाई, तू हरि से लागा रहु भाई**
तू भगवान का भजन करना रह, धीरे-धीरे तेरा काम बनेगा।
(तुझे मुक्ति मिलेगी।)

**तोरी होयलो मूली, खरपतवा भइलो साग।**
**अगवारे पछवारे बैठ लो, सोहो भइलो सरदार। (पू०)**
मूली तो (उसके लिए) तुरई हो गई, और खर-पतवार हो गया साग, जो आदमी इधर-उधर बैठा करता था, वह अब सरदार बन गया। किसी साधारण मनुष्य ने बडप्पन दिखाया, तब उससे कहा जा रहा है।

**तोला के पेट में घुंघची**
बड़े के पेट में छोटा समाता है।

**तोला भर की आरसी, नानी बोले फ़ारसी**
लंबी-चौड़ी बात करना।

**तोला भर की चार कचौड़ी खुरमा माशे ढाई का,**
**लाला जी ने ब्याह रचाया लहंगा बेच लुगाई का।**
किसी कंजूस के यहां के ब्याह का मजाक। यह पूरी तुकबंदी इस प्रकार है—
तोला भर की चार कचौडी, खुरमा माशे ढाई का,
घर में रोवें बहिन-मानजी, बाहर रोवे नाई का,
धीरे-धीरे जीमो पंचो देखो गजब खुदाई का,
लाला जी ने ब्याह रचाया, लहगा बेच लुगाई का।

**तोले भर की तीन चपाती, कहे जिमाने वालो हाथी**
झूठी शान।

**तोहरा बूते कन भूसा एको न छूटी, (पू०)**
तुझसे कोई काम नही होने का।

**तौबा कर बंदे इस गंदे रोज़गार से, (मु०)**
इस गदे रोजगार को मत करो, भाई।
किसी बुरे काम से रोकने के लिए क०।

**तौबा का दरवाज़ा खुला है, (मु०)**
अपने कसूर की आदमी हमेशा क्षमा माग सकता है।

**तौबा बड़ी सिपर है गुनहगार के लिए, (मु०)**
अपराधी के लिए प्रायश्चित्त बड़ी ढाल है।

**त्रेता के बीजों को पहुंच गये**
त्रेता के युग मे पहुच गए, अर्थात बहुत ईमानदार और सच्चे बन गए।

## थ

**थकल पैराकू फेन चोट, (पू०)**
थका तैराक फेन चाटता है।
(१) मनुष्य की जब सारी सपत्ति नष्ट हो जाती है, तो वह विवश होकर थोडे पर ही सतोष करता है।
(२) परिस्थितियों से बाध्य होकर मनुष्य को ओछे से ओछा काम करना पड़ता है।

**थका ऊंट सराय तकता है**
(१) दिन भर के परिश्रम के बाद मनुष्य आराम से लेटने की जगह चाहता है।

(२) थके मजदूर को अपना घर याद आता है।

**थके बैल, गौन भई भारी, अब क्या लादोगे व्यापारी?**

वृद्धावस्था के लिए कहा है कि शरीर शक्तिहीन हो गया, पापों का बोझ भी बढ़ गया है, अब ठहर कर क्या होगा? चलना चाहिए।

गौन=एक प्रकार का दोहरा थैला, जिसमें सामान भरकर बैलों पर लादते हैं।

**थाली गिरी, झनकार सबने सुनी**

जब कभी कही कोई लड़ाई-झगड़ा या कोई विशेष घटना होती है, तो उसका पता पड़ ही जाता है।

**थाली पर से भूका नहीं उठा जाता**

जब कोई आदमी किसी वजह से नाराज होकर भोजन छोड़े, तब क०।

**थाली फूटी न फूटी, झनकार तो सुनी**

(१) किसी पर झूठा संदेह करना। किसी ने कहा कि अमुक व्यक्ति ने थाली तोड दी, पर जब उसे साबुत थाली लाकर दिखा दी गई, तो उसने कहा—थाली टूटी हो या न टूटी हो, पर गिरने की आवाज तो मैने सुनी।

(२) दो मनुष्यो मे झगडा हो जाए, तब भी। तात्पर्य यह कि उनमे आपस मे बिगाड़ हुआ हो या न हुआ हो, पर यह तो सभी जानते हैं कि उनमे तू-तू मै-मैं हो गई। भाइयो के संबंध मे क०।

**था सोच जो कुछ अव्वल, आखिर वही पेश आया**

जिस बात का पहले से संदेह था, आखिर वही सामने आई।

**थूक कर चाटना**

कहकर बदल जाना।

**थूक दाढ़ी, फिटे मुंह**

किसी को धिक्कारना।

**थूक बिलोना**

बेहूदी बात करना।

**थूकों सत्तू नहीं सनता**

जहां अधिक पैसे की जरूरत है, वहां कम में काम नहीं चल सकता।

**थैलियां भी सिला लीं**

जब कही से कोई झूठमूठ ही रुपए मिलने की आशा लगाए बैठा हो, तब उससे व्यंग्य में क०।

**थैली में रुपया, मुंह में गुड़**

पास में रुपया हो और जबान मीठी हो, तो इन दो ही से मनुष्य सुखी रहता है।

**थोड़ मोल की कामली, करे बड़ों का काम।**
**महमूदी और बाफ्ता, सबके रक्खे मान।**

कबल बड़े काम की चीज है, वह दूसरे कीमती कपड़ों की इज्जत रखता है, उसकी वजह से वे खराब नहीं हो पाते।

महमूदी=एक प्रकार की मलमल, बोलचाल की भाषा मे इसे मामद कहते है।

बाफ़्ता=एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

**थोड़ा आपको, बहुत ग़ैर को**

(१) अपने लिए चाहे थोड़ा करे, पर दूसरो के लिए बहुत करना चाहिए, अर्थात हमेशा दूसरों का ध्यान रक्खे।

(२) जो अपने घरवालों के साथ तो कम, पर बाहर-वालो से अधिक अच्छा व्यवहार करे, उसके प्रति भी कह सकते है।

**थोड़ा करें गाजी मियां, बहुत करें डफाली**

संत-महात्माओं की अपनी शक्ति तो थोड़ी ही होती है, पर उनके शिष्य उसे बहुत बढ़ा दिया करते हैं। (गाजी सालार उर्फ़ गाजी मिया महमूद गजनवी के भतीजे थे। सन १०३३ में बहराइच में इनकी मृत्यु हुई। वहां इनकी समाधि है। ये मुसलमानों के बड़े पीर माने जाते हैं।)

डफाली = डफ या ढोल बजानेवाला।

**थोड़ा खाना और इज्जत से रहना**

फ़िजूलखर्ची नही करनी चाहिए।

**थोड़ा खाना और बनारस में रहना**

प्राय: ऐसे अवसर पर कहते हैं, जब कोई मनुष्य थोड़ी आमदनी से संतुष्ट रहकर घर में ही रहना पसंद करे।

**थोड़ा खाना जवानी की मौत**

थोड़ा खाने से तो आदमी दुबला होकर जल्दी मर

जाता है। यह एक विश्वास है। अगली कहावत में इसके विरुद्ध बात कही गई है।

**थोड़ा खाना, सुखी रहना**

संतोषी का कहना।

**थोड़ा-थोड़ा करके ही बहुत हो जाता है**

स्पष्ट।

**थोड़ा देना, बहुत आरज़ू करना**

मिले थोड़ा, पर बिनती बहुत करनी पड़े।

**थोड़ी आस मदार की, बहुत आस गुलगुलों की**

कुछ मिलने की आशा से ही लोग बडे आदमियो के पास जाते हैं।

(शाहमदार, मुसलमानो के एक बडे पीर हो गए है, जिनकी मृत्यु सन १४३२ मे हुई। मकनपुर मे उनकी दरगाह है। प्रतिवर्ष वहा मेला लगता है और प्रसाद मे गुलगुले बंटते है। उसी से कहावत का मतलब यह कि मदार साहब के दर्शनो के लिए तो लोग कम ही जाते है, पर गुलगुलो के लालच से अधिक।)

**थोड़ी पूंजी खसमों खाय**

थोडी पूजी दूकानदार को नष्ट कर देनी है, क्योंकि माल कम होने से मुनाफा थोडा होता है, और खर्च के कारण अत मे नुकसान होता है।

**थोड़े धन में खल इतराय**

ओछा आदमी थोड़ा धन पाकर घमड करने लगता है।

(क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई।
जिमि थोरे धन खल बौराई। तुलसी।)

**थोड़े पानी में उभरे फिरते हैं**

थोडा पैसा पाकर ही जब कोई दम से फूल उठे, तब क०।

**थोथा चना, बाजे घना**

अकर्मण्य बात बहुत करता है।

**थोथे फटके उड़-उड़ जायं**

पोला या घुना अनाज फटकने से उड़ जाता है।

(१) मूर्ख या झूठा आदमी परीक्षा करने मे ठहरता नही। अथवा

(२) मूर्ख आदमी गमीर नही होता।

**दक्खन गये न बहुरे, रहे चंदेरी छाया, (स्त्रि०)**

ऐसे आदमी के लिए कहते हैं जो घर छोड़कर विदेश में रह जाए।

(औरंगज़ेब की फ़ौज के सबध मे कहा जाता है कि वह १२ वर्ष तक चदेरी का घेरा डाले पडी रही।)

**दख़ल दर माकूलात करना**

उचित काम मे हस्तक्षेप करना।

**दबक शीरे के मटके में**

अनायास कोई सुयोग किसी के हाथ लग जाए, तब कहते हैं—जाओ लाभ उठाओ, मिठाई के मटके मे मुह मारो।

**दबते को सब दबाते हैं**

कमज़ोर पर सब रोब जमाते है।

**दबा पाई गूजरी, 'गहरा बासन लाओ'**

किसी को अपने अधीन जानकर जब अनुचित लाभ उठाया जाए, तब क०।

गजरी ग्वालिन।

**दबा बनिया पूरा तोले**

बनिए को किसी से कोई भय हो, तो वह उसे पूरा तौलता है।

**दबा हाकिम महकूम के ताबे**

रिश्वतखोर हाकिम अपने अधीनस्थ कर्मचारियो मे डरता है।

**दबी बिल्ली चूहों से कान कटावे**

किसी व्यक्ति मे यदि जब किसी प्रकार की कमज़ोरी हो, तो उसे अपने से छोटे आदमियो के सामने भी दबना पडता हे।

**दबे पर चींटी भी चोट करती है**

सताने से कमज़ोर भी बदला लेना है।

**दबे पर सब शेर है**

जो दबता है उस पर सभी ज़बर्दस्त बन जाते है।

**दम का क्या भरोसा है? आया, न आया?**

ज़िंदगी का कोई ठिकाना नहीं, न जाने कब सांस निकल जाए।

**दम का दमामा है**

ज़िंदगी का ही सारा खेल है।

दम=सांस।
दमामा=ढोल।

**दम गनीमत है**
आदमी जब तक ज़िंदा है, तभी तक गनीमत है।

**दमड़ी का पोस्ती**
निकम्मे आदमी के लिए क०।
पोस्ती=(१) अफीमची।
(२) बच्चों के खेलने का गुड्डा, जिसका सिर अफ़ीमची की तरह हिलता रहता है।

**दमड़ी की अरहर, सारी रात खड़हर, (स्त्रि०)**
ज़रा-से काम को बहुत करके दिखाना।

**दमड़ी की गुड़िया, टका डोली का, (स्त्रि०)**
जितने की चीज़ नही, उस पर उतने से अधिक ख़र्च।

**दमड़ी की घोड़ी, छः पसेरी दाना, (स्त्रि०)**
दे० ऊ०।

**दमड़ी की चूं-चूं**
निकम्मी चीज।

**दमड़ी की दाल, आप ही कुटनी, आप ही छिनाल, (स्त्रि०)**
किसी वस्तु का इतना कम होना कि उससे एक आदमी का भी काम न चले।

**दमड़ी की दाल 'बुआ पतली न हो', (स्त्रि०)**
जो जरूरत से ज्यादा कंजूसी करे, उसके लिए क०।

**दमड़ी की निहारी में टाट के टुकड़े, (स्त्रि०)**
थोड़े पैसों में कोई अच्छी चीज़ कैसे आ सकती है?
निहारी=नाश्ता, कलेवा।

**दमड़ी की पाग, अधेली का जूता**
उल्टा-सीधा काम।
पाग के दाम जूते से अधिक होने चाहिए।

**दमड़ी की बुढ़िया, टका सिर मुंड़ाई**
दे०—दमड़ी की घोड़ी...।

**दमड़ी की बुलबुल, टका छुटाई**
किसी काम में मुनाफ़ा कम और खर्च अधिक।
छुटाई पंखों की सफाई।

**दमड़ी की मुर्गी, नौ टका निकयाई, (पू०)**
दे० ऊ०।
निकयाई=पंखों के अलग करने की मजदूरी।

**दमड़ी की लाई बनैनी खाय, 'ये घर रहे कि जाय', (पू०)**
बनियों की कृपणता पर।

**दमड़ी की हांड़ी लेते हैं, तो ठोंक बजा कर लेते हे**
हर चीज़ देखभाल कर लेनी चाहिए।

**दमड़ी की हांड़ी गई, तो कुत्ते की जात पहचानी**
नुकसान हुआ सो हुआ, पर किसी एक आदमी के स्वभाव का पता तो चल गया।

**दमड़ी के पान बनैनी खाय, कहो 'ये घर रहे के जाय'**
दे०—दमड़ी की लाई...।
तथा—टके की लौग...।

**दमड़ी में दम नहीं, ख़ैर मांगो जान की**
निराश अवस्था में कहते हैं।

**दम दरूद न होना**
सांस बंद हो जाना। अंतिम सांस लेना।

**दम नहीं बदन, में नाम जोरावर खां**
बहुत दिखावा करनेवाले के लिए क०।

**दम नाक में आ गया**
बहुत परेशानी की हालत में होना।

**दम बना रहे**
आशीर्वाद। चिरायु होओ।

**दम बना रहे, फूंक निकल जाय**
जब ऊपर से कोई किसी का भला चाहे, पर भीतर से हानि पहुचाने की चेष्टा करे, तब क०।

**दम भर की ख़बर नहीं**
अगले क्षण क्या हो, ठीक नही।

**दम मारने की जगह नहीं**
जब काम से बिल्कुल फ़ुर्सत न मिले, तब क०।

**दम में हज़ार दम**
एक के सहारे बहुतो की गुज़र होती है।

**दम है, जब तक ग़म है**
जब तक ज़िंदगी है, तब तक परेशानियां भी हैं।

**दम हैं तो क्या ग़म है?**
ज़िंदा अगर है, तो फिर चिन्ता किस बात की?

**दमा दम के साथ**

दमा दम के साथ ही जाता है।

दमा=श्वास संबंधी एक रोग।

**दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।**
**तुलसी दया न छांड़िये, जब लग घट में प्रान।**

स्पष्ट।

**दया बिन संत कसाई**

स्पष्ट।

**दर-ब-दर मांगते फिरते है**

किसी की गिरी हुई हालत के लिए क०।

**दर-बदर, खाक बसर फिरा है**

सिर पर धूल डालकर दरवाजे-दरवाजे फिरता है। बहुत शोचनीय स्थिति मे है।

**दरया को कूजे में भरना**

गागर में सागर भरना।

(१) थोड़े मे बहुत कह जाना।

(२) असमव को समव बनाना।

**दरया पै जाना और प्यासे आना**

एक मूर्खतापूर्ण कार्य। जहां आसानी से अपना कार्य सिद्ध हो रहा हो, वहा से खाली हाथ लौटना।

**दरया में रहना और मगरमच्छ से बैर**

जिसके आश्रित रहे, उससे बैर करना ठीक नहीं।

**दरवाजे पर आई बारात, समधिन को लगी हगास, (स्त्रि०)**

काम के समय गायब हो जाना।

(दरवाजे पर बरात आने पर समधिन की सबसे पहले आवश्यकता पड़ती है।)

**दरे तौबा बाज है, (मु०)**

भूल के लिए कभी भी खेद प्रकट किया जा सकता है।

**दरोग को फ़रोग नहीं**

झूठा फलता-फूलता नहीं।

**दरोग गो को हाफ़िज़ा नहीं होता**

झूठे की स्मरणशक्ति कमजोर होती है। वह भूल जाता है कि उसने कब क्या कहा।

**दरोग ब गर्दने-रावी (फ़ा०)**

झूठ का पाप झूठ बोलनेवाले के सिर पड़ता है।

**दर्जी की सुई, कभी ताश में, कभी टाट में**

दर्जी की सुई कभी रेशम की सिलाई करती है तो कभी टाट की।

परिस्थितिया कभी एक-सी नहीं रहती।

**दर्द को वह समझे, जो खुद दर्दमंद हो**

दयावान ही दूसरे के दुख को समझ सकता हे।

**दर्शन के नैना लोभी**

स्पष्ट।

**दर्शन थोड़े नाम बहुत**

जब किसी में ख्याति के अनुसार गुण न पाए जाए, तब क०। कहावत का प्रचलित पाठ—'नाम बड़ा दर्शन थोड़े' है।

('नाम बहुत' पहले कर देने से कहावत को इस स्थान से हटाना पडेगा। इसलिए फैलन ने जैसा लिखा है वैसा ही रहने दिया।)

**दर्शना मोटा, पैंड़ा खोटा, (हिं०)**

दर्शन तो अच्छे, पर मार्ग बुरा।

(जैसा बद्रीनाथ की यात्रा का है।)

**दलिद्दर घर में नोंन पकवान, (स्त्रि०)**

कंजूस के घर में नमक ही पकवान माना जाता है।

(बोलचाल मे दालिद्री का अर्थ कंजूस होता है।)

**दवा और दुआ दोनों**

एक साथ सब काम साधना। दवा भी हो और ईश्वर-प्रार्थना भी हो।

**दवा की दवा, गिज़ा की गिज़ा**

ऐसी वस्तु, जो दवा का भी काम करे और जिससे पेट भी भरे।

गिज़ा=भोजन।

**दवा के लिए ढूंढ़ो तो नहीं मिलती**

बहुत दुर्लभ चीज़।

**दवात कलम**

कोरी दवात कलम है। कागज़ में रोकड़ नही है।

**दस नकटों में नाकवाला नक्कू**

जैसे समाज में रहे, वैसी ही चाल चले। दस नकटों मे अगर कोई नाकवाला पहुच जाए, तो वे 'नक्कू' कहकर उसकी खिल्ली उड़ाएंगे।

(नक्कू के यहां दो अर्थ हैं 'नाकवाला' और 'बदनाम'।)

**दसों उंगलियां, दसों चिराग, (मु० स्त्रि०)**

सब तरह से चतुर और काम करनेवाली स्त्री के लिए क०।

**दस्तरखान की बिल्ली, (मु०)**

ऐसा व्यक्ति जो हर जगह दावत में बिना बुलाए खाने पहुंच जाए। मुफ़्तखोर, खुशामदी।

**दस्तरखान की मक्खी, (मु०)**

मुफ़्तखोर के लिए घृणापूर्वक क०।

**दस्तरखान के बिछाने में सौ ऐब, न बिछाने में एक ऐब, (मु०)**

कोई काम अगर किया जाए, तो उसे अच्छी तरह करना चाहिए; अन्यथा उसे न करना ही अच्छा। काम न करने पर केवल यही बदनामी होगी कि नहीं किया। पर उसे यदि ढंग से न किया गया, तो अधिक बदनामी होने की संभावना रहती है।

**दस्तार, गुफ़्तार अपनी ही काम आती है**

पगड़ी और बात अपनी ही काम आती है। किसी से कुछ कहना है, तो स्वयं ही कहना चाहिए, दूसरे से कहलवाना ठीक नहीं।

**दस्तार, गुफ़्तार, रफ़्तार जुदी-जुदी**

पगड़ी बांधने, बोलने और चलने का ढंग, सबका अलग-अलग होता है।

**दह दर दुनिया, सद दर आख़रत, (मु०)**

इस लोक में दस देने से परलोक में सौ मिलते हैं। मुसलमान फ़कीरों की टेर।

आख़रत=(आख़िरत) क़यामत। परलोक।

**दह'पोइस' खलीता भारी**

एक ओर हटो, बोझ बहुत है।

(सड़क पर भारी बोझ लेकर चलनेवाले मज़दूर 'पोइस' 'पोइस' चिल्लाते जाते हैं।)

**दहो की गवाही चूड़ा (पू०)**

दोनों का जोड़ है। दही और शक्कर के साथ चूड़ा खाया जाता है।

**दही बेचन चलीं, पीठ पिछाड़ कमोहया, (स्त्रि०)**

जब कोई अपना काम करने में शर्माए, तब क०। (दही तो बेचने जा रही है और मटकी पीठ के पीछे छुपा रक्खी है, जिससे कोई देख न ले।)

**दही भात का मूसल**

हर काम में हस्तक्षेप करनेवाला। व्यर्थ बीच में बोलनेवाला। दही भात दोनों ही मुलायम चीजें हैं। उनके लिए मूसल की आवश्यकता नहीं पड़ती। (यह कहावत 'दही भात में मूसल' अधिकतर इस प्रकार ही प्रचलित है। दाल-भात में मूसल या मूसलचंद भी क०।)

**दांड़ा बाला, जाड़ा हाला; (ग्रा०)**

लक्कड़ जलाने से जाड़ा भाग जाता है। (प्रयास करने से कार्य सिद्ध होता है।)

**दांत काटी रोटी है**

गहरी दोस्ती के लिए क०।

**दांत कुरेदने को तिनका नहीं बचा**

अग्नि में सब स्वाहा हो गया। अग्निकांड की भीषणता को प्रकट करने के लिए क०।

**दांत गिरे और खुर घिसे, पीठ न बोझा लेय।**
**ऐसे बूढ़े बैल को, कौन बांध भुस देय।**

(१) बहुत बूढ़े और कमज़ोर बैल के लिए कहते हैं; उससे कोई काम नहीं लिया जा सकता।

(२) निकम्मे आदमी के लिए भी व्यंग्य में क०।

**दांत पर मैल नहीं**

बहुत ग़रीबी की हालत में होना।

**दाई के सिर पान फूला (मु० स्त्रि०)**

पुत्र उत्पन्न होने की खुशी में दाई से क०। (बच्चे आंख-मिचौनी के खेल में इस वाक्य का करते प्रयोग हैं। वहीं से लिया गया है। पान फूल एक गहना भी होता है।)

**दाई चंबेली के मिरजा मोगरा**

जब कोई तुच्छ आदमी अपना झूठा बड़प्पन दिखाए, तब व्यंग्य में क०।

(चमेली और मोगरा फूलों के नाम हैं। वे मनुष्यों के नाम भी होते हैं।)

**दाई जाने अपनी हाई, (स्त्रि०)**

दाई अपने जैसी ही स्थिति सबकी समझती है।

जब कोई दूसरे के कष्ट को कम करके बताए, तब क०।
(बच्चा जनाते समय दाई प्रसूता की पीड़ा की ओर ध्यान नही देती और उसे धैर्य बंधाने के लिए यही कहा करती है कि 'अरे व्यर्थ चिल्लाती हो, क्या बात है।' कहावत में उसी का जवाब है।)

**दाई दाई ऊंटनी, सवा घड़ी मुतनी**
बच्चों की तुकबंदी ।

**दाई री दाई! तेरे सात हों भाई**
बच्चों की तुकबंदी।

**दाई से पेट छिपाना, (स्त्रि०)**
किसी मनुष्य से ऐसी बात छिपाना, जो पहले से ही भेद जानता है।

**दाई से पेट नहीं छिपता**
जिस आदमी को रोज जो काम करना पडता है, उससे उस सम्बन्ध की कोई बात छिपती नही।

**दाई हो मोठी, दादा हो मीठा, तो स्वर्ग कौन जाये?**
यह लूं या वह लूं। ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर क०।

**दाग लगाये लंगोटिया यार**
क्योंकि वह तुम्हारा कच्चा चिट्ठा जानता है। तुम अगर उसे कोई नुकसान पहुचाओगे, तो वह तुम्हारा भेद खोल देगा।

**दागे के सांड तो दाग ले लोहार, (पं०)**
सांड को दगवाना है, तो लोहार ही दाग सकता है। जिसका जो काम है, उसे वही करता है।
दागना लालगरम लोहे से जानवर की पीठ पर निशान बनाना।

**दाता की नाव पहाड़ चढ़े**
दानशील के सभी काम सफल होते है।

**दाता के घर लच्छमी, ठाड़ी रहत हजूर।**
**जैसे गारा राज को, भर-भर देत मजूर।**
दानशील जितना दान करता है, ईश्वर उसे उतना ही देता है।
गारा=चूने और पानी का गाढ़ा मिश्रण, जो मकान बनाने के काम आता है।
राज=कारीगर।

**दाता के तीन गुन, दे, दिलावे, छीन ले, (हिं०)**
ईश्वर के लिए कहा गया है कि वही देता है, वही दिलाता है। और वही छीन भी लेता है। राजा या मालिक के लिए भी कह सकते है।

**दाता को राम छप्पर फाड़ के देता है**
ईश्वर दाता को कहीं-न-कहीं से देता है।

**दाता दाता मर गये (और) रह गये मक्खीचूस।**
**देन लेन को कुच्छ नहो लड़ने को मौजूद।**
किसी याचक का कहना, जिसे कुछ मिला नहीं।

**दाता दातार, सुथनी उतार, (स्त्रि०)**
(१) कोई स्त्री अपने पति की दानशीलता से ऊबी हुई है और खीझकर कहती है कि वह हजरत इतने उदार है कि मेरा पैजामा भी उतार कर दे सकते है। (२) कहावत का यह अर्थ भी हो सकता हे कि दाता तो वही है, जो अपनी बीवी की सुथनी तक उतार कर दे दे।

**दाता दे कंजूस झुर-झुर जाये**
दाता को देते देख कंजूस दुखी होता है।

**दाता दे भंडारी का पेट फटे**
जब मालिक तो देना चाहे, पर जिसके हाथ में कुंजी है, वह देने मे आनाकानी करे, तब क०। मराठी मे भी है–खरचणाराचे खरचते, कांठा वाळ्याचे पोट दुखते।

**दाता दे, भंडारी पेट पीटे**
दे० ऊ०।

**दाता देवे और शरमावे, बादल बरसे और गरमावे**
दाता देकर शर्माता है कि मैंने कम दिया, इसी तरह बादल बरसकर शर्माता है, अर्थात और अधिक बरसना चाहता है। वर्षा मे वायुमंडल का गरम होना और ज्यादा वर्षा का सूचक है।

**दाता पुन्न करे, कजूस झुरझुर मरे**
दे०—दाता दे कंजूस...।

**दाता सदा दलिद्री**
क्योंकि वह अपने पास कुछ नहीं रखता।

**दादा कहने से बनिया गुड़ देता है**
(१) हर आदमी खुशामद-पसंद है। अथवा

(२) खुशामद बड़ी चीज़ है।

**दादा जान पराये बरदे आज़ाद करते थे**

अर्थात हम ऐसे आदमी नहीं, जो अपनी गांठ से कुछ खर्च करेंगे। हम तो मुफ़्त की वाहवाही लूटनेवाले आदमी हैं।

(पराये बरदे आज़ाद करने का अर्थ होता है, दूसरों का खर्च कराकर स्वयं नेकनामी लूटना।)

**दादा पड़दादा के राज की बातें करता है**

लंबी-चौड़ी हांकनेवाले के लिए क०।

**दादा मरिहैं तो भोज करिहैं, (पू०)**

किसी काम को अनिश्चित काल के लिए टालना। अथवा उसके लिए कोई ऐसी शर्त लगाना, जिससे वह पूरा हो ही न सके।

**दादा मरेंगे, जब बैल बटेंगे**

दे० ऊ०।

**दादा मरेंगे, जब मीरास बटेगी**

दे०—दादा मरिहैं...।

मीरास=संपत्ति।

**दादा मरेंगे तो पोता राज करेंगे, (स्त्रि०)**

स्पष्ट।

(ऊपर की चारों कहावतों का लगभग एक-सा भाव है।)

**दादू दुनियां बावरी, फिर-फिर मांगे दान।**
**लिखनहारा लिख गया, मेटनहारा कान।**

दादू कहते हैं कि ईश्वर से बार-बार कोई प्रार्थना करना व्यर्थ है। भाग्य में जो लिखा है, वही होगा।

**दादे राज न खाय पान, दांत दिखावत गये प्रान, (पू०)**

साधारण आदमी दिखावा करे, तब क०।

**दान वित्त समान, (हिं०)**

सामर्थ्य के अनुसार दान देना चाहिए।

**दाना खा मोठ का, पानी पी सोंठ का**

मोठ की दाल वायुकारक होती है, इसलिए उस पर सोंठ का पानी पीना चाहिए।

सोंठ वायुनाशक मानी जाती है।

**दाना खाय न पानी पीवे, वह आदमी कैसे जीवे ?**

आदमी से अगर काम लेना है, तो उसे खाने को भी मिलना चाहिए।

**दाना जल्दबाज़ी नहीं करते**

सोच-विचार कर काम करे।

**दाना छितराना तहां खाना जरूर है, (पू०)**

जहां अन्नजल है, वहीं आदमी को जाना पड़ता है।

**दाना दुश्मन नादान दोस्त से बेहतर**

बुद्धिमान शत्रु मूर्ख मित्र से अच्छा।

**दाना न घास, खरहरा छः-छः बार**

(१) आवश्यक वस्तु न देकर व्यर्थ की चीज़ देने पर क०।

(२) झूठी सेवा-सुश्रूषा करने पर भी क०।

**दाना न घास, घोड़े तेरी आस**

किसी चीज़ के रख-रखाव में कुछ खर्च न करके यह आशा करे कि वह वक्त पर काम आएगी, तब क०।

**दाना न घास, पानी छः-छः बार**

दे०—दाना न घास खरहरा...।

**दाना न घास, हिन-हिन करे**

घोड़े को अगर दाना और घास न दिया जाए तो वह हिनहिनाएगा। भूखा आदमी शोर मचाता है।

**दानी की भाखा खाली न जाय**

सज्जन पुरुष की बात खाली नहीं जाती।

**दाने को टापे, सवारी को पादे**

खाने को तैयार, पर काम से मुंह चुराना।

**दाने-दाने को मोहताज है**

बहुत गिरी हालत में है।

**दाने-दाने पर मुहर है**

बिना भाग्य के एक दाना भी नहीं मिलता।

**दाने-पानी के इख्तियार है**

भाग्यवादी की उक्ति।

**दाने-पानी के हाथ है**

दे० ऊ०।

**दाम आवे काम**

पैसा वक्त पर काम आता है।

**दाम करे सब काम**
पैसे से ही सब काम होता है।
**दाम दीजे, काम लीजे**
पैसा दो और काम कराओ।
**दामों ढेरी या हाड़ों ढेरी**
या तो पैसा इकट्ठा करो या हड्डियों का ढेर बनो। यानी बिना पैसे के बेमौत मरो।
**दामों रूठा, बातां से नही मानता**
जिसे अपना पैसा लेना है, वह खाली बातों से नही मानता। उसे तो पैसा चाहिए।
**दारू ये—ग़जब खामोशी, (फ़ा०)**
क्रोध की सबसे अच्छी दवा मौन है। अर्थात चुप रहने से क्रोध शान्त हो जाता है।
**दाल-भात, खिचड़ी**
किसी चीज़ का गड्डमगड्ड।
**दाल मे काला है**
कुछ गड़बड़ है।
**दावत नहीं, अदावत है**
दावत नही, मुसीबत है।
(खिलाने-पिलाने मे खर्च होता है, इसी से क०।)
**दासी करम कहार से नीचे, (हिं०)**
नौकरानी का पेशा सबसे बुरा।
**दाहना धोवे बायें को, और बायां धोवे दायें कं.**
परस्पर सहयोग से ही काम चलता है।
**दिन अच्छे होते हैं, तो कंकड़ जवाहर हो जाते है**
समय अच्छा आने पर सब काम बनते है।
**दिन ईद और रात शबेबरात, (मु०)**
हमेशा मौज-मजे में रहनेवाला।
**दिन को ऊनी-ऊनी, रात को चरखा पूनी, (स्त्रि०)**
दिन में अलसाती है और रात में चरखा-पूनी लेकर बैठती है।
(समय पर काम न करके बेवक्त करे, तब क०। बंगला में है—दिन गेल हेसे खेले रात होले बउ कापास डले। यानी दिन तो हँस-खेलकर बीत जाता है, रात को वह रूई सहलाती है यानी मजे ही मजे हैं।)

**दिन को शर्म, रात को बग़ल गर्म**
जब कोई स्त्री दिन में अपने पति या अपने किसी प्रेमी से बहुत शर्म करे, तब क०।
**दिन खसा, मजबूर हँसा**
इसलिए कि काम से छुट्टी मिलेगी।
**दिन जब बुरे आते हैं, तो सोने पे हाथ डालो मट्टी हो जाता है**
स्पष्ट।
**दिन जब भले आते हैं तो मट्टी में हाथ डालो सोना होता है**
स्पष्ट।
**दिन जाते देर नही लगती**
स्पष्ट।
**दिन दस आदर पाय के, करनो आप बखान।**
**जौ लग काग सराध पख, तौ लग तौ सन्मान।**
थोड़े दिनों की प्रतिष्ठा मिलने पर जब कोई उसी पर अभिमान करने लगे, तब क०।
**दिन दीवाली हो गये**
बहुत आनंद उत्सव मनाया जाना।
**दिन दूनी रात चौगुनी**
तेजी से वृद्धि के लिए क०। आशीर्वाद में क०। दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती हो।
**दिन नीके बीते जाते हैं, फेर नहीं वह आते हैं**
अच्छा समय फिर नही आता।
**दिन भर चले अढ़ाई कोस**
आलसी आदमी।
**दिन भले आयेंगे तो घर पूछते चले आयेंगे**
उन्हें बुलाना नही पड़ता।
**दिन में सोवे, रोज़ी खोवे, (लो० वि०)**
दिन में सोना अच्छा नहीं।
**दिमका के खाइल पेंड़, सोच के मारल देह कवनों काम के न रहे**
दीमक का खाया पेड़ और चिंता का मारा शरीर किसी काम का नही रहता।
**दिया तो चांद था, न दिया तो मुंह मांद था**
किसी की इच्छा पूरी कर दो, तो प्रसन्न हो जाता है। न करो तो नाराज रहता है।

**दिया दान मांगे मुसलमान,** (हिं०)
दिया हुआ दान मुसलमान ही वापस लेते है। (मुसलमानों में यह प्रथा है कि लड़की के मरने पर दहेज में दिए धन को फिर वापस मांग लेते हैं। यह स्त्री के फ़ायदे के लिए है, पर इसका उल्टा अर्थ लगाया गया।)

**दिया दूर से, लागी साथ खाने,** (स्त्रि०)
मांगने पर किसी को कोई चीज़ दे दो, तो वह धृष्ट बन जाता है। फिर मांगने लगता है।

**दिया न बाती, मुंडो फिरे इतराती,** (स्त्रि०)
कोरा घमंड।

**दिया फ़ातिहा को, लगे लुटाने,** (मु०)
किसी चीज़ का दुरुपयोग। फ़ातिहा वह चढ़ावा कहलाता है, जो मरे हुए लोगों के नाम पर दिया जाता है।

**दिया वस्त अनूप है, दिया कहे सब कोय।**
**धरा वस्त ना पाइये, जो पाये दिया न होय।**
स्पष्ट।
दिया के यहां दो अर्थ है। (१) दी हुई वस्तु, अर्थात दान; तथा (२) दीपक। पाये पास। इस दोहे का शुद्ध रूप इस प्रकार है—
दिया वस्तु अनूप है, दिया करो सब कोय।
धरी वस्तु ना पाइये, जो कर दिया न होय।

**दिया लिया ही आड़ो आता है**
अच्छे कर्म ही अंत समय काम आते है।

**दिया हाथ, खाने लगा साथ**
किसी को थोड़ा सहारा देने पर जब वह गले पड़ जाए, तब क०।

**दिया है तो देख ले**
(१) दान दिया है तो फल मिलेगा।
(२) हाथ में दीपक हो, तो उससे सब देखा जा सकता है।

**दिये की रोशनी महशर तक,** (स्त्रि०)
यहां दिये के दो अर्थ है—
(१) दीपक और (२) दान। दीपक का प्रकाश जग में फैलता है, पर दान का प्रकाश स्वर्ग तक।

**दिये तले अंधेरा**
दे०—चिराग़ तले...।

**दिल का दिल आइना है**
एक के हृदय की बात दूसरे से छुपी नहीं रहती।

**दिल का मालिक ख़ुदा है**
वह जिससे भी जैसा काम करवा ले।

**दिल की थी मैं सादो, जिसका पाती उसका खाती**
किसी भोली स्त्री का कहना कि जातपांत का कोई भेद मैने नहीं किया, जिसका मिल जाता उसी का खा लेती।

**दिल को दिल से राह है**
एक हृदय मे दूसरे के लिए हमेशा रास्ता रहता है। इसका शुद्ध रूप 'दिल को दिल से राहत है'। राहत आराम।

**दिल को हो करार तो सब सूझें त्यौहार**
मन निश्चिन्त होने पर ही त्योहार अच्छे लगते हैं।

**दिल में आई को रखे सो भड़वा**
मन में आई बात को छिपाना न चाहिए।

**दिल में नहीं डर, तो सबकी पगड़ी अपने सिर**
सच्चे और ईमानदार आदमी की सब इज्ज़त करते है।

**दिल लगा गधी से तो परी क्या चीज़ है ?**
प्रेम में रूप-कुरूप नहीं दिखाई देता।

**दिल लगा मेढकी से तो पद्मिनी क्या चीज़ है ?**
दे० ऊ०।

**दिल सोज़, खाना तराश**
दिल की आग, घर का चाकू।
बुरा लड़का या बुरी पत्नी।

**दिलेरी मर्दों का गहना है**
वीरता से ही मनुष्य की शोभा है।

**दिल्ली की कमाई, दिल्ली ही में गंवाई**
नौकरी में कुछ बचा न पाना।

**दिल्ली की बेटी, मथुरा की गाय; करम फूटे तो बाहर जाय**
यदि दिल्ली जैसे बड़े शहर की लड़की या मथुरा जैसे पुनीत स्थान की गाय किसी दूसरी जगह जाए,

तो यह तो उसके लिए एक दुर्भाग्य की ही बात है। प्रचलित रूप—गोकुल की बेटी।

**दिल्ली के बिलवाली, मुंह चिकना पेट खाली**

शहर के छैल-चिकनियो के लिए। खाने को चाहे न हो, पर ऊपर साफ़-शौकीन बने रहते है।

**दिल्ली गदर पहले चमन बनी हुई थी**

मुग़लों के ज़माने की याद में किसी का कहना।

**दिल्ली दूर है**

अभी रास्ता बहुत तै करना है।

**दिल्ली से मैं आऊं, खबर कहे मेरा भाई**

(१) जब कोई आदमी किसी जानी हुई बात को स्वयं न कहकर किसी दूसरे से पूछने के लिए कहे, जिसे उसका कोई ज्ञान नही, तब क०। (२) जब जानी हुई बात को कोई दूसरा सुनाने आए, तब भी कह सकते है।

**दिल्ली से हींग आई, तब बड़े पक्के**

दिल्ली से हीग आने पर बडे तैयार हुए।

(१) व्यर्थ का आडबर।

(२) किसी काम मे आवश्यकता मे अधिक विलब लगना।

**दिवाल रहेगी तो लेब बहुतेरे चढ़ रहेगे, (स्त्रि०)**

जान बचेगी तो शरीर पर मास भी चढ जाएगा। लेब =लेप, पलस्तर।

**दिवालिये की साख पताल मे**

दिवालिए की कोई साख नही होती।

**दीदारबाजी और मौला राजी**

खूबसूरत औरतो से नज़रबाजी करने मे ईश्वर नाराज़ नही होता, यह शोहदो का कहना है।

**दीन दुनिया की दम-बदम कीजे, किसकी शादी वो किसका ग़म कीजे**

अपने लोक-परलोक को बनाना चाहिए, दूसरो के झगड़े में कोई कहा तक पड़ सकता है?

**दीन व दुनिया में उसका होय बुरा, जो किसी का कोई बुरा चीते**

जो दूसरों का बुरा चाहता है, उसका लोक-परलोक दोनों जगह बुरा होता है।

**दीन से दुनिया रखनी मुश्किल है**

(१) धर्म-पालन करके दुनिया मे रहना मुश्किल है।

(२) ईश्वर को प्रसन्न किया जा सकता है, पर दुनिया को प्रसन्न रखना कठिन है।

**दीन से दुनिया है**

धर्म के सहारे ही संसार टिका है।

**दीवाना बकारे खुद हुशियार**

(१) पागल, पर अपने काम मे होशियार।

(२) पागल भी अपने काम मे होशियार होता है।

**दीवाना है व लेकिन बात कहता है ठिकाने की**

दिमाग़ ठीक नही, लेकिन बात पते की कहता है।

**दीवानी आदमी को दीवाना कर देती है**

दीवानी के मुकदमे आदमी को पागल बना देते है। वे वर्षों चलते है।

**दीवाने को बात बताई, उसने ले छप्पर चढ़ाई**

नासमझ से कोई भेद की बात नही कहना चाहिए।

**दीवाने से आंख नहीं मिलाइये**

ऊटपटाग आदमी से बात न करना ही ठीक है।

**दीवानों के क्या सिर सींग होते हैं**

जब कोई बेसिर-पैर की बात कहे।

**दीवार के भी कान होते हैं**

गुप्त बात को किसी से कहते समय बहुत सतर्क रहना चाहिए, ऐसा न हो कोई दूसरा सुन ले।

**दीवार खाई आलों ने, घर खाया सालों ने**

आलों से दीवार कमज़ोर होती है। और सालों से घर नष्ट होता है, क्योंकि बहिन की वजह मे वे मनमाना खाते-पीते है।

**दीवाली की कुल्हिया**

देखने मे अच्छी, पर किसी काम की नही। (दीपावली मे रंग-बिरंगे कुल्हड और मिट्टी के अन्य बर्तन बनाए जाते है। वे देखने मे सुन्दर होते हैं, पर बाद मे किसी उपयोग मे नही आते।)

**दीवाली की रात को बूटी बूटी पुकारती है, (लो० वि०)**

दीवाली की रात में लोग जड़ी-बूटिया खोदकर

लाते हैं। विश्वास किया जाता है कि इस दिन खोद कर लाई गई जड़ी-बूटी अधिक गुण दिखाती है। उसी से आशय है।

**दीवाली के दिये चाटकर जायेंगे**

मुफ़्तखोरे के लिए क०।

**दीवाली जीत, साल भर जीत, (लो० वि०)**

स्पष्ट। दीवाली में जुए मे जीतना शुभ मानते हैं।

**दीवाली बरस में एक दिन**

शुभ दिन या उत्सव का दिन रोज-रोज नही आता।

**दुआ और दवा, नित करनी चाहिए**

बीमारी की हालत मे ईश्वर से नित्य प्रार्थना भी करनी चाहिए और दवा भी खानी चाहिए।

**दुआर धनी के पड़ रहे, धका धनी का खाय**

धनी के पास रहने और उसकी खुशामद करते रहने से कुछ-न-कुछ लाभ होता ही है। पूरा दोहा इस प्रकार है—

द्वार धनी के पड रहै, धका धनी के खाय।
कबहू धनी नेवाजही, जो दर छाडि न जाय।

यह दूसरी पक्ति इस प्रकार भी सुनने मे आती है—
एक दिन ऐसा होयगा आप धनी ह्वै जाए।

**दुखते चोट, कनौड़े भेंट**

चोट लगी, और काने से भेट। जिस आदमी से बचना चाहते हो, उसी का मिल जाना। काने का रास्ते मे मिलना अपशकुन मानते है।

**दुखते दांत को उखाड़ना ही चाहिए**

जिससे निरंतर कष्ट मिले, उसे अलग ही कर देना चाहिए।

**दुख भरें बी फ़ाख़ता, कौवे मेवे खायें**

कोई तो मेहनत करे, और कोई उसका फल भोगे। फाख्ता=एक चिड़िया।

**दुख में सुख की क़दर होती है**

स्पष्ट।

**दुख में हर को सब भजे, सुख में भजे न कोय।**
**जो सुख में हर को भजे, तो दुख काहे को होय।**

स्पष्ट।

**दुख सुख निस दिन संग है, मेट सके ना कोय।**
**जैसे छाया देह की, न्यारी नेक न होय।**

जीवन में सुख-दुख हमेशा लगे रहते हैं। उन्हें अलग नहीं किया जा सकता।
नेक=जरा भी।

**दुख सुख बहिन भाई हैं**

दुख-सुख का जोड़ा है।

**दुख सुख सबके साथ लगा हुआ है**

दुनिया में सभी सुख-दुख भोगते हैं।

**दुखिया दुख रोवे, सुखिया जेब टोवे, (स्त्रि०)**

यह देखने के लिए कि वह अपना क्या मतलब गांठ सकता है। (फैलन की टिप्पणी है कि यह वकीलों के लिए कही जाती है।)

**दुखिया रोवे, सुखिया सोवे**

स्पष्ट।

**दुधैल गाय की दो लातें भी सही जाती हैं**

जब किसी से कुछ मिलने की आशा होती है, तो उसके नाज-नखरे भी उठाने पडते हैं।

बिन स्वारथ कैसे सहै, कोऊ करवे बैन।
लात खाय पुचकारिये, होय दुधारू धैन। (वृन्द)

**दुनियां खैंये मक्कर से, रोटी खैंये शक्कर से**

दुनिया का चालाकी से लाभ उठाए और अपनी रोटी शक्कर से खाए। मतलब, दुनिया मे सीधे आदमी की गुजर नही।
प्रचलित पाठ—'दुनिया ठगिए मक्कर से' भी है।

**दुनियां चंद रोज़ा है**

दुनिया कुछ दिनों की है।

**दुनियां जाए उम्मेद है**

दुनिया नष्ट हो जाए, पर आशा फिर भी रहती है। वह कभी नहीं मिटती।

**दुनियां ज़ाहिरपरस्त है**

दुनिया दिखावट को पसंद करती है।

**दुनियां दुरंगी, मकारा सराय,**
**कहीं खैर-खूबी, कहीं हाय-हाय**

स्पष्ट।
मकारा सराय=धोखेबाज़ों की जगह।

**दुनियां धुंध का पसारा है, (हिं०)**
संसार एक माया है, अथवा असार है।

**दुनियां धोखे की टट्टी है**
संसार मिथ्या है।

**दुनियां बउम्मेद कायम है**
संसार आशा पर टिका है।

**दुनियां बेसबात है**
संसार नश्वर है।
बेसबात=जिसकी स्थिरता न हो। क्षण-स्थायी।

**दुनियां मुर्दा पसन्द है, (मु०)**
दुनिया मरे हुओं की ही प्रशंसा करती है। जीवित को कोई नही पूछता।

**दुनियां में ऐसे रहिए, जैसे साबुन में तार**
अर्थात दुनिया में उससे अलग होकर इस तरह रहना चाहिए, जैसे साबुन मे तार रहता है। साबुन को काटते समय तार उससे बिल्कुल अलग हो जाता है। साबुन से चिपकता नहीं।

**दुनियां में चार पैसे बड़ी चीज है**
स्पष्ट।

**दुनियां में दो ही चीज हैं; बेटा, बेटी**
जब किसी को लड़के की आकांक्षा रही हो, और लड़की पैदा हो, तब उसे सतोष देने के लिए क०।

**दुनियां में साढ़े तीन दल हैं**
चींटी, टीढ़ी और बादल, ये तीन दल कहलाते हैं। आधे में सारी दुनिया है।

**दुनियां है और खुशामद**
खुशामद से ही आप अपना काम बना सकते हैं और रह सकते हैं।

**दुनियां है और मतलब**
मतलब के सिवा दुनिया में कुछ नही। हर आदमी मतलब चाहता है।

**दुबला कुनबा, सराप की आस**
किसी कमजोर घर के लोगों को अगर कोई सताए तो उनके पास सिवा कोसने और गाली देने के और कोई सहारा नहीं होता।

**दुबले कलावंत की कौन सुने ?**
गरीब गायक का गाना कोई नही सुनता। दुर्बल की सब उपेक्षा करते हैं।

**दुबले मारें शाह मदार**
शाह मदार भी दुर्बल को ही सताते है।
(सं०—दैवो दुर्बल घातकः।)
(शाहमदार मुसलमानो के एक प्रसिद्ध सत हो गए हैं, जिनकी मकनपुर में कब्र है।)

**दुविधा में दोनों गये, माया मिली न राम**
संशय की स्थिति मे होना। दो में से कोई काम न कर पाना।

**दुम दबा के भागना**
डरपोक कुत्ते की तरह डर कर भागना।

**दुम में नमदा बांध के चांदनी को सौंप दिया**
किसी का मजाक उड़ाने के लिए क०।
नमदा=जमाए हुए कंबल या कपड़े का टुकड़ा।

**दुरंगी छोड़ दे, एक रंग हो जा।**
**सरासर मोम हो या संग हो जा।**
दुनिया मे रहकर दुहरा व्यवहार ठीक नही, या तो मोम की तरह नरम होकर रहे, या पत्थर की तरह सख्त।

**दुलारी बिटिया, ईंट का लटकन, (पू०)**
बेढंगा शृंगार।
लटकन=कान का एक गहना।

**दुशाले में लपेट कर मारना**
मीठे शब्दों में डांटना।

**दुश्मन की निगाह जूती पर**
अर्थात दुश्मन कभी चेहरे की तरफ नही देखता। (शायद इस डर से कि कही आप उसे जूता उतार कर मार तो नही रहे हैं।)

**दुश्मन के दिल में जगह करने को हुनर चाहिए**
दुश्मन के दिल को जीतने के लिए बड़ी होशियारी चाहिए।

**दुश्मन को कम न समझिए**
शत्रु की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

**दुश्मन के मन का चेता हुआ**
दुश्मन जो चाहते थे, वही हुआ।

**दुश्मन कौन? कि 'मां का पेट'**
सगे भाई के बराबर दुश्मन कोई नहीं। (संपत्ति के लिए भाइयों में झगड़ा होता है, उसी से अभिप्राय है।)

**दुश्मन सोये न सोने दे**
स्पष्ट।

**दुश्मनों में यूं रहिए, जैसे बत्तीस दांतों में ज़बान**
दुश्मनों के बीच संभलकर रहना चाहिए।

**दुष्ट न छांड़े दुष्टता, कैसी हू सिख देय।**

**धोये हू सौ बार के, काजर स्वेत न होय।**
स्पष्ट।

**दूध का जला, छाछ फूंक-फूंक कर पीता है**
एक बार धोखा खाने पर मनुष्य भविष्य के लिए सावधान हो जाता है।

**दूध का दूध, पानी का पानी**
सही न्याय।

**दूध का-सा उबाल है, आया चला गया**
बहुत क्रोधी स्वभाव का होना, पर जल्दी शान्त भी हो जाना।

**दूध की अभी बू आती है**
अर्थात अभी तुम्हारा बचपन दूर नहीं हुआ।

**दूध की-सी मक्खी निकाल कर फेंक दी**
तिरस्कारपूर्वक अलग कर दिया, कोई सम्बन्ध नहीं रखा।

**दूध के दांत भी अभी नहीं टूटे हैं**
अभी तुम लड़के हो।

**दूध पूत किस्मत से**
धन और पुत्र भाग्य से मिलते है।

**दूध भी धोला, छाछ भी धौली**
दो चीजें ऊपर से देखने में भले ही एक-सी हों, पर उनके गुण मे अंतर होता है।

**दूध में की मक्खी किसने चक्खी?**
घृणित की परीक्षा किसने ली? भोजन मे अगर मक्खी गिर जाए तो उस भोजन को ही फिर अलग कर देते हैं।

**दूधों नहाओ, पूतों फलो, (स्त्रि०)**
आशीर्वाद।

**दूर के ढोल सुहावने, (स्त्रि०)**
दूर की सब चीजें अच्छी लगती है अथवा अच्छी मानी जाती हैं।

**दूल्हा के पत्तल न, बजनिए के थार (पू०)**
वास्तव में जिसे मिलना चाहिए, उसे कुछ न मिले और ऊपरवाले उड़ा ले जाएं।

**दूल्हा गयल बरात**
दूल्हा के चलने पर ही (उसके पीछे) बरात चलती है।

**दूल्हा ढाई दिन का बादशाह है**
क्योंकि ब्याह मे सब तरह से उसकी इज्ज़त होती है।

**दूल्हा दुल्हिन पाय, सहबाला लाते खाय**
स्पष्ट।
सहबाला = (शहबाला) वह छोटा लडका, जो दूल्हे के साथ बरात मे जाता है।

**दूल्हा दुल्हिन मिल गये, झूठी पड़ी बरात**
जब दो आदमी अपने-अपने समर्थकों को लेकर आपस मे लड़ रहे हो, पर बाद मे उनमे तो आपस मे समझौता हो जाए और उनके साथियो को मूर्ख बनना पड़े, तब क०।

**दूसरी बात दूसरे कहते है**
अर्थात दूसरे कुछ कहें, मैं हमेशा सच कहता हू।

**दूसरे का सेंदुर देख अपना लिलार फोड़े, (पू०)**
दूसरे की बढ़ती देख ईर्ष्या करना।

**दूसरों का ऐब बड़ी जल्दी देख सकते हैं**
पर अपना ऐब कोई नहीं देखता।

**देखता है सो कहता नहीं, कहता है सो देखता नहीं**
आंख और जीभ पर कहा गया है। आंख देखती है, पर कह नही सकती, जीभ कह सकती है, पर देख नहीं सकती।
(तु०—गिरा अनयन नयन बिन बानी।)

**देख तिरिया के चाले, सिर मुंडा मुंह काले।**

**देख मर्दों की फेरी, मां तेरी कि मेरी।**
(कथा है कि कोई चालाक औरत बीमारी का बहाना करके लेट गई और अपने पति से बोली कि अब तक

तुम अपनी मां को सिर मुड़ाकर गधे पर सवार कराके नहीं लाओगे तब तक मैं अच्छी नहीं हो सकती। पति भी बड़ा होशियार था। वह अपनी ससुराल पहुचा और सास से बोला कि तुम्हारी लड़की बहुत बीमार है। अब अगर तुम सिर मुंड़ाकर और गधे पर सवार होकर उसके सामने पहुंचो तब तो वह अच्छी हो सकती है, अन्यथा नही। मां बेचारी सीधी-सादी थी। लड़की की खातिर उससे जैसा कहा गया वैसा ही उसने किया। जब वह उसके दरवाजे पर आई तो लड़की यह देखकर मन-ही-मन बहुत प्रसन्न हुई कि उसकी चालाकी काम कर गई, और उसने कहावत की प्रारम्भ की पंक्ति अपने पति को सुनाई, किन्तु जब जवाब मे उसके पति ने दूसरी आधी पंक्ति कही, तो वह बहुत निराश हुई और लज्जित होकर रह गई।)

कहावत का कोई विशेष अर्थ नही, सिवा इसके कि स्त्री अगर चालाक होती है तो पुरुष भी इस मामले मे उससे कम नही।

**देखतो आंखों मक्खी नहा निगली जाती।**

देखने-सुनने में बुरा हो, तो जानबूझकर कोई अवांछनीय काम नही किया जाता।

दे०—जीती मक्खी नही . . .।

**देखन के अतीत हैं, बेस्वा से रहे फंस।**
**माथे तिलक लगाये हैं, माला गल में दस।**

स्पष्ट।

अतीत=संन्यासी; यति; साधु।

**देखना सो पेखना, (स्त्रि०)**

दोनों एक ही बात हैं।

**देखने और सुनने में बड़ा फ़र्क है**

सुनी हुई बात झूठ हो सकती है, पर देखी हुई नही।

**देखन को बुलबुल निगलने को डुमरिया बड़, (पू०)**

देखने में दुबला-पतला पर काम में मजबूत।

डुमरिया बड़=जंगली बटवृक्ष।

**देखने में न, सो चखने में क्या?**

**जो वस्तु देखने में अच्छी नहीं, वह चखने में क्या अच्छी हो सकती है?**

**देख पड़ोसन जल मरी**

ईर्ष्यालु के लिए क०।

**देख पराई चूपड़ी गिर पड़ बेईमान।**
**एक घड़ी की बेहियाई दिन भर का आराम।**

मुफ्त का माल खाने के लिए मिले तो छोड़ना नहीं चाहिए।

**देख पराई चूपड़ी मत ललचावे जी।**
**मिस्सी कुस्सी खाय के ठंडा पानी पी।**

स्पष्ट।

मिस्सी—चने की रोटी।

**देख-भाल के पांव रखना चाहिए**

स्पष्ट।

**देखादेखी साधे जोग, छीजे काया बाढ़े रोग**

दूसरों का गलत अनुकरण ठीक नहीं।

**देखा न भाला, सदके गई खाला, (स्त्रि०)**

बिना देखे ही किसी की प्रशंसा करने लग जाना।

सदका—न्योछावर।

सदके जाना न्योछावर होना।

**देखा भाला तोपची ओर चपरा सैयद होय**

सब जानते हैं कि वह एक मामूली तोपची है, पर सैयद बना फिरता है।

झूठा बड़प्पन दिखाना।

**देखा मीरदाद तेरा रंबा, गाजरों की रेलपेल, रोटियो का चंबा**

मियां मीरदाद, तुम्हारे हल की करामात हमने देख ली। गाजरे तो बहुत हुई, पर रोटियों का पता नहीं, अर्थात गेहूं हुए ही नही, जिनसे पेट भरता। कहावत का भाव बहुत स्पष्ट नहीं। फैलन ने चंबा का अर्थ 'अभाव' किया है, जो स्पष्ट नहीं है।

**देखा शहर बंगाला, दांत लाल, मुंह काला**

बंगाली पान बहुत खाते हैं, शायद इसीलिए कहा गया है। पर यह कोरी तुकबंदी है, कोई विशेष अर्थ नहीं जान पड़ता।

**देखा सो खाया, न मुंह पांव जोगा, (पू०, स्त्रि०)**

**जो मिला सो खा लिया, मुंह-पांव की ओर नहीं देखा, अर्थात उनके लिए कुछ बचाया नहीं।**

**देखिये ऊंट किस कल बैठता है ?**
देखें , अंत में क्या होता है ?
(कथा है कि किसी कुम्हार और कुंजड़े ने एक ऊंट किराये पर किया। एक ओर कुम्हार ने अपने मिट्टी के बर्तन लादे और दूसरी ओर कुंजड़े ने अपनी शाक-भाजी। रास्ते में ऊंट ने कुंजड़े की शाक-भाजी पर मुह मारना शुरू कर दिया। तब यह देखकर कुम्हार खुश हुआ कि उसका कुछ नुकसान नही हो सकता, क्योकि ऊट बर्तन नही खा सकता। इस पर कुजड़े ने कहा—घबराओ नहीं, देखे कि ऊंट किस करवट बैठता है। जब ठिकाने पर पहुंचे तो ऊंट उसी करवट बैठ गया, जिधर कुम्हार के बर्तन रखे थे। हुआ यह कि वर्तन सब दबकर चकनाचूर हो गए। इससे शिक्षा यह मिलती है कि किसी भी बात का अतिम परिणाम देखे बिना उसके संबंध में अपना फैसला नही देना चाहिए।)

**देखिये कसाई की नजर और खिलाइये सोने का निवाला**
बच्चों के लालन-पालन के संबंध में कहा गया है कि उनका ज्यादा लाड़-प्यार नही करना चाहिए। उन्हें खूब अच्छा खिलाए-पिलाए, और पहिनाए, पर उन पर कड़ी नजर भी रखनी चाहिए।

**देखिये दीदार और मारिये पैजार, (स्त्रि०)**
औरतों को आंख से देख भले ही ले, पर उनसे दूर रहना चाहिए। वेश्याओं के लिए कहा गया है। पैजार=जूता।

**देखी ठोक बजा के दुनिया तालिब जर की**
दुनिया में सभी धन की इच्छा रखते हैं।

**देखी तेरी कालपी, बावन पुरा उजाड़**
कोरा नाम असलियत कुछ नहीं।
(कालपी उत्तर प्रदेश में जमुना किनारे जालौन जिले का एक पुराना नगर है। यहां मुग़ल जमाने के खंडहर बहुत हैं। उसी से कहावत चली।)

**देखी पीर तेरी करामात, (स्त्रि०)**
अर्थात कोरा नाम ही नाम, करतूत कुछ नहीं।

**देखी राम! तेरी करतूत, (स्त्रि०)**
देख लिया कि तुमने क्या किया ?

**देखे बौरहया आवे पांचों पीर, (स्त्रि०)**
देखने में पागल है, पर पांचो पीर सिर आते हैं, अर्थात बड़ी चालाक है। मुसलमानों के पांच प्रसिद्ध पीर हज़रत मुहम्मद, अली, फातिमा, हसन और हुसैन। पर इनके अलावा और भी कई पीर हुए है। उनमें से किसी भी पांच से यहां आशय है।

**देखे को बुड्ढ, काम को आंधी, (स्त्रि०)**
देखने मे कमज़ोर पर काम में फुर्तीली।

**देखे-भाले शेखजी और चिड़ियें सैय्यद होयं**
शेख जी को सब जानते हैं कि वे कैसे है, पर चिड़ियों को पकड़ने के लिए सत बनते है, अर्थात लोगो को अपने जाल मे फसाने के लिए भलमनसाहत का जामा पहिनते हैं।

**देखे राही, बोले सिपाही**
कही लूटमार होने पर राहगीर तो खड़ा-खड़ा तमाशा देखता है, पर बोलता तो सिपाही ही है। अर्थात सामने तो हिम्मतवाला ही आता है।

**देखो मियां के छंदबंद, फाटा जामा तीन बंद, (स्त्रि०)**
कोरे शौक़ीन के लिए क०।
(मियां के जामे मे सिर्फ तीन बद है, होने चाहिए आठ या नौ।)

**देखो रे, अहिरिनियां के ढोठा,**
**छंटलास चावर, परोसलल पीठा (पू०, स्त्रि०)**
इस अहीरनी की ढिठाई तो देखो, चावल तो इसने अलग कर लिये और मांड़ परोसा है। चालाक औरत के लिए।

**देता भले, न लेता**
एहसान करना तो अच्छा, पर किसी का एहसान लेना अच्छा नही।

**देता भूले, ना लेता, (व्य०)**
कर्जदार कर्ज का रुपया देना भूल जाता है, पर लेनेवाला नही भूलता।

**दे दाल में पानी, पैंगा बह चले चौहानी, (पू०)**
डालो दाल में इतना पानी कि चारों तरफ़ धार बह चले। (१) जब खानेवाले अधिक आ गए

हों, और शाक-भाजी कम पड़ रही हो, तब हँसी में।
(२) कंजूस के लिए भी कह सकते हैं।
चौहानी=चौमुहानी।

**दे दिलावे, दे दे करे, सो प्रानी भव सागर तरे, (हिं०)**
स्पष्ट।
दान के संबंध में कहा गया है।

**दे दुआ समधियाने को, नहीं फिरती दो-दो दाने को, (स्त्रि०)**
किसी औरत को समधियाने का मुफ्त का माल मिल गया, इस पर कोई दूसरी औरत मौका पाकर कहती है कि समधियाने की कुशल मनाओ कि जो तुम्हारी माली हालत सुधर गई, नहीं तो अभी भूखों मर जाती।
(औरतें आपसी झगड़ों में प्रायः इस तरह की ताने-बाजी किया करती हैं।)

**दे दे बारूद में आग, किसकी रही और किसकी रह जायगी?**
अर्थात खूब खर्च करो, उड़ाओ खाओ, कंजूसी किसलिए?

**देना और मरना बराबर है**
किसी का देनदार होना बड़े अपमान की बात है।

**देना थोड़ा, दिलासा बहुत**
जो वक्त पर मदद तो कम करे पर बात बहुत, उससे क०।

**देना भला न बाप का, बेटी भली न एक।**
**चलना भला न कोस का, साईं राखे टेक।**
किसी का भी कर्जदार होना अच्छा नही, बेटी एक भी अच्छी नही, और एक कोस भी पैदल चलना पड़े, तो वह भी अच्छा नहीं।

**देना लेना काम डोम-ढाढ़ियों का, मुहब्बत बड़ी चीज है**
किसी का लेकर जो नही देते हैं, उनकी उक्ति में क०।
(डोम और ढाढ़ी राजपूताने की दो छोटी याचक जातियां हैं।)

**देनी पड़ी बुनाई और घटा बतावे सूत**
जब बुनाई देनी पड़ी, तब कहते हैं 'सूत कम हो गया।' देने में जो हीला-हवाला करे, उसके लिए क०।
(कहावत उस समय की है जब लोग चरखे से सूत कात कर जुलाहों को बुनने के लिए दे दिया करते थे। किसी ने बुनने के लिए सूत दिया, पर जब मजदूरी देने का वक्त आया, तो यह बताया कि हमारा सूत घट गया।)

**देने के नाम तो दरवाजे के किवाड़ भी नहीं देते**
किसी कंजूस या ना-देनदार के लिए कहा गया है कि वह तो देने का नाम ही नहीं जानता। और तो और, घर के किवाड़ भी नहीं देता। यहां देने से मतलब लगाने या भेड़ने से है।

**देनेवाले से दिलानेवाले को ज्यादा सवाब है**
परोपकारी की अपेक्षा परोपकार करानेवाले को अधिक पुण्य मिलता है।

**देवी दिन काटें, लोग परचौ मांगें, (हिं०)**
देवी दिन काट रही हैं, और लोग उनकी महिमा देखना चाहते है।
जब कोई स्वयं विपत्ति में हो, और उससे सहायता मांगी जाए तब क०।

**देवी मदार का कौन साथ?**
देवी हिन्दुओं की है और मदार साहब मुसलमानों के पीर हैं। दोनों अनमेल का साथ हो कैसे सकता है?
(कट्टर लोगों का कहना है, जब कि जनता इस तरह के भेदभाव नही मानती।)

**देर आये दुरुस्त आये**
जो काम देर से होता है, वह ठीक होता है।
(फा०—देर आयद दुरुस्त आयद।)

**देवता बासना के भूखे हैं, (हिं०)**
देवता प्रेम और भक्ति चाहते हैं।

**देव न मारे डींग से, कुमति देत चढ़ाय**
ईश्वर किसी को डंडे से नहीं मारता, मनुष्य की कुबुद्धि ही उसे ले डूबती है।
(डींग का अर्थ फैलन ने 'डंडा' किया है, पर खुल्लम-खुल्ला अथवा 'शेखी' भी उसका अर्थ यहां हो सकता है।)

**देवेगा सो पावेगा, बोवेगा सो काटेगा**
स्पष्ट।

**देस चोरी न, परदेस भीख**
ऐसी जगह रहकर, जहां सब लोग जानते हों, चोरी करने की अपेक्षा बाहर जाकर भीख मागना अच्छा, क्योंकि वहां कोई पहिचानेगा नही और उसमे शर्म की कोई बात नही होगी।

**देस चोरी, परदेस भीख**
ऐसे आदमी के लिए कहते हैं, जिसका चोरी या भीख के सिवा गुज़र-बसर का और कोई ज़रिया नही। घर रहकर वह चोरी करके काम चलाता है, क्योकि यह काम चुपचाप किया जा सकता है और बाहर जाकर भीख मागता है, क्योकि वहा वैसा करने मे कोई कठिनाई नही ।

**देस पर चढ़ाव, सिर दुखे न पांव**
घर आने के लिए कितना ही रास्ता तै करना पड़े, पर न सिर दर्द करता है, न पैर। घर की ममता का प्रमाण।

**देसा-देसा चाल, कुला-कुला ब्योहार**
अपने-अपने देश के रीति-रिवाज और अपने-अपने कुल के व्यवहार अलग-अलग होते है।

**देसी गधा, पंजाबी रेंक**
अपनी रहन-सहन या भाषा छोडकर जब कोई दूसरे की रहन-सहन या भाषा बरते, तब क०।

**देसी गधा, पूर्बी चाल**
दे० ऊ०।

**देसी घोड़ी मराठी चाल**
दे० ऊ०।

**देसी मुर्गी, बिलायती बोली**
दे० ऊ०।
(ऊपर की चारो कहावतो का लगभग एक ही आशय है।)

**देह धरे के दंड हैं, (हिं०)**
संसार में आकर नाना प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते है।

**देह में अनेक रोग भरे हैं, (हिं०)**
स्पष्ट।
(सं०—शरीरं व्याधि मंदिरम्।)

**देह में न लत्ता, लूटे के कलकत्ता, (पू०)**
पास में पैसा नही, फिर भी कलकत्ते को जाकर लूटेंगे। दुस्साहस।

**दैव न मारे डेंग से, कुमति देत चढ़ाय**
ईश्वर किसी को डंडे से नही मारता। समय बुरा आने पर आदमी की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और वही उसे ले डूबती है।

**दो आदमियों की गवाही से तो फांसी होती है**
तब फिर साधारण मामलों में तो दो मनुष्यो की गवाही या उनकी सलाह मानी ही जानी चाहिए।

**दो कसाइयों में गाय मुरदार, (मु०)**
दो कसाइयो मे तो गाय अपने-आप ही मर जाती है। फिर वह खाने के काम की नही रहती। मुसलमानो मे ज़िबह किये गए जानवर का मास ही खाते हैं।

**दो खसम की जोरू, चौसर की गोट**
जिसका दाव लगा, उसी ने कब्ज़ा कर लिया।

**दो घर मुसलमानी, तिसमें भी आनाकानी**
मुसलमानों के केवल दो तो घर, और वे भी आपस मे लडते रहते है। सजातीय लोग थोड़े हो और वे भी लड़े, तब क०।

**दो चून के भी बुरे होते हैं**
दो का मुकाबला करना मुश्किल होना है।

**दो जोरू का खसम, चौसर का पासा**
कभी इधर से, कभी उधर से ढकेल दिया जाता है।

**दो दिल राज़ी, तो क्या करेगा काज़ी ? (मु०)**
किसी मामले मे अगर दोनो पक्ष राज़ी है, तो उसमें फिर कोई कुछ नही कर सकता।

**दोनों खोये जोगिया, मुद्रा और आदेस; (हिं०)**
जोगी ने अपना तिलक-छाप भी खोया और मान-सम्मान भी। जब कोई व्यक्ति अपने धर्म व कर्त्तव्य से च्युत होकर बदनाम और अपमानित होता है, तब क०।
आदेस–प्रणाम, नमस्कार।

**दोनों दीन से गये पांड़े, हलवा मिला न मांड़े**
जब कोई आदमी अपने नियमित कर्म को छोड़कर

कोई दूसरा काम करने लगता है, और उसमें सफल नहीं हो पाता, साथ ही अपने पहले काम से भी हाथ धो बैठता है, तब क०।

मांड़े=मैदा की बनी एक प्रकार की बहुत पतली रोटी, जो तवे पर ही सेकी जाती है, आग पर नहीं सिकती।

**दोनों बेर जो घूमे फिरे, तीन काल जो खाय।**
**सदा निरोगी चंग रहे, जो प्रातः उठ नहाय।**

स्पष्ट। स्वास्थ्य संबंधी उपदेश।

**दोनों वक्त मिले नहीं सीते, सूरज की आंख फूट जायगी,** (लो० जि०)

एक अंधविश्वास। संध्या समय सिलाई का काम नही करना चाहिए। उससे सूरज अंधा हो जाता है।

**दोनों हाथों ताली बजती है**

दो आदमियों में जब लड़ाई होती है, तो उसमे किसी एक का अपराध नही होता। दोनो दोषी होते हैं।

**दोनों हाथों पगड़ी संभालनी पड़ती है**

अर्थात उसे कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ रहा है।

**दोनों हाथों संभाले नहीं संभलती**

इज्जत बचाना मुश्किल हो रहा है।
(कहावत मे पगड़ी से मतलब है।)

**दो प्याले पी तो लें, हरामजदगी तो पेट में है**

दो प्याले (शराब के) पीने मे क्या हर्ज है? इस पेट के अंदर तो न जाने कितने ऐब भरे है।

**दो मुल्लों में मुर्गी हराम** (मु०)

दो आदमियों की बहस से जब कोई काम ही आगे न बढ़ सके, तब क०।

(मुसलमानों में जानवर के खाने के लिए जिबह करते वक्त इस तरह उसकी गरदन पर छुरी फेरते हैं कि उसकी श्वास नली, अन्न नली और रक्त की नाड़ी एक साथ कट जाए। अगर इन तीन में से एक भी कटने से रह जाए, तो उस जानवर के मांस को खाना हलाल या धर्मसंगत नहीं माना जाता। यह काम एक ही आदमी करता है। अब यदि दो मुल्ला एक साथ मुर्गी को जिबह करने बैठें, तो यह स्वाभाविक है कि उसको गर्दन एक ही झटके मे नही कटेगी और वह खाने के योग्य नही मानी जाएगी।)

हराम=विधि विरुद्ध; निषिद्ध।

**दो में तीसरा, आंखों में ठीकरा**

दो के बीच मे तीसरे की उपस्थिति खटकती है।

**दो रकाबा घोड़ा बख्शी का दामाद**

बख्शी का दो रकाबा घोड़ा क्या है, उनका दामाद है। मतलब, उसके भी ठाट-बाट निराले हैं। बड़े आदमी की कृपादृष्टि जिस पर हो, उसके लिए क०।

**दो लड़ेंगे तो एक गिरेगा ही**

स्पष्ट।

**दोस्त का दुश्मन दुश्मन, दुश्मन का दुश्मन दोस्त**

स्पष्ट।

**दोस्त मिले खाते, दुश्मन मिले रोते**

एक सहज कामना। आशीर्वाद के रूप में भी क०।

**दोस्तों का हिसाब दिल में**

स्पष्ट।

**दो ही चीज हैं, बेटा या बेटी**

जब कोई लड़का होने की उम्मीद कर रहा हो, और उसके लड़की पैदा हो, तब यह कहते है कि भई क्या किया जाए . . .।

**दोही चीज हैं, हार या जीत**

जब कोई हार जाए, तब उसके मन को तसल्ली देने के लिए क०।

**दौड़कर चलेगा तो गिरेगा**

जल्दबाजी करनेवाला हानि उठाता है।

**दौड़ चले न औंधा गिरे**

दे० ऊ०।

**दौड़ चले न चौपट गिरे**

दे० ऊ०।

**दौलत अंधी होती है**
(१) धनी आदमी गरीबो का ख्याल नही करता।
(२) दौलत यह नही देखती कि वह किसके पास रहे और किसके पास न रहे।

**दौलत का खेल है**
पैसे से चाहे जो कर लो।

**दौलत के पर लग गये**
देखते-देखते गायब हो गई।

**दौलत के पांव लग गये**
दे० ऊ०।

**दौलत खर्च के वास्ते दी गई है**
उसे बद करके रखना ठीक नही।

**दौलतमंद की डेवढ़ी को सब सिजदा करते है**
रुपएवाले की डेवढ़ी पर सब सिर झुकाते है। अर्थात सब उसकी खुशामद करते है।

**धड़ी धड़ी करके लूटा**
अच्छी तरह लूटा, एक पैसा पास नही बचने दिया।

**धड़ी भर का सिर हिला दिया, पैसा भर की जबान न हिलाई गई**
जब कोई जवाब मे 'हा' या 'ना' करने के लिए केवल सिर हिला देता है और मुह से कुछ नही बोलता, तब क०। (कहावत का प्रयोग प्राय: बच्चो के लिए उस समय होता है, जब वे रूठकर बैठ जाते हैं, और केवल सिर हिलाकर 'हा' 'हू' करते हैं।)

**धधायगा सो बुतायगा, (स्त्रि०)**
धधकती आग फौरन बुझ जाती है। जो बहुत जुल्म करता है, उसका विनाश भी जल्दी हो जाता है। अथवा दंभ बहुत दिनो नही ठहरता।

**धन और गेंद खेल की, दोऊ एक सुभाव।**
**कर आवत छिन एक में, छिन में कर से जाय।**
धन और खेल की गेंद इन दोनों का एक स्वभाव है, कभी हाथ में आ जाते हैं, कभी चले जाते हैं। तात्पर्य, पैसा चलती-फिरती चीज है।

**धन का धन गया और मीत की मीत गई**
किसी ने अपने मित्र को पैसा उधार दिया। वह वापस नही मिला। तब वह मनुष्य कहता है।
मीत=मित्रता।

**धनके पंद्रह, मकर के पचीस, चिल्ला जाड़े दिन चालीस**
पद्रह दिन धनु के और पचीस मकर के, ये चालीस दिन खूब कडाके की सर्दी पडती है। इसी को चिल्ला जाड़ा क०। लगभग १५ दिसबर से १० फरवरी सूर्य क्रम से धनु और मकर राशि मे रहता है।

**धन चाहे तो धरम कर, मुक्त चाहे भज राम**
स्पष्ट।

**धन दे जी को राखिए और जी दे राखे लाज, (नी० वा०)**
धन देकर प्राणो की रक्षा करे और प्राण देकर इज्जत बचाना चाहिए।

**धन नाती हुक्का, पोसाक नाती जुल्फ, (पू०)**
धन के नाम केवल हुक्का है और पोशाक के नाम केवल जुल्फे। (बहुत गरीब।)

**धन में धन, तीन आंठी सन**
नही के बराबर।

**धनवंती के कांटा लगा, दौड़े लोग हजार।**
**निर्धन गिरा पहाड से, कोई न आया कार।**
धनवान के सब हितैषी बनते है, निर्धन का कोई नही।

**धन्ना सेठ के नाती बने है**
अपने को बहुत बड़ा समझते है।

**धमले में खाक**
लहगे पर धूल। गाली।

**धमकाय पाया बनिया, धर दी डेढ़ सेरी**
बनिए को सीधा जानकर उससे सेर की जगह डेढ़ सेर तुलवा लिया। किसी की सिधाई से अनुचित लाभ उठाने पर क०।

**धमधूसर काहे मोटा, बंज करे न आवे टोटा**
धमधूसर मोटा क्यों? व्यापार नही करता, इसलिए टोटे का सवाल नही। मतलब, बेफ़िक्र रहता है।
धमधूसर का अर्थ ही मोटा-ताज़ा आदमी है।

**धर चल सिर कोल्हू की लाट, मत् चल साथ कुचाल के बाट**
सिर पर कोल्हू की लाट रखकर भले ही चले, पर बुरे की संगत न करे।

**धर जा, मर जा**
ऐसे आदमी के लिए क०, जो दूसरो की रकम हज़म कर लिया करता है। वह यही चाहता है कि कोई मनुष्य उसके पास धरोहर रख जाए और मर जाए, तो माल उसका हो जाए।

**धरती माता बोझ संभाले**
अनाचरी के लिए क०।

**धरती की मां सांझ, (हिं०)**
संध्या धरती की माता है। दिन के परिश्रम के बाद सबको उसकी गोद मे शांति मिलती है। (यहा धरती का अर्थ धैर्यवान भी हो सकता है।)

**धरम को जड़ सदा हरी, (हिं०)**
धर्म के मार्ग पर चलनेवाला हमेशा फलता-फूलता है।

**धरम रहे तो उस्सर में जुरे**
ईमानदार और सच्चे आदमी की खेती ऊसर मे भी सफल होती है।

**धरम हार धन कोई खाय, (हिं०)**
(१) बेईमानी से कोई भी पैसा कमा सकता है।
(२) बेईमानी से कोई पैसा नही कमा सकता, यह अर्थ भी होता है।

**धाओ, जो बिध लिखा सो पाओ, (हिं०)**
कितनी ही दौड़धूप करो, मगर मिलेगा वही जो भाग्य मे लिखा है। आलसियो की उक्ति।

**धाओ, धाओ, करम लिखा सो पाओ, (स्त्रि०)**
स्पष्ट। दे० ऊ०।

**धान का गांव पुआल से जाना जाता है, (कृ०)**
अगर गाव मे बहुत पुआल नजर आए, तो उससे पता चल जाता है कि यहा धान की खेती होती है।
मनुष्य के ऊपरी व्यवहार और रहन-सहन से उसकी स्थिति जानी जाती है।

**धान, पान, पनियाव ले, नान्ह जात लतियावले; (कृ०)**
धान और पान अच्छी तरह सींचने से और नीच लतियाने से ठीक रहता है।

**धान, पान, पानी, कातिक सवाद जानी; (स्त्रि०)**
धान, पान और पानी का सवाद कार्तिक मे ही मिलता है। कार्तिक मे धान पक जाता है, पान मे भी कुरकुरापन आ जाता है और पानी भी निर्मल बन जाता है।

**धान पान हो रही है**
कुम्हला रही है। सुकुमार स्त्री के लिए क०।

**धान बिचारे भल्ले, जो कूटा, खाया, चल्ले, (पू०)**
धान बहुत अच्छी चीज़ है। कूटा, खाया और अपना रास्ता लिया। व्यंग्य मे क०। वास्तव मे धान कूट कर भात बनाना इतना आसान नही है। कहावत अधूरी है। इसकी कथा है, जिससे कहावत का भाव स्पष्ट होता है।
(किसी जगह दो यात्री ठहरे हुए थे। उनमे से एक के पास सत्तू और दूसरे के पास थोडे धान थे। जब परस्पर खाने की चर्चा चली, तो पहले ने कहा कि मेरे पास तो सत्तू है, उसको चटपट खाकर यात्रा आरंभ कर दूगा। दूसरे ने कहा—तुम्हें बहुत देर लगेगी। मेरे पास धान है, अभी कूटकर और खा कर चल दूगा। सत्तू मन मत्तू जब घोलो तब खाओ, धान बिचारे भल्ले, कूटा खाया चल्ले। पहला आदमी बहुत सीधा था। दूसरे की बातों मे आ गया और धान के साथ अपना सत्तू बदल दिया। तब वह तो सत्तू घोलकर और खा-पीकर चलता बना और पहला बिचारा धान कटता ही रह गया।)

**धान सूखता है, कौवा टरटराता है, (स्त्रि०)**
(१) किसी के चीखने-चिल्लाने से कोई काम नही रुकता।
(२) जहा खाने को होता है, वहा मुफ्तखोर इकट्ठे होते है।

**धावेगा सो पावेगा, (हि०)**
जो मेहनत करेगा उसे मिलेगा।

**धिया, ताको कहू, बहुरिया, तू कान धर**
कोई सास अपनी बहू पर रोब जमाने के लिए लडकी और बहू दोनो को डाट रही है कि 'धी' तुझ से भी कहती हू और बहू तू भी ध्यान से सुन । आगे के लिए सावधान रह।

**धिया पूत के न गाती, बिलैया के गाती, (स्त्रि०)**
लडके और लडकी के लिए तो कपडे नही, बिल्ली के लिए कपडे।
बिल्ली से यहा मतलब रखैल औरत से है।

**धींगा धीगा, बल्लू का राजा**
बहुत अधेर के लिए क०।
(कहा जाता है बल्लू एक जाट राजा था, जिस के राज मे 'जिसकी लाठी उसकी भैस' वाली कहावत चरितार्थ होती थी।)

**धीवर के बस परो, (स्त्रि०)**
बुरे के हाथ पडी हूं। पति के अत्याचार से पीडित किसी स्त्री का कथन।

**धी छोड़ दाम द प्यारा**
(१) लडकी से दामाद प्यारा। उल्टी बात। अथवा (२) यह एक सहज उक्ति भी हो सकती है कि लडकी से दामाद प्यारा होता है। वह लडके का स्थान ले लेता है।

**धी, जंवाई, भानजा, ये तीनो नहि अपना**
क्योकि विवाह के बाद लडकी पराई हो जाती है, दामाद तो पराया लडका है ही और भानजे से कोई विशेष सम्बन्ध नही रहता।

**धी न धियाना, आप ही कमाना, आप ही खाना, (स्त्रि०)**
उसके न लड़की है न दामाद, जो कुछ कमाता है सो खा लेता है।
खाऊ उडाऊ के लिए क०।

**धी न धींकड़, अल्ला मिया का नोकर**
(१) मोटे और आलसी मनुष्य के लिए क०।
(२) अलमस्त, फक्कड के लिए भी कह सकते हैं।

**धी न बेटी, उछल गई समधेरी, (स्त्रि०)**
लडकी है ही नही, फिर भी यह कहना कि लडकी की ननद घर से निकल गई। एक बेसिर-पैर की बात।

**धी पराई, आंख लजाई**
(१) बहू जब कोई गलत काम करे, तब क०, कि पराई लडकी ने मेरी आख नीची करवाई।
(२) विवाह हो जाने पर लडकी लज्जाशील बन जाती है।
(३) विवाह कर देने पर लडकी को ससुरालवालो से दबना पडता है।

**धी बेटी अपने घर भली, (स्त्रि०)**
विवाह के बाद लडकी का अपने (पति के) घर रहना ही अच्छा है।

**धी मारू, पुतोहू ले त्रास**
लडकी को मैं इसलिए पीटती हू कि बहू पर मेरा रोब जम जाए। किसी सास का कथन।
नए आदमी को यह बताना कि हम बहुत ही टेढे स्वभाव के आदमी है।

**धी मुई, जंवाई चोर, (स्त्रि०)**
लडकी मरने पर जंवाई चोर के समान हो जाता है। उसकी फिर कोई कद्र नही रहती।

**धीरज, धर्म, मित्र अरु नार।**
**आपत काल परखिए चार।**
धीरज, धर्म, मित्र और स्त्री इनकी परीक्षा विपत्ति पडने पर होती है।

**धीरा काम रहमानो, शिताब काज शैतानी**
धीमा काम अच्छा और जल्दी का बुरा होता है।

**धीरा सो गंभीरा**
धैर्यवान गंभीर होता है। किसी काम में जल्दबाजी नहीं करता।

**धूंधूं कार मेह बरस रहा है**
खूब जल बरस रहा है।
**धूनी पानी का संजोग है, (हिं०)**
जब दो अपरिचित व्यक्ति, खास कर दो साधु कही मिल जाते है, तब क०।
**धूप पड़त जो दायं चलावे, रास नाज वह तुरत उठावे, (कृ०)**
धूप पड़ने पर जो दायं करता है, उसे अनाज शीघ्र मिल जाता है।
(कटी हुई फसल से दाना प्राप्त करने के लिए उसे बैलो की सहायता से कुचलने की जो क्रिया की जाती है, उसे दाय चलाना या करना कहते है।)
**धूप में बाल सफ़ेद नहीं किये हैं**
उम्र यों ही नही गंवाई है। दुनिया का अनुभव है।
**धूल की रस्सी बटना, (प्रा०)**
असंभव कार्य करने की चेष्टा करना। हवाई-घोड़े दौड़ाना।
**धूलकोट का खरबूजा, जैसे मिस्री का कूजा**
धूलकोट का खरबूजा बहुत मीठा होता है।
(यह धूलकोट दिल्ली के पास तक कछार की भूमि है।)
**धेला सिर मुंड़ाई, टका बटलाई**
सिर मुंडाई का तो अधेला ही देना पडा, पर रुपए भुनाई का बट्टा दो पैसा लग गया।
मुख्य काम में तो कम खर्च हो, पर ऊपरी अधिक खर्च हो जाए, तब क०।
**धोई-धाई भेड़ी पंके लागी, (पू०)**
भेड़ को धो-धाकर साफ किया, पर वह फिर कीचड़ में चली गई। किया-कराया काम फिर चौपट हो गया।
**धोके की टट्टी**
भ्रम में डालनेवाली वस्तु। दिखाऊ वस्तु।
**धोती थी दो पांव, धोने पड़े चार पांव, (स्त्रि०)**
(१) विवाहित जीवन से ऊबी हुई स्त्री का कहना। पहले तो उसे केवल दो ही पैर धोने पड़ते थे, पर अब दो अपने और दो पति के धोने पड़ते हैं।
(२) किसी ऐसी स्त्री का भी कथन हो सकता है, जिसका पति बहुत आलसी है।

**धोती में सब नंगे**
अंदर से सब एक से। सब मे कुछ-न-कुछ दोष हैं।
**धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का**
बेठिकाने का आदमी।
**धोबी का छैला, एक उजला एक मैला**
धोबी के लड़के को अपने ग्राहको के मुफ्त के कपडे पहिनने को मिलते है। इसलिए जैसे मिले, वैसे ही पहिन लिये, उजले और मैले की कोई परवाह नही करता।
**धोबी के घर ब्याह, गधे का छुट्टी भेल, (पू०)**
धोबी के घर ब्याह होने पर गधे को छुट्टी मिल जाती है। वह भी खुशी मनाता है।
**धोबी के ब्याह, गधे के माथे मोर**
धोबी के यहा ब्याह होने पर गधे की भी इज्जत होती है।
**धोबी छोड़ सक्का किया, रही खिजर के घाट, (स्त्रि०)**
धोबी छोड़कर भिश्ती से ब्याह किया, फिर भी पानी से पिंड न छूटा। मुसीबत ज्यो-की-त्यो रही।
(ख्वाजा खिज़र मुसलमानो मे पानी के देवता माने जाते है।)
**धोबी पर धोबी, खेंथड़े में साबुन**
(१) कोई धोबी अगर दूसरे धोबी से अपने कपड़े धुलवाए, तो वह वैसा ही जैसे गुदडी में साबुन लगाना। अथवा
(२) धोबी पर धोबी बदलना, वैसा ही जैसे गुदडी...।
मतलब घड़ी-घड़ी नौकर बदलना ठीक नहीं।
**धोबी पर बस न चला, गधैया के कान मरोड़े**
कमज़ोर पर गुस्सा उतारना।
**धोबी बेटा चांद-सा, सीटी और पटाक**
धोबी का लडका अपने ग्राहकों के धुले-धुलाए कपड़े पहन कर चांद-सा बना रहता है। उसके पास अपनी दो ही चीजें होती हैं। 'सीटी' और 'पटाक'। धोबी कपड़े धोते समय पत्थर पर पटाक

से पछाड़ते हैं, साथ ही सीटी भी बजाते जाते हैं। जो दूसरों के पैसे पर साफ़-शौकीन बने फिरते हैं, उनके लिए क०।

**धोबी रोवे धुलाई को, मियां रोवें कपड़ों को**

धोबी अपनी धुलाई का तकाज़ा करता है और ग्राहक अपने कपडों का। दोनों ही अपनी-अपनी जगह रोते हैं।

(जब दो व्यक्ति परस्पर एक-दूसरे को अपने नुकसान का कारण बताकर रोएं।)

**धौला बाल मौत की निशानी**

बाल सफ़ेद होने पर बुढ़ापा आ जाता है, और बुढ़ापा आया तो समझ लो कि मरने के दिन नज़दीक आ गए।

**नंग धड़ंग**

जिसे न किसी का डर हो, न किसी की लाज हो, और चाहे जिसके आड़े आ जाए।

(१) बिल्कुल—नंगा। (२) बेशर्म।

**नंगा खड़ा उजाड़ में, है कोई कपड़े ले**

जिसके पास कुछ है नहीं, उसकी कोई क्या हानि करेगा?

**नंगा खुदा से बड़ा**

नंगे को किसी बात का भय नहीं होता।

**नंगा नाचे फटे क्या**

जिसके पास कपड़े ही नहीं उसका फटेगा क्या?

**नंगा मादरज़ाद**

बिल्कुल नंगा; जैसा पदा हुआ था, वैसा ही।

**नंगा साठ रुपये कमाये, तीन पैसे खाये**

ऐसे व्यक्ति के लिए क०, जिसके घर-गृहस्थी न हो, और उस वजह से आमदनी की अपेक्षा खर्च बहुत कम हो।

**नंगी क्या नहायेगी और क्या निचोड़ेगी?**

जिसके पास कुछ है ही नहीं, वह क्या अपने पर खर्च करेगा और क्या दूसरों पर।

**नंगी ने घाट रोका, नहावे न नहाने दे**

दूसरों को उसके पास जाने में शर्म लगती है, पर वह निर्लज्ज होकर नहा रही है। बेशर्म से सब घबराते हैं।

**नंगी भली कि छींके पांव**

नंगी अच्छी या छीके से उल्टे पैरों लटकी अच्छी। दो बुरी चीज़ो में से कम बुरी चीज ही पसंद की जा सकती है।

**नंगी भली कि टेटक मचवा, (स्त्रि०)**

नंगी अच्छी या टंटा मचाना।

इसका भाव भी ऊपर की कहावत जैसा ही है।

**नंगी हो के काता सूत, बुड्ढी होकर जाया पूत, (स्त्रि०)**

यदि पहले ही लड़का जनती तो बुढापे के लिए आराम न हो जाता। समय निकल जाने पर काम करना।

**नंगों को भूखों ने लूट लिया**

अनहोनी बात।

**न ईंट डालो, न छींटो भरो**

न किसी से बुरा कहोगे न सुनोगे।

**नई घोसन और उपलों का तकिया**

अटपटा शौक़।

**नई जवानी मरंझा ढीला**

स्पष्ट।

**नई नाइन और बांस की नहरनी**

नहरनी लोहे की होती है बांस की नही। जब कोई नौसिखिया ऊटपटाग ढंग से काम करता है।

**नई नागन टंगे पर फन**

सांप का बच्चा और फन पूंछ पर।

दे० ऊ०।

**नई नौ दाम, पुरानी छः दाम**

नई चीज तो महंगी मिलेगी ही।

**नई फ़ौजदारी और मुर्गी पर नक्कारा**

किसी नये नियम या कायदा-कानून के सम्बन्ध में अपना असंतोष—निरादर प्रकट करने के लिए कोई कह रहा है।

**नई बहू टाट का लंहगा**

दे०—नई नाइन. . ।

**नई बस्ती और अरंडी का फुलेल**

नया और ऊटपटांग शौक़।

**नउवा के घर चोरी भेल, तीन चोंगा बार गेल, (पू०)**

नाई के घर चोरी हुई, तीन चोंगा बाल गए। उस के यहा और रखा क्या था ?

**नउवा देख ले कांखे बार, (भो०)**

नाई को देखकर काख मे बाल हो आए। चीज़ सामने देखकर उसके उपयोग की इच्छा हो आती है।

**नकटा जोवे बुरा हवाल**

सब उसकी तरफ़ उंगली उठाते है। नकटा के यहा दो अर्थ है (१) जिसकी नाक कटी हो, और (२) जो समाज मे बदनाम हो।

**नकटा बूचा सबसे ऊंचा**

व्यंग्य में ही क०।

बूचा=जिसका कान कटा हो।

**नकटी मैया पानी पिला, 'पूता इन्हीं गुनन' (पू०, स्त्रि०)**

नकटी औरत से किसी ने यह कहकर पानी मागा कि नकटी मैया पानी पिला। उसने जवाब दिया—बेटा, क्या तुम्हारी इसी तरह की बोली से ?

**नकटे का खाइये, उकटे का न खाइये, (स्त्रि०)**

बदनाम आदमी के यहां जाकर भले खा ले, पर ओछे के यहा जाकर न खाए। इसलिए कि वह बार-बार खिलाने का एहसान जताएगा।

**नकटे की नाक कटी, सवा गज और बढ़ी**

बेशर्म के लिए क०।

**नकद को छोड़ नफ़े को न दौड़िये**

किसी मुनाफ़े के लोभ से गांठ के नक़द पैसे को नहीं छोड़ना चाहिए।

**नक़द हू हुरमत हू, (अ०)**

नकद दो और साख रखो।

**न कोई आता था घर में, न कोई जाता था।**
**न कोई गोद में लेकर मुझे सुलाता था।**

(कथा है कि कोई मनुष्य अपनी स्त्री को घर पर छोड़ कर विदेश चला गया। उसकी अनुपस्थिति में एक दिन उसके पुत्र ने पूछा—कौन आया था ? स्त्री ने उत्तर दिया—न कोई आया, न कोई गया। पुत्र ने यही समझा कि इसका नाम 'न कोई' है। जब कुछ दिनो बाद वह मनुष्य घर लौटा तो वह लड़के को गोद में लेकर प्यार करने लगा और थपथपाकर सुलाने लगा। लड़के से जब उसने पूछा कि मेरे पीछे तुम्हें इस तरह कौन सुलाता होगा, तो उसने ऊपर की कहावत कही। बाप तो यही समझा कि मेरे लड़के को प्यार करनेवाला कोई नही था। पर लड़के ने तो असली बात कह ही दी थी।)

**नक्कारखाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है ?**

बड़ों के आगे ग़रीब और असहायो की बात कोई नही सुनता।

**नक्कारे बाजे दमामे बाज गये**

बड़े ढोल भी बज गए और छोटे भी। अर्थात दुनिया मे न जाने कितने लोग आए और अपनी तड़क-भड़क दिखाकर चले गए।

**नक़्ल रा चे अक़्ल, (फ़ा०)**

नकल में अक्ल की क्या ज़रूरत ?

**नक़्ले कुफ़् कुफ़् न बाशद, (फ़ा०)**

काफ़िर की नक़ल करने से कोई काफिर नही होता।

**नख से शिख तक**

नीचे से ऊपर तक।

**न खुदा ही मिला, न बिसाले सनम ।**
**न इधर के हुए, न उधर के हुए ।**

किसी निराश फ़कीर का कहना।

विसाले सनम=प्रेमी से भेट।

**न गाढ़ी भर आशनाई, न जौ भर नाता**

मुझे किसी से कोई मतलब नहीं, अथवा मुझे किसी से कोई मतलब नही रखना।

**न गाय के थन, न किसान के भांड़े**

न गाय के थन हैं और न किसान के पास बर्तन। (जब किसी काम का कोई सिलसिला ही न हो, तब क०।)

**न गू में ढेला डालो, न छींटे उड़ें**

न बुरा काम करो, न बुराई हाथ लगे।

**न जीने की शादी, न मरने का ग़म**

किसी ऐसे मनुष्य का कथन, जो दुनिया से उदास है।

**नट विद्या पाई जाय, जट विद्या न पाई जाय**

जाट बड़े चतुर होते है।

(इसकी कथा यो है—एक राजा ने किसी नटनी को वचन दिया कि अगर नट-विद्या मे उसे कोई नही जीत सकेगा, तो मैं उसे अपना राज दे दूगा। उस जगह एक देहाती जाट खडा था। उसने नटनी के लोहे के दस्ताने हाथो मे पहिन लिये और झट बास पर चढ गया। ऊपर जाकर उसने चारो ओर घूमकर पेशाब करना शुरू कर दिया। उसका यह तमाशा देखकर नटनी ने हार मान ली और राजा का राज्य भी बच गया।)

**न तेल तली, न ऊपर पली, (स्त्रि०)**

न नीचे बर्तन मे तेल, न ऊपर पली।

जब किसी को बहुत थोडी चीज दी जाए।

**नदिया, नाव, घाट बहुतेरा, कहें कबीर नाम के फेर।**

चीज एक ही होती है, पर उसके नाम अनेक होते है। ईश्वर के लिए कहा गया है।

**नदी किनारे रूखड़ा, जब तब होय विनास**

खतरे का काम करनेवाला कभी भी हानि उठा सकता है।

**नदी तू घर्राती क्यों, मै पांव ही नहीं रखता**

किसी का ऐसे व्यक्ति से कहना जो बहुत रोब और घमड दिखाता है।

**नदी नाव संयोग**

दो आदमियों का अचानक कही मिल जाना।

**नदी में जाना और प्यासे आना**

साधनो के मौजूद रहते हुए अपने उद्देश्य को पूरा न कर पाना।

**न दौड़ चलेंगे, न ठस लगेगी, (पू०)**

काम धैर्यपूर्वक करना चाहिए।

**ननद का ननदोई, गले लाग रोई, (स्त्रि०)**

जिससे कोई सम्बन्ध ही नहीं, उससे प्रेम दिखाना।

**न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी**

जब कोई आदमी किसी काम को न करना चाहे, और अपने इस इरादे को छिपाने के लिए किसी ऐसी शर्त पर उसे करने को तैयार हो, जिसे पूरा करना लगभग असभव हो।

(कहा जाता है कि किसी जगह राधा नाम की एक वेश्या थी, जो नाचने के लिए बहुत प्रसिद्ध हो गई थी। पर वास्तव मे उसे उतना अच्छा नाचना नही आता था। वह भी इस बात को जानती थी। इसलिए जब कोई उसे नाचने के लिए बुलाता, तो वह यही कहती कि नौ मन तेल के चिराग जलाओ, तब नाचूगी। लोग न नौ मन तेल इकट्ठा कर पाते और न उसका नाच गाना ही हो पाता। कहावत मे कृष्ण की राधा से कोई मतलब नही। वह केवल एक नाम विशेष है।)

**नन्हें होकर रहिये, जैसे नन्हीं दूब**

आदमी को विनम्र बनकर रहना चाहिए।

**नपूती का घर सूना, मूरख का हृदय सूना, दरिद्री का सब कुछ सूना**

स्पष्ट।

**नफ़री में झगड़ा क्या ?**

जो हमे मिलना चाहिए, उसमे झगडा क्या ?

नफरी दैनिक वेतन।

**नमाज़ छुड़ाने गये थे, रोज़े गले पड़े, (मु०)**

दे०—गये थे रोजा छुडाने ।

(कहा जाता है कि एक बार मुसलमानो ने मूसा पैगम्बर से कहा कि खुदा से सिफारिश करके पाच व त की नमाज़ से हमारा छुटकारा कराइए। खुदा मजहब मे उनकी ऐसी लापरवाही देखकर बडे अप्रसन्न हुए और सज़ा के तौर पर उन्हे साल मे एक महीने तक रोजा रखने को कहा।)

**नमाज़ी का टका, (मु०)**

(कथा है कि एक शरारती लडके को यह आदत पड़ गई थी कि जब कोई मसजिद मे जाकर नमाज़ पढ़ता, तो वह पीछे से जाकर उसका पैर पकड कर घसीट लेता। जब एक बूढ़े नमाज़ी के साथ उसने ऐसा

किया, तो उसने लडके को एक टका दिया। इससे लड़के की हिम्मत बढ़ गई और उसने इस बार एक पठान की टांग पकडकर खीची। इस पर पठान ने घूमकर उसे ऐसे घूसे जमाए कि वह वही खत्म हो गया।)

**न मारे मरे, न काटे कटे**

घर के ऐसे उद्धत लडके के लिए क०, जिससे लोग परेशान रहते हो।

**न मूद बे मूद, (फ़ा०)**

कोरी दिखावट, त व कुछ नही।

**न मैं कहूं तेरी, न तू कहे मेरी, (स्त्रि०)**

न मैं तेरी बुराई करू, न तू मेरी कर।

**न मै जलाऊं तेरी, न तू जला मेरी, (स्त्रि०)**

न मैं तेरा नुकसान करूं, न तू मेरा कर। यहा जलाने से मतलब लकडी जलाने से भी हो सकता है और छाती जलाने से भी।

**नया अतीत, पेड़ पर अलाव, (हिं०)**

जब कोई नौसिखिया ऊटपटांग ढंग से काम करता है, अथवा किसी बेतुकी चीज़ से काम लेता है, तब क०। (साधु लोग सहारे के लिए काठ का एक साधन बनाकर रखते है, जिसे बैरागिन कहते है। वे उस पर हाथ रखकर एक ही आसन से दिन भर बैठे रहते है और थकते नही। अब अगर इस 'बैरागिन' को कोई पेड़ का सहारा देकर बैठे तो उससे वह और थक जाएगा।) यहा अलाव का अर्थ आग के लिए इकट्ठा किया गया ईधन भी हो सकता है। अतीत—साधु।

**नया चिकनिया रेंडी का कुलेल, (स्त्रि०)**

दे० ऊ०।

**नया जोगी और गाजर का शंख, (हिं०)**

दे०—नया अतीत . ।

**नया दाना, नया पानी**

मालिक के बदल जाने अथवा नई नौकरी कर लेने पर क०।

**नया-नया राज, ढब-ढब बाज, (पू०)**

जब कोई नया हाकिम, या अधिकारी नई बाते चलाता है, तब व्यग्य में क०।

**नया-नया राज भेल, गगरिल अनाज भेल**

नया राज होने पर घडे अनाज से भर जाते हैं। लोगो को नई नौकरिया मिलती है।

**नया नौकर मारे हिरना**

वह अपनी मुस्तैदी दिखाने के लिए ऐसा करता है।

**नया नौकर शेर मारे**

दे० ऊ०।

**नया नौ गंडा, पुराना छः गंडा, (पू०)**

पुरानी की अपेक्षा नई चीज महंगी होती है, अथवा नई की कद्र अधिक होती है।

**नया नौ दिन, पुराना सौ दिन**

नई चीज़ तो थोडे दिनों ही रहती है। पुरानी पर ही निर्भर करना चाहिए।

**नया मुसलमान अल्लाह हो अल्लाह पुकारे, (मु०)**

नये काम में जोश बहुत होता है।

**नया हकीम, दे अफ़ीम**

अनाडी हकीम की दवा का विश्वास नही करना चाहिए। वह कभी ज़हर भी खाने को दे सकता है।

**नये नमाज़ी, बोरिये का तहमद, (मु०)**

दे०—नया जोगी . ।

**नये-नये हाकिम, नई-नई बाते**

जब हाकिम नए होते है, तो नए-नए कानून भी बनते हैं।

**नये नवाब, आसमान पर दिमाग़**

नया आदमी थोडी भी प्रतिभा पाकर इतराने लगता है।

**नये बावर्ची, साग में शोरबा**

(१) नयापन दिखाना। अथवा

(२) फूहड़पन के लिए भी कह सकते है।

**नये सिपाही, मूंछ में ढांटा**

बेतुका काम। ढाटा दाढी मे बाधा जाता है, जिससे वह बिखरती नही।

**न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी**

जिस वस्तु के रहने से कष्ट होता हो, उसे जड़ से ही नष्ट कर देना चाहिए।

(कहावत में संकेत कृष्ण की बासुरी की ओर है।

गोपियां कृष्ण की बांसुरी को सुनकर इतनी अधिक प्रेम-विह्वल हो उठती थीं कि वे कहने लगती थीं कि उस बांस को ही यदि नष्ट कर दिया जाए, जिससे यह बांसुरी बनती है, तो न उसका स्वर हमें सुनने को मिलेगा और न हमारे हृदय में प्रेम की यह हूक उठेगी। गोपियो के प्रेम का वर्णन करते समय कई हिन्दी कवियो ने इस तरह की बात उनके मुख से कहलाई हैं।)

**न रहे मान, न रहे मानी, आखिर दुनिया फनाफनी, (मु०)**

संसार की नश्वरता पर कहा गया है।

**नर्म चोबरा किर्म मी खुरद, (फ़ा०)**

नर्म काठ को कीड़े खा जाते हैं। बहुत सीधा होना अच्छा नही।

**नल का मारा नलवा टूटे**

मामूली सरकडे की चोट से पिंडली टूट जाती है। या रक्त बहने लगता है। साधारण कारण से ही कभी-कभी भारी हानि हो जाती है।

**नशा उसने पिया, खुमार तुम्हें चढ़ा**

जब कोई आदमी किसी उच्च स्थान पर पहुंच जाए और उसके सगे-सम्बन्धी अपने को वैसा ही बड़ा समझने लगें, तब क०।

**न सांप मरे, न लाठी टूटे**

काम भी हो जाए और दोनों ओर से कोई हानि भी न हो। आपसी समझौता।

**न सूप दूसे जोग, न चलनी सराहे जोग, (स्त्रि०)**

न सूप की बुराई की जा सकती है, और न चलनी की सराहना। दोनों एक से।

(सूप मे भी छेद होते हैं, और चलनी में भी।)

**नाई की बरात में सब ही ठाकुर**

नाई सबकी बरात में सेवा-टहल करते हैं, पर उनकी बरात में यह कौन करे। जहां सभी अपने को बराबर समझें और कोई छोटा अथवा परिश्रम का काम न करना चाहे, वहां क०। यहां ठाकुर से मतलब बड़े आदमी से है।

**नाई, दाई, बैद, कसाई, इनका सूतक कभी न जाई, (हि०)**

इन चार का अशौच कभी नही जाता, क्योकि नाई का मृतक से हमेशा काम पड़ता है, दाई बच्चा जनाती है, बैद का कोई-न-कोई रोगी मरता रहता है और कसाई तो ढोरों का वध करता ही है।

**नाई, नाई, बाल कितने ? जिजमान आगे ही आते हैं**

जो बात स्वयं ही सामने आनेवाली हो उसके विषय में किसी से कुछ पूछने की क्या आवश्यकता ?

**नाई सबके पांव धोये, अपने धोते लजाये**

अपना काम अपने हाथ से करने मे लोगो को शर्म लगती है, उसी पर क० कही गई है।

**नाऊ की-सी आरसी, हर काहू के पास**

ऐसी वस्तु जिसका उपयोग हर कोई करे।

**नाक कटी बला से, दुश्मन की बद-सगुनी तो हुई**

ऐसे व्यक्ति के लिए क०, जो अपना नुकसान करके इसलिए खुश होता है कि उससे दूसरो की भी हानि होनेवाली है।

**नाक कटी मुबारक, कान कटे सलामत, (स्त्रि०)**

निर्लज्ज के लिए क०।

**नाक के बाल हो रहे हैं**

घनिष्ठ मित्र•बने है।

**नाक तो कटी, पर वह खूब ही में मरी**

कोई बदनाम औरत नेकनामी के साथ मरी, उसी पर कहा गया है।

खूब ही - अच्छाई के साथ।

**नाक दे, या नहरनी दे**

किसी को असमंजस में डालना।

**नाक पकड़े दम निकलता है**

बहुत कमजोर, अथवा सुकुमार।

**नाक पर दिया बालकर आए हैं**

अर्थात बहुत देर करके आए हैं। रात में आए है।

**नाक पर सुपाड़ी तोड़ती हैं, (स्त्रि०)**

बड़ी तुनुक मिजाज है।

**नाक हो तो नथिया सोहै, (स्त्रि०)**
नथ पहिनने को भी अच्छी नाक चाहिए।
**नाकों चने चबवाना**
बहुत परेशान करना।
**नाखलफ़ बेटे से बेटी भली**
अकर्मण्य लड़के से तो लड़की भली।
**नाचत आन मेई ना, आंगन बांकड़े,**
**रांधना मेई ना, ओली लांकड़े, (पू०)**
नाचना आता नही, आंगन टेढा। रसोई बनाना जानती नही, लकडी गीली।
(जब कोई आदमी किसी काम को करना न जाने, पर अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए साधनो को दोष दे।)
**नाच न सकूं, आंगन टेढ़ा, (स्त्रि०)**
दे० ऊ०।
प्र० पा०—नाच न जाने आगन टेढ़ा।
**नाचने निकली तो घूंघट क्या? (स्त्रि०)**
जब किसी काम को करने ही बैठे, तो उसे अच्छी तरह करना चाहिए। उसमे शर्म क्या?
**नाचे-कूदे तोड़े तान, ताका दुनिया राखे मान**
जो बहुत उछल-कूद मचाते हैं, यानी आत्मविज्ञापन करते हैं, दुनिया उनकी ही इज्जत करती है। सीधे को कोई नही पूछता।
**नाचे-कूदे बानरा, मेरे माल मदारी खायें**
परिश्रम कोई करे और मजा कोई उड़ाये, तब क०।
**नाचेगा सो पावेगा**
(१) जो दौड धूप करेगा, उसे ही मिलेगा। अथवा (२) जो खुशामद करेगा, वही पाएगा।
**नाचे बामन, देखे धोबी**
समाज की उल्टी रीति।
**नाट का बच्चा तो कलाबाजी ही करेगा**
(१) वंश या जाति का प्रभाव प्रकट होकर रहता है।
(२) बाप दादे जैसा करते रहे लड़के भी वैसा ही करेंगे।
नाट=नट।
**नाटा सबसे टांटा**
(१) नाटा सबसे मजबूत होता है।
(२) नाटा सबसे टटा या झगड़ा करता है।
**नाड़ी की कुछ सुरत नहीं है, दवा सभों की करते हैं।**
**वैदों का क्या जाता है, बीमार बेचारे मरते हैं।**
स्पष्ट। अनाड़ी वैद्यो पर।
**नात का न गोत का, बांटा मांगे पोथ का, (ग्रा०)**
न नाते का, न गोत का, फिर भी पैतृक संपत्ति मे हिस्सा बटाना चाहता है।
अनुचित या बेतुकी माग पर।
**नाता न गोता, खड़ा होकर रोता, (स्त्रि०)**
बे मतलब हस्तक्षेप करनेवालों पर क०।
**नातिन सिखावे आजी को कि बारह ड्योढ़े आठ, (पू०, स्त्रि०)**
छोटे का बड़े को सीख देना।
आजी=दादी, पिता की मा।
**नादान की दोस्ती जी का जियान**
मूर्ख की मित्रता प्राणलेवा होती है।
**नादान दोस्त से दाना दुश्मन भला**
मूर्खमित्र की अपेक्षा ज्ञानवान शत्रु अच्छा।
**नादान बात करे, दाना क़यास करे**
मूर्ख कोरी बात करता है, ज्ञानी सोचता है।
**नानक नन्हा हो रहो, जैसी नन्हीं दूब।**
**पेड़ बड़े गिर जायेंगे, दूब खूब की खूब।**
नम्र होकर रहे। बड़े पेड़ तो गिर जाते हैं, पर दूब जो नीचे होती है, हमेशा हरी बनी रहती है।
**नान चुक देवता, तिलक उराय ले, (पू०)**
नन्हें से देवता, तिलक लगने में ही खत्म हो गए। किसी का झूठमूठ का आदर-सम्मान किये जाने पर कहावत।
**नाना की दौलत पर नवासा ऐंड़ा फिरे**
दूसरे के धन पर ऐंठना।
नवासा=बेटी का लड़का।
**नाना के टुकड़े खावे, दादा का पोता कहावे**
किसी काम का श्रेय जिसे मिलना चाहिए, उसे न मिलकर किसी दूसरे को मिलना।
**नानी के आगे ननसार की बातें, (स्त्रि०)**
जो अपने से अधिक जानता है, उसके आगे ज्ञानवान बनना।

**नानी खसम करे, नवासा चट्टी भरे, (स्त्रि०)**
नानी ने खसम किया और नवासा को (बिरादरी मे) उसका दंड भरना पडा। किसी की मूल का कोई प्रायश्चित्त करे।

**नानी तो क्वांरी ही मर गई और नवासे के साढ़े सत्रह बान**
जब कोई छोटा आदमी यकायक धनी बनकर ऐंठ दिखाने लगे, तब उसके लिए क०।
(बान विवाह के समय का एक दस्तूर होता है, जिसमे वर और कन्या को स्नान कराया जाता है। कहावत का अभिप्राय यह है कि नानी ने तो विवाह का स्नान किया ही नही और नवासे के एक-दो नही, साढ़े सत्रह स्नान हो रहे है।)

**नानी मरी, नाता टूटा**
नानी का दोहते पर बड़ा प्रेम होता है।

**नाप न तोल, भर दे झोल**
अपने मतलब की कहना, नापो-तोलो नही; हमारा झोला भर दो।

**नापे सौ गज, फाड़े न एक गज**
ऐसे मनुष्य के लिए क०, जो हमेशा वादा करता रहे, पर पूरा न करे।

**नाम इमरत, पिलाये विष**
देखने-सुनने मे अच्छा पर व्यवहार मे विपरीत।

**नाम की नन्हीं, उठा ले जाय धन्नी**
अर्थात देखने मे छोटी है पर बडी चालाक।
नन्ही = छोटी।
धन्नी = कड़ी, शहतीर।

**नाम के बाबा जी, करनी छाबर**
नाम तो बडा पर करनी कुछ नही।
छाबर - खाक।

**'नाम क्या ?' "शकरपारा', 'रोटी कितनी खाई ?' 'दस बारा'; 'पानी कितना पिये ?' 'मटका सारा'— 'काम करने को लड़का बिचारा; (स्त्रि०)**
छोटे लड़को से हँसी में ही क०।

**नाम बड़ा ऊंचा, काम दोनों बूंचा, (पू०)**
स्पष्ट। इसे तुकबंदी ही समझनी चाहिए।

**नाम बड़ा और दर्शन थोड़े**
जब किसी में उसकी ख्याति के अनुसार गुण न पाए जाएं, तब क०।

**नाम बड़ा या दाम ?**
धन की अपेक्षा कीर्ति बड़ी चीज़ है।

**नाम बसंती, मुंह लूकुर-सा, (स्त्रि०)**
नाम के अनुसार गुण न होना।

**नाम मेरा, गांव तेरा**
किसी ऐसे व्यक्ति का कहना, जो दूसरे की सपत्ति से लाभ उठाना चाहता है।

**नाम लेवा न पानी देवा**
सतानहीन के लिए क०।
पानी देवा -पितरो का श्राद्ध कर्म करनेवाला।

**नामी साह कमा खाये, नामी चोर मारा जाये**
कही नाम हो जाने से लाभ होता है, कही हानि। अथवा जब कोई आदमी एक बार बदनाम हो जाता है, तो लोग उसे ही पकडते है।
(साह का नाम हो जाए, तो उसका लाभ होता है, लेकिन चोर बदनाम हो जाए तो पकडा जाता है।)

**नाम हीरामल, दमक कंकड़-सी भी नहीं**
नाम के विपरीत गुण।
नाम के अनुसार गुण नही।

**नार ने निकाला दंत, मर्द ने ताड़ा अंत**
स्त्री हँसी नही कि पुरुष उसका मतलब समझ लेता है।

**नार सुलक्खनी कुटुम छकावे, आप तले की खुरचन खावे, (स्त्रि०)**
अच्छी स्त्रिया परिवार के लोगो को भरपेट खिलाती हैं, और स्वय बचाखुचा खाकर ही सतुष्ट रहती है।
सुलक्खनी = सुलक्षणी।

**नारियल में पानी, नहीं जानते खट्टा कि मीठा**
संदेहजनक की स्थिति के लिए क०।

**नारी के बस भये गुसाईं, नाचत हैं मर्कट की नाईं**
स्त्रियों के वश होकर पुरुष बदर की तरह नाचा करते है।
**इसका शुद्ध रूप है—**

नारि विवश कर सकल गुसाईं।
नाचहि नर मर्कट की नाईं।

**नाले मूंज बगड़, नाले देवी दा दर्शन, (पं०)**
नाले के किनारे मूंज और बगड़ भी मिलेगी और देवी के दर्शन भी होंगे। एक पंथ दो काज।
(मूज और बगड़ घास की किस्में है, जो रस्सी बनाने के काम आती हैं। ये घासें नदी-नाले के किनारे ही होती हैं, जहां प्रायः देवी-देवताओ के मदिर भी बने होते हैं।)

**नालैन, तहतुलऐन, (अ०)**
अपने जूते अपनी नज़र के सामने रखो। नही तो वे चोरी चले जाएगे।

**नाव किसने डुबाई? ख्वाजा खिज़र ने**
अपनी करनी का दोष दूसरे के सिर मढना। ख्वाजा खिज़र मुसलमानो मे बाढ़ और जल के देवता माने जाते है।

**नाहक डंड, पुत्र का सोग, नित उठ पग पग चलें जो लोग।**
**जिन वृद्धा में मर गई नारी, बिन आगी ये जर गये चारी**
जिसे समाज ने निरपराध दंड दिया हो, जिसे पुत्र का शोक हो, जिसे नित्य (अपने धंधे से) पैदल चलना पड़े और वृद्धावस्था मे जिसकी स्त्री मर गई हो, ये चारों बिना अग्नि के ही (चिन्ता की आग में) जलते रहते हैं।

**निकली हलक़ से, चढ़ी खलक़**
बात मुंह से निकलते ही दुनिया में फैल जाती है।

**निकली होठां, चढ़ी कोठां**
दे० ऊ०।

**निकसो चंदा, तो अंधेरो भयो मंदा**
सच के आगे झूठ नहीं टिकता।

**निकाह की शर्त करना**
ऐसी शर्तें रखना कि समझौता मुश्किल से हो पाए।

**निकाह हो न ब्याह, मुंडो बहू कहां से आई, (मु०)**
न निकाह हुआ, न विवाह; फिर यह मुंडी बहू कहां से आ गई? झूठ-मूठ का रिश्ता जोड़ना।
निकाह=मुसलमानी प्रथा से किया गया ब्याह।

**निकौड़िया गये हाट, ककड़ी देखे जियरा फाट, (पू०)**
इसलिए कि खरीदने के लिए पैसा नहीं था।
निकौड़िया =बिना कौडी का; जिसकी जेब खाली हो।
जियरा=जी; हृदय।

**निखट्टू आवे लड़ता, कमाऊ आवे डरता, (स्त्रि०)**
निकम्मा आकर लड़ता है, कमाऊ शान्त और विनम्र रहता है।
स्त्रियां प्रायः अपने अकर्मण्य पति के लिए कहती हैं।

**निचंट सोवे हेरू, जिसके गाय न गेरू**
हेरू बेफिक्र सोता है, क्योंकि उसके पास न गाय है; न बछडा।
निचंट=निश्चित।

**निठल्ला बनिया पत्थर तोले**
बनिया कभी खाली नहीं बैठता, वह कुछ-न-कुछ करता रहता है। जब कोई बेमतलब का काम करता है, तब यह क० कहते हैं।

**नित खोदना, नित पानी पीना**
रोज कमाना, रोज खाना। कठिनाई मे जीवन व्यतीत करना।

**निन्नानबे के फेर में पड़ गये**
(१) घर-गृहस्थी की चिन्ता मे पड़ जाना।
(२) गहरे असमंजस में पड़ना।
(कथा है कि दो बहिने थी। एक का विवाह धनी के साथ हुआ, दूसरे का ग़रीब के साथ। जो ग़रीब थी उसने अपनी बहिन से सहायता मांगी। उसने निन्नानवे रुपए उसे दिए। वह यद्यपि ग़रीब थी, पर अभी तक बहुत संतोषपूर्वक रहती थी। पर निन्नानबे रुपए देखकर वह पूरे सौ रुपए करने की फ़िक्र में पड़ गई और इस प्रकार उसका कष्ट और बढ़ गया। उपदेश निकला कि धन से संतोष अच्छा।
(२) इसी प्रकार की एक दूसरी कहानी है। किसी शहर में एक पुरुष और उसकी स्त्री दोनों रहते थे। वे बड़े ग़रीब थे और चार पैसे रोज़ में अपनी गुजर करते थे। फिर भी वे बड़े संतोषी थे, और उनका जीवन सुखपूर्वक बीतता था।

उसकी एक भावज थी, जो बहुत धनाढ्य थी। उससे उनका सुख नहीं देखा गया, और उनको कष्ट पहुंचाने के लिए एक दिन उसने निन्नानबे रुपए एक थैली में रखकर उनके घर में फेंक दिए। वे बेचारे कठिनाई में तो रहते ही थे। रुपए देखकर बड़े खुश हुए। गिने तो निन्नानबे थे। अब उन्हें इस बात की फिक्र हुई कि किसी प्रकार सौ पूरे करें। उन्होंने अपने खर्चे में से एक पैसा रोज़ बचाना शुरू कर दिया। इस प्रकार जब पूरे सौ हो गए, तो उन्होने सोचा कि अगर वे केवल दो पैसे रोज़ में अपना खर्चा चलाएं तो कुछ दिनों में इसके दूने हो जाएंगे। उन्होने वैसा ही करना शुरू कर दिया। ज्यों-ज्यों उनके पास पैसा बढ़ता गया, त्यों-त्यों उनकी चिन्ता और लालच भी बढ़ती गई। कुछ दिनों में वे बड़े दुर्बल हो गए और उनकी सुख-शांति सदा के लिए बिदा हो गई।)

**निपूती का घर सूना, मूरख का हिरदा सूना, दलिद्री का सब कुछ सूना**

स्पष्ट।

हिरदा=हृदय।

दलिद्री=(१) दरिद्र।(२) कंजूस।

**निपूती के मुंह देख ले साथ उपास, (स्त्रि०)**

लोक-विश्वास। बांझ का मुंह सुबह-सुबह देखना बुरा समझा जाता है।

**नियारे चूल्हे बलबल जाऊं, सारा खाती, आधा खाऊं, (स्त्रि०)**

कोई बहू सास से अलग हो गई है, अलग अपना भोजन बनाती है और कहती है—ऐ न्यारे चूल्हे, मैं तुझ पर न्योछावर हूं। पहले सास जो कुछ देती थी, वह सब खा लेती थी, फिर भी पेट नहीं भरता था, पर अब मैं इतना अधिक बनाती हूं कि आधा खाती हूं और आधा बचाकर रख लेती हूं।

**निर्धन के धन गिरधारी**

गरीब के सहायक भगवान हैं।

**निस दिन खाना, काम को असकताना**

कामचोर के लिए क०।

असकताना—आलस्य करना।

**निहंग लाड़ला सदा सुखी**

स्वच्छन्द आदमी हमेशा ही सुखी।

(निहंग लाड़ला ऐसे लडके को कहते हैं, जो माता-पिता के दुलार के कारण बहुत उद्दंड हो गया हो।)

निहंग=अकेला।

**नीक-नीक मोरे भाग, एक-एक मछलिया की दो-दो मछलिया, (स्त्रि०)**

मै कितना खुश-किस्मत हूं, एक की जगह मुझे दो मछलियां मिल गईं।

(कोई व्यक्ति आशा से अधिक मिल जाने पर अपनी प्रसन्नता प्रकट कर रहा है।)

**नीच जात, एक न एक उदमाद**

ओछे आदमी एक-न-एक उत्पात करते रहते हैं।

उदमाद=उत्पात।

**नीच जातों में अब भी बड़ा एका है**

स्पष्ट।

**नीचन कूटन, देवन पूजन**

(१) ओछा आदमी पिटने से और देवता पूजने से ठीक रहते हैं।

(२) ओछे आदमी पिटते हैं, बड़ों की पूजा की जाती है।

**नीच न छोड़े निचाई, नीम न छोड़े तिताई**

स्पष्ट।

**नीच हँसे, हुलसे रहें, लिये गेंद को पोत।**
**ज्यों-ज्यों माथे मारिये, त्यों-त्यों ऊंचे होत। (बिहारी)**

नीच मनुष्य गेंद के स्वभाव को धारण किए हुए प्रसन्न रहते है। ज्यों-ज्यों वे माथे पर मारे जाते हैं (अपने सिर पर चोट खाते हैं), त्यों-त्यों ऊंचे होते हैं (अपने को श्रेष्ठ समझते हैं)।

(हँसे के स्थान पर शुद्ध पाठ 'हिये' है।)

**नीचे से जड़ काटना, ऊपर से पानी देना**

ऊपर से भले बनकर भीतर-ही-भीतर हानि पहुंचाना।

**नीम न मीठा होय, सींच गुड़ घ्यु से।**
**जाको जौन सुभाव जाय नहिं ज्यु से।**

जब कोई बहुत समझाने पर भी बात नहीं मानता।

**नीम हकीम खतरा-ए-जान।**
**नीम मुल्ला खतरा-ए-ईमान। (फ़ा०)**
थोड़ा ज्ञान बहुत हानिकर होता है।

**नीयत साबित मंजिल आसान, (मु०)**
जिसकी नीयत अच्छी होती है, उसके सब काम बनते हैं।

**नीलकंठ कीड़ा भखें, मुखहिं बिराजें राम।**
**खोट कपट क्या देखिए, दर्शन से है काम।**
स्पष्ट। नीलकठ पक्षी के दर्शन शुम माने जाते हैं। विजयादशमी के दिन प्रातकाल विशेष रूप से लोग उसके दर्शनो के लिए बाग-बगीचे छानते फिरते है।

**नील का टीका, कोढ़ का दाग**
ये कमी नही छूटते।
नील का टीका लगना=मु०; चरित्र मे लगा धब्बा। कलक लगना।

**नील का माठ बिगड़ा है**
जब कोई पूरे का पूरा काम नष्ट हो जाए तब क०। (पुराने जमाने मे जब रासायनिक रगो का आविष्कार नही हुआ था, नीला रग नील से बनता था। इसके लिए नील की जडो और डठलो को काटकर हौज मे सडाते थे। यही नील का माठ कहलाता था। कमी-कमी बिगड जाता था, और तब डठलो और जड़ो से रंग नही उतरता था।)

**नीलटांस जिस सिर मंडरावे, मुकट पतो सूं लाभ पावे**
जिसके सिर पर नीलकण्ठ पक्षी घूम जाए, उसे राजा से धन-सम्मान मिलता है। लोक-विश्वास।

**नूनवाले का नून गिरा, उसने उठा लिया।**
**तेलवाले का तेल गिरा, तो क्या उठा लेगा?**
स्पष्ट।

**नूनवाले का नून गिरा, दूना हुआ,**
**तेली का तेल गिरा, ऊना हुआ**
नमकवाले का नमक जमीन पर गिरे, तो वह वजन में दुगुना हो जाएगा, क्योंकि उसमें धूल मिल जाएगी। तेली का तेल गिरे, तो वह कम हो जाएगा, क्योंकि सब उठाया नहीं जा सकेगा।

**नेक अंदर बद, बद अंदर नेक, (मु०)**
अच्छे आदमी में मी कुछ-न-कुछ बुराई और बुरे मे भी कुछ-न-कुछ अच्छाई होती है।

**नेक नाम बनिया, बदनाम चोर**
वाणिज्य करनेवाले की साख होती है, चोर की नहीं।

**नेक बात का पूछना क्या ?**
स्पष्ट।

**नेकी और पूछ-पूछ**
मलाई करने मे क्या पूछना। कोई मलाई करना चाहे तो उसे पूछने की क्या जरूरत है?

**नेकी कर और दरिया में डाल**
किसी का उपकार करके उसे भूल जाना चाहिए।

**नेकी करनेवाले को नेकी का मजा और मूजी को टक्कर का**
मले को मलाई का मजा मिलता है और बुरे को बुराई का, वह पिटता है।

**नेकी करो खुदा से पाओ**
मलाई का बदला ईश्वर देता है।

**नेकी का बदला बदी**
किसी को मलाई का बदला बुराई से दिया जाए, तब क०।

**नेकी की जड़ पताल में**
मलाई का फल हमेशा मिलता रहता है।

**नेकी बर्बाद, गुनाह लाजिम, (मु०)**
नेकी तो चूल्हे-माड़ में गई, उसके बदले बुराई मिली।
(दे०—व्याख्या के लिए नेकी का बदला बदी।)

**नेकी ही रह जाती है**
मनुष्य मर जाता है, पर उसके अच्छे काम जीवित रहते हैं।

**नेमी पांडे कमर में जटा**
ढोगी के लिए क०।
नेमी=नियम से रहनेवाले।

**नेवतल ब्राह्मण शत्रु बराबर, (पू०)**
ब्राह्मण को न्योता दिया और मानो घर मे शत्रु बुला लिया। ब्राह्मण बहुत खाने के लिए बदनाम हैं।

**नेस्ती में बरखुरदारी**
ग़रीबी में बच्चों का पालन-पोषण एक कठिन काम हो जाता है।

**नैन छुपाये न छुपें, पट घूंघट की ओट।**
**चतुर नार उर सूरमा, करें लाख में चोट।**
स्पष्ट।

**नैनन को नेह न टूटे, जैसे बेल बिरछ को लिपटे, सूख जाय ना छूटे**
स्पष्ट।
बेल = लता।
बिरछ = वृक्ष।

**मैना तोहे पटक दूं, टूक-टूक ह्वै जाय।**
**पहले नेह लगाय के, पाछे अलग ह्वै जाय।**
स्पष्ट।

**नैना देत बताय सब, हिय को हेत अहेत।**
**जैसे निर्मल आरसी, भली-बुरी कह देत।**
स्पष्ट।

**नौ कनौजिया और नब्बे चूल्हे**
कान्यकुब्ज ब्राह्मण बहुत छूत-छात मानते है। उसी पर व्यंग्य मे क०।

**नौकर आगे चाकर, चाकर आगे कूकर**
नौकर का नौकर कुत्ते के समान होता है।

**नौकर को चाकर, मड़ई को उसारा, (पू०)**
नौकर का नौकर वैसा ही, जैसे झोपडी मे बरामदा। शोभा नही देते। अथवा व्यर्थ होते है।

**नौकर लाट कपूर के, होंठ मलें और हक़ लें**
लाट कपूर के नौकर ज़बर्दस्ती हक लेते है। किसी ढीट याचक का कथन।
(अकबर के समय में लाट कपूर एक प्रसिद्ध गायक हो गए है। जब वह किसी अमीर के यहां गाने जाते और उनको कोई इनाम देता और सम्मानपूर्वक यह कहता कि यह आपके नौकरों के लिए है, तो उनके नौकर तुरंत सामने आ जाते और यह कह कर उनके हाथ से वह रकम ले लेते कि यह तो हमे दी गई है।)

**नौकरी अरंड की जड़**
नौकरी का कुछ ठिकाना नही रहता, कब छूट जाए। अरंड वृक्ष की जड़ बहुत कमज़ोर होती है।

**नौकरी की जड़ ज़बान पर**
दे० ऊ०।

**नौकरी ताड़ की छांव**
नौकरी का बहुत कम आसरा करना चाहिए।

**नौकरी नित नई**
रोज़ कुछ-न-कुछ नया काम करना पड़ता है। अथवा (२) कब नया मालिक आ जाए, इसका कुछ ठीक नही रहता।

**नौकरी पेशे का घर क्या? कभी यहां कभी वहां**
नौकरी में आदमी को मारा-मारा फिरना पड़ता है।

**नौकरी है या भाईबंदी**
नौकर जब ठीक तौर पर काम न करे, तब क०।

**नौ की लकड़ी, नब्बे ढुलाई**
जितने का काम नहीं, उस पर उतने से अधिक ख़र्च हो जाना।

**नौ कूंड़े और दस नेगी, (पू०)**
जितनी चीज़ नही, उससे अधिक मागनेवाले। (नेगी वे लोग कहलाते है, जिन्हें विवाह के अवसर पर नेग या दस्तूर मिलता है।)

**नौ तेरस बाईस न बताइये**
किसी से कहा गया कि नौ और तेरह बाईस होते है, पर वह मानने को तैयार नही। कहता है, नही ऐसा मत कहो।
जब कोई व्यक्ति सही बात को न माने और तर्क करे, तब क०।
(आप जबर्दस्ती किसी से अपनी बात नही मनवा सकते।)

**नौ दिन चले अढ़ाई कोस**
बहुत सुस्त आदमी के लिए क०।

**नौ नगद, न तेरह उधार**
उधार तेरह में बेचने की अपेक्षा नक़द नौ में बेचना अच्छा है।

**नौ मन तेल खाये, फिर तिलेर का तिलेर**
ऐसे लड़के को क०, जिसे ख़ूब अच्छा खाने-पीने

को मिलता रहे, फिर भी वह दुबला-पतला रहे।
तिलेर=एक पक्षी विशेष।

**नौ महीने मां के पेट में कैसे रहा होगा ?**
चंचल और ऊधमी लड़के के लिए क०।

**नौमी गूगा पीर मनाऊं, ना चरखे के हाथ लगाऊं** (स्त्रि०)
काम न करने के लिए जब कोई व्यर्थ का बहाना ढूंढ़े, तब क०। (गूगा नाम के एक पीर हो गए हैं। सन १०२४ में उनकी मृत्यु हुई। भादों बदी नवमी को उनकी यादगार में मेला लगता है।)

**नौ सौ चूहे खा के बिल्ली हज को चली,** (मु०)
जिसने जन्म भर बुरे कर्म किए हों, और अंत में वह संत-महात्मा बन बैठे, तब क०।
(बिलार-व्रत की कथा जातक में मिलती है और महाभारत में भी।)

**नौह भर खाया तो खाया, मुंह भर खाया तो खाया**
थोड़ा खाया तो, बहुत खाया तो, खाने का नाम तो हुआ। चोरी चाहे छोटी हो, चाहे बड़ी, कहलाएगी तो वह चोरी ही।
नौह भर=नाखून भर। बहुत थोड़ा।

**पंच कहें बिल्ली, तो बिल्ली ही सही**
जो सबकी राय होगी, वही हम मान लेंगे।
(कथा है कि रात के समय किसी बनिए के घर में चोर घुस गया। बनिए को जब पता चला, तो उसने चुपचाप उठकर उस कोठे के किवाड़ बंद कर दिए और बाहर से कुंडी लगा दी, जिसमें चोर था। चोर भीतर से बिल्ली की तरह म्याऊं-म्याऊं करने लगा। तब बनिए ने कहा कि सबेरे अगर पंच तुझे बिल्ली कहेंगे तो बिल्ली ही समझकर छोड़ देंगे। इस समय तो अब तुम बंद रहो।)

**पंच जहां परमेश्वर,** (हिं०)
पंच परमेश्वर के बराबर होते हैं। जहां पांच आदमी इकट्ठे होकर किसी बात का फ़ैसला कर देते हैं, वह ठीक ही होता है।

**पंचफूला रानी बनी है,** (स्त्रि०)
अपने को बड़ी रूपवती समझती है।
(भारतीय लोककथाओं में पंचफूला रानी का बहुत नाम आता है। वह एक सुन्दर राजकन्या थी, जो वज़न में इतनी हल्की मानी गई कि पांच फूलों से तुला करती थी।)

**पंच माने खुदा, खुदा माने पंच,** (मु०)
पंच और परमेश्वर में कोई अंतर नहीं।

**पंच मिल खुदा और खुदा मिल पंच,** (मु०)
पंचों में ईश्वर का वास होता है और ईश्वर में पंचों का।

**पंच मुख परमेश्वर**
पंचों की आज्ञा ईश्वर की आज्ञा होती है।

**पंचों का कहना सिर आंखों पर, मगर परनाला यहीं गिरेगा**
जब कोई आदमी ऊपर से तो यह कहता जाए कि आप जो कहेंगे वही करेंगे, पर करे अपने मन की।
(किसी मनुष्य के घर की मोरी का पानी उसके पड़ोसी के घर में जाता था। पंचों ने आकर फैसला किया कि वह अपनी मोरी हटाकर दूसरी जगह बनवा ले। किन्तु उसने नहीं माना और उत्तर में उसने ऊपर की बात कही।)

**पंचों का जूता और मेरा सिर**
मैं हर तरह से पंचों की बात मानने को तैयार हूं।

**पंचां शामिल मर गये, जानों गये बरात**
पंचों के साथ कष्ट भोगना वैसा ही है, जैसा बरात में जाना। सबके साथ जो कष्ट उठाना पड़ता है, वह अखरता नहीं।

**पंज ऐब शरई हैं**
उसमें पांच ऐब हैं।

**पंडियान की मीठी-मीठी बतियां**
मीठी बात करके अपना काम बनानेवाली स्त्री।

**पंडित पोथी बांचते, मुल्ला पढ़ें कुरान।**
**लोग दिखावी लख करो, नाहिं मिलें भगवान।**
स्पष्ट।

**पंडित भये तो क्या भये, गले लपेटे सूत।**
**भाव भगत जानी नहीं, भये जंगल के भूत।**
सच्ची भक्ति के बिना ईश्वर नही मिलता।

**पकले गूलर, कव्वे के नींद आवा ले, (भो०)**
गूलर पक रहे हैं, भला कौए को नीद कैसे आएगी? जब किसी अच्छी लगनेवाली वस्तु को पाने के लिए कोई बेचैन हो उठे, तब क०।
**(कौवे गूलर बहुत खाते है।)**

**पका फोड़ा हो रहा है**
बहुत टीस उठ रही है।
कष्टदायक वस्तु के लिए क०।

**पकाय सो खाय नहीं, खाय कोई और।**
**दौड़े सो पाय नहीं, पाय कोई और।**
(१) जो मेहनत करे, उसे न मिले, दूसरे मजा उडाए।
(२) जो मेहनत करेगा सो पाएगा, नही तो दूसरे उसका लाभ उठाएगे।

**पकी फली नहीं फोड़ता है**
बहुत ही आलसी है। कोई काम नही करता।

**पके आम के टपकने का डर है**
बूढ़ा आदमी, न जाने कब चल बसे।

**पक्का पान खांसी न जुकाम**
नया पान कफ़ पैदा करता है, पक्का नही।

**पक्का होना चाहे तो पक्के के संग खेल, कच्ची सरसों पेर के, खली होय ना तेल**
योग्य बनना चाहते हो, तो योग्य पुरुष के साथ रहो। कच्ची सरसो से तेल नही मिल सकता।

**पखाल का लादना और डाक का लादना एक-सा**
दोनो ही कामो मे बोझा लेकर और जल्दी चलना पड़ता है।
पखाल -मशक।

**पगड़ी अटकी है**
इज्ज़त खतरे में है।

**पगड़ी दोनों हाथों से थामी जाती है**
इज्ज़त को बचाने के लिए पूरी कोशिश करनी चाहिए।

**पगड़ी भीतर रख**
अपनी इज्ज़त बनाए रखो। ऐसा न हो, कोई पगड़ी उछाल दे।

**पगड़ी रख, घी चख**
इज्ज़त से भी रहो, और अच्छा खाओ-पीओ।

**पग पवित्र तीरथ गवन, कर पवित्र कछु दान।**
**मुख पवित्र जब होत है, भज ले श्री भगवान।**
तीर्थयात्रा से पैर पवित्र होते है, दान से हाथ पवित्र होते है और ईश्वर-भजन से मुख पवित्र होता है।

**पग बिन कटे न पंथ**
बिना चले रास्ता तय नही होता। करने से ही काम होता है।

**पछवा चले, खेती फले, (कृ०)**
पश्चिम की वायु खेती के लिए लाभदायक होती है।

**पठान का पूत, घड़ी में औलिया, घड़ी में भूत**
घडी-घडी मे जिसका मिजाज़ बदले, उसके लिए क०।
औलिया -सत।

**पठानों ने गांव मारा, जुलाहों की चढ़ बनी**
क्योकि उन्हे नौकरी मिल जाएगी। कुनबापरस्ती।

**पड़ली पिया तोरे बस, जिन्ने चाहा तिन्ने धस, (पू०, स्त्रि०)**
कोई पतिव्रता स्त्री अपने अत्याचारी पति के प्रति कह रही है।
विवश होकर किसी का अनाचार सहन करना पड़े, तब क०।

**पड़वा गमन न कीजिये, जो सोने को होय**
पडवा (प्रतिपदा) को यात्रा नही करनी चाहिए, चाहे कितना ही लाभ क्यो न होनेवाला हो। हिन्दू ज्योतिष के अनुसार पडवा को यात्रा के लिए अशुभ मानते है।

**पड़ोस छोड़ पीत करे**
पड़ोसियो को छोड कर दूसरो को मित्र बनाना। बुरे आदमी के लिए क०।

**पड़ोसी के मेंह बरसेगा तो बौछार यहां भी आयेगी**
धनी के पड़ोस में रहने से किसी-न-किसी तरह का लाभ होगा ही।

**पढ़ा न लिखा, नाम विद्याधर**
बेशऊर के लिए क०।
**पढ़ा न लिखा, नाम मुहम्मद फ़ाज़िल, (मु०)**
दे० ऊ०।
**पढ़िये भैया सोई, जामें हंड़िया खुदबुद होई, (पू०)**
वही विद्या पढ़नी चाहिए, जिससे पेट का धंधा चले।
**पढ़ी न, कज़ा की, (मु०)**
जो पांच वक्त नमाज़ नही पढता, वह पाप करता है। नियत समय पर नमाज़ न पढने के अपराध को कज़ा कहते हैं।
**पढ़े के पास बैठिये, दूना लाभ**
ज्ञानी के पास बैठने से दुगुना लाभ होता है। समय का सदुपयोग होता है। अच्छी बाते सीखने को मिलती हैं।
**पढ़े घर की पढ़ी बिल्लो**
शिक्षा का दूसरो पर प्रभाव पडता है। जहा एक पढा होता हे, वहा दूसरा भी पढ़ जाता है।
**पढ़े तोता, पढ़े मैना, कहीं सिपाही का पूत भी पढ़ा है ?**
सिपाहियों पर फब्ती। वे प्राय अशिक्षित होते है।
**पढ़े तो है, पर गुने नही**
विद्या तो पढी, पर उसका मनन नही किया। अनुभवहीन पढे-लिखे।
**पढ़े फारसी बेचें तेल, यह देखो कुदरत का खेल**
क़िस्मत की मार से पढे-लिखे मनुष्य भी मारे-मारे फिरते है।
**पढ़ों में अनपढ़ा, जैसे हंसों में कौवा**
स्पष्ट।
(स०—सभा मध्ये न शोभन्ते हस मध्ये बको यथा)
**पढ़ो तो पढ़ो, नहीं तो पिंजरा खाली करो**
(१) लड़के जब पढते, नहीं तो उनसे क०।
(२) निकम्मे नौकर से भी क०।
**पतुरिया का डेरा, जैसे ठगों का घेरा**
क्योंकि वहां भी आदमी जाकर लुटता है।
पतुरिया = वेश्या।
(एक घुमक्कड़ जाति के लोग होते हैं, उनकी स्त्रियों को भी पतुरिया कहते हैं। ये चोरी के लिए बदनाम हैं। यहां उनके डेरे से भी अभिप्राय हो सकता है।)
**पतुरिया रूठी, धरम बचा**
क्योंकि उसके पास फिर जाएंगे ही नहीं।
(जब कोई किसी काम के लिए इन्कार कर देता है, तब क०, कि चलो अच्छा हुआ, एहसान से बचे।)
**पतोर ताको गजी नहीं, बेसवा ओढ़े खासा**
(१) पतिव्रताओं को तो गाढ़ा पहिनने को नहीं मिलता, और वेश्याए रेशम पहिनती है। अथवा
(२) ऐसे पुरुष के लिए भी कह सकते है, जो अपनी स्त्री का ख्याल न करे, और किसी दूसरे से प्रेम करे।
**पत्थर को जोंक नहीं लगती**
(१) निर्दयी के आगे रोने से कोई लाभ नही होता।
(२) मूर्ख को शिक्षा नही लगती।
**पत्थर मारे मौत नहीं आती**
(१) घर के लोग जिससे परेशान हों, ऐसे व्यक्ति के लिए क०।
(२) पत्थर मारने से कोई नही मर जाता। जब मौत आती है तभी मरता है।
**पत्थर मोम नहीं होता**
हृदयहीन को दया नही आती।
**पवनी आइल, न पेठया लागल, (पू०)**
किसी दुराचारिणी के विषय में कहा गया है कि न वह आई, न हाट लगी, अर्थात उसके बिना बाजार मे रौनक नही आई।
**पद्मिनी चमारों में होती है**
चमारों में भी सुन्दर स्त्रिया होती है।
**पर आसा नित उपासा**
दूसरों पर निर्भर करनेवाला हमेशा भूखो मरता है।
**पर उपकारी, धरमधारी**
दूसरों का भला करनेवाला ही धर्मात्मा होता है।
**परकल घोड़ भुसौले ठाढ़, (पू०)**
जहां जिसे खाने को मिलता है, वह उसी जगह बार-बार पहुचता है।
परकल = लपका हुआ।

**पर का धन गोरैया मार, (पू०)**
पराए धन को चिड़ियां खा जाएं, हमे क्या मतलब ?

**पर की खेती, पर की गाय, वह पापी जो मारन जाय**
मनुष्य का स्वभाव है कि वह दूसरे की हानि को चुपचाप देखता रहता है, हस्तक्षेप नही करता। उसी पर कहा० कही गई है।
दे०—अनकर खेती....।

**पर के धन पर चोर रोवे**
चोर मुफ्त का माल चाहता है।

**पर को कुआ खोदिये और आप ही डूब-डूब मरिये**
जो दूसरों को हानि पहुंचाने की चेष्टा करता है, वह स्वय हानि उठाता है।

**परगट आन, पीछे कह आना।**
**अधम न एक जग ताहि समाना।**
जो मुंह पर कुछ कहे और पीठ पीछे कुछ कहे, उसे बड़ा नीच समझना चाहिए।

**पर घर कूदें मूसलचंद**
जो बिना बुलाए किसी के घर जाए, अथवा बिना पूछे किसी के काम मे हस्तक्षेप करता फिरे, उसके लिए क०।

**पर घर नाचें तीन जने, कायथ, बैद, दलाल**
क्लर्क, वैद्य, और दलाल, ये अपनी आमदनी के लिए दूसरो पर ही निर्भर करते है।

**परचे परतीत है**
मिलने-जुलने से ही विश्वास उत्पन्न होता है।

**परजा मरन, राजा को हाँसी**
राजा के सुख के लिए प्रजा मरती है। सामती जमाने मे राजा लोग अपने आराम के लिए रिआया से कर्ज लेते थे। उसी से मतलब है।

**पर तिरिया पर धन के ऊपर जो कोई सुता धरे है,**
**जब छूटे हैं प्रान, प्यारे, जाके नरक पड़े है**
जो पराए धन और पराई स्त्री पर दृष्टि डालता है वह नरक मे जाता है।
सुता धरे है=सुर्त करता है। सुर्त से मतलब ध्यान से है।

**परदे की बीबी और चटाई का लहंगा**
प्रतिष्ठा के अनुकूल पहिनावा न होना।
परदे की बीवी=पर्दानशीन औरत। परदे मे बडे आदमियों की स्त्रियां ही रहती हैं।

**परदे में जर्दा लगाती हैं, (स्त्रि०)**
अपना नाम कलंकित करती हैं।
जर्दा=धब्बा।

**परदेस कलेस नरेशन को, (हिं०)**
घर से बाहर जाने पर राजाओं को भी कष्ट होता है, फिर साधारण पुरुषो की तो बात ही क्या ?

**परदेसी का जी आधा होता है**
(१) अजनबी आदमी संकोचशील होता है।
(२) बाहर जाकर आदमी हिम्मत से काम नही ले पाता।

**परदेसी की प्रीत को, सबका मन ललचाय।**
**दोइ बात की खोट है, रहे न संग ले जाय। (स्त्रि०)**
स्पष्ट
खोट =कमी, त्रुटि, शका।

**परदेसी बालम तेरा आस नहीं, बासी फूलों मे बास नहीं, (स्त्रि०)**
परदेशी से प्रेम करना व्यर्थ है, क्योंकि वह न जाने कब छोडकर चलता बने।

**पर नारी पैनी छुरी, कोई मत लाओ संग।**
**दसों सीस रावन के ढह गए, इस नारी के संग।**
स्पष्ट।
(सीता को चुराने के लिए रावण मारा गया था।)

**परवत को राई करे, राई परवत मान।**
ईश्वर मे बडी शक्ति है, वह असंभव को भी संभव कर सकता है।

**परबस में सुख है नहीं, निसबस ही सुख भोग।**
**यातें परबस त्याग के, रहे सुबस बुध लोग।**
पराधीनता में सुख नही मिलता।

**पर मुई सासू, आसो आये आंसू, (स्त्रि०)**
सास पारसाल मरी और आंसू इस साल आए।
बनावटी दुख।

**परहेज बड़ी दवा है**
खाने-पीने आदि के संयम से बहुत से रोग दूर होते हैं।

**परहेज भी आधा इलाज है**
दे० ऊ० ।

**पराई जेब में अपनी जेब से धरना मुश्किल है**
दूसरे का पैसा लेना आसान नहीं।

**पराई तोंद का घूंसा**
अपने को उसका कष्ट नही होता।

**पराई थैली का मुंह सकरा**
अपना धन कोई आसानी से नही देना चाहता।
दे०—पराई जेब से...।

**पराई धी और हँसे बटाऊ लोग**
पराई लडकी को देखकर राहगीर हँसते है। (उन्हे हँसना नही चाहिए।)

**पराई नौकरी करनी ओर साप का खिलाना बराबर है**
दोनो ही काम खतरे के है।

**पराई सराय में कौन धुआं करता है?**
दूसरे के घर जाकर चूल्हा सुलगाना ठीक नही। (भोजन के लिए।)
अपना निजी काम अपने घर ही करना चाहिए।

**परा गन्दह रोज़ी, परा गन्दह दिल, (फ़ा०)**
जिसकी नौकरी का ठीक नहीं, उसके दिमाग का भी ठीक नही। अर्थात बेरोज़गार आदमी अस्थिर चित्त रहता है।

**पराधीन सपने सुख नाहीं**
जो दूसरे की नौकरी करता है, अथवा दूसरे के अधीन रहता है, उसे कभी सुख नही मिलना।

**पराया दिल परदेस बराबर**
उसका हाल मालूम नहीं रहता।

**पराया दिल समन्दर के पार**
दे० ऊ० ।

**पराया माल झांट का बाल**
पराए माल को तुच्छ समझें।

**पराया सिर कद्दू बराबर**
दूसरे के माल की परवाह न करना।

**पराया सिर कुरान की जगह, (मु०)**
क़सम खाने के लिए पराया सिर। पराई वस्तु की वुकत न करना। (मुसलमान लोग कुरान की कसम खाते है। इसके अलावा अपने अथवा पराए सिर की कसम भी खाई जाती है। लोक-विश्वास है कि किसी के सिर की झूठी कसम खाने से वह आदमी मर जाता है। इसी पर कहावत आधारित है।)

**पराया सिर पसेरी बराबर**
दे०—पराया सिर कद्दू...।

**पराया सिर लाल देख अपना सिर फोड़ डालेंगे, (स्त्रि०)**
(१) पराये सौभाग्य पर ईर्ष्या करना। अथवा (२) यह एक सीधा प्रश्न भी हो सकता है कि क्या हम पराया सिर लाल देख अपना सिर फोड डालेगे, अर्थात क्या अपनी हानि कर लेगे? हिन्दू स्त्रिया माग मे सेंदुर भरती है, जो सौभाग्य का चिह्न माना जाता है। कहावत मे उसी से मतलब है।

**पराये गंडों के भरोसे न रहना**
अर्थात कार्य तो पुरुषार्थ से ही सिद्ध होता है, गंडे या ताबीज मे नही।
गंडा मंत्र पढ़कर बनाया गया धागा, जिसे लोग अपनी किसी मनोकामना को पूरा करने अथवा रोग और भूत प्रेतादि की बाधा को दूर करने के लिए गले में पहिनते हैं।

**पराये धन पर झींगुर नाचे**
दूसरे के धन पर ऐंठना।

**परायेधन पर लक्ष्मीनारायन, (हिं०)**
पराये धन पर मौज करना।
(भोज के प्रारंभ में जय लक्ष्मीनारायण कहने की प्रथा है। जिसका अर्थ होता है कि अब भोजन प्रारंभ किया जाए।)

**पराये बरदे औज़ाद करते हैं**
दूसरे के नौकरों को छुटकारा दिलाते हैं।
पराये बूते पर परोपकार करना।
बरदे=बैल। (यहा नौकरो से ही मतलब है।)

**पराये भरोसे खेला जुआ, आज न मुआ, काल मुआ**
पराये भरोसे जुआ खेलनेवाला नुकसान उठाकर रहता है। (यहां सट्टा से मतलब है।)

**पराये माल पै, या हुसेन, (मु०)**
पराया माल खाने को हमेशा तैयार।
दे०—पराये धन पर लक्ष्मीनरायन।

**पराये हाथ पै शिकरा पालते हो**
पराये भरोसे रहना ठीक नहीं। शिकरा एक प्रकार का शिकारी बाज़ पक्षी होता है। उसे इस प्रकार सिखाते है कि वह चिड़ियो को पकड़कर मालिक के पास ले आता है।

**पल पखवाड़ा, घड़ी महीन, चौघड़िये का साल।**
**जिसको लाला 'काल' कहत हैं, उसका कौन हवाल।**
वादा खिलाफी करना। काम के लिए रोज़ टालना। (लालाजी का एक पल एक पखवाड़े के बराबर, एक घड़ी एक महीने के बराबर, और चार घडी एक साल के बराबर होती है। अब अगर वह 'कल' कह दे तो उसका न जाने क्या हाल होगा।)

**पलास के तीन पात**
सदा एक-सी हालत में रहना।

**पशु का सताना, निरा पाप कमाना**
पशु को नहीं सताना चाहिए।

**पहली बोहनी अल्ला मियां की आस, (मु० व्य०)**
सुबह दुकान पर पहला ग्राहक आने पर मुसलमान दूकानदार कहा करते है। दूकानदार सुबह की पहली बिक्री को बड़ा महत्व देते है। वे उससे दिन भर की बिक्री का अनुमान लगाते है। पहले ग्राहक को वे कभी वापस नही करते।

**पहले अपनी ही दाढ़ी की आग बुझाई जाती है**
पहले अपना ही काम देखा जाता है।
(एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा कि अगर मेरी और तुम्हारी दाढ़ी मे आग लग जाए, तो तुम पहले किसकी दाढ़ी बुझाओगे। बीरबल ने जवाब दिया—पहले अपनी ही बुझाऊगा।)

**पहले खाना, पीछे बात करना**
पहले सामने का काम पूरा करो।
खाने के समय बहुत बोलनेवाले के लिए।

**पहले घर में तो पीछे मस्जिद में, (मु०)**
पहले घर देखो, फिर बाहर।

**पहले चुम्मे गाल काटा**
किसी आदमी को पहले-पहल जब कोई काम सौंपा जाए, और वह उसे चौपट कर दे।

**पहले पहरे सब कोई जागे, दूजे पहरे भोगी।**
**तीजे पहरे चोरा जागे, चौथे पहरे जोगी।**
रात के पहले पहर में सब कोई जागते हैं, दूसरे में भोगी, तीसरे मे चोर और चौथे मे योगी जागता है।

**पहले पीवे जोगी, बीच में पीवे भोगी, पीछे पीवे रोगी**
(१) तमाखू पीने के लिए।
(२) भोजन के समय पानी पीने के लिए भी कुछ लोग कहते है, पर इस सम्बन्ध मे यह कहावत कोई अन्तिम वाक्य नही।

**पहले पीवे मकवा, फिर पीवे तमखवा, पीछे पीवे चिलम-चट, (पू०)**
तमाखू पीनेवालों का कहना है कि पहले तो मूर्ख पीता हे, फिर जो तमाखू का मजा जानता है वह पीता है, फिर सबसे बाद मे चिलमचट पीता है। शुरू मे चिलम मे केवल धुआ निकलता है, फिर तमाखू के थोड़ा जल उठने पर उसमे पीने का स्वाद आता है, बाद मे केवल राख रह जाती है और कोई मजा नही रहता, इसी से ऐसा कहा है।

**पहले बो, पहले काट, (कृ०)**
काम में जो शीघ्रता करेगा, उसका फल भी उसे शीघ्र मिलेगा।

**पहले मिस्तर, तब देवता पित्तर**
पहले पेट पूजा फिर देव पूजा।

**पहले मारे सो मीरी**
मैदान में जो आगे बढकर हाथ मारता है, वही जीतता है।
(शतरज के खेल मे प्यादा यदि आगे बढकर दूसरे खिलाड़ी के वज़ीर या बादशाह के खाने में पहुंच जाए, तो वह वज़ीर बन जाता है।)

**पहले सोच बिचार, पीछे कीजे कार**
काम सोच-विचार कर करना चाहिए।

**पहले ही गस्से में बाल आया**
पहले ही कौर में बाल आया, अर्थात अशकुन हुआ।

(भोजन में बाल निकलना अशुभ मानते हैं, और यदि पहले ही कौर में बाल आ जाए, तो फिर भोजन नहीं करते।)

**पहले ही बिस्मिल्ला ग़लत, (मु०)**
शुरू में ही काम बिगड़ा।
(मुसलमानों में कोई कार्य आरंभ करने के समय 'बिस्मिल्लाह अर्रहमानुर्रहीम' कहने की प्रथा है। 'बिस्मिल्लाह' उसी का पूर्वार्द्ध और संक्षिप्त पद है, जिसका अर्थ है—ईश्वर के नाम से।)

**पहाड़ की उतराई चढ़ाई दोनों पर लानत**
दोनों से कष्ट होता है।

**पहाड़ के अठगन सिलूत, (पू०)**
पहाड़ पत्थरों के सहारे टिका है। छोटों से ही बड़ों का बडप्पन है।
अठगन = अटकन; सहारा।
सिलूत = सिल; पत्थर।

**पहाड़ी गधा, पूर्वी रेंक**
अपनी चाल-ढाल छोड़कर दूसरों की चाल-ढाल का अनुकरण करना।

**पांच जूतियां और हुक्के का पानी**
तुम्हें यही मिलना चाहिए।
जब कोई ऐसी मांग करे, जिसके वह बिल्कुल ही योग्य न हो, तब क०।

**पांच पंच मिल कीजे काज, हारे-जीते नाहीं लाज**
पांच आदमियों से सलाह लेकर काम करना चाहिए। उसमें अगर नुकसान भी हो जाए, तो अपने सिर बदनामी नहीं आती।

**पांच महीना ब्याह के बीते, पेट कहां से लाई? (स्त्रि०)**
अप्रत्याशित बात।

**पांच आम, पचासे इमली**
पांच वर्ष में आम और पचास में इमली में फल आता है। पूरी शुद्ध कहावत इस प्रकार है: पांचे आम, पचीसे महुआ, तीस बरस में इमली औ' कहुआ। फैलन ने उक्त वाक्य का अर्थ किया है—आम के पांच पेड़ इमली के पचास पेड़ के बराबर होते हैं।

**पांचें मीत, पचासे ठाकुर**
मित्र पांच रुपए में और राजा या जमींदार पचास रुपए में मान जाता है।

**पांचों उंगलियां घी में, छठा सिर कड़ाई में**
जिसकी खूब दाल गल रही हो, उसके लिए क०। (इसका शुरू का आधा भाग ही कहावत के रूप में प्रचलित है।)

**पांचों उंगलियां बराबर नहीं होतीं**
(१) कोई चीज सब एक-सी नहीं होती।
(२) सब मनुष्य एक-से नहीं होते।

**पांचों पंडे छठे नरायन**
पांचों पांडव और छठे श्रीकृष्ण।
ऐसी जगह क०, जहां दस-पांच आदमियों के गुट में अकस्मात ऐसा मनुष्य पहुंच जाए, जो उनका नेतृत्व कर सकता हो और जहां उसकी जरूरत भी हो। (कहावत का प्रयोग प्रायः व्यंग्य में ही होता है।)

**पांचों सवारों में मिलना**
अपने को ऐसे मनुष्यों के बराबर समझना, जो योग्यता में अपने से बहुत बड़े हों।
(कथा है कि किसी समय चार शाही घुड़सवार सजे-धजे और हथियारों से लैस कहीं जा रहे थे। उनके पीछे एक कमज़ोर-सा निहत्था आदमी एक सड़ियल टट्टू पर सवार हो चल रहा था। जब किसी ने उससे पूछा कि तुम कहां जा रहे हो? तो उसने उत्तर दिया—हम पाचों सवार दिल्ली से आ रहे हैं।)

**पांडे जी पछतायेंगे, वही चने की खायेंगे**
जब कोई मनुष्य बहुत समझाने पर भी किसी बात को न माने और बाद में अपनी खुशी से वही करे जो कहा गया था, तब कहते हैं।

**पांडे दोऊ दीन से गये**
(१) जब कोई मनुष्य एक काम को छोड़कर दूसरा काम करने जाए और उसमें सफल न हो, और अपने पहले काम से भी हाथ धो बैठे।
(२) जब कोई किसी बड़ी चीज की आशा से छोटी चीज को छोड़ दे, और बाद में उसे बड़ी भी न मिले, और न छोटी।

(कथा है कि कोई ब्राह्मण मुसलमान हो गया। कुछ दिनों बाद जब उसने अपने इस नए मजहब में कोई खास तत्व न देखा, तो उसने फिर ब्राह्मण होने की इच्छा प्रकट की। परंतु ऐसा उसके लिए संभव नहीं हो सका, क्योंकि हिन्दू उन दिनों शुद्धि नहीं करते थे और वह दोनों तरफ़ से मारा गया।)

**पांव गोर में लटकाये बैठे हैं**

मरने के करीब हैं।

**पांव तले की ज़मीन सरकी जाती है**

(१) किसी बहुत झूठी या कुत्सित बात के सुनने पर घृणा या क्षोभ में।

(२) भय या आश्चर्य होने पर भी।

**पांव में जूती न सिर पर चपोटी**

(१) मिल्लबिल्ला।

(२) बहुत गरीब।

चपोटी=टोपी।

**पांव लों बिनती, सौ लों गिनती (हिं०)**

जिस प्रकार सौ से अधिक गिनती नहीं होती, उसी प्रकार पैर पड़ने से अधिक कोई बिनती नहीं हो सकती। जब कोई अपने किसी काम को करने के लिए सब तरह से प्रार्थना करके थक जाए तब क०।

**पांसा पड़े, अनाड़ी जीते**

पांसा पड़ने से अनाड़ी भी जीतता है।

**पांसा पड़े सो दांव, हाक़िम करे सो न्याव**

दैववशात जो सामने आता है, वह सहना पड़ता है। (हाकिम की जगह राजा भी कहा जाता है।)

**पाक नाम अल्लाह का, (मु०)**

पवित्र नाम ईश्वर का है।

**पाक रह, बेबाक रह, (मु०)**

जिसका दिल साफ़ है, उसे कोई डर नहीं रहता।

**पाजी तो पाजी, वह बड़ा पजोड़ा है**

पाजी से भी बड़ा कमीना है।

**पात-पात को आप लुटावे, काला मुंह कर जग दिखलावे, तब लालों में लाली पावे**

यह पहेली है पलास वृक्ष पर। पहले पलास अपने सब पत्ते गिरा देता है, अर्थात बिल्कुल नंगा हो जाता है, फिर उसमें काले रंग की कलियां लगती हैं, अर्थात संसार में बदनाम होकर उसका मुंह काला होता है; बाद में लाल रंग के फूल उसमे लगते हैं, जिससे सारा वन दमक उठता है, अर्थात अपने गुणो से वह सम्मान योग्य बनता है। तात्पर्य यह कि बिना कष्ट झेले मनुष्य को सफलता नही मिलती।

**बादशाहों और दरयाओं का फेर किसने पाया है?**

राजाओं और नदियों का सच्चा हाल किसने जाना है?

**पान और ईमान फेरे ही से अच्छा रहता है**

पान और ईमान पलटने रहने से ही ठीक रहते हैं। यहा पलटने के दो अर्थ है—(१) लौटना-पलटना। (२) लौट-पलट कर साफ करना।

**पान पुराना घृत नया, और कुलवंती नार।**
**यह तीनों तब पाइये, जब प्रसन्न होय मुरार।**

स्पष्ट।

पान पुराना ही अच्छा माना जाता है, जो महंगा मिलता है। घी तो ताजा अच्छा होता ही है।

मुरार=मुरारी, कृष्ण भगवान।

**पान-सा पतला, चांद-सा चकला**

केवल तुकबंदी।

चकला=गोला।

**पानी का-सा बुलबुला है**

क्षणभंगुर वस्तु। मानव शरीर के लिए क०।

**पानी का हगा ऊपर आता है**

बुरा कर्म छिपता नहीं।

**पानी दें और जड़ काटें**

ऊपर से प्रेम, भीतर से शत्रुता।

**पानी पीकर जात पूछते हो**

काम कर चुकने के बाद उसका विचार करना।

पानी पी घर पूछनो, नाहिन भलो विचार। (वृ०)

**पानी पी घर पूछना**

दे० ऊ०।

**पानी पीजे छान के, गुरु कीजे जान के, (हिं०)**

पानी छान कर पीना चाहिए और गुरु देखभाल कर करना चाहिए।

**पानी पीवें छान के जीव मारें जान के**

जैनियों के लिए क०।

**पानी बाढ़ा नाव में, घर में बाढ़े दाम।**
**दोनों हाथ उलीचिए, यही सयाना काम।**

यदि तिरती नाव में पानी भर जावे और कोई कर्ज में दब जावे तो इनसे छुटकारा पाने में देरी नहीं करनी चाहिए। मतलब, आफ़त का मुक़ाबिला तुरत करे।

**पानी में पत्थर नहीं सड़ता, (व्य०)**

रकम किसी मातबर आदमी के पास जमा हो, तो वह डूब नही सकती।

**पानी में पखान, भीगे पर छीजे नहीं।**
**मूरख के आगे ज्ञान, रीझे पर बूझे नहीं।**

मूर्ख को शिक्षा देने से कोई लाभ नही होता।

**पानी में मछली, नौ-नौ टुकड़ा हिस्सा, (पू०)**

किसी चीज के हाथ मे आने के पहले ही उसका गुंताडा लगाने लगना।

**पानी से पतला कर डाला**

बहुत जलील कर डाला।

**पानी से पहले पुल बांधते हो**

दे०—पानी में मछली..।

**पाप उभरे पर उभरे**

बुरा काम छिपता नहीं।

**पाप का घड़ा भर कर डूबता है**

पापी की भले ही पहले उन्नति हो, पर अंत में विनाश होता है।

**पाप छिपाये ना छिपे, जस लहसुन की बास**

पाप प्रकट होकर रहता है।

**पाप भी कभी छिपाये से छिपता है ?**

स्पष्ट।

**पापियों के मारने को पाप महाबली**

पापी अपने बुरे कर्मों से ही मारा जाता है।

**पापी का माल अकारथ जाय**

बुरी कमाई बुरे कामों में ही खर्च होती है।

**पापी का माल पिराचत जाय, दंड भरे या चोर ले जाय**

पापी का माल प्रायश्चित्त में ही खर्च हो जाता है, अर्थात बुरे कर्मों के दंड में जाता है।

**पापी की नाव डूबे पर डूबे**

पापी नष्ट होकर रहता है।

**पापी की नाव भर के डूबे**

पापी पहले सफल होता है, पर अन्त में नष्ट हो जाता है।

**पापी के मन में पाप ही बसे**

स्पष्ट।

**पाबंद फंसे, आज़ाद हँसे**

कैदी को बंधा हुआ देखकर स्वाधीन मनुष्य हँसता है। संसार की रीति यही है।

**पायजामे में से क्यों निकले पडते हो ?**

अर्थात क्यो इतने बिगड़ते हो?

**पार उतरूं तो बकरा दूं**

जब कोई विपत्ति के समय तो देवी-देवता मनावे, पर छुटकारा पाने पर भूल जाए।

(इसकी कथा है कि कोई मुसलमान नाव में बैठकर नदी पार कर रहा था। बीच में पहुंचा, तो बड़े जोर का तूफान आया। उसने किसी पीर की मिन्नत मानी कि यदि सकुशल पार पहुंच जाऊं तो बकरा चढाऊंगा। तूफान जब बंद हुआ, तो उसे बकरे का मोह हुआ और उसने कहा कि अगर बकरा नही चढ़ा सका तो मुर्गी अवश्य चढाऊंगा। अन्त में जब वह राजी-खुशी पार पहुंच गया, तो मुर्गी के लिए भी उसका मन अचकचाने लगा और अपने वादे को पूरा करने के लिए कपड़ों में से एक चीलर निकाल कर मार डाला और बोला—जान के बदले में जान मैने दी।)

**पार कहे सो वार है, वार कहें सो पार।**
**पकड़ किनारा बैठ रह, यही पार, यही वार।**

नदी के इस किनारे के लोग उस किनारे को पार और अपने किनारे को वार कहते हैं। इसी तरह उस किनारे के लोग अपने किनारे को वार और इस किनारे को पार कहते हैं। तू इस पार या उस पार के झगडे में मत पड़। कोई एक किनारा पकड़कर बैठ रह। इसी में तेरी भलाई है।

**पार गये, भोर हो आये**

शेखचिल्ली की गप।

**पारवाले कहें वारवाले अच्छे, वारवाले कहें 'पार-वाले अच्छे**

मनुष्य का स्वभाव है कि वह अपनी अपेक्षा दूसरों को सुखी और अपने को दुखी समझा करता है। (उसी पर कहा गया है।)

**पारसनाथ से चक्की भली, जो आटा देवे पीस।**
**कूढ़ नर से मुर्गी भली, जो अंडे देवे बीस।**

स्पष्ट।

**पाल पाल, तेरे जी का होगा काल**

जिन्हें तू पाल-पोसकर बड़ा कर रहा है वही तेरे शत्रु बन जाएंगे।

**पासंग का चोर तीन जगह डंडाय, झुकता तोले, रूंगन दे, पासंग दिखाये, (व्य०)**

झूठे बांट रखनेवाला दूकानदार तीन जगह से नुकसान उठाता है। उसे ज्यादा तोलना पड़ता है, रूंगन देना पड़ता है, और अपनी तराजू दिखानी पड़ती है कि वह ठीक है या नहीं।

(तराजू की दंडी को बराबर करने के लिए उठे हुए पलड़े पर रखा हुआ बोझ पासंग कहलाता है।

पासंग होना—(मु०), तराजू की डंडी बराबर न होना। कहावत का अभिप्राय यह है कि जो दूकानदार तराजू में पासंग रखता है, उसे पकड़े जाने के भय से कभी-कभी ज्यादा तोलना पड़ता है।)

**पास का कुत्ता, न दूर का भाई**

दूर के भाई से पास का कुत्ता अच्छा; क्योंकि वह काम आता है।

**पास कौड़ी, न बाज़ार लेखा**

(१) ऐसा व्यक्ति, जिसे किसी को कुछ देना-लेना न हो।

(२) बेफ़िक्र आदमी।

**पाहन में को मारबो, चोखा तीर नसाय, (पू०)**

पत्थर पर निशाना लगाने से एक अच्छा तीर खराब जाता है।

**पिछली रोटी खाय, पिछली मत आय**

स्त्रियों का विश्वास है कि जो सबसे अन्त की बनी रोटी खाता है, उसकी बुद्धि कम हो जाती है। इसलिए वे बच्चों को पिछली रोटी नहीं देतीं, जानवरों को खिला देती हैं।

**पिटारी में बन्द कर रखने के लायक हैं**

ऐसे अजीब हैं, या ऐसे मोंदू हैं। मज़ाक में ही कहते हैं।

**पिया की कमाई मोहे नहिं लहना,**
**मो पे बाजूबंद नहीं और सब गहना। (स्त्रि०)**

अनुचित असंतोष।

**पिया जिसे चाहे, वही सुहागन**

(१) सुहाग उसी का सार्थक है, जिसे पति चाहे।

(२) जिस पर मालिक की कृपादृष्टि होती है, वही बड़प्पन पा जाता है।

**पिसनहारी के पूत को चबेना ही लाभ**

ग़रीब को जो मिल जाए, वही बहुत।

**पी कारन पीरी भई, लोग कहें पिंड रोग।**
**छिप छिप लंघन मैं किये, पी मिलन के जोग।**

विरहिणी का कहना।

पिंड रोग=पांडु रोग; पीलिया।

**पी के पातन सिर धरो, धरो चरन पर सीस।**
**बासा हो बैकुंठ में, फिर तो बिसवे बीस। (स्त्रि०)**

स्पष्ट। स्त्री को उपदेश दिया गया है।

पातन=जूता। (फ़ैलन ने यही अर्थ किया है।)

**पीच पी, नेमत खाई**

मांड़ पिया, बढ़िया-बढ़िया माल-मसाले मैंने खाए। (किसी ऐसे व्यक्ति का कथन, जो किसी दूसरे के साथ रहते-रहते अथवा नौकरी करते-करते कष्टों से ऊब गया है। कहता है—बस, बहुत हो गई, रहने दो। मुझे अब तुम्हारा कुछ न चाहिए।)

नेमत=नियामत मिली हुई कोई उत्तम वस्तु।

**पीछा पीछा ही है**

वर्तमान से बढ़कर नहीं हो सकता।

**पीठ पीछे कुछ भी हो**

मेरे पीछे कुछ होता रहे।

**पीठ पीछे डोम राजा**

पीठ पीछे डोम भी अपने को राजा समझता है।

**पीठ पीछे बादशाह को भी बुरा कहते हैं**

स्पष्ट।

**पीत करी थी नीच से, पल्ले लागी कीच ।**
**सीस काट आगे धरा, अन्त नीच का नीच ।**
नीच से प्रेम करने पर बदनामी के सिवा और कुछ हाथ नही लगता।

**पीत की रीत निराली है**
स्पष्ट ।

**पीत तो ऐसी कीजिये, जैसे रुई कपास ।**
**जीते-जी तो संग रहे, मुये पै होवे साथ ।**
स्पष्ट।
(जीते-जी शरीर सूत के कपडो से ढका रहता है और मरने पर कफन मे लपेटा जाता हे, जो सूत का ही होता हे।)

**पीत तो ऐसी कीजिये, ज्यो हिंदू की जोय ।**
**जीते-जी तो संग रहे, मरे पै सती होय ।**
स्पष्ट ।
किसी मुसलमान कवि का कहना है।

**पीतम तू मत जानियो, भयो दूर कौ बास।**
**देह, गेह कितहूं रहै, प्रान तिहारे पास।**
किसी विरहिणी स्त्री का अपने प्रियतम के प्रति कहना कि यह मत समझो कि तुम मुझसे दूर हो। मेरा शरीर और घर कही भी रहे, पर मेरे प्राण तो तुम्हारे ही पास है।

**पीतम तेरी पीत को, झुक-झुक करूं सैलाम।**
**जब से तो संग नेहा करो, सुनो न सुख को नाम।**
कोई स्त्री, जिसे अपने पति के पास सुख नही मिला; ताना मार कर कहती हे।

**पीतम बसें पहाड़ पर (और) हम जमना के तीर ।**
**अब का मिलना कठिन है (कि) पांव पड़ी जंजीर ।**
स्पष्ट।

**पीने को पानी नहीं, छिड़कने को गुलाब**
झूठी शान।

**पीपल काटे, पाल बिनासे, भगवां भेस सतावे।**
**काया गढ़ी में दया न व्यापे, जरा मूर से जावे।**
जो पीपल का वृक्ष काटता है, घर नष्ट करता है। साधुओं को सताता है, मन मे दया नही रखता, ऐसे मनुष्य का सर्वनाश होता है। लोक-विश्वास।

**पीपल पूजन मैं चली, निगम बोध के घाट।**
**पीपल पूजत पी मिले, एक पंथ दो काज।**
एक काम मे दो काम सिद्ध हो जाना।

**पी प्याला, मार भाला**
मतलब यह कि सोच-विचार कुछ न करो, बस मारने मे जुट जाओ, या बस जाओ, अपना काम सिद्ध करो।
प्याले से अभिप्राय शराब के प्याले से हे।

**पीर आप ही बरमांदह शफाअत किसकी करेंगे**
पीर साहब खुद ही बीमार पडे हैं, फिर इलाज किसका करेगे? जिसकी सहायता चाहते है, वह स्वय ही विपत्ति मे पड़ा है।

**पीर को न शहीद को, पहले नकटे देव को, (स्त्रि०)**
जो वस्तु दूसरों के लिए तैयार की गई हो, उसे जब कोई बहुत अयोग्य व्यक्ति मागे, तब क०।

**पीर जी को सगाई मीर जी के यहां, (स्त्रि०)**
जो जैसा है, उसका व्यवहार वैसे के साथ ही होना।

**पीर, बबर्ची, भिश्ती, खर**
ब्राह्मणों पर व्यंग्य।
(एक बार अकबर ने बीरबल से कहा कि लाओ बीरन ऐसा नर, पीर, बबर्ची, भिश्ती, खर। बीरबल ने एक ब्राह्मण ले जाकर खडा कर दिया और कहा कि ये पडित जी चारो काम कर सकते है।)

**पीर शव, बिआयोज (फ़ा०)**
बूढ़े होने पर भी ज्ञान प्राप्त करते रहो।

**पीरां न परंद, मुरीदां परांद, (फ़ा०)**
पीरों के पंख नहीं होते, पंख तो उनके चेले लगा दिया करते है। अर्थात सत-महात्माओ की कीर्ति उनके चेलो पर ही निर्भर करती है। वे बाहर जाकर उनका गुणगान कर उल्लू सीधा करते है।

**पीसने वालियां पीस ले जायेंगी, कुछ हत्था थोड़े ही उखाड़ ले जायेंगी, (स्त्रि०)**
एक स्त्री ने दूसरी स्त्री की चक्की से कुछ पीसना चाहा। उसने इन्कार कर दिया। तब तीसरी ने उक्त वाक्य पहली स्त्री से कहा कि 'पीस क्यो नही लेने देती? इसमें तुम्हारा क्या नुकसान है? वह

तुम्हारी चक्की का डडा तो उखाड नही ले जाएगी' यह बात तीसरी स्त्री की ओर से बहुत सहज मे भी कही जा सकती है और इसलिए भी कि वह केवल उसे उपदेश दे रही है और स्वय उससे चक्की मागी जाए, तो वह देना पसद नही करेगी। कहावत का सीधा अभिप्राय यह है कि अपनी कोई हानि किए बिना यदि दूसरे का कोई काम बनता हो, तो उसके लिए इन्कार नहीं करना चाहिए।

**पीस मुई, पका मुई, आये लौठे खा गये, (स्त्रि०)**
किसी स्त्री का अपने निकम्मे लडके से कहना कि मुझ से आकर कहता है—पीस मुई, पका मुई और आकर खा जाता है, काम-धधा कुछ नही करता।

**पीस लूं तो पीटूं, (स्त्रि०)**
मां अपने ऊधमी लडके से कहती है, मत समझो कि तुम बच जाओगे।

**पुन्न की जड़ सदा हरी**
पुण्यात्मा हमेशा फलता-फूलता है।

**पुरख की माया, बिरछ की छाया, (स्त्रि०)**
जब तक मनुष्य रहता है, तभी तक उसका नाम-धाम रहता है।

**पुरख-सा पखेरू कोई नही**
मनुष्य जैसा (विलक्षण) जीव कोई नही।

**पुरख साठा सो पाठा, स्त्री बीसी सो खीसी**
मनुष्य साठ वर्ष की उम्र तक भी जवान रहता है, पर स्त्री का यौवन बीस के बाद ढलने लगता है।

**पुराना ठीकरा और कलई की भड़क**
बूढ़ी औरत और जवानी का-सा बनाव-ठनाव।

**पुरवा बहल, सूखल घाव फफदल, (भोज०)**
पुरवाई चलने से सूखा घाव हरा हो जाता है। (लो० वि०)
(पूरब की हवा स्वास्थ्य के लिए अच्छी नही मानी जाती।)

**पुराने गुम्बद पर कलई करना**
किसी पुरानी वस्तु को नई बनाने की वृथा चेष्टा।

**पुराने चावलों मे मजा होता है**
बूढ़े-पुराने लोगो की बात बड़े काम की होती है।

**पुराने ठीकरे पर नई कलई**
दे०—पुराने गुम्बद पर...।

**पुरानों को झिड़की, नयों को प्यार**
ऐसा करना ठीक नहीं। बूढों का सम्मान करना चाहिए।

**पुल बांधल जाए, बहू कजरी खेले, (पू०, स्त्रि०)**
पुल बंध रहा है। (सास वहां काम करने गई है।) और बहू कजरी खेल रही है। ऐसी बहू के लिए कहा गया है, जिसे घर के काम-धधे की फिक्र नही।
(कजरी श्रावण के महीने का एक त्योहार होता है।)

**पूछते-पूछते तो दिल्ली चले जाते है**
स्वयं अपनी सहज बुद्धि से काम लेकर बहुत-कुछ किया जा सकता है।

**पूजले देवता, छोड़ले भूत, (पू०)**
पूजो तो देवता, नही तो भूत।

**पूत करे, भतार के आगे आवे**
लडके के दुष्कर्मों का प्रायश्चित्त बाप को करना पड़ता है।

**पूत की जात को सौ जोखों**
लडके को पचास व्याधियां लगी रहती है।
(मतलब यह है कि लडकी की अपेक्षा लडके को रोग-दोख अधिक सताते है।)

**पूत कुपूत हो जाय तो हो, पर मां कुमाता नहीं होती, (स्त्रि०)**
स्पष्ट।

**पूत के पांव पालने में पहचाने जाते हैं**
बचपन में ही पता लग जाता है कि लडका कैसा बनेगा। जब किसी बात के आसार पहले से दीखने लगे।

**पूत न भतार, पोछो हो टांय टाय, (स्त्रि०)**
**उसका न तो लड़का ही लगता है और न पति, फिर भी उसके जाने पर (अथवा उसके मरने पर) वह व्यर्थ ही चीख चिल्ला रही है। जब कोई किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति, जिससे उसका किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नही है, झूठी सहानुभूति प्रकट करता है।**

**पूत ककोरनो का, बाल अहदियां की-सी**
झूठी शान दिखाना।

अकबर के ज़माने में अहदी उन सरदारों को कहते थे, जिन्हें राज्य की ओर से वज़ीफ़ा मिलता था और कोई विपत्ति पड़ने पर बुलाए जाते थे। ये लोग अपने को बड़ा मातबर समझा करते थे।

**पूत भये सयाने, दुख भये बिराने, (स्त्रि०)**
लड़के जब कमाने योग्य हो जाते हैं, तो दुख दूर हो जाते हैं।

**पूत मांगे गई, भतार लेती आई (स्त्रि०)**
उन स्त्रियों पर व्यंग्य, जो लड़का मांगने के लिए प्रायः फ़क़ीरों के पास जाया करती हैं।
भतार=खसम, पति।

**पूत मोठ, भतार मोठ, किरिया केह कर खाऊं, (पू०, स्त्रि०)**
लड़का भी प्यारा, पति भी प्यारा, सौंगंध खाऊं, तो किसकी खाऊं। दो में से कोई भी एक काम न कर पाना, अथवा दो में से कोई एक चीज़ न छोड़ पाना। असमंजस में पड़ना।

**पूत सपूत तो क्यों संचे, पूत कपूत तो क्यों संचे? (हिं०)**
लड़का होशियार होगा, तो धन संचय करने की क्या जरूरत है, वह आप ही पैदा कर लेगा और निकम्मा होगा, तो सब उड़ा देगा, इसलिए धन-संचय बेकार है।

**पूतों रात दुलंभनी, (स्त्रि०)**
लड़का मुश्किल से मिलता है।
दुलंभनी=दुर्लभ।

**पूरब जाओ या पच्छम, वही करम के लच्छन**
(१) कहींर हो, भाग्य पीछा नहीं छोड़ता। अथवा (२) अकर्मण्य व्यक्ति कहीं कुछ नहीं कर सकता, चाहे जहां जाए।

**पूरा तोल चाहे महंगा बेच, (व्यं०)**
वजन में या नाप में कम नहीं देना चाहिए, दाम चाहे ज्यादा ले ले।

**पूरी पड़े तो सपूत कहावे**
जो घर का अभाव दूर कर सके, वहीं सपूत कहलाता है।

पूरा पड़ना=(मु०) सामग्री न घटना, संपन्न होना।

**पूरी लपसी घर में खाय, झूठो देवी से आस लगाय**
लोग पूड़ी-लपसी स्वयं खाते हैं, और देवी से अपनी मनोकामनाओं के पूरा होने की झूठी आशा रखते हैं।

**पूरी से पूरी पड़े तो सभी न पूरी खावें**
कोई आदमी हमेशा पूरी खाकर नहीं रह सकता। हमेशा मौज-मज़ा नहीं किया जा सकता।

**पूरे गुरु घंटाल हैं**
बड़े घुटे हुए हैं; बहुत चालाक हैं।

**पूले तले गुज़रान करते हैं**
किसी बहुत ग़रीब का कहना कि किसी प्रकार झोंपड़ी में गुज़र-बसर कर रहे हैं।
पूले तले=फूस की छाया के नीचे।

**पूले पूले आंच है**
घास के हर पूले में आग मौजूद है, अथवा हर पूले में आग लग सकती है। कष्ट सभी को होता है।
पूला=घास की बंधी हुई छोटी मुट्ठी।

**पूस कोने घूस**
पूस में आदमी सर्दी से बचने के लिए कोने में जाकर बैठता है।

**पेट कुई, मुंह सुई**
पेट बड़ा, मुंह छोटा। बहुत खानेवाले के लिए क०।

**पेट के आगे 'ना' है**
जब पेट भरा होता है, तभी 'ना' कहते हैं।

**पेट के वास्ते परदेस जाते हैं**
पेट के लिए घर छोड़कर बाहर जाना पड़ता है।

**पेट चले, मन बल्तों को**
दस्त लग रहे हैं और दाल खाने का मन हो रहा है। तब कहते हैं जब कोई विपद्ग्रस्त आदमी ऐसा काम करने की इच्छा करे, जिससे उसकी विपत्ति और बढ़ जाए। (फ़ैलन ने बल्तों का अर्थ दाल किया है।)

**पेट जो चाहे, सो करावे**
पेट के लिए न जाने क्या-क्या करना पड़ता है।

**पेट पालना कुत्ता भी जानता है**
स्वार्थी मनुष्य के लिए कहा०, जो दूसरों को खिलाना नहीं जानता।

**पेट पिटारी, मुंह सुपारी**
(१) जिस लड़के का पेट बड़ा हो, उसके लिए।
(२) बहुत खानेवाले के लिए भी कहा०।

**पेट बिच्च पड़ी रोटियां, तां सभी गल्लां मोटियां, (पं०)**
पेट भरा होने पर सभी को बड़ी-बड़ी बातें सूझती हैं।

**पेट बुरी बला है**
पेट के लिए सब कुछ करना पड़ता है।

**पेट भर और पीठ लाद**
खाओ और मेहनत करो।
पेट भरा हो तभी मेहनत हो सकती है।

**पेट भरे की बातें**
जब कोई आदमी काम के प्रति उपेक्षा दिखाए और किसी काम को करने के लिए उचित से अधिक मजदूरी मांगे। तात्पर्य यह है कि आदमी का जब पेट भरा होता है, तो वह काम नहीं करना चाहता, और सौ तरह की बातें बनाता है।

**पेट भरे के खोटे चाले**
(१) पेट भरा होने पर बदमाशी सूझती है।
(२) बड़े आदमियों का पैसा प्रायः बुरे कामों में खर्च होता है।

**पेट भरे के गुन**
(१) किसी आदमी को जब किसी तरह खुश ही न किया जा सके, तब कहा०।
(२) प्रायः उस समय लड़कों से कहते हैं, जब खाना खा लेने के बाद वे काम में हीला-हवाला करते हैं।

**पेट भरे रिजाले और भूखे भलेमानस से डरिये**
नीच का पेट भरा हो तो उससे, और शरीफ़ भूखा हो, तो उससे डरना चाहिए। क्योंकि नीच आदमी धनवान बन कर दुष्टता कर सकता है और इसी तरह भला आदमी ग़रीब बन जाने पर कष्टप्रद सिद्ध हो सकता है।

**पेट भी खाली, गोद भी खाली, (स्त्रि०)**
(१) न खाने को है, न बाल-बच्चा ही है।
(२) न बच्चा पेट में है, न गोद में है।

**पेट में आंत, न मुंह में दांत**
बूढ़े आदमी का कहना कि पेट तो भरना ही पड़ता है और खा नहीं पाते।

**पेट में घुसे तो भेद मिले**
किसी के मन की बात जानना बहुत मुश्किल है, अथवा किसी के मन की बात उसके घनिष्ठ संपर्क में आने से ही जानी जा सकती है।

**पेट में चूहे कलाबाजियां खा रहे हैं**
बहुत भूख लगी है।

**पेट भेंट, कार समेट**
किसी ऐसे व्यक्ति का कहना, जिसे वेतन तो थोड़ा ही मिलता है, पर काम बहुत करना पड़ रहा है। कह रहा है कि यह खूब रहे, जो मुझसे चाहते हैं कि अपना पेट अलग कर दूं और काम करता रहूं।

**पेट में पड़ा चारा, कूदने लगा बिचारा, (स्त्रि०)**
खाने को मिल जाने पर आदमी को उछल-कूद सूझती है।

**पेट में पड़ी बूंद, नाम रखा महमूद, (स्त्रि०)**
गर्भ रहते ही निश्चय कर लिया कि लड़का होगा। काम होने के पहले ही उसका गुताड़ा लगाना।

**पेट में पांव हैं**
खाना मिलने पर ही आदमी काम कर सकता है।

**पेट सब रखते हैं**
खाने के लिए सबको चाहिए।

**पेट से पांव काढ़े हैं**
ऐसा व्यक्ति, जो देखने में सीधासादा पर वास्तव में धृष्ट हो।

**पेटहा चाकर, घसहा घोड़; खाय बहुत काम करे थोड़, (पू०)**
बड़े पेट का नौकर और मोटा घोड़ा, खाता तो बहुत, पर काम कम करता है।

**पेट है या कुठार ?**
बहुत खानेवाले के लिए क०।
कुठार=अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बर्तन।

**पेट है या बेईमान की क़ब्र**
बड़े पेटवाले के लिए क०।

**पेटू मरे पेट को, नामी मरे नाम को**
पेटू केवल खाने की चिन्ता करता है और महत्वाकांक्षी यश की।

**पेड़ बड़े यों ही दिखाई देता है**
यदि तुम मेरी जगह होते तो तुम भी वैसा ही करते, जैसा मैं करता हूं।
**पेड़ बोये बबूल के तो आम कहां से खाय ?**
बुरे काम का नतीजा बुरा ही होता है।
**पेश-ए-तबीब मराओ, पेश-ए-कार आजमूदा बिराओ, (फ़ा०)**
वैद्य के पास मत जाओ, अनुभवी के पास जाओ। ज्ञान से अनुभव बड़ा होता है।
**पेशा हबीबुल्लाह, जो न करे सो लानतुल्लाह, (मु०)**
ईश्वर काम करनेवालों से प्रसन्न और न करनेवालों से अप्रसन्न रहता है।
**पैदल और सवार का क्या साथ**
स्पष्ट।
**पैदा हुआ नापैद के वास्ते**
जन्म होता है मरने के लिए।
**पैसा कभी नहीं टिकता**
भाग्य एक-सा नही रहता।
लक्ष्मी स्थिर नही रहती।
**पैसा गांठ का, जोरू साथ की**
वक़्त पर यही काम आते हैं।
**पैसा न कौड़ी, बाजार में दौड़ी**
व्यर्थ की उछल-कूद। साधन हैं नही, फिर भी काम करने की हविस।
**पैसा न कौड़ी, बांकीपुर की सैर, (स्त्रि०)**
छैल-चिकनियों के लिए क०।
पैसा है नही, फिर भी शौक करना चाहते हैं।
**पैसा नहीं पास, तो कैसे सूंघें बास**
जब पैसा ही नही, तो इत्र कहां से लगाएं ?
**पैसा नहीं हाथ, चले नवाब के साथ**
बड़ों की नक़ल करना।
**पैसा पास का, घोड़ी रान की**
व त पड़े पर काम आते हैं।
(रान की घोड़ी से मतलब है ऐसी घोड़ी, जिस पर बराबर सवारी की जाती हो।)
रान=जांघ।

**पैसेपै घर के बोटियां उड़ाऊं, तौ भी दर्द न आवे, (स्त्रि०)**
मां-बाप का ऊधमी लड़के से क०।
पैसा=चक्की का पाट, सिल।
**पोथी तो थोथी भई, पंडित भया न कोय।**
**ढाई अक्षर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।**
स्पष्ट।
**पोस्ती की आंख ऊपर को नहीं आने की**
अफीम का धुआं ऊपर नही जाता। कमरे में ही भरा रहता है।
(मतलब यह कि दुखिया की आह व्यर्थ नही जाती।)
**पौ-बारह हो गए**
काम बन गया; जीत हो गई।
(चौपड के खेल मे पौ-बारह अर्थात एक और बारह का पासा बहुत अच्छा माना जाता है।)
**प्यासा कुएं के पास जाता है, कुआं प्यासे के पास नहीं आता**
जिसकी गरज होती है, वही जाता है।
**प्रातःकाल करो असनाना, रोग-दोष तुमको नहिं आना**
स्पष्ट।
**प्रीत करें से बावरे, करके तोड़ें छैल।**
**गल में रस्सा डाल के, ओर निबाहवें बैल।**
जो प्रेम करे, वह पागल है; कर के तोड़े, वह गंभीर पुरुष नही; गले में जब रस्सी पड जाती है, तो बैल भी अत तक अपने कर्तव्य का पालन करता है।
**प्रीत जो कीजे ईख से, जामें रस की खान।**
**गांठ-गांठ में रस नहीं, यही प्रीत की हान।**
प्रेम तो ईख से करना चाहिए, जिसमें रस ही रस भरा होता है। बस कमी इतनी है कि उसकी गांठों मे रस नही होता।
**प्रीत डगर जब पग रखा, होनी होय सो होय।**
**नेह नगर की रीत है, तन-मन दोनों खोय।**
स्पष्ट।
**प्रीत न जाने जात कुजात।**
**नींद न जाने टूटी खाट।**
**भूख न जाने बासी भात।**
**प्यास न जाने धोबी घाट।**

प्रीत जात-कुजात नहीं देखती, नींद टूटी खाट नहीं देखती, भूख बासी भात नहीं देखती और प्यास भी अच्छा-बुरा पानी नही देखती।

(सं०—क्षुधातुराणां न बलं न बुद्धिः
तृष्णातुराणां न च पात्र शुद्धिः।
कामातुराणां न भयं न लज्जा,
निद्रातुराणा न च भूमिशय्या।)

**प्रीत न टूटे अनमिले,**
**उत्तम मन की लाग।**
**सौ जुग पानी में रहे,**
**चकमक तजे न आग।**

सच्ची प्रीति कभी छूटती नही।

**प्रीतम, हर से नेह कर, जैसे खेत किसान।**
**घाटा दे उर डंड भरे, फेर खेत से ध्यान।**

ईश्वर से उसी तरह प्रेम करना चाहिए, जैसे किसान अपने खेत से करता है। हानि उठाता है, लगान भी देता है, फिर भी अपने खेत को नही छोड़ता।

**प्रीतम प्रीतम सब कहें,**
**प्रीतम जाने नहिं कोय।**
**एक बार जो प्रीतम मिलें,**
**सदा अनंदी होय।**

स्पष्ट।

**प्रेम कहानी कहत हूं, सुनो सखी री आय।**
**पी ढूंढ़न को मैं गई, आई आप हिराय।**

ऐ सखी! मेरी प्रेम कहानी सुन। मै प्रियतम को ढूंढ़ने गई थी, किन्तु अपने-आपको खोकर आ गई।

**प्रेम पियाला वह पिये, जो सीस दच्छना देइ।**
**लोभी सीस न दे सके, नाम प्रेम का लेइ।**

प्रेम तो वही कर सकता है, जो सिर काट कर दे सके। वह क्या प्रेम करेगा, जिसे अपने प्राणो का मोह हो।

**प्रेम पीत की रीत में, यह अनरीत सुहाय।**
**बरसें आंखें, सूखे हिया, आग लगे जिय मांह।**

प्रेम की रीति में सब से बड़ी उल्टी बात यह है कि आंखे तो बरसती है (आंसू निकलते है), हृदय सूखता है और छाती (बिरह से) जलती है।

**फ़कत ताबीज़ से ही काम नहीं निकलता, कुछ कमर में भी बूता चाहिए**

कोई आदमी फकीर से लड़का मांगने गया। उसने मंत्र पढ कर ताबीज़ दिया, साथ ही उक्त बात कही।

(केवल दैव के भरोसे रहने से काम नहीं चलता, कुछ अपना पुरुषार्थ भी करना चाहिए।)

**फ़कीर अपनी कमली में ही खुश है**

जो है, उसी में संतोष करता है।

**फ़कीर, कर्ज़दार, लड़का, तीनों नहीं समझते**

तीनों ही हठी होते है।

**फ़कीर की ज़बान किसने कीली है**

फकीर के मुह को कोई बंद नही कर सकता।

कीलना—मेख जडना, कील ठोक कर बंद करना, मंत्र पढ़कर किसी चीज़ के प्रभाव को नष्ट करना।

**फ़कीर की झोली में सब कुछ**

फ़कीर सब कुछ दे सकता है।

**फ़कीर की सूरत ही सवाल है**

फ़कीर को मांगने की जरूरत नही पड़ती। देखने से ही मालूम हो जाता है कि वह कुछ चाहता है।

**फ़कीर को कंबल ही दुशाला**

थोड़े में ही संतोष करता है।

**फ़कीर को जहां रात हो गई, वहीं सराय है**

उसके रहने का कोई ठिकाना नही होता।

**फ़कीर को तीन चीज़ चाहिए फ़का, कनात और रियाज़**

स्पष्ट।

(फ़ारसी मे फकीर शब्द तीन अक्षरों से लिखा जाता है—फ़े, काफ और रे जो कि क्रम से फाका (व्रत), कनात (संतोष) और रियाज़ (अभ्यास) इन तीन शब्दों के प्रथमाक्षर है।)

**फ़कीर रा ब मुक़ाबला चे कार? (फ़ा०)**

फ़कीर को लड़ने से क्या मतलब?

**फ़कीरी शेर का बुरका है**

फ़कीरों में बड़ी शक्ति होती है।

बुरका=(अ० बुर्क़:) एक प्रकार का आच्छादन या

पहिनावा जिससे मुसलमान स्त्रियां सिर से पैर तक अपने को ढके रहती है। आवरण।

**फजर फजर की 'नाह' कुछ नहीं**

सुबह-सुबह कोई ग्राहक जब सौदा लेने से इन्कार कर देता है, तब दूकानदार कहा करता है।
(दूकान खुलते ही कोई ग्राहक सौदा लेने आए और यों ही वापिस चला जाए, तो दूकानदार इसे अपशकुन मानते हैं।)

**फजर फजर 'न हां' मत करो**

दे० ऊ०।

**फ़ज़ल करे तां छुट्टियां, अदल करे तां लुट्टियां, (पं०)**

दया करने से तो मै छूट सकता हू, पर न्याय से तो मेरा सर्वनाश हो जाएगा।
(अपराधी दोष को स्वीकार करता हुआ क्षमा याचना के रूप मे कहता है।)

**फटाहा तिलक और मधुरी बानी,**
**दग़ाबाज की यही निशानी**

पाखडियो के लिए क०।
तिलक साधु लोग ही लगाया करते है।
फटाहा—चौड़ा।

**फटे को न सिये और रूठे को न मनाए, तो क्यों कर गुज़ारा होय ? (स्त्रि०)**

दे०—रूठे को मनाइए नही...।

**फटे न फूटे, जिउ जान न छूटे**

किसी चीज़ से जी ऊब जाए, तब क०।

**फटे में पांव, दफ़्तर में नांव**

झगडे में पडने ही से अदालत मे नाम लिखा जाता है।
(गवाही के वास्ते।)

**फ़तह और शिकस्त खुदा के हाथ है**

हार-जीत ईश्वर के अधीन है।

**फ़तह तो खुदा के हाथ है, पर भार भार तो किये जाओ**

होगा वही, जो ईश्वर को करना है; पर अपना उद्योग तो किए जाओ।

**फ़तह दाद इलाही है**

जीत तो ईश्वर की देन है।

**फ़रज़ंद वह जो पंद माने, और बाप का कहना फ़र्ज़ जाने**

लड़का तो वही, जो उपदेश माने और बाप के कहने पर चले।

**फ़रज़ंद वही, जो खलफ हो**

आज्ञाकारी लड़का ही लड़का है।

**फर न फरी, बगीचा के नांव, (पू०)**

फल न फली नाम बगीचा।
कोरा दिखावा।

**फ़रिया ना सारी, बड़ी सोभा हमारी, (पू०, स्त्रि०)**

झूठी शेखी बघारनेवाला।

**फ़रिश्तों के भी पर जलते हैं**

ऐसी जगह जहां (काम करने या पहुचने में) बड़े-बड़े भी घबराते हैं।

**फ़रिश्तों को भी खबर नहीं**

बहुत ही गुप्त बात।

**फ़रीद शकरगंज**

मरतुल्ले टट्टू पर जब कोई बूढा आदमी बैठा जा रहा हो, तो लडके उसे चिढ़ाने के लिए कहा करते हैं।
(फरीद शकरगंज के लिए दे० नीचे।)

**फ़रीद शकरगंज, न रहे दुख न रहे रंज**

फरीद शकरगंज करे कि तुम्हे कोई दुख और शोक न हो।
फरीद शकरगज मुसलमानो के कोई औलिया हो गए है।

**फर्ज़ से अदा हो गये**

अपना कर्तव्य-पालन कर चुके।
(लड़के-लड़कियों का विवाह कर चुकने के बाद प्राय: मा-बाप कहा करते है।)

**फल खाना आसान नहीं**

फल मुश्किल से खाने को मिलते है। पहले पेड़ लगाना पडता है, वह बढ़ता है, तब उसमे फल आते है।
बिना परिश्रम के कोई काम नहीं होता।

**फलसा टूटा, गांव लूटा**

फाटक टटने पर गांव आसानी से लूटा जा सकता है।

**फलाने की माँ ने खसम किया, 'बहुत बुरा किया'; 'कर के छोड़ दिया' और भी बुरा किया**

(१) अव्वल तो कोई काम करना नहीं चाहिए, और यदि करे, तो उसका परिणाम देखे बिना अधूरा छोड़ना नही चाहिए। जो कर लिया सो कर लिया।

(२) एक भूल सुधारने के लिए दूसरी भूल कर बैठना।

फलाने की=अमुक की।

**फ़ाकाकशी की नौबत पहुंची**

माली हालत बहुत खराब हो गई।

**फ़ाकामस्ती**

जो मिले वही खाकर मस्त रहना।

**फाटक टूटा, गढ़ लूटा**

फाटक टूटने से किला फतह हो सकता है। मोरचा मारा और काम बना।

**फाटे से जुड़ते नहीं, कोटन करो उपाय। मन, मोती और दूध रस, इनका यही सुभाव।**

एक बार फटने पर फिर नही जुडते, चाहे जितना उपाय करो; मन, मोती और दूध का यही स्वभाव है।

फटना = दरार पडना।

मन फटना विरक्ति हो जाना, संबंध रखने को जी न चाहना।

दूध फटना =उसका इस तरह बिगड जाना जिससे पानी और सार-भाग अलग-अलग हो जाएं।

**फ़ातिहा न दरूद, खा गये मरदूद!**

निकम्मे कही के, बिना फातिहा पढे ही खा गए? फालतू आदमी के लिए क०।

फातिहा =प्रार्थना। भोजन के पहले मुसलमानो में ईश्वर की प्रार्थना करने का नियम है।

**फ़ातिहा न दरूद, खाने को मौजूद**

स्पष्ट। दे० ऊ०।

**फ़ारखती लिखवाना**

कर्ज से छुटकारा पाने के लिए कागज़ लिखवाने को फ़ारखती लिखवाना कहते है।

'जो हमने दिया था, सो सब मिल गया; अब हमारी जान छोड़ो'—ऐसा भाव प्रकट करने के लिए कहावत।

(इस पर एक कहानी है—किसी कर्ज़दार ने अपने महाजन को कर्ज़ा चुकाने के लिए अपने घर बुलाया जब वह कागज़-पत्र लेकर अपना हिसाब चुकाने आया, तब कर्ज़दार ने अपने दरवाज़े पर बाजा बजाने का हुक्म दिया। बाजा जब ज़ोर से बजने लगा, तब कर्ज़दार ने महाजन को पीटना शुरू कर दिया और तब छोड़ा जब उससे फारखती लिखवा ली। बाजों के कारण महाजन का चिल्लाना कोई नही सुन सका।)

**फ़ारसी रा टंग तोड़म, ताकि ऊ लंगड़ी शवद**

फारसी की टाग तोड दूगा, जिससे कि वह लंगड़ी हो जाए।

(कम पढ़े-लिखे फारसीदा के लिए व्यग्य मे क०।)

**फ़ाल की कौड़ियां मुल्ला को हलाल**

हक़ का पैसा सब को पचता है।

(पासा या कौड़िया फेककर शुभ-अशुभ बताने की क्रिया को फ़ाल कहते है।)

**फ़ाल ज़बान या फ़ाल कुरान**

शुभ-अशुभ या तो (फकीर की) ज़बान से या कुरान से जाना जा सकता है, कोई और उपाय नही।

**फालूदा खाते दांत टूटें तो बला से**

फालूदा खाने से दांत तभी टूटेगा, जब वह पहले से ही बिल्कुल सड़ गया हो।

(ऐसी विपत्ति के लिए खेद करना वृथा है, जिससे बचना मुश्किल रहा हो।

फालूदा=गेहूं के सत की बनी एक प्रकार की वस्तु।

**फावड़ा न कुदार, बड़ा खेत हमार, (कृ०)**

झूठी शेखी बघारना।

**फावड़े का नाम गुलसफ़ा**

जब किसी आदमी के पीछे बहुत दिनों तक घूमना और खुशामद करना व्यर्थ सिद्ध हो और कोई लाभ की आशा न हो, तब क०।

(कथा है कि कोई आदमी एक फ़कीर की प्रशंसा सुनकर उसका चेला बन गया। किन्तु बारह वर्ष

तक उसके साथ रहने पर भी उसे कोई बात सीखने को नही मिली। इस बीच उसने एक दिन फावडे के लिए दूसरा शब्द पूछा। इस पर गुरु ने ऊपर लिखा जवाब दिया। वास्तव मे गुलसफ्फा का कुछ भी अर्थ नही होता।)

**फ़िक्र और ज़िक्र दोनों चाहिए**

फकीरों को ध्यान और आराधना दोनो ही करनी चाहिए।

**फ़िक्र करे क्या होता है, होना था सो हो गया**

बीती बात की चिन्ता नही करनी चाहिए।

**फिक्र बुरा फ़ाका भला, फ़िकर फ़कीरा खाये**

चिन्ता बुरी चीज है, फकीरो को भी बीमार बना देती है, इससे फाका अच्छा।

**फिट वाका जीना, जो तके पराई आस**

स्पष्ट।

**फिरनी फालूदा एक भाव नही होता**

अच्छी-बुरी सब चीज एक भाव नही मिलती।

(फिरनी चावल और दूध से बनती है और फालूदा गेहू तथा दूध से, जो फिरनी से श्रेष्ठ मानी जाती है।)

**फिर वे घोड़े यहीं से**

किसी को डाट बताकर भगाना।

**फिर भी मोची के मोची रहे**

जैसे थे वैसे ही रहे, कोई उन्नति नही कर सके।

**फिर मुड़ली बेल तले, (पू०)**

फिर जोखिम में पडे।

(बेल तले सिर मुडवाने से सिर फूटने का डर है, क्योकि बेल का फल बहुत सख्त होता है।)

**फूंक-फूंक के कदम रखते हैं**

होशियारी से चलते हैं।

**फूंक मशाल, उठा चौपाला**

मशाल जलाओ और उठाओ पालकी। अर्थात जल्दी करो।

**फूंके के न फांके के, टांग उठा के तापे के, (पू०, स्त्री०)**

आग को न फूंकना न फांकना, केवल पैर उठाकर तापना।

(स्वार्थी और आलसी आदमी को क०।)

**फूई-फूई कर के तालाब भरता है**

थोडा-थोडा इकट्ठा होने से ही बहुत हो जाता है। फूई-फूई=बूद-बूद।

**फूटी आंख का तारा**

विधवा का इकलौता लड़का।

**फूटी देगची, कलई की भड़क**

दिखावटी चीज़।

**फूटी सही, आंजी न सही**

आंख जाती रही, वह मंजूर हुआ, मगर अजन की जलन सहना मजूर नही हुआ।

(ऐसे कजूस के लिए क०, जो अपनी किसी कीमती चीज़ की रक्षा के लिए थोडा भी खर्च न करना चाहे।)

**फूफी मिस लेना, भतीजे मिस देना**

एक रिश्ते से लेना, दूसरे मे देना। व्यवहार चुका देना।

**फूल आये है तो फल भी लगेंगे, (स्त्रि०)**

यहां फूल से मतलब स्त्रियों के ऋतुधर्म से है और फल से मतलब बच्चो से। अभिप्राय यह कि जब स्त्री ऋतुमती होने लगी है, तो उसके बच्चा भी होगा।

**फूल की डाल नीचे को झुके**

भला आदमी सदैव विनम्र होता है।

**फूल की बैरन धूप, घी का बैरी कूप**

फूल धूप मे सूख जाता है और घी कुप्पे मे रखा-रखा खराब हो जाता है।

**फूल झड़े तो फल लगे**

(१) फूल गिरता है, तो फल लगता है।

(२) स्त्री ऋतुमती होगी, तो बाल-बच्चा भी होगा।

**फूल टहनी में ही अच्छा लगता है**

हर चीज़ अपने स्थान पर ही शोभा देती है।

**फूल-फूल कर के चंगेर भरती है**

थोडा-थोडा कर के बहुत हो जाता है।

**फूल नहीं, पंखुड़ी ही सही**

(१) बहुत नहीं, तो थोड़ा ही सही।

(२) जो मिला, वही बहुत।

**फूल सूंघ कर रहते हो**

बहुत थोडा खानेवाले से क०।

**फूला बदन में नहीं समाता**

बहुत प्रसन्न है।

**फूली-फूली गोने को, ठसक निकल गई रोने को, (स्त्रि०)**

विवाह के बाद स्त्रियों को ससुराल आने की बडी प्रसन्नता होती है, पर बाद मे वहा जब कष्ट होते है, तो अपनी सब शान भूल जाती है।

**फूले-फूले फिरत हैं, आज हमारो ब्याव।**
**तुलसी गाय बजाय के, देत काठ में पाव।**

गृहस्थ-जीवन मे फंसना जानबझकर एक मुसीबत मोल लेना है।

**फूहड़ करे सिंगार, मांग ईंटों से फोड़े, (स्त्रि०)**

फूहड का सिंगार भी अजीब होता है। वह सेंदुर की जगह ईंट घिसकर माग भरती है। ईंट घिसने से खून निकल आता है।

**फूहड़ का माल सराह-सराह खाइये**

मूर्ख का माल खुशामद से खाया जाता है। उसकी प्रशसा करते जाओ और उससे चाहे जो चीज़ झटक लो।

**फूहड़ का माल हँस-हँस खाइए**

स्पष्ट।

दे० ऊ०।

**फूहड़ के घर उगी चमेली, गोबर मांड़ उसी पर गेरी, (स्त्रि०)**

मूर्ख अच्छी चीज़ की कद्र करना नही जानता।

**फूहड़ के घर खिड़की लगी, सब कुत्तों को चिंता पड़ी,**
**बंडा कुत्ता बांचे सौन, लगी तो है पर देगा कौन।**

फूहड के घर में खिडकी लगी देखकर सब कुत्तों को चिंता हुई कि अब हम भीतर कैसे जा सकेंगे? इस पर एक दुमकटा कुत्ता बोला कि खिडकी लगी तो है, पर उसे बद कौन करेगा? अर्थात हम लोग आसानी से भीतर जा सकेंगे। मूर्ख अपनी सुविधाओ से पूरा लाभ नही उठाता।

सौन बाचना=शकुन बांचना, सोच-विचार कर बात कहना।

**फूहड़ चाले, नौ घर हाले, (स्त्रि०)**

फूहड बाहर जाती है, तो नौ घर हिल जाते हैं। अर्थात बहुत गवारू ढग से चलती है। अथवा, वह जहा जाएगी वहा कुछ-न-कुछ झगडा-फसाद खड़ा करेगी।

**फूहड़ जोरुआ, साग में शोरुआ, (मु०, स्त्रि०)**

फूहड के सब काम बेतुके होते हैं, वह हरी साग-भाजी का शोरुवा बनाती है।

(सागभाजी सूखी ही बनती है, रसेदार नही।)

**फूहड़ सीने बैठे, तब सुई तोड़े, (स्त्रि०)**

बेशऊर हमेशा भोंडे ढंग से काम करता है, सीने बैठता है, तो सुई तोड देता है।

**फेरों की गुनहगार है, (हिं०)**

उसका अपराध यही है कि वह उसकी भावर पड गई। हिन्दू घर की बाल-विधवा के लिए क०। बेचारी अपना दूसरा विवाह नही कर सकती।

**फ़ौज की अगाड़ी, आंधी की पिछाड़ी**

इनको संभालना मुश्किल होता है।

**फ़ौज बे वकील, साहब बे फ़ील**

बिना दूत की फौज और बिना हाथी का सरदार, ये जचते नही।

## ब

**बंगाला जादू का घर है**

प्राचीन काल मे बंगाल और कामरूप जादू-टोने के लिए प्रसिद्ध रहे है, इसी से कहावत बनी।

**बंगाली जो आदमी, तो प्रेत कहो किसको?**

स्पष्ट।

**बंगाले की बंगालिन जादू भरी**

दे०—बगाला जादू ।

**बंद के जाये बंद में नहीं रहते, (स्त्रि०)**

जो पराधीनता मे पैदा हुआ हो, वह हमेशा पराधीन नही रहता। किसी के सदा दिन एक से नहीं रहते।

**बंदगी ऐसी और इनाम ऐसा**

इतनी सेवा की और बदले में यह मामूली इनाम!

**बंदगी बेचारगी**
नौकरी विवश होकर करनी पड़ती है।

**बंदर एक निसाचरी लाया कर अपनी अर्द्धंगी।**
**लालबास रघुनाथ दया से उत्पन्न हुए फिरंगी।**
अंग्रेजों के लिए क०।
किंवदंती है कि भगवान राम ने हनुमानजी की सेवाओं के लिए उन्हें यह वरदान दिया था कि उनके वंशज कलियुग में भारत में राज्य करेंगे। उसी के आधार पर किसी ने उक्त तुकबंदी गढ़ी।)

**बंदर का ज़ख़म (या घाव)**
जो जल्दी नहीं भरता।
जो मनुष्य अपने घाव या फोड़े को हमेशा खुजाया या नोचा करता है और उसे जल्दी सूखने नही देता, उसके लिए क०।

**बंदर का हाल मुछंदर जाने**
मुछंदर बंदरों के सरदार को कहते है। उनका हाल वही जान सकता है।
किसी का हाल उसका साथी ही अच्छी तरह जानता है।

**बंदर की आशनाई क्या ?**
किसी मामूली आदमी या धूर्त से क्या मित्रता करना ?

**बंदर की आशनाई घर में आग लगाई**
धूर्त से मित्रता करने में हानि उठानी पड़ती है।

**बंदर की टोपी**
ऐसा आदमी जो क्षण भर के लिए भी शान्त न बैठे।

**बंदर की तुरत, फुरत, सुरत मशहूर है**
बंदर बड़ा चंचल, फुर्तीला और समझदार होता है।

**बंदर की दोस्ती, जी का ज़िआन**
मूर्ख या नटखट से मित्रता करना अपने लिए एक आफ़त मोल लेना है।
(यह कहावत प्रायः बच्चों के लिए ही प्रयुक्त होती है।)

**बंदर की सेना**
शैतान लड़कों का झुंड।

**बंदर के गले में मोतियों की माला**
अयोग्य या मूर्ख को ऐसी चीज़, जो उसकी क़द्र न जाने।

**बंदर के हाथ आइना**
व्यर्थ है, अव्वल तो वह कुरूप होता है, अपना चेहरा क्या देखेगा ? फिर वह उसे फोड डालेगा।

**बंदर के हाथ नारियल**
वह क्या समझे कि यह क्या वस्तु है। उसे वह फेंक देगा।

**बंदर क्या जाने आदी का सवाद, (पू०)**
मूर्ख किसी अच्छी वस्तु की क़द्र नही कर सकता।
आदी = अदरक।

**बंदर नाचे, ऊंट जल मरे**
बंदर को नाचते देखकर ऊंट ईर्ष्या से जलता है क्योंकि वह स्वयं नही नाच सकता।
(दूसरों की प्रसन्नता को न देख सकना।)

**बंदर भबकी (या घुड़की)**
कोरा डर दिखाना।

**बंदा आजिज़ है, (मु०)**
(१) मनुष्य एक दुर्बल प्राणी है। अथवा
(२) मैं दुखी हूं।
आजिज (१) दीन, विनम्र (२) तग, परेशान।

**बंदा जोड़े पली पली, रहमान उड़ाये कुप्पे**
जब किसी का बहुत परिश्रम और कंजूसी से इकट्ठा किया गया धन एकदम नष्ट हो जाए, तब क०।

**बंदा बशर है**
आदमी आख़िर आदमी ही तो है।
जब किसी से भूल होती है, तब क०।

**बंदी जब शादी करती है, तब ऐसी ही करती है, (स्त्रि०)**
किसी के शादी-ब्याह के असंतोषजनक प्रबंध पर चुटकी।

**बंदे का चाहा कुछ नहीं होता, अल्लाह का चाहा सब कुछ होता है**
ईश्वर की इच्छा ही सब कुछ है।

**बंधी मुट्ठी लाख बराबर**
(१) मुट्ठी बांध कर किसी को जो दान या इनाम दिया जाता है, उसके विषय में इसका अंदाज़ लगाना कि कितना क्या दिया गया, कठिन है।

लेनेवाला उसे चाहे जितना बढ़ा कर बता सकता है कि मुझे इतना इनाम मिला।

(२) साधारण आदमी की आर्थिक स्थिति का जब तक लोगों को असली पता नही चलता, तब तक लोग धनवान ही समझते रहते है। पर एक बार भेद खुल जाने पर वह बात नही रहती।

**बंधी रहे, न टके बिकाय**

(१) चीज़ रखी भले ही रहे, पर सस्ती नही देंगे, ऐसा भाव प्रकट करने को क०। अथवा

(२) चीज़ अगर बहुत दिनो रखी रहे, तो बाद मे उसे कोई टके मे भी नही पूछता, यह अर्थ भी हो सकता है।

**बकरा मुटाय, तब लकड़ी खाय**

बकरा मोटा होता है, तब मार खाता है, क्योकि वह लड़ाका हो जाता है।

लालची कर्मचारी के लिए क०।

**बकरी करे घास से यारी तो चरने कहां जाय?**

कोई आदमी अगर मेहनताना मागने मे लिहाज़ करे या जो जिस काम को करता है, उसमे मुनाफा न ले, तो उसका खर्च कैसे चले?

**बकरी का-सा मुंह चलता ही रहता है**

दिन-रात खाया करता है।

**बकरी के नसीबों छुरी है**

बकरी के भाग्य में तो मरना ही बदा है। अच्छा काम कर के भी उसका फल न मिलना।

**बकरी जान से गई, खानेवाले को मजा न आया**

जब कोई दूसरे के लिए मर मिटे, पर वह उसका एहसान न माने, तब क०।

**बकरी ने दूध दिया, मेंगनी भरा**

जब कोई रो-झीककर एहसान करे, तब क०।

**बकरी या सस्से की तीन ही टांगें**

सरासर झूठ बोलना। जब कोई झूठ भी बोले और उसे सच साबित करने के लिए कटिबद्ध भी रहे, तब क०।

दे—०मुरगी की एक ही...।

**बकरी से हल चलता तो बैल कौन रखता?**

जिसका जो काम है, वह उसी से निकलता है।

**बकरे की मां कब तक खैर मनाये**

एक-न-एक दिन मारा ही जाएगा।

**बख्त उड़ गये, बुलंदी रह गई**

अच्छे दिन निकल गए, केवल नाम रह गया।

**बख्त दें मारी तो कर घोड़े असवारी।**

**बख्त न दें मारी तो कर खा चरवेदारी।**

भाग्य से ही सब होता है।

बख्त—वक्त; समय; भाग्य।

चरवेदारी- साईसी।

**बख्तावर का आटा गीला, कमबख्त की दाल गीली**

पर इसमें पहले की कोई हानि नही होती, दूसरे की मुसीबत आ जाती है।

बख्तावर भाग्यवान, धन-सम्पन्न।

**बख्तों के बलिया, पकाई खीर हो गया दलिया**

भाग्य के ऐसे बली कि पकाई तो खीर, बन गया दलिया। बदकिस्मत के लिए क०।

**बख्शी के बग्गड़**

बख्शी का यार।

व्यर्थ का रोब दिखानेवाले से अवज्ञापूर्वक कहना, जैसे 'लाट का साला'।

**बख्शो बी बिल्ली, चूहा लंडूरा ही जियेगा**

(कथा है कि एक बार एक बिल्ली ने किसी चहे को पकड लिया। बिल्ली से छूट कर चूहा बिल मे घुस गया, पर उसकी पूछ टूट कर बिल्ली के मुह मे रह गई। किंतु बिल्ली तो समूचे चूहे को खाने पर तुली हुई थी। इसलिए चूहे से बोली–'खैर, अब तुम बाहर निकल आओ, मैं तुम्हारी पूछ जोड़ दगी।' इस पर चूहे ने उक्त वाक्य कहा कि 'बस, अब रहने दो, मै बिना दुम के ही जिऊगा।'

**बगड़ में बगड़ तीन घर, तेली, धोबी, नाई**

बुरा पड़ोस।

बगड़—घिरा हुआ मैदान; आगन; ढोरों के खड़े होने की जगह।

**बगल में ईमान दाब कर बात करते हैं**

धोखेबाजी की बात करते हैं।

**बगल में छुरी, मुंह में राम-राम, (हिं०)**

धूर्त ।

**बगल में तूती का पींजड़ा, 'नबी जी भेजो'**

तोते को कोई पढ़ा रहा है कि हे भगवान, भेजो किसी का मुफ़्त का माल!

धूर्त या लोभी।

**बगल में मुंह डालो**

अपनी तरफ़ देखो। जो बुराई तुम मुझ में देख रहे हो, वह तुम में भी है ।

**बगल में लड़का, शहर में ढिंढोरा**

चीज़ तो बगल में रखी है, पर उसे इधर-उधर ढूंढ़ना।

**बगल में सोंटा, नाम गरीबदास**

कहने को सीधे-सादे, पर हैं तेज़-तर्रार ।

सोंटा छड़ी ।

**बगला भगत**

(१) धर्म का ढोंग करनेवाला।

(२) कपटी, दग़ाबाज़ ।

(स०—वकः परमधार्मिकः (रामायण) ।)

(बगला मछली पकड़ने के लिए तालाब या नदी के किनारे एक पांव उठा कर खड़ा रहता है, मानो तपस्या कर रहा है, पर ज्यों ही मछली सामने आई, उसे पकड़ लेता है । उसी से मुहा० बना ।)

**बगला भी धोबी का भाई है**

क्योंकि वह भी पानी में खड़ा रहता है।

**बगला मारे पंख हाथ**

किसी को नुकसान भी पहुंचाया और उससे कुछ लाभ भी नही हुआ ।

(बगुले में पर ही पर होते हैं, मांस बहुत थोड़ा होता है।)

**बगली घूंसा**

(१) छिपा हुआ दुश्मन ।

(२) धोखे की मार।

**बग़ैर सीखे कुछ नहीं आता**

सब काम सीखना पड़ता है।

**बचनों का बांधा बड़ा है आसमान**

वचन बड़ी चीज़ है। किसी को वचन दे कर तोड़ना नहीं चाहिए।

**बच, बे जुम्मा, आंधी आई**

आती विपत्ति से सावधान होने के लिए क० ।

**बचे नर, हजार घर**

एक अच्छे आदमी की रक्षा होने से हज़ार घरों की रक्षा होती है ।

**बच्चे ते खिला वें दूध ते भात, बड़े हुए तो मार दे लात, (पं०)**

बच्चे को दूध-भात खिला कर पालो, पर बड़ा होने पर वह लात मारता है। कृतघ्न लड़कों के लिए क० ।

**बछड़ा खूंटी ही के बल कूदता है**

छोटा आदमी बड़े का सहारा पाकर ही अकड़ दिखाता है

**बजा कहे जिसे आलम उसे बजा समझो ।**

**आवाज़े खलक को नक्कारे खुदा समझो।**

जिस बात को दुनिया ठीक कहे, उसे ही ठीक मानना चाहिए। दुनिया की आवाज़ ईश्वर की ही आवाज़ है।

नक्कारे खुदा= ईश्वर का डंका।

**बजाज की गठरी पर झींगुर राजा**

क्योंकि वह कपड़ों को खा डालता है। दूसरों की वस्तु पर घमंड करना।

**बजाज बदज़ात**

क्योंकि वे अक्सर ठगते हैं ।

**बजा दे, खनिया ढोलकी, मियां खैर से आये**

शायद कोई आदमी किसी कठिन काम को करने का बीड़ा लेकर गया था, पर वह उसे नहीं कर सका, और असफल हो कर लौट रहा है। उसी का मज़ाक उड़ाया जा रहा है।

खनिया खना की स्त्री। गाने-बजानेवाली एक याचक जाति।

**बजा नक्कारा कूच का उखड़न लागी मेख।**

**चलनेहारे चल बसे, खड़ा हुआ तू देख।**

स्पष्ट।

मेख=खूंटी।

**बटिया आऊं, बटिया जाऊं; खेतक चराऊं, न बाली खाऊं, (स्त्रि०)**

रास्ते से आती हूं, रास्ते से जाती हूं, खेत चराती हूं, बाली नहीं खाती।

दूसरे का सरासर नुकसान कर के अपनी सफ़ाई दे रही है कि मैं किसी का कुछ बिगाड़ती नही। सचमुच ईमानदार।

**बटिया की राह, बेनिर्बाह**

पगडंडी का रास्ता आदमी को कही-का-कही ले जाता है।

**बटुर हाथ दुश्मनवें लागो, (भो०)**

दुश्मन को छोडना नही चाहिए। जब भी मौका लगे, कडी मार मारे।

बटुर हाथ= हाथ बटोर कर मट्ठी बाघ कर।

**बड़ तले का भूत**

ऐसा व्यक्ति, जिससे आसानी से पीछा न छुड़ाया जा सके।

(भूत-प्रेत श्मशान, नदियो के घाटो तथा बड़े वृक्षो पर रहते हुए माने जाते हैं। उनमे बटवृक्ष का भूत बहुत विकट समझा जाता है। इसीलिए कहा गया है।)

**बड़ रोवे बड़ाई के, छोट रोवे पेट के**

बडा आदमी नाम के लिए रोता है और छोटा भूखो मरता है, इसलिए रोता है। रोने से किसी को छुटकारा नही।

**बड़ा जाने किया, बालक जाने हिया**

सयाना आदमी काम से खुश होता है और बच्चा प्यार से।

हिया - हृदय।

**बड़ा निवाला खाइये, बड़ा बोल न बोलिये**

बडे आदमी बनकर रहो, पर बडी बात किसी से न कहो।

निवाला=कौर।

बड़ा बोल - अप्रिय या कठोर बात।

**बड़ा बोल काजी का प्यादा**

कडी बात कहनेवाला काजी का प्यादा है, क्योंकि वही उद्दडता से बोलता है।

**बड़ा ही पांच है**

बड़ा शातिर है।

**बड़ी कमाई पर नौन बिकवा**

(१) बहुत कमाई की तो नमक बेचा। अथवा (२) बहुत कमाकर भी नमक बेचना।

(नमक बेचना साधारण पंसारियों का काम समझा जाता है।)

**बड़ी टेढ़ी खीर है**

मामला बड़ा मुश्किल है।

(कथा है कि एकबार किसी मनुष्य ने एक जन्म के अंधे फकीर को खीर खिलानी चाही। अंधे तो शक्की मिजाज के होते ही हैं। इसलिए फ़कीर ने पूछा—'बाबा, यह खीर कैसी होती है?' जवाब मिला—सफ़ेद रग की'। फ़कीर ने फिर पूछा—सफ़ेद रंग कैसा होता है? जवाब मिला—जैसे बगुला। फकीर ने पूछा—बगुला कैसा होता है? इस पर उस मनुष्य ने बकरे की गर्दन को बताने के लिए अपना हाथ टेढ़ा कर के कहा—देखो ऐसा होता है। फ़कीर ने उसके टेढ़े हाथ को जो टटोला तो बड़ा घबराया और बोला—नही बाबा, मैं ऐसी टेढ़ी खीर नही खाऊंगा, यह तो मेरे गले मे ही फस जाएगी। इसी से उक्त मुहावरे का जन्म हुआ।)

**बड़ी ननद शैतान की छड़ी, जब देखो तब तीर-सी खड़ी?**

भावज का कहना ननद के बारे मे।

(बडी ननद हमेशा भावज पर रोब जमाती है, और उसे डाटने-डपटने से भी नही चूकती। इसीलिए भावज ऐसा क०।)

**बड़ी नाकवाले, (हिं०)**

बड़ी इज्जतवाले। व्यंग्य में ही क०।

**बड़ी फ़जर, चूल्हे पर नजर**

सवेरा हुआ और खाने की फ़िक्र पड़ी।

**बड़ी बहू को बुलाओ जो खीर में नून डाले, (हिं०)**

जब घर की किसी सयानी स्त्री से कोई भूल हो जाए या जब कोई अपने को बहुत चतुर समझे, तब उससे व्यंग्य मे क०।

**बड़ी बहू, बड़ा भाग, (हिं०)**

बहू की उम्र जब वर से अधिक होती है, तब वरपक्ष के लोगों को तसल्ली देने के लिए क०।

**बड़ी भाभी मां के बान का, (हिं०)**
बड़ी भावज मां के बराबर होती है।
**बड़ी भैंस पर महराई**
बड़ी भैंस में अधिक मक्खन होता है।
**बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है**
(१) बलवान निर्बल को सताता है।
(२) एक जीव दूसरे पर आश्रित है।
मत्स्य न्याय।
**बड़े अन्नपूरना बने हैं**
बड़े दानी बने है। व्यंग्य मे क०।
**बड़े कड़ाही में तले जाते हैं**
किसी ने किसी से कहा कि बडे का अपमान नही करना चाहिए, तो उत्तर मे उसने उक्त वाक्य कहा। यहां बड़ा शब्द के दो अर्थ है (१) उडद की पीठी के बड़े, जो कडाही मे तले जाते है;
(२) उम्र या प्रतिष्ठा मे बड़ा।
**बड़े की बड़ाई, न छोटे की छुटाई**
ऐसे व्यक्ति को क०, जो बड़े-छोटो का उचित ध्यान नही रखता; न बड़ो का सम्मान करता है, और न छोटों से स्नेह।
**बड़े घर पड़िये, पत्थर ढो-ढो मरिये**
यदि ऐसे घर मे ब्याह हो, जहा बड़ा परिवार हो; तो स्त्री को काम बहुत करना पड़ता है। इसी-लिए क०।
**बड़े चोर का हिस्सा नहीं**
क्योंकि उसे जो लेना होता है, वह पहले ही ले लेता है।
**बड़े तो थे ही, छोटे सुभान अल्ला**
वाक्य का प्रयोग बुरे अर्थ में ही होता है। यह प्रकट करने के लिए कि एक तो धूर्त था ही, पर दूसरा उससे भी बढ कर धूर्त है। जब बाप से बेटा या बड़े भाई से छोटा भाई बढ़ कर हो, प्रायः तब क०।
**बड़े न बूड़न देत हैं, जाकी पकड़ें बांह।**
**जैसे लोहा नाव में, तिरत फिरे जल मांह।**
बड़े आदमी जिसे सहारा दे देते हैं, उसे वे फिर छोड़ते नहीं।
**बड़े-बड़े बहे जायें, गदहा पूछे कितना पानी ?**
जब किसी काम को एक सामर्थ्यवान पुरुष भी नहीं कर सके, और उसे एक असमर्थ मनुष्य करने का साहस करे, तब क०।
**बड़े-बड़े ढह गये, बढ़ई कहे कितना पानी ?**
दे० ऊ०।
**बड़े बर्तन की खुर्चन भी बहुत है**
आर्थिक स्थिति बिगड़ जाने पर भी बड़े आदमी के घर मे जो निकलता है, वही बहुत होता है।
**बड़े बोल का सिर नीचा**
अहंकारी नीचा देखता है।
**बड़े मियां तो बड़े मियां, छोटे मियां सुभान अल्ला**
दे०—बड़े तो थे ही...।
**बड़े शहर का बड़ा ही नांव**
(१) बड़े शहर की सब बातें बड़ी होती है। अथवा (२) बड़े शहर मे बडे ठग भी रहते है। व्यंग्य मे क०।
**बड़ों का बड़ा ही भाग, (स्त्रि०)**
बड़ो का भाग्य भी बड़ा ही होता है।
**बड़ों का बड़ा ही मुंह**
बड़ों की मांग भी बड़ी ही होती है।
**बड़ों की बड़ी बात**
(१) बड़ों की बातें (या ख्याल) भी बड़े होते हैं।
(२) जब कोई बड़ा आदमी कोई ओछा काम कर बैठता है, तब व्यंग्य मे क०।
**बड़ों की बात बड़े पहचानें**
बड़े आदमी ही बड़ों की बात समझ सकते हैं।
**बड़ों के कहे का और आंवलों के खाये का पीछे स्वाद आता है**
इनकी अच्छाई बाद में प्रकट होती है, पहले तो ये कड़ुवे लगते हैं।
**बड़ों से रक्खे आस, न जाये पास**
बड़े आदमियों से आशा रखे, पर उनके पास न रहे।
**बड़ो बिखौ बिखधर को, चलत सीस नवाय।**
**थोड़ो बिखौ बिच्छू को, चालत दुम उठाय।**
सर्प में अधिक विष होता है, पर वह सिर नवा कर